हिन्दी पत्रकारों के ब्लॉग : अंतर्वस्तु (पाठ) विश्लेषण

पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में पीएच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रबंध

शोधार्थी

आशीष कुमार

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. आज्ञाराम पाण्डेय

विभागाध्यक्ष, जनसंचार विभाग, गलगोटिया विश्वविद्यालय,

ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सह पर्यवेक्षक

प्रो. अमिताभ श्रीवास्तव

निदेशक, स्कूल आफ मीडिया एंड कम्युनिकेशन स्टडीज, मणिपाल विश्वविद्यालय,

जयपुर, राजस्थान, भारत

जनसंचार विभाग, गलगोटिया विश्वविद्यालय,

ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत

2021

घोषण पत्र

मैं घोषणा करता हूं कि गलगोटिया विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा की पीएचडी उपाधि हेतु मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध “हिन्दी पत्रकारों के ब्लाग : अंतर्वस्तु (पाठ) विश्लेषण” पूर्णतया मौलिक कृति है तथा किसी के द्वारा संपन्न कार्य की पुनरावृत्ति नहीं है। शोध कार्य द्वारा यह शोध प्रबंध मेरे द्वारा संपन्न किया गया है।

(आशीष कुमार)

CERTIFICATE

This is to certify that Mr. ASHISH KUMAR has completed his Ph.D. thesis entitled **" हिन्दी पत्रकारों के ब्लाग : अंतर्वस्तु (पाठ) विश्लेषण"** under my supervision and has fulfilled all requirement. His thesis is an original work investigated and written by himself with his individual efforts, and it is now being submitted to the University for Evaluation.

(Dr. A.K. Pandey)

Head

Department of mass communication

Galgotias university, Greator Noida

आभार पुष्प

कृतज्ञता के पास शब्द नहीं होते, किन्तु साथ ही कृतज्ञता इतनी कृतघ्न भी नहीं होती कि बिना कुछ कहे ही रह जाए, क्योंकि यदि कुछ भी न कहा जाए तो शायद हर भाव अव्यक्त ही रह जाएगा। इसलिए यह आभार पुष्प मात्र औपचारिकता होते हुए भी आपसी कृतज्ञता ज्ञापित करने का कहीं गहरे से प्रयास भी है।

सर्वप्रथम मैं अपने परमश्रद्धेय गुरूवर एवं शोध कार्य पर्यवेक्षक प्रो आाज्ञा राम पाण्डेय, विभागाध्यक्ष, डिपार्टमेंट आफ मास कम्युनिकेशन, गलगोटिया युनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा के प्रति असीम श्रद्धा से आभार व्यक्त करता हूं, जिनके कुशल निर्देशन, उचित मार्गदर्शन, स्नेहिल प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से यह कार्य संपन्न हो सका। जिन्होंने अपनी अपूर्व मेधा एंव कुशल शोध निर्देशन के द्वारा समय-समय पर मुझे शोध की विषय-वस्तु को समझाने, उसकी समीक्षात्मक दृष्टि से अध्ययन करने, विश्लेषण करने तथा उसे प्रस्तुत करने हेतु तर्क संगत एवं अमूल्य सुझाव प्रदान किए। उनके गहन चिन्तन पूर्ण मार्ग दर्शन के आधार पर मुझे सदैव उच्च अध्ययन हेतु प्रेरणा मिलती रहेगी। ऐसा मेरा अटूट विश्वास है। साथ शोध सह प्रर्यवेक्षक प्रो अमिताभ श्रीवास्तव, निदेशक पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग मनीपाल विश्वविद्यालय, स्कूल आफ मीडिया को मैं हदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूं। जिनके आर्शीवाद व स्नेह के बिना यह शोध प्रबंध पूर्ण हो पाना असंभव था।

अपने विभाग के समस्त गुरूजनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

मैं अपने परिवारीजनों पूजनीय स्व दादी गुलाब कौर, स्व दादा श्यौदान सिंह मातृतुल्य बुआजी ओमवती देवी, माता सुधा पिता राजकुमार चैधरी, चाचाजी जयकुमार सिंह चाची ममता का आजीवन ऋणी रहूंगा जिनके स्नेहपूर्ण सहयोग और आशीर्वाद से मैं अपना शोध कार्य पूर्ण कर

सका। इसके साथ ही अपनी पत्नी पूनम, बहन योगिता चैधरी, खुशबू चैधरी, डिम्पल, काजल छोटे भाई अजीत चैधरी पुत्री देवांशी सेजवार का भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने अपनी फूल सी मुस्कराहट से शोध कार्य को भार नहीं बनने दिया।

मैं अपने मित्रों अमर उजाला लखीमपुर खीरी में ब्यूरो चीफ के पद कार्यरत आशीष गुप्ता, प्राध्यापक रघुनाथ यादव, दैनिक जागरण रोहतक में वरिष्ठ पत्रकार अरूण शर्मा के सहयोग व स्नेहपूर्ण व्यवहार को कभी नहीं भूलूंगा जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित किया।

स्वयंसेवी संगठन के पदाधिकारी केशव धाम वृंदावन के निदेशक ललित जी व प्रेरणा मीडिया शोध संस्थान नोएडा के अभिभावक आद कृपाशंकर जी का हदय की गहराइयों से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

अंत में मैं त्रुटियों के प्रति क्षमा याचना के साथ अपनी शोध की साधना के सुमन ईश्वर के श्री चरणों में समर्पित करता हूं। तथा उनकी अहैतुकी कृपा इसी प्रकार बनी रहे यही कामना करता हूं।

(आशीष कुमार)

प्रस्तावना

नव माध्यमों या न्यू मीडिया की जनमाध्यम के रूप में बनती पैठ समाज के लिए ही नहीं जनमाध्यमों के लिए भी अनूठी घटना मानी जाती है। इसके चलते व्यक्ति का जहां व्यक्ति और शेष समाज के साथ संवाद का पैटर्न बदल रहा है। मीडिया जगत भी जनता के साथ सीधे संवाद का अवसर उपलब्ध करा रहे इस माध्यम की अनदेखी नहीं कर सकता है।

कहने को तो मीडिया जगत का अर्थ ही यह है कि वह अपने पारंपरिक माध्यमों जैसे अखबार, रेडियो या टीवी चैनल के जरिये लोगों तक सच पहुंचाए पर जनमाध्यमों में आंतरिक लोकतंत्र का प्रश्न एक बड़ी समस्या माना जाता है। रिपोर्टर्स विदआउट बार्डर्स संस्था द्वारा जारी प्रेस फ्रीडम इंडेक्स-2016 के मुताबिक भारत की रैंकिंग प्रेस स्वतंत्रता के मामले में 180 देशों की सूची में 133 वां है, जिसमें मीडिया संस्थानों में आंतरिक लोकतंत्र एक महत्वपूर्ण मानक है। यानी क्या संपादक एक रिपोर्टर को अपनी बात कहने की इजाजत दे रहा है, यदि हां तो कैसे और कितनी और नहीं तो क्यों।

सवाल मीडिया संस्थानों में प्रारंभिक सीढ़ियों पर बैठे पत्रकारों के लिए ही नहीं, बल्कि निर्णायक शक्तियों से युक्त वरिष्ठ पत्रकारों और संपादकों का कहीं ज्यादा है। संपादकों की स्वतंत्रता सिमटती जा रही है और उस पर व्यावसायिक हित, मालिकान के निजी हित और विज्ञापनों का दबाव पड़ रहा है। यह तथ्य है कि जनमाध्यम के तौर पर उपलब्ध हुए न्यू मीडिया के संदर्भ में दावा किया गया कि इसने वैचारिक स्वतंत्रता को एक नया आयाम दिया। इसका आकलन करने का यह एक अच्छा तरीका है कि वैचारिक

अभिव्यक्ति के प्रमुख पैरोकार जो पत्रकार की भूमिका है, इस न्यू मीडिया का किस प्रकार प्रयोग कर रहे हैं।

न्यू मीडिया में भी विचार अभिव्यक्ति की दृष्टि से ब्लॉग्स का विशेष स्थान है। कारण यह कि यह शब्द सीमा, शैली आदि के बंधन से मुक्त विधा है। यानी आप कितना भी और कैसे भी विचार अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्र हैं। 'वेब लाग्स' शब्द से उपजे इस शब्द ने इराक युद्ध के समय अपनी ताकत का अहसास कराया था, जब कोई भी पारंपरिक माध्यम युद्ध दंश का दर्द झेल रहे नागरिकों की बात नहीं कह पा रहा था। पत्रकारों और सामान्य नागरिकों ने ब्लाग्स के जरिये अंतरराष्ट्रीय राजनीति तक पर करारी चोट की है।

मौजूदा दशक में भारत में राजनीति, समाज, मीडिया, अर्थव्यवस्था, आतंकवाद व नितांत निजी मुद्दा ऐसे ही विषय हैं, जिनपर अभिव्यक्ति की राह आसान नहीं है। इन विषयों पर पत्रकार या सामान्य नागरिक के रूप में विचार प्रकट करना, समर्थन-विरोध करना एकदम सीधा और सरल नहीं है। बतौर पत्रकार यह अभिव्यक्ति स्वतंत्रता और निष्पक्षता और भी जटिल विषय हो जाता है। पत्रकारिता की आत्मा विषय की गहराई में बसती है। राजनीति, समाज, आर्थिक, मीडिया आदि विषयों की गहराई में जाने का अर्थ यह होता है कि इन से जुड़े मसलों को छूना-छेड़ना जो इतना सहज नहीं। मौजूदा समय में इन मसलों पर लिखने का एक खतरा यह भी है कि राष्ट्रवाद और देशद्रोह की जलती बहस में पड़ना है जहां आपका एक लेख आपको एक पाले से घसीटकर सीधे दूसरे पाले में ढकेल सकता है। इसके अतिरिक्त संपादक के लेखों को अक्सर मानवाधिकार, सेक्युलरवाद और कभी कभी वैचारिक स्वतंत्रता तक से चाहे अनचाहे जोड़ दिया जाता है। इसलिए इनकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि संचार की दुनिया में मौन का अपना खास महत्व है। उमा नरूला कहती हैं कि किसी महत्वपूर्ण विषय आप मौन हैं तो भी आप संदेश संप्रेषित कर रहे होते हैं। संपादक के पद बैठे व्यक्तियों के लिए तो यह मौन और भी विस्तार ले लेता है। मिसाल के तौर पर राजनीति, समाज, आर्थिक, मीडिया, आतंकवाद, निजी मामलों पर आप अगर मौन रहते है तो तब या उसके समर्थन में कुछ कह रहे होते हैं या उसका विरोध दर्ज कर रहे होते हैं। सो यह भी महत्वपूर्ण है कि राजनीति, समाज, अर्थ, मीडिया, आतंकवाद से जुड़े अहम मसले पर कौन पत्रकार कब और कितना मौन रह गया है।

इस शोध के अंतर्गत वरिष्ठ हिन्दी पत्रकारों के ब्लॉग्स के टेक्स्युअल एनालिसिस के जरिए इन्हीं विषयों पर निष्कर्ष निकाला है।

इन पांचों ब्लॉग्स पर 1 जनवरी, 2016 से 31 दिसंबर, 2016 के बीच 591 पोस्ट डाले गए हैं। इस अवधि में रवीश कुमार ने 300 पोस्ट, पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 64 पोस्ट, शशि शेखर ने 57 पोस्ट, अंशुमान तिवारी ने 52 पोस्ट, सुधीर राघव ने 118 पोस्ट डाले हैं। विश्लेषण के लिए समस्त पोस्टों को विषय प्रकृति के आधार पर छह प्रमुख भागों में विभाजित किया हैं। यह छह भाग है सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीति, आर्थिक, मीडिया, आतंकवाद व स्वयं के विषय में हैं। सभी भागों के विश्लेषण को अलग-अलग अध्याय में लिखा गया है। विषय प्रकृति के आधार पर विभाजित किए अध्यायों को विश्लेषण के लिए उपविषयों में बांटा गया है।

शोध प्रबंध का पहला अध्याय 'ब्लॉग लेखन और उसका विकास' है। इसमें ब्लॉग के आरंभ से लेकर वर्तमान तक की यात्रा के बारे में लिखा गया है। ब्लॉगिंग शब्द अंग्रेजी भाषा के 'वेबलॉग' शब्द से पैदा हुआ है। इसका अर्थ है कोई ऐसी डायरी जो सीधे

इंटरनेट पर लिखी जाती है। यह डायरियां इंटरनेट के माध्यम से पूरी दुनिया के लिए सहज रूप से उपलब्ध रहती हैं। इसके माध्यम से कोई ब्लॉगर अपने विचारों, अनुभवों, लेखों, रचनात्मकता को दुनिया के समाने आसानी से प्रस्तुत कर सकता है। ब्लॉगिंग ने कहीं पत्रकारिता का रुप ले लिया है तो कहीं चर्चा मंच का, कहीं पोर्टल का तो कहीं अखबार का। ब्लागिंग के कंटेंट की भी कोई सीमा नहीं है। यहां पर समाचार, लेख, संगीत कार्टून, वीडियो सभी उपलब्ध हैं। यदि ब्लॉग पर लोग मिलकर पुस्तक लिख रहे है तो वहीं तकनीकी समस्याओं का हल भी किया जा रहा है। दुनिया की करीब सभी भाषाओं में आज ब्लॉग उपलब्ध हैं।

ब्लॉग शब्द सबसे पहले सन् 1999 में पीटर मरहेल्ज ने दिया था। हालांकि ब्लॉगिंग की विधिवत शुरुआत से पहले भी इंटरनेट पर निशुल्क अभिव्यक्ति के साधन मौजूद थे, लेकिन उन मंचों पर लेखन के लिए तकनीकी भाषाओं को ज्ञान आवश्यक था। इसलिए उन मंचों का प्रयोग करना सभी के लिए आसान नहीं था। ब्लॉगिंग की शुरुआत होने से तकनीकी बाधाएं दूर हो गईं व इंटरनेट पर टिप्पणियां पोस्ट करना बहुत आसान हो गया। ब्लॉग का निर्माण और संचालन लगभग मेल पाने व भेजने जितना आसान है। आसान, तीव्र, शुल्करहित, क्रियाशील, सर्वव्यापकता होने के साथ संपादकीय गेटकीपिंग, सस्थागत मजबूरियां न होना ब्लॉगिंग की शक्तियां हैं।

हिन्दी ब्लॉगिंग का प्रारंभ 2 मार्च, 2003 को माना जाता है। वर्ष 2005 तक हिन्दी ब्लॉग की संख्या लगभग 100 ही हो पाई थी। हिन्दी के प्रमुख ब्लॉग्स और उनकी पोसिं्टग को एक ही मंच पर लाने के लिए हिन्दी का 'चिट्ठा जगत' बनाया। चिट्ठा जगत पर ब्लॉगर्स के परिचयों के साथ-साथ ब्लॉग्स के लिंक व उनकी संक्षिप्त सूचनाएं भी दी गईं थी। इसी प्रकार एक अन्य वेब पेज वेबरिंग ने भी हिन्दी ब्लॉगर्स के लिए यह

सुविधा दे रखी थी। हिन्दी ब्लॉग्स का विकास वर्ष 2007 में और तेजी से हुआ। इस समय तक हिन्दी ब्लॉग्स की संख्या बढ़कर दो हजार तक हो गई थी। साल 2008 में हिन्दी ब्लॉग्स की संख्या में और भी तेजी से इजाफा हुआ और इनकी संख्या दस हजार को पार कर गई। दुनिया को ब्लॉग्स के जरिए अभिव्यक्ति की शक्ति का भान हुआ। वर्ष 2016 का अंत आते-आते ब्लॉग्स की संख्या लाखों में हो गई।

ब्लॉगिंग ने विश्व के उन लोगों की यादों को भी जिंदा रखा है जो सरकारी शोषण, दमन, असामाजिक तत्वों के अत्याचारों या आतंकवादी कार्रवाइयों का शिकार हुए हैं। सभी जानते हैं कि चीन में मीडिया पर सरकार का नियंत्रण रहता है। चीन के थ्येनआनमन चैक की अमानवीय घटना को याद करते ही मानवता कांप उठती है। ब्लॉगिंग की दुनिया ने थ्येनआनमन का अमानवीय घटना का आवाज दी और दुनिया भर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। दमन और अत्याचार के विरूद्ध के संघर्ष को ब्लॉगिंग ने आवाज दी है। बहरीन में सरकार द्वारा आम लोगों पर किए जा रहे अत्याचार को एक ब्लॉगर ने कैमरे से कैद किया और अपने ब्लॉग चनाद बहरीनी पर डाल दिया। इसके बाद दुनिया का ध्यान इस ओर गया और घटना मीडिया की सुर्खियां बना।

ऐसे ही उदाहरण ईराक युद्ध के दौरान देखने को मिले। इराक युद्ध के दौरान बगदाद ब्लॉगर नाम से जाने गए एक गुमनाम ब्लॉगर ने सलाम पैक्स नाम के अपने ब्लॉग में इराक युध्द का आंखों देखा हाल लोगों तक पहुंचाया। दुनिया भर की मीडिया ने उसके फोटो और सूचनाओं को अपनी खबरों में दिखाया। ब्लॉगिंग को लोकप्रिय बनाने में बगदाद ब्लॉगर की बड़ी भूमिका मानी जाती है। बगदाद ब्लॉगर का असली नाम सलाम

था। बीबीसी और वॉयस ऑफ अमेरिका ने बगदाद ब्लॉगर पर विशेष कार्यक्रमों का प्रसारण किया।

शोध प्रबंध का द्वितीय अध्याय साहित्य समीक्षा का है इसके अंतर्गत ब्लॉग्स से संबंधित पूर्व शोधों और इस शोध के आश्वयकता को तार्किकता की कसौटी पर कसा गया है। शोध प्रबंध का तृतीय अध्याय शोध विधि से संबंधित है। इसमें टेक्स्चुअल एनालिसिस की विभिन्न विधियों और पत्रकार के ब्लॉग के विश्लेषण के लिए आवश्यक शोध विधि के विषय में लिखा है।

शोध प्रबंध का चतुर्थ अध्याय ब्लॉग लेखक परिचय का है। इसमें चयनित विधि से चुने हुए संपादकीय पदों पर कार्यरत हिन्दी के वरिष्ठ पत्रकारों का परिचय दिया है। इस अध्याय का उद्देश्य यह है कि ताकि टेक्स्चुअल एनालिसिस के दौरान पत्रकारों की विचारधारा और उनके पत्रकारिता का अनुभव स्पष्ट हो सके है। टेक्स्चुअल एनालिसिस के दौरान देखा जाता है कि लेखक कौन है, उसकी पृष्ठभूमि क्या है, लेख का भाव क्या है, लेख का उद्देश्य क्या है, लेख का लक्षित वर्ग क्या है, लेख का प्रभाव और कारण क्या रहा, आदि ऐसे ही बिन्दु हैं जो लेखक के परिचय के साथ और अधिक स्पष्ट होते हैं। इस अध्याय में रवीश कुमार, पुण्य प्रसून वाजपेयी, अंशुमान तिवारी, शशि शेखर और सुधीर राघव का परिचय लिखा है। परिचय के साथ उनके द्वारा लिखे पोस्ट की माहवार संख्या, विभिन्न विषयों पर लिखे गए पोस्ट की संख्या और प्रतिशत भी लिखा है। हिंदी पत्रकार लेखकों के लेखों के आंकड़ों को ग्राफ के द्वारा दर्शाया गया है।

शोध प्रबंध के पांचवें अध्याय 'सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर ब्ला ॅग्स' में पांचों हिन्दी पत्रकारों द्वारा अपने ब्लॉग्स पर डाली गई सामाजिक-सांस्कृतिक विषय पर पोस्ट्स का टेक्स्चुअल एनालिसिस किया है। अध्याय में पांचों पत्रकारों की ब्लॉग पोस्ट

का टेक्स्चुअल एनालिसिस के साथ तुलनात्मक विश्लेषण भी किया है। पत्रकारों के विषय से संबंधित पोस्ट के प्रतिशत व संख्या में तुलना भी की है। सामाजिक मुद्दों पर अपनी बात रखने के लिए ब्लॉग्स महत्वपूर्ण साधन हैं। सामाजिक मुद्दों की पत्रकारिता के लिए ब्लॉग्स सकारात्मक भूमिका में दिखायी देते हैं। यहां सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर रियल टाइम में अपने विचारों को पोस्ट किया जा सकता है। इनका समाज पर व्यापक प्रभाव भी पड़ता है।

1 जनवरी, 2016 से लेकर 31 दिसंबर, 2016 के बीच सामाजिक-सांस्कृतिक अनेक घटनाएं ऐसी हुईं जो ब्लॉग्स के कारण पूरी दुनिया में चर्चित हुईं। ब्लॉग्स लेखन की वजह से अनेक मुद्दों पर जनमत तैयार हुआ। इस दौरान ब्लॉग्रस ने न सिर्फ मुद्दों को उठाया बल्कि अपना दृष्टिकोण भी स्पष्ट किया। पत्रकार ब्लॉग्रस के ब्लॉग्स में सामाजिक मुद्दों पर अनेक लेख लिखे गए। वर्ष 2016 में 01 जनवरी, 2016 से लेकर 31 दिसंबर, 2016 के बीच रवीश कुमार ने अपने ब्लॉग कस्बा पर सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों से संबंधित 46 पोस्ट्स, अंशुमान तिवारी ने दो, शशि शेखर ने 19, पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 09 और सुधीर राघव ने 11 पोस्ट्स क्रमश अपने-अपने ब्लॉग्स पर पोस्ट्स की हैं।

पत्रकारों की सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों से संबंधित ब्लॉग पोस्ट्स को विश्लेषण की सुविधा के लिए महिलाओं से संबंधित पोस्ट्स, वंचित वर्ग से संबंधित पोस्ट्स, जीवन शैली से संबंधित पोस्ट्स, बाजारवाद से संबंधित पोस्ट्स, परंपराओं से संबंधित पोस्ट्स और धार्मिक विषयों से संबंधित पोस्ट्स में उप विभाजित कर किया है। पत्रकारों द्वारा अपने सामाजिक-सांस्कृतिक विषय से संबंधित पोस्ट्स में प्रयोग किए

शब्दों की बारंबारता (फ्रीक्वेंसी) संख्या और उनकी प्रतिशत घटितता (अकरेंस) का विश्लेषण किया गया है।

शोध प्रबंध का छठा अध्याय 'राजनीतिक विषयों पर ब्लाॅग्स' चयनित हिन्दीं पत्रकारों के ब्लॉग्स पर डाली गईं राजनीतिक पोस्ट्स से है। राजनीति और मीडिया में गहरा संबंध है। वर्तमाम नें राननीति और मीडिया एक दूसरे के पूरक हो गए हैं। राजनीति पारंपरिक मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और पिं्रट मीडिया सहित मौजूद दौर में न्यू मीडिया को भी गहरे से प्रभावित करने लगा है। ब्लॉग्स, फेसबुक, ट्विटर आदि न्यू मीडिया के साधन राजनीतिक वर्ग और मीडिया वर्ग के साथ आमजन के भी संवाद उपकरण बन गए हैं।

मीडिया राजनीति वर्ग पर दबाव बनाता है और उनकी नीतियों और योजनाओं को प्रभावित करता है। मीडिया का अधिकांश समय राजनीतिक विषयों को 'कवर' करने में गुजरता है। इसी प्रकार राजनीति भी मीडिया को अपने हिसाब से प्रभावित करती रहती है। वहीं मीडिया संस्थानों के प्रमुख जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग भी अपनी विचारधारा, राजनीतिक व कॉरपोरेट के दबाव में काम करते हैं, जिसके परिणास्वरूप समाचारों के दृष्टिकोणों में परिवर्तन आता है। इन दबावों के मुख्य धारा मीडिया के संपादकों की राजनीतिक विषयों पर निष्पक्षता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी प्रभावित होती है। ऐसे में संपादकों और पत्रकारों के लिए ब्लॉग्स ने व्यक्तिगत स्तर पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म है।

प्राचीन समय से ही राजनीति में कूटनीति और धरातलीय व्यावहारिकता का विशेष महत्व रहा है। लेकिन आज तकनीक दौर में राजनीति ने अपने व्यवहारिक पहलुओं में भी बदलाव किया है। इसके लिए कई चरणों का दौर राजनीति और उसके

प्रचार माध्यमों ने देखा है। पहले राजनीति के लिए व्यक्तिगत संपर्क महत्वपूर्ण था। अस्सी के दशक तक किसी राजनेता की छवि उसके संघर्ष और जन के बीच किए गए कार्यों से बनती थी। बाद में पम्पलेंट्स के जरिए राजनीति मुद्दों को लोगों तक पहुंचाया गया। लेकिन वर्तमान में सोशल मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा नेताओं की छवियों का गढ़ा जा रहा है। सोशल मीडिया चुनावों का प्रभावित करने लगा है। भारत में 2014 में आम चुनाव रहे हों या अमेरिका में राष्ट्रपति पद का चुनाव न्यू मीडिया ने इन चुनावों को गहरे से प्रभावित किया। मोदी की 'चाय पर चर्चा', नीतीश के लिए 'बिहारी बनाम बहारी' जैसे नारों का चुनाव में प्रचारित होना न्यू मीडिया की ही देन रहा है।

इसी प्रकार पत्रकारों के ब्लॉग्स भी राजनीतिक गतिविधियों को अपने अंदाज में प्रभावित करते हैं। पत्रकार वर्ग द्वारा अपने ब्लॉग्स पर लिखी गई टिप्पणियां व लेख अत्यधिक महत्व रखते हैं। पत्रकारों के लेखों को आम जन के बीच अधिक विश्वसनीयता की दृष्टि से देखा जाता है, साथ ही इनके लेखों में विशेषज्ञता होती है। रवीश कुमार, पुण्य प्रसून वाजपेयी, शशि शेखर, अंशुमान तिवारी, सुधीर राघव आदि के ब्लॉग्स रानजीतिक लेखों के मामले में विशेष स्थान रखते हैं। वर्ष 2016 में जनवरी से लेकर दिसंबर तक रवीश कुमार ने अपने ब्लॉग्स 'कस्बा' पर 92 पोस्ट्स, पुण्य प्रसून वाजपेयी ने अपने ब्लॉग्स पर 27, शशि शेखर ने 23, अंशुमान तिवारी ने 6 और सुधीर राघव ने अपने ब्लॉग्स पर 30 पोस्ट्स राजनीतिक विषयों से संबंधित लिखी हैं। इसके राजनीति लेखों पर पाठकों ने अनेकों प्रतिक्रियाएं दी हैं।

विश्लेषण के लिए इन पत्रकारों के ब्लॉग्स लेखों को विभिन्न उप भागों में बांट लिया है, जोकि भारतीय राजनीतिक विषयों पर पोस्ट्स, अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक विषयों पर पोस्टस, राष्ट्रवाद नक्सलवाद आतंकवाद अलगाववाद विषयों पर राजनीति, सांप्रदायिक

विषय पर राजनीति, भ्रष्टाचार पर राजनीति व अन्य विषयों पर राजनीति आदि हैं। पत्रकारों द्वारा राजनीतिक विषय से संबंधित पोस्ट्स में प्रयोग किए शब्दों की बारंबारता (फ्रीक्वेंसी) संख्या और उनकी प्रतिशत घटितता (अकरेंस) का विश्लेषण किया गया है। शोध प्रबंध का सांतवे अध्याय 'आतंकवाद विषय से संबंधित ब्लाॅग्स' है। इस अध्याय को आतंकवाद एवं धार्मिक कट्टरता, आतंकवाद का सामाजिक व आर्थिक पक्ष, आतंकवाद का राजनीतिक पक्ष - भारतीय, आतंकवाद का राजनीतिक पक्ष - पाकिस्तान के साथ, आतंकवाद का राजनीतिक पक्ष - विश्व राजनीति के संदर्भ में, के रूप में उपविभाजित किया है। इसके आधार पर विषयवस्तु का टेक्स्चुअल एनालिसिस किया गया है। इसमें आतंकवादी घटनाओं पर पत्रकार के दृष्टिकोण से लिखे गए लेखों को विश्लेषण किया गया है। आतंकवाद और अभिव्यक्ति केे विषय में पत्रकार की राय को विश्लेषण में विशेष स्थान दिया गया है। विश्लेषण के लिए शब्दों का एक समूह तैयार किया गया, इनमें सम्मिलित हैं-आतंकवाद, कट्टरता, हिन्दू, मुसलमान/इस्लाम, हिन्दू आतंकवाद, इस्लामिक आतंकवाद, राष्ट्रवाद। अध्ययन में इस बात का प्रयास किया गया है कि ब्लाॅग लेखक किन शब्दों का प्रयोग बहुतायत में करते हैं, और किनसे बचते हैं। इसके माध्यम से उनकी विचारधारा के संबंध को स्थापित किया गया है।

शोध प्रबंध के आठवां अध्याय 'न्यू मीडिया, मनोरंजन मीडिया व साहित्य पर ब्लाॅग्स' है। इस अध्याय को न्यूज मीडिया से संबंधित ब्लाॅग पोस्ट्स, मनोरंजन मीडिया से संबंधित पोस्ट्स, साहित्य से संबंधित ब्लाॅग पोस्ट्स के रूप में उपभागों में विभाजित किया है। मीडिया के निर्णायक पदों पर बैठा हुआ व्यक्ति जब मीडिया की समीक्षा करता है तो इससे मीडिया में आन्तरिक परिर्वतनों की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। लोकतंत्र का चैथा

स्तंभ परिष्कार के साथ और मजबूत होता जाता है। इन्हीं पहलूओं की पड़ताल करते हुए सभी वरिष्ठ पत्रकारों की ब्लाॅग्स को टेक्स्चुअल एनालिसिस किया गया है।

नवां अध्याय 'आर्थिक विषयों पर ब्लाॅग्स' है। इस अध्याय को भारतीय अर्थव्यवस्था पर लेख, आर्थिक भ्रष्टाचार पर पोस्ट्स, विमुद्रीकरण पर पोस्ट्स, जीएसटी पर पोस्ट्स, उदारीकरण पर पोस्ट्स, विदेशी अर्थव्यवस्थाओं पर पोस्ट्स के शीर्षक के साथ उप अध्यायों में विभाजित किया है। पिछले तीन दशकों में देश ने आर्थिक विकास की गति पकड़ी है। इसके साथ ही आर्थिक पत्रकारिता के स्वरूप मंे बदलाव आया है। मुख्यधारा मीडिया में काम कर रहे प्रमुख पत्रकारों द्वारा अर्थ से जुड़ी हुई गतिविधियों को महत्व किस रूप में दिया जाता है, यह भी महत्वपूर्ण है। ब्लाॅग्स पर लिखे गए आर्थिक गतिविधियों से संबंधित के पोस्ट्स के शोध विश्लेषण से विभिन्न तथ्य स्पष्ट होते हैं।

शोध प्रबंध में दसवां अध्याय 'पत्रकारों द्वारा स्वयं के विषय में ब्लाॅग पोस्ट्स' है। किसी के भी पत्रकार के लिए मुद्दों पर लिखना प्रतिदिन का कार्य हो सकता है, लेकिन जब स्वयं के विषय में सार्थक लिखने की बात आती है तो सभी के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। स्वयं का न्यायपूर्ण प्रस्तुतीकरण लेखनी की कुशलता को प्रकट करता है। साथ ही, पाठकांे के लिए लेखक या पत्रकार के विचारधारा के धरातल को समझने और आंकने में मदद मिलती है। इस अध्याय के माध्यम से पत्रकार द्वारा लिखी गई पोस्ट्स के टेक्स्युअल एनालिसिस के माध्यम से तथ्य स्थापित किए गए हैं। शोध प्रबंध का एकादश अध्याय अन्य विषयों से संबंधित है और अंतिम द्वादश अध्याय में निष्कर्ष दिया गया है। साथ ही इस अध्याय में शोध की सामाजिक उपयोगिता के विषय में भी प्रकाश डाला गया है।

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

	प्रस्तावना	6
प्रथम अध्याय :	ब्लाग लेखन और इसका विकास	18
द्वितीय अध्याय:	ब्लाग लेखक परिचय	35
तृतीय अध्याय :	साहित्य समीक्षा	53
चतुर्थ अध्याय :	शोध प्रविधि	65
पंचम अध्याय :	राजनीतिक विषयों पर ब्लाग्स	74
षष्ठं अध्याय :	सामाजिक सांस्कृतिक विषयों पर ब्लाग्स	138
सप्तम अध्याय :	आर्थिक विषयों पर ब्लाग्स	181
अष्ठम अध्याय :	आतंकवाद विषय से संबंधित ब्लाग्स	222
नवमं अध्याय :	न्यूज मीडिया, मनोरंजन मीडिया व साहित्य पर ब्लाग्स	246
दशम अध्याय :	स्वयं के विषयों में पोस्टस	285
एकादश अध्याय:	अन्य विषयों पर ब्लाग्स	306
द्वादश अध्याय :	निष्कर्ष	328

ब्लॉग लेखन और इसका विकास

ब्लॉगिंग शब्द अंग्रेजी भाषा के 'वेबलॉग' शब्द से पैदा हुआ है। इसका अर्थ है कोई ऐसी डायरी जो सीधे इंटरनेट पर लिखी जाती है। यह डायरियां इंटरनेट के माध्यम पूरी दुनिया के लिए सहज रूप से उपलब्ध रहती हैं। इसके माध्यम से कोई ब्लॉगर अपने विचारों, अनुभवों, लेखों, रचनात्मकता को दुनिया के समाने आसानी से रख सकता है। यदि ब्लॉगिंग को सामूहिक रूप से देखें तो यह जनसंचार का एक बड़ा माध्यम बन चुका है। ब्लॉगिंग ने कहीं पत्रकारिता का रुप ले लिया है तो कहीं चर्चा मंच का, कहीं पोर्टल का तो कहीं अखबार का। ब्लागिंग के कंटेंट की भी कोई सीमा नहीं है। यहां पर समाचार, लेख, संगीत कार्टून, वीडियो सभी उपलब्ध हैं। यदि ब्लॉग पर लोग मिलकर पुस्तक लिख रहे है तो वहीं तकनीकी समस्याओं का हल भी किया जा रहा है। दुनिया की करीब सभी भाषाओं में आज ब्लॉग उपलब्ध हैं।

ब्लॉग शब्द सबसे पहले सन् 1999 में पीटर मरहेल्ज ने दिया था। वेबलॉग शब्द जॉन बर्जर ने 1997 में दिया था। वेबलॉग शब्द को ही पीटर मरहेल्ज ने 1999 में अपने ब्लॉग पीटरमी.कॉम की साइड बार वी ब्लॉग कर दिया। सन् 1999 के अंत में इसके आगे से वी हटा दिया और ब्लॉग शब्द चलन में आया। अंग्रेजी में ब्लॉगिंग की आयु 19 वर्ष से अधिक हो गई है। इन उन्नीस वर्षों में ब्लॉग अभिव्यक्ति व संचार का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है।

हालांकि ब्लॉगिंग की विविधता शुरुआत से पहले भी इंटरनेट पर निशुल्क अभिव्यक्ति के साधन मौजूद थे, लेकिन उन मंचों पर लेखन के लिए तकनीकी भाषाओं को ज्ञान आवश्यक था। इसलिए उन मंचों का प्रयोग करना सभी के लिए आसान नहीं

था। ब्लॉगिंग की शुरुआत होने से तकनीकी बाधाएं दूर हो गईं व इंटरनेट पर टिप्पणियां पोस्ट करना बहुत आसान हो गया। नब्बे के दशक के प्रारंभ में जियोसिटीज डॉट कॉम, ट्राइपोड डॉट कॉम, 8के डॉट कॉम, होमपेज डॉट कॉम, एंजेलफायर डॉट कॉम, गो डॉट कॉम आदि ने अपना निजी होम पेज बनाने की सुविधा प्रदान की थी, यहां पर हजारों लागों ने अपनी वेबसाइटों बनाईं। लेकिन यहां पोस्ट करने करने के लिए एचटीएमएल जैसी भाषाओं की जानकारी जरूरी थी।

ब्लॉग का निर्माण और संचालन लगभग मेल पाने व भेजने जितना आसान है। ब्लॉगर, वर्डप्रेस, माईस्पेस, लाइवजर्नल, पिटास, रेडियो यूजरलैंड, ब्लॉग डॉट कॉम आदि प्रमुख हैं। आसान, तीव्र, शुल्करहित, क्रियाशील, सर्वव्यापकता होने के साथ संपादकीय गेटकीपिंग, सस्थागत मजबूरियां न होना ब्लॉगिंग की शक्तियां हैं।

हिन्दी ब्लॉगिंग का इतिहास

हिन्दी ब्लॉगिंग का प्रारंभ 2 मार्च, 2003 को मानी जाती है। हिन्दी का पहला ब्लॉग होने का श्रेय 'नौ दो ग्यारह' को दिया जाता है। इसी दौर के अन्य प्रमुख ब्लॉग हैं इंदौर के देवाशीष का 'नुक्ता चीनी' रवि रतलामी का 'हिन्दी ब्लॉग', पंकज नोरुल्ला का 'शहर बोलता' है। इसके अलावा इसी दौर के प्रमुख हिन्दी ब्लॉग हैं, 'अक्षर ग्राम', 'कुछ बतकही', 'फुरसतिया', 'मेरी कविताएं', 'सिन्धियत', 'मेरा पन्ना', 'ठलुआ', 'शब्द साधना', 'गुरु गोविन्द', 'कटिंग चाय', 'समथिंग टू से', 'कुछ तो है', 'हां कबाजी' आदि। वर्ष 2005 में हिन्दी हिन्दी ब्लॉगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। वर्ष 2005 में ब्लॉगर मनीष कुमार ने 'एक शाम तेरे नाम' का ब्लॉग बनाया। यह रोमन भाषा में लिखा जा रहा था। वर्ष 2006 में मनीष कुमार 'एक शाम तेरे नाम' से ही दूसरा ब्लॉग लेकर आए, जोकि

हिन्दी भाषा में लिखा गया था। इसमें संस्मरणों में बेहद रोचक व सुंदर तरीके से पेश किया गया था।

हालांकि वर्ष 2005 तक हिन्दी ब्लॉग की संख्या लगभग 100 ही हो पाई थी। हिन्दी के प्रमुख ब्लॉग्स और उनकी पोस्टिंग को एक ही मंच पर लाने के लिए ब्लॉगर देवाशीष ने हिन्दी का पेज 'चिट्ठा जगत' बनाया। चिट्ठा जगत पर ब्लॉगर्स के परिचयों के साथ-साथ ब्लॉग्स के लिंक व उनकी संक्षिप्त सूचनाएं भी दी गईं थी। इसी प्रकार एक अन्य वेब पेज वेबरिंग ने भी हिन्दी ब्लॉगर्स के लिए यह सुविधा दे रखी थी।

वर्ष 2006 में हिन्दी ब्लॉग्स का बहुत विकास हुआ। इस दौरान उड़न तश्तरी, अखंड, आलोक, इन्द्रधनुष, पुष्टिमार्ग, प्रणव शर्मा, प्रशांत, श्रवन, विनीत, भास्कर, संतोष, श्रीश, थोड़ा और, ई पंडित, नारद, परिचर्चा, हमारा, बेंजी, माझी दुनिया, दीपांजलि, निशिकांत वर्ल्ड, निरंतर, तरकश के साथ-साथ अनेक महत्वपूर्ण ब्लॉग अवतरित हुए।

हिन्दी ब्लॉग्स का विकास वर्ष 2007 में और तेजी से हुआ। इस समय तक हिन्दी ब्लॉग्स की संख्या बढ़कर दो हजार तक हो गई थी। साल 2008 में हिन्दी ब्लॉग्स की संख्या में और भी तेजी से इजाफा हुआ और इनकी संख्या दस हजार को पार कर गई। दुनिया को ब्लॉग्स के जरिए अभिव्यक्ति की शक्ति का भान हुआ। वर्ष 2016 का अंत आते-आते ब्लॉग्स की संख्या लाखों में है।

प्रमुख हिन्दी ब्लॉगर

हिन्दी ब्लॉगिंग के चर्चित चेहरों में शामिल हैं - जीतेन्द्र चौधरी अनूप शुक्ला, आलोक कुमार, देवाशीष, रवि रतलामी, पंकज बेंगानी, समीर लाल, रमण कौल, मैथिलीजी, जगदीश भाटिया, पंकज नरूला, प्रत्यक्षा, अविनाश, अनुनाद सिंह, शशि सिंह,

सुनील दीपक, संजय बेंगानी, जयप्रकाश मानस, नीरज दीवान, श्रीश बेंजवाल शर्मा, अनूप भार्गव, शास्त्री जेसी फिलिप, हरिराम, आलोक पुराणिक, ज्ञानदत्त पांडे, रवीश कुमार, अभय तिवारी, नीलिमा, अनामदास, काकेश, अतुल अरोड़ा, संजय तिवारी, सुरेश चिपलूनकर, तरूण जोशी, अफलातून आदि लोग ब्लॉग्स की दुनिया में सतत सक्रिय रहकर इंटरनेट की दुनिया को समृद्ध करने में लगे हुए हैं।

हिन्दी ब्लॉगिंग के क्षेत्र में चर्चित प्रमुख पत्रकार

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और ब्लॉग्स

ब्लॉगिंग ऐसा माध्यम जो भौगोलिक सीमाओं से पूरी तरह मुक्त होता है। जहां राजनीतिक और सामाजिक दबाव अन्य पारंपरिक माध्यमों की तरह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रभावित नहीं कर पाते हैं।ब्लॉग लेखक ही संपादक और प्रकाशक दोनों की भूमिका निभाता है। ब्लॉगिंग एक लोकतांत्रिक माध्यम है। इस माध्यम पर न कोई लिखने के लिए मजबूर है और न ही पढ़ने के लिए। जिनके लेखों में दम होता है वह पाठकों को स्वयं जुटा लेते हैं। इस माध्यम में न तो समय की पाबंदी है और न ही सर्कुलेशन की। लेखक अपने लेखों पर पाठकों की त्वरित प्रतिक्रिया पा सकते हैं। स्वतंत्र अभिव्यक्ति, त्वरित प्रतिक्रिया, सीमा रहित प्रसारण ने ब्लॉगिंग को दुनियाभर में लोकप्रिय बनाया है।

जनमाध्यमों का विधिवत प्रारंभ सोलहवीं शताब्दी में माना जाता है। सोलहवीं शताब्दी के उपरांत कई शताब्दियों तक जनसंचार माध्यम के रूप में प्रिंट मीडिया का ही एकाधिकार रहा है। इस दौरान प्रिंट मीडिया ने लोगों के बीच चेतना को जाग्रत करने का काम किया। कई देशों में अखबारों व पत्रकों के दम स्वतंत्रता आंदोलनों ने जन्म लिया।

मानवतावादी दृष्टिकोण व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्व दिया जाने लगा। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में प्रिंट मीडिया के दबदबे के बीच अपनी दस्तक दी। शुरुआती दौर में कुछ मीडिया विशेषकज्ञों नें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को प्रिंट मीडिया के भविष्य के लिए घातक साबित करने की कोशिश की, लेकिन समय के साथ स्पष्ट हो गया है कि दोनों ही माध्यमों का अपना महत्व है और अपनी-अपनी अलग विशेषताएं हैं। दोनों माध्यमों ने सहजीविता को अपनाया और साथ-साथ विकास किया। इन सबके बीच इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ से ही न्यू मीडिया ने अपनी मौज़ूदगी दर्ज कराई।

न्यू मीडिया की दस्तनक न केवल क्रातिकारी है बल्कि इसके दूरगामी परिमाण अभी से दिखाई देने लगे हैं। यह कंटेंट के प्रकार व प्रस्तुति से लेकर, उसकी 'डिलीवरी मैकेनिज्म' को ही नहीं बल्कि उसकी आधारभूत अवधारणा को ही बदलने की शक्ति रखता है। न्यू मीडिया की मूल प्रकृति संवादात्मक है। पाठक के सीधा संबंध इसकी प्रमुख विशेषता है। जहां पारंपरिक मीडिया में एक प्रकाशक व अनेक पाठक वाला एकाधिरवादी सिद्धांत काम करता है वहीं न्यू मीडिया अनेक प्रकाशक व अनेक पाठक वाले अधिक लोकतांत्रिक सिद्धांत पर काम करता है। इस मामले में न्यू मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व प्रिंट मीडिया दोनों को ही चुनौती दे रहा है। हालांकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व मीडिया के विस्तार की दृष्टि से इस चुनौती को सकारात्मक ही कहा जाएगा। भविष्य का अंदाजा लगाने वाला कोई भी व्यक्ति न्यू मीडिया को अपार संभावनाओं से भरे हुए माध्यम के रूप में ही लेगा।

मुख्य मीडिया को इस चुनौती से वाकिफ हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की जकड़बंदी से निकर न्यू मीडिया की संभावनाओं का प्रयोग की होड़ भी चल पड़ी है। दुनिया बड़े प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संस्थानों ने अपने संस्करणों इंटरनेट पर उपलब्ध करा

दिया है। सीएनएन, बीबीसी से लेकर भारत के प्रत्येक छोटे-बड़े टीवी न्यूज चैनल और अखबार इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध हैं, उन्हें कम्प्युटर के अलावा अपने मोबाइल पर भी आसानी पढ़ा और देखा जा सकता है। गुगल ने करोड़ों पुस्तकों का इंटरनेट पर पढ़ने व डाउनलोड करने लायक बनाने के लिए डिजिटाइजेशन में जुटा है।

सैकड़ों साल पुराना पारंपरिक मीडिया न्यू मीडिया की तकनीकी गोली लेकर स्वयं को जवान बनाने में लगा हुआ है। यह मीडिया के संक्रमण का महत्वपूर्ण दौर है, जिससे दूर रहना किसी भी मीडिया के अस्तित्व के लिए शंका पैदा कर सकता है। बीबीसी की ऑनलाइन मीडिया विभाग के प्रमुख के अनुसार भविष्य में वही मीडिया संस्थान जीवित रहेंगे जो तेज होंगे और रियल टाइम में सूचनाएं पहुंचाने व प्रतिक्रिया लेने में सक्षम होंगे।

भारत के मामले में इसका विचार किया जाए तो पता चलता है कि भारत का प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी न्यू मीडिया से गहरे से प्रभावित होने लगा है। सभी टीवी चैनल अपनी खबरों को न्यू मीडिया के ट्रेंड में शामिल कराने के लिए हैश टेग के साथ हेडलाइन देते हैं। न्यू मीडिया में ट्रेंड कर रही सूचनाओं व वीडियों के ऊपर भी टीवी चैनल विशेष कार्यक्रम बनाने लगें। हालांकि इन कार्यक्रमों में केवल उनकी सत्यता व असत्यता की अपने तरीके से जांच की जाती है। अमेरिका व पश्चिमी विकसित देशों में न्यू मीडिया प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए चुनौती बनकर उभरा है। अमेरिकी ऑडिट ब्यूरों के मुताबिक बड़े अखबारों के सर्कुलेशन में प्रतिवर्ष गिरावट दर्ज की जा रही है, लेकिन साथ ही इन अखबारों की वेबसाइट पर पाठकों की संख्या में प्रति वर्ष बढ़ोतरी हो रही है। इसे विशेषज्ञ पाठकों के ऑफलाइन से ऑनलाइन संस्करण की ओर स्थानांतरण मानते हैं। कुछ भारतीय मीडिया विशेषज्ञों का भी यही मानना है कि भविष्य

में यही ट्रेंड भारत में भी देखनो को मिल सकता है। फिलहाल भारत में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व न्यू मीडिया तीनों का विस्तार हो रहा है।

न्यू मीडिया संवाद और सूचना को सीमाओं से मुक्त करने वाला माध्यम है। यह विभिन्न जनसंचार माध्यमों को साथ लाने वाला, उनके बीच अंतर संबंध विकसित करने वाला, उन्हें विकसित, तेज और नई संभावनाओं से जोड़ने वाला माध्यम है। न्यू मीडिया का कलेवर इतना विशाल है कि वह अनेक पारंपरिक जनसंचार माध्यमों को एक साथ आने, अपनी पहचान को मजबूत बनाने हुए अभिव्यक्ति को ज्यादा प्रभावशाली व व्यापक बनाने का अवसर देता है। एक बेवपेज पर आडियो, वीडियो, टेक्स्ट, तस्वीर, पुरानी खबरों के लिंक, पाठकों की प्रतिक्रियाएं व जवाबों को एक ही जगह प्रस्तुत करने की क्षमता देता है। यह क्षमता पारंपरिक माध्यमों में नहीं है क्योंकि प्रिंट, रेडियो और टेलीविजन का कंटेंट केवल अपने विशेष माध्यमों में ही प्रसारित हो सकता है। हालांकि पूरी तरह स्वतंत्र माध्यम होने के कारण इसकी विषयवस्तु की प्रामाणिकता व गुणवत्ता की कुछ सीमाएं रहती हैं। न्यू मीडिया भविष्य का मीडिया है। यह सीमाओं को तोड़ने वाला मीडिया है। हम इतिहास के लिए उस दौर में हैं, जहां खबरों और सूचनाओं पर संस्थाओं के नियंत्रण की प्रवृत्ति खतरे में है।

पत्रकारिता के नए आयाम और ब्लॉग

ब्लॉग्स ने पत्रकारिता को स्वतंत्रता के नए पंख दिए हैं। इसने अभिव्यक्तियों को सीमा रहित मंच प्रदान किए हैं। पारंपरिक मीडिया द्वारा थोड़ी-बहुत विविधता के साथ एक ही शैली में पत्रकारिता की जा रही थी। पूर्व से निर्धारित फ्रेमों के अंतर्गत नवीनता

थी यदि किसी ने उन परिपाटियों को तोड़ने की कोशिश भी को तो वह भी परंपरा बन गया।

ब्लॉग्स ने अखबारों व न्यूज चैनलों को भरपूर चुनौतियां दी हैं। समय-समय पर ब्लॉग्स की खबरों की भी कड़ी समीक्षा हुई है। ब्लॉग्स पर डाली गई पोस्ट के जरिए कई ऐसे विवाद उभरे, जिनका असर न्यूज रूम में भी देखने को मिला। बाद में यही ब्लॉग लेखन जब फेसबुक पर गया तो इसका असर और व्यापक होता चला गया। उदाहरण के लिए शहीद सेना के जवान की बेटी गुरमेहर ने जब एक पोस्ट अपने ब्लॉग पर डाला तो न्यूज मीडिया से लेकर सड़कों तक पर बबाल मच गया है। कुछ लोगों ने उसका समर्थन किया और कुछ लोगों ने विरोध। ऐसा ही एक मामला कुछ साल पहले आया था। निर्मल बाबा नाम के एक तथाकथित चमत्कारिक बाबा के खिला न्यू मीडिया पर ऐसा अभियान चला कि समाज ने बाबा के साथ उसे दिखाने वाले चैनलों पर भी सवाल खड़े कर दिए। बाबा और उसे दिखाने वाले चैनलों के खिलाफ सैकड़ों ब्लॉग लिखे गए, हजारों टिप्पणियां की गईं। इस समांतर मीडिया का असर यह हुआ कि उसके प्रायोजित कार्यक्रम दिखाने वाले चैनलों पर ही निर्मल बाबा के खिलाफ बहस होने लगी। उसे दिखाने वाले चैनलों को लिखना पड़ा की उसके यह कार्यक्रम प्रायोजित हैं। साथ ही कुछ चैनलों को घोषणा करनी पड़ी की वे अब निर्मल बाबा को नहीं दिखाएंगे।

दिल्ली गैंगरेप की घटना के उपरांत ब्लॉग स्फीयर उसके खिलाफ जबरदस्त आक्रोश देखने को मिला। न्यू मीडिया ने लोगों को इंडिया गेट के सामने लाकर खड़ा कर दिया। न्यू मीडिया के सहारे आंदोलित हुई भीड़ के सामने सरकार भी असहज नजर आई। ब्लॉगिंग से अभिव्यक्ति का अभ्यास पाए लोगों ने अन्ना आंदोलन को खड़ा करने में बड़ी

भूमिका निभायी। अन्ना आंदोलन व भ्रष्टारचार के खिलाफ ब्लॉग स्फीयर में जमकर बहस हुई जो अखबारों व न्यूज चैनलों के मुकाबले ज्यादा समृद्ध मालूम पड़ी।

ब्लॉगिंग ने नए लेखकों को पब्लिक स्फीयर में शामिल होने का मौका दिया है। ब्लॉग ने नए समानंतर पत्रकारों, लेखकों व कवियों का पैदा किया है। ब्लॉग पर लिखने वाले ये नए कवि या लेखक न तो किसी साहित्कार के शिष्य न किसी पत्रकार के। बल्कि ब्लॉग पर लिखने वाले अधिकांश लोग वे पाठक व दर्शक हैं जो अपनी प्रतिक्रिया अखबार या न्यूज चैनल को देना चाहते थे, लेकिन उनकी प्रतिक्रिया पर पारंपरिक मीडिया द्वारा समुचित ध्यान नहीं दिया गया। ब्लॉग ने इन्हीं तमाम पाठकों व दर्शकों को लेखक में बदल दिया। इससे ब्लॉगिंग की दुनिया तेजी से समृद्ध हुई। उसे अलग-अलग पृष्ठभूमि से आए हुए लेखक मिले, जिससे विषयों की विविधता भी बढ़ गई।

ब्लॉगिंग पत्रकारिता की उर्जा व भाषा एकदम नई एवं अलग रही है। ब्लॉगिंग ने पत्रकारिता को उपसंपादक व संपादक के व्याकरणों से आजाद करने की कोशिश की है। बीते कुछ समय में ब्लॉग्स पर कुछ बहसे इतनी तीखी रही हैं कि उसने पत्रकारिता की दुनिया के मुद्दों को झकझोर कर रख दिया है।

ब्लॉग्स और लोकतंत्र

ब्लॉगिंग ने विश्व के उन लोगों की यादों को भी जिंदा रखा है जो सरकारी शोषण, दमन, असामाजिक तत्वों के अत्याचारों या आतंकवादी कार्रवाइयों का शिकार हुए हैं। सभी जानते हैं कि चीन में मीडिया पर सरकार का नियंत्रण रहता है। चीन के थ्येनआनमन चौक की अमानवीय घटना को याद करते ही मानवता कांप उठती है। ब्लॉगिंग की दुनिया ने थ्येनआनमन का अमानवीय घटना का आवाज दी और दुनिया भर लोगों का ध्यान

अपनी ओर आकर्षित किया। थ्येनआनमन चौक पर लोकतंत्र की मांग कर रहे लोगों ने चीन के अत्याचार के खिलाफ ब्लॉग्स का सहारा लिया। चीन का सरकारी मीडिया मुख्यधारा की आवाज को दबाने में कामयाब रहा हो लेकिन ब्लॉगर्स को वह नहीं रोक सका। यान्स ग्लटर नाम के ब्लॉग का चलाने वाली यान शैकलटन 1989 में थ्येनआनमन चौक पर हुए नरसंहार के बारे में लिखती हैं कि - 'मैं उस घटना को भूलूंगी नहीं, मैं आपको हमेशा याद रखने का वादा करती हूं। ... मैं पूरी दुनिया को आपकी, थ्येनआनमन चौक के छात्रों की याद दिलाती रहूंगी। मेरे बड़े भाइयों और बहनों'।

YAN SHAM-SHACKLETON, GLUTTER, HONG KONG

Yan Sham-Shackleton's blog was barred for a time

The problem is not that Google is censoring its search service, it is that China doesn't have free speech.

But I'm always supportive of kicking up a fuss about American companies. Yahoo, Google and Microsoft are part of the "Great Firewall". They helped build the infrastructure to block information.

If I send an email to anyone with a Yahoo.cn account which has the words "democracy" or "civil society", it will bounce back.

These companies are the keepers of information from a billion people for profit. Google is just the latest manifestation of the bigger story.

My blog has been affected by this. On my 30th birthday I wrote about my birthday wish: a democratic China. I went on holiday to China, stayed in a state-owned hotel, and checked my blog from there.

When I returned to Hong Kong, I couldn't get onto the site. Even the host had been blocked. It became a bit of a cause celebre. Bloggers around the world turned their sites black as a gesture of solidarity.

Some bloggers may say this is not an important issue but I don't think enough attention can be paid to Chinese internet censorship. If I were based a few miles across the border, I wouldn't be able to do what I am doing now.

The internet is the way forward to break the silence in China. Every media outlet is state owned. The internet is the back

दमन और अत्याचार के विरूद्ध के संघर्ष को ब्लॉगिंग ने आवाज दी है। बहरीन में सरकार द्वारा आम लोगों पर किए जा रहे अत्याचार को एक ब्लॉगर ने कैमरे से कैद किया और अपने ब्लॉग चनाद बहरीनी पर डाल दिया। इसके बाद दुनिया का ध्यान इस ओर गया और घटना मीडिया की सुर्खियां बना। ऐसे ही उदाहरण ईराक युद्ध के दौरान देखने को मिले। इराक युद्ध के दौरान बगदाद ब्लॉगर नाम से जाने गए एक गुमनाम ब्लॉगर ने सलाम पैक्स नाम के अपने ब्लॉग में इराक युध्द का आंखों देखा हाल लोगों तक पहुंचाया। दुनिया भर की मीडिया ने उसके फोटो और सूचनाओं को अपनी खबरों में दिखाया। ब्लॉगिंग को लोकप्रिय बनाने में बगदाद ब्लॉगर की बड़ी भूमिका मानी जाती है। बगदाद ब्लॉगर का असली नाम सलाम था। बीबीसी और वॉयस ऑफ अमेरिका ने बगदाद ब्लॉगर पर विशेष कार्यक्रमों का प्रसारण किया। कार्यक्रम के प्रसारण के बाद ही सलाम के पिता को पता चल सका की पूरे दिन कम्प्युटर पर बैठे रहना उसका शर्मीला पुत्र सलाम ही बगदाद ब्लॉगर है। बगदाद ब्लॉगर की मीडिया के जरिए पहचान खुलने के बाद सद्दाम हुसैन की सेना से सलाम की जान को खतरा पैदा हो गया था। सौभाग्य से ऐसा कुछ नहीं हुआ। सलाम ने इराक युद्ध के बाद गार्जियन व अन्य अखबारों के लिए कॉलम लिखे।

आतंक व अत्याचार का विरोध करने वाले ये ब्लॉगर्स स्वयं भी लोकतंत्र के विरोधियों का शिकार होते रहे हैं। ईरान सरकार ने अपने विरूद्ध आवाज उठाने वाले ऐसे ही एक ब्लॉगर अराश सिगारची को जेल में डाल दिया। अराश सिगारची ने सिगारची (sigarchi.net) नाम का फारसी भाषा में एक ब्लॉग बनाया हुआ था। उसने अमेरिका और ईरान के बीच एक गुप्त समझौते को उजागर कर दिया। उसके ब्लॉग के मुताबिक ईरानी सरकार ने अमेरिकी बंदियों को छुड़वाने में मदद करने के लिए हथियारों की खरीददारी का गुप्त समझौता किया था। यह खुलासा ईरान गेट से प्रसिद्ध हुआ।

پنجره التهاب
آرش سیگارچی، روزنامه نگار ایرانی مقیم آمریکا
خانه
سیگارچی ها
صفحه آرش
پنجره التهاب
ENGLISH
روزنگار
لافهای مستی
ایرانگرد
درباره من
فیس بوک
تماس
وقتی محسن رضایی دروغ می گوید
منتشرشده در مهر ۴, ۱۳۹۵ | نوشتن دیدگاه
محسن رضایی دبیر مجمع تشخیص نظام ایران که لابد برای انتخابات بعد هم نامزد است، در اینستاگرام شخصی اش ادعایی کرده که دروغ است.
rezaee_ir
11h
جعبه سیاه قضیه مک فارلین
آخرین نوشته ها
وقتی محسن رضایی دروغ می گوید
بازجویی داوطلبانه کلینتون مهم است، اما نظر لورتا لینچ مهمتر
۱۶ یا ۱۰ سال، فرع است؛ بجای کاهش مصلحتی حکم، نرگس محمدی را آزاد کنید
چرا ماجرای دستگیری متهم انفجار حزب جمهوری اسلامی مهم است …
روزنگار؛ گزارش من در VOA
پیله براران

सिगारची का ब्लॉग

اول ببینیم ماجرای مک فارلین و سفرش به ایران چیست. براساس اطلاعات عمومی، ماجرای ایران–کُنترا (به انگلیسی: Iran Contra affair) که به ماجرای مک‌فارلین و ماجرای ایران گیت نیز معروف است، به معامله تسلیحاتی ایران با ایالات متحده آمریکا و اسرائیل از ۲۰ اوت ۱۹۸۵ تا ۴ مارس ۱۹۸۷ (۲۹ مرداد ۱۳۶۴ – ۱۳ اسفند ۱۳۶۵) بازمی‌گردد. در این ماجرا آمریکا از طریق نفوذ ایران سعی در آزادسازی گروگان‌های آمریکایی در لبنان کرد و در ازای آن برخی قطعات ادوات جنگی و نظامی را که به واسطه تحریم امکان فروش آنها به ایران نبود، در اختیار ایران قرار داد. پول فروش این تسلیحات به طور پنهانی به ضد انقلابیون نیکاراگوئه موسوم به کنترا داده می‌شد. اسرائیل نیز بخشی از معامله فروش تسلیحات به ایران را در دست گرفت و از این طریق سعی در شکست‌نخوردن ایران در مقابل جبهه متحد عربی مخالف اسرائیل داشت. این ماجرا به وسیله نامه منوچهر قربانی فر به فتح الله امید نجف آبادی اطلاع رسانی شد و برای اولین بار در بیت آیت الله منتظری مطرح شد. گفته می‌شود سید مهدی هاشمی به وسیله روزنامه الشراع لبنان این ماجرا را فاش کرد. کنگره آمریکا در آن زمان کمک مالی به شورشیان نیکاراگوئه را ممنوع کرده بود و ماجرای ایران–کنترا بعد از رسوایی واترگیت بزرگ‌ترین رسوایی سیاسی آمریکا لقب گرفت.

همانطور که اینجا ذکر شد، هدف آمریکایی ها در آن ماجرا «آزادسازی گروگان های آمریکایی» در لبنان بود. آمریکا به ایران پیشنهاد کرد چنین کند و در ازای آن سلاح دریافت کند. بنابراین آقای رضایی دروغ می گوید.

اساسا آقای رضایی سه دهه بعد از جنگ اصرار دارد عملکردش را درست جلو دهد در حالیکه می دانیم او اشتباهات کلیدی در جنگ داشت که برسرنوشت ایران و جنگ تاثیر داشت. نمونه اش عملیات کربلای چهار که خسارت سهمگینی وارد کرد.

آقای رضایی مدعی شده چون آمریکایی ها فهمیدند ایران، عراق را شکست می دهد، باب مذاکره را باز کردند.

تاریخ و مستندات این را نمی گوید. سال ۶۴ وضعیت جنگ عراق و ایران تغییری نداشت. اتفاقا برعکس گفته آقای رضایی وقتی مک فارلین به ایران آمد که ایران پیشرفت محسوسی در جنگ نداشت. عملیات بدر که اسفند ۶۲ با ناکامی سپاه همراه شده بود، بهانه ای شد که در تیر ۶۴، عملیات قادر توسط ارتش برگزار شد که البته آنها هم توفیقی نداشتند.

ब्लॉग में ईरान गेट कांड का खुलासा

ऐसा ही एक अन्‍य उदाहरण है अनार्कएंजल नाम के ब्लॉगर का। जब ब्लॉगर अपने ब्लॉग पर तार्किक व प्रगतिवादी विचार लिखे तो मुस्लिम कट्‌टरपंथियों ने उसके खिलाफ मौत का फतवा जारी कर दिया। सिंगापुर में दो चीनी ब्लॉगरों द्‌वारा स्थानीय कानूनों की आलोचना करने पर उन्हें जेल में डाल दिया गया। इसी प्रकार के अन्य उदारण में

संयुक्त राष्ट्र के एक राजनियक द्वारा ब्लॉग पर टिप्पणी करने पर उसे सूडान ने देश छोड़ने का आदेश दे दिया था। यानी ब्लॉग की स्वतंत्रता के लिए भी चुनौतियां कम नहीं हैं।

ब्लॉग संचालन और तकनीकी पक्ष

ब्लॉग्स के इतने लोकप्रिय होने का सबसे बड़ा कारण उसका तकनीकी रूप से आसान संचालन है। ब्लॉग संचालन के लिए किसी प्रकार डोमेन लोने, वेबस्पेस खरीदने खरीदने की आवश्यकता नहीं होती है। ब्लॉग लेखन के लिए किसी भी प्रकार के बजट की आवश्यकता नहीं होती है। ब्लॉग लेखन का कार्य शून्य बजट से शुरू किया जा सकता है, उसके लिए केवल लेखन रचनात्मकता और केवल कम्प्युटर व इंटरनेट की बेसिक जानकारी होना आवश्यक है। साथ किसी ब्लॉग को अखबार या टीवी चैनल के तरह न तो आरएनआई नंबर की आवश्यकता होती और न ही किसी प्रकार के लाइसेंस की। साथ ब्लॉग्स को किसी भी देश की सीमाओं नहीं बाधा जा सकता है। इसके विपरीत किसी भई देश नें अखबार या समाचार निकालने के लिए उस देश की विशेष अनुमति व लाइसेंस लेने होते हैं। ब्लॉगिंग का संसार पूरी तरह आत्मनिर्भर, स्वतंत्र और मनमौजी किस्म का रचनात्मक संसार है। यहां जितना छोटी सी टिप्पणी का स्वागत है वहीं ज्ञान से भरे बड़े-बड़े लेख भी उतने हा महत्व रखते हैं।

ब्लॉग पर पाठकों का ट्रैफिक बढ़ाना भी छोटे से तकनीकी ज्ञान से संभव हो जाता है। एक ब्लॉगर अपने ब्लॉग पर आसानी से वीडियो, ऑडियो, ग्राफ व चित्र भी आसानी से लगा सकता है। विभिन्न वेबसाइटों के लिंक को भी आसाने से इनसर्ट किया जा सकता है।

इतना ही नहीं ब्लॉग के माध्यम से आय भी की जा सकती है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि दुनिया में इतनी कोई कंपनी मुफ्त देती है तो उसके संचालन के लिए कहीं न कहीं से तो कीमत बसूलेगा। आज जितनी भी प्रतिष्ठित ब्लॉग सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनियां हैं उनका कमाई का जरिया बाजार से प्राप्त विज्ञापन हैं। ब्लॉग संचालन करने वाले लोगों की सहायता से विज्ञापन प्रदाता कंपनियों के उत्पाद की जानकारी लाखों-करोड़ों लोगों तक पहुंचती है, इससे उनका अर्थशास्त्र मजबूत होता है। हालांकि यह भी यह सत्य कि कोई भी ब्लॉगर केवल ब्लॉग की कमाई के जरिए रोजी-रोटी को लेकर निश्चिंत नहीं हो सकता है। लेकिन यह भी सच्चाई है कि इस माध्यम में खर्चा न के बराबर है और स्थानीय विज्ञापन देकर थोड़ी-बहुत आय भी की जा सकती है। इसके लिए गुगल एडसेंस की मदद भी ली सकती है।

ब्लॉगों के माध्यम से लाभ अर्जित करने का एक तरीका यह भी है कि ब्लॉग्स को समाचार या फीचर्स सेवा करने वाली एजेंसी की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। छोटे समाचार पत्र संस्थानों को समाचार व विचारात्मक लेख उपलब्ध कराकर नियमित रूप से कुछ राशि प्राप्त की जा सकती है। साक्षरता व जागरूकता के साथ ग्रामीण क्षेत्रों से निकलने वाले स्थानीय अखबारों की संख्या बढ़ रही है। साथ ही, पूर्व से प्रकाशित हो रहे अखबारों के पृष्ठों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि ब्लॉग के मंचों को यह व्यवसाय के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

संदर्भ

1. क्लाइन व बरस्टीन. (2005). *ब्लॉग: हाउ दा न्यूएस्ट मीडिया रिवोल्यूशन इज चैंजिंग पॉलिटिक्स, बिजनेस एंड कल्चर.* केरौसेल प्रेस.

2. अविनाश वाचस्पति व रविन्द्र. (2011). *हिन्दी ब्लॉगिंग: अभिव्यक्ति की नई क्रांति.* हिन्दी साहित्य निकेतन.
3. जिल बॉलकर रेटबर्ग. (2008). *ब्लॉगिंग: डिजिटल मीडिया एंड सोसाइटी.* पॉलिटी पब्लिकेशन.
4. रिबेका ब्लड. (2002). *वी हेव गोट ए ब्लॉग: हाउ वेबलॉग्स चैंजिंग अवर कल्चर.* परसियस बुक.
5. सुनील सक्सेना. (2012). *वेब जर्नलिज्म 2.0.* टाटा मैक्ग्रा हिल.
6. रवीन्द्र प्रभात. (2011). *हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास.* हिंदी साहित्य निकेतन.
7. यूजीनिया सियापारा व एड्रियास वेजेलिस. (2012). *द हैंडबुक ऑफ ग्लोबल ऑनलाइन जर्नलिज्म.* विली ब्लैकवेल
8. क्रिस एटन एंड जेम्स एफ हेमिल्टन. (2008). *अल्टरनेटिव जर्नलिज्म.* सेज पब्लिकेशन.
9. जेनेट कॉलोजी. (2006). *कवर्जेंस जर्नलिज्म: राइटिंग एंड रिपोर्टिंग अक्रॉस द न्यूज मीडिया.* रॉमैन एंड लिटिलफिल्ड पब्लिशर्स.
10. स्टुअर्ट एलन. (2006). *ऑनलाइन न्यूज.* मैक्ग्रा हील पब्लिसिंग हाउस.
11. मार्कस पैलिसियस. (2003). *ऑनलाइन जर्नलिज्म बाय जर्नलिस्ट.*
12. अमिताभ श्रीवास्तव व आज्ञाराम पाण्डेय. (जनवरी, 2013). *ए कंटेंट एनालिसिस ऑफ जर्नलिस्ट ब्लॉग्स विद स्पेशल रेफरेंस टू ड्राइविंग फोर्स टू ब्लॉग राइटिंग.*

ब्लॉग लेखक परिचय

रवीश कुमार

रवीश कुमार इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का एक बड़ा नाम है। वे एनडीटीवी इडिया में वरिष्ठ कार्यकारी संपादक हैं।[1] बतौर एंकर व रिपोर्टर समाज और राजनीति के मुद्दों को एक अलग नजरिए से उठाने के कारण उन्हें पत्रकारिता जगत में विशेष स्थान प्राप्त है। अपनी खास रिपोर्टिंग के लिए रवीश कुमार को 2017 में कुलदीप नैय्यर पत्रकारिता पुरस्कार, 2013 में पत्रकारिता में उत्कृष्टता के लिए रामनाथ गोयनका व वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पत्रकार (प्रसारण) पुरस्कार, 2010 व 2014 में गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से नवाजा गया है।[2] उनके टीवी पर किए जाने वाले कार्यक्रम प्राइम टाइम, रवीश की रिपोर्ट व हम लोग हैं। रवीश मूलत: बिहार राज्य के मोतिहारी के रहने वाले हैं। पत्रकारिता की शिक्षा आइआइएमसी से प्राप्त की।

रवीश कुमार का ब्लॉग 'कस्बा' है (www.naisadak.com) ।[3] रवीश कुमार ने कस्बा ब्लॉग 2007 में प्रारंभ किया। कस्बा ब्लॉग का वेब यूआरएल 'नई सड़क डॉट ओआरजी' नाम से है। ब्लॉग पर वे सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों पर मुखर होकर लिखते हैं। रवीश कुमार अपने परिचय के बारे में स्वयं ब्लॉग पर लिखते हैं कि लोग मुझे टीवी पत्रकार व टीवी एंकर के रूप में पहचानते हैं। वे लिखते हैं कि मेरा दूसरा परिचय ब्लॉगर के रूप में रहा है, ब्लॉग के शुरूआती दौर से ही मुझे ब्लॉगर पुकारा जाने लगा। रवीश के अनुसार ब्लॉग ने उन्हें उन जगहों को भरने का मौका दिया जो टीवी में कार्य करते हुए

रह जाती हैं। इसके जरिए वे सड़क चलते खीचीं गई गली मोहल्लों की तस्वीर चस्पा करते रहते हैं, जोकि मुख्य धारा की पत्रकारिता में अपना स्थान बनाने से चूक जाती हैं। हालांकि इन तस्वीरों की पोस्ट में भी पत्रकारिता नजरिए की गहराई होती है। वे अंत में पाठकों का 'आते रहियेगा' शब्द के साथ आमंत्रित भी करते हैं।

रवीश कुमार ने अपने ब्लॉग 'कस्बा' का उपशीर्षक या 'सबहेड' शौके दीदार अगर है तो नजर पैदा कर दिया है। जो कि उनके ब्लॉग की अंतरात्मा के बारे में बहुत कुछ कहता है। उन्होंने अपने ब्लॉग को सात पेजों में बांट रखा है। जोकि क्रमश 'मिजाज', 'ब्लॉग', 'गेस्ट ब्लॉग', 'आर्टिकल्स', 'फोटोग्राफी', 'वीडियो', 'टीवी शो' हैं। ब्लॉग पर दाएं तरफ 'गेजेट्स कॉलम' में 'ट्विटर लिंक', अपने पसंदीदा ब्लॉग की सूची 'लिखा पढ़ी' नाम से, 'फेसबुक लिंक' और आर्काइव के लिए 'पोस्ट कैलेंडर' क्रमश: ऊपर से नीचे की ओर उपयोगी गेजेट्स लगा रखे हैं। रवीश ने ब्लॉग हेड में 'कस्बा' शब्द को लाल रंग दिया है।

रवीश कुमार ने ब्लॉग पर स्वयं अपना परिचय नीचे दिए गए ब्लैक पैनल पर दिया है। परिचय के साथ स्वयं का पासपोर्ट साइज रंगीन चित्र भी लगा रखा है। नीचे दिए ब्लैक पैनल पर ही सोशल मीडिया के आइकन लगे हुए हैं, जिसके जरिए ब्लॉग पाठक रवीश कुमार के ब्लॉग को अपने फेसबुक पेज, ट्विटर हैडल, गुगल प्लस आदि पर शेयर कर सकते हैं, साथ ही मेल आइकन के जरिए स्वयं व मित्रों को मेल भी कर सकते हैं। इसके अलावा प्रत्येक पोस्ट को भी अलग से भी शेयर किया जा सकता है।

रवीश कुमार ने वर्ष 2016 में 1 जनवरी से लेकर 31 दिसंबर के बीच अपने ब्लॉग 'कस्बा' पर राजनीतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, मीडिया, आतंकवाद आदि विषयों पर 300 पोस्ट डाली है।

रवीश कुमार ने 'कस्बा' पर जनवरी ने में 19, फरवरी में 24, मार्च में 24, अप्रैल में 25, मई में 25, जून में 27, जुलाई में 25, अगस्त में 30, सितंबर में 38, अक्टूबर में 26, नवंबर में 15 और दिसंबर में 22 पोस्ट डाली हैं।रवीश कुमार ने वर्ष 2016 में

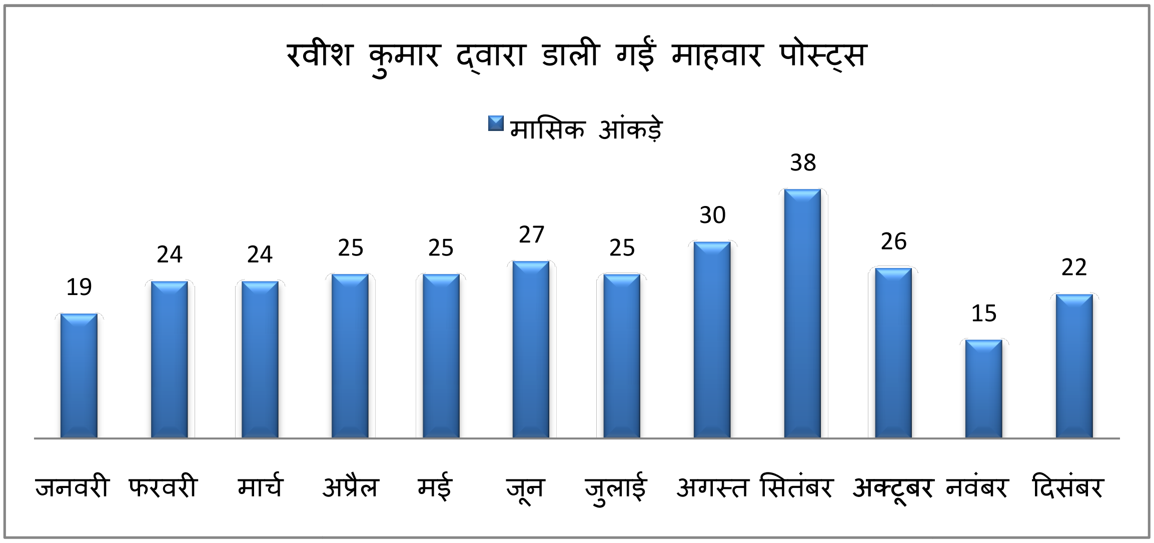

सामाजिक-सास्कृतिक विषयों पर 46, राजनीतिक विषयों पर 92, आर्थिक विषयों पर 27,

मीडिया पर 65, आतंकवाद पर 6, स्वयं के विषय में 25 व अन्य विषयों पर 39 पोस्ट्स डाली हैं।

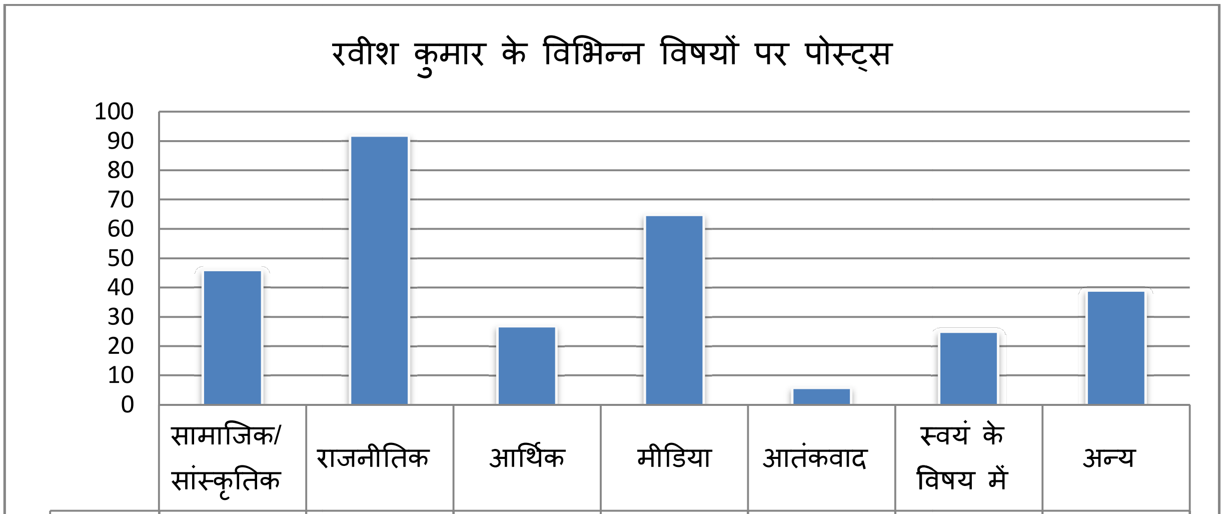

	सामाजिक/ सांस्कृतिक	राजनीतिक	आर्थिक	मीडिया	आतंकवाद	स्वयं के विषय में	अन्य
विषय	46	92	27	65	6	25	39

रवीश कुमार द्वारा विभिन्न विषयों पर डाली गई पोस्ट्स का विषय अनुसार प्रतिशत

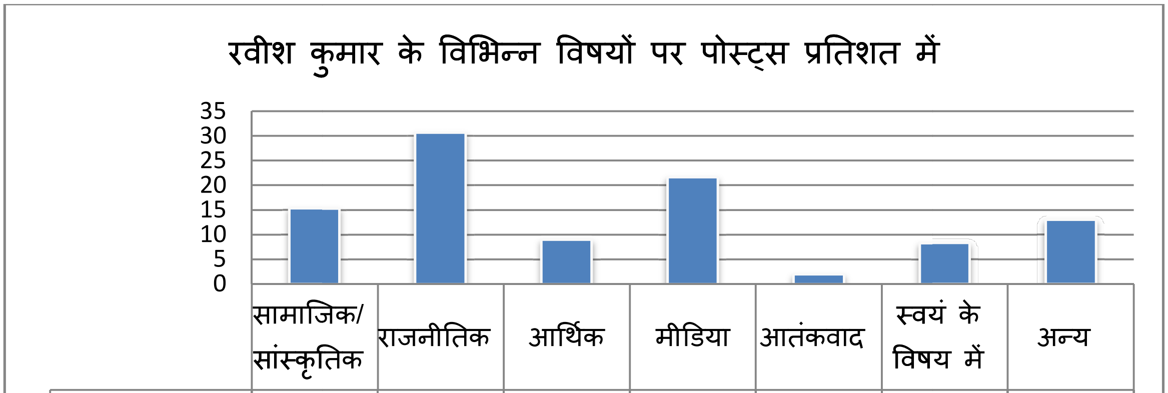

	सामाजिक/ सांस्कृतिक	राजनीतिक	आर्थिक	मीडिया	आतंकवाद	स्वयं के विषय में	अन्य
विषय प्रतिशत	15.33	30.66	9	21.66	2	8.33	13

पत्रकारिता जगत में रवीश कुमार को वामपंथी विचारधारा का टीवी पत्रकार माना जाता है।[4]

पुण्य प्रसून वाजपेयी

पुण्य प्रसून वाजपेयी जाने-माने टीवी एकंर है। उनके पास प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में 20 वर्ष से अधिक काम करने का अनुभव है। वाजपेयी एबीपी न्यूज से पहले आज तक, जनसत्ता, संडे आब्जर्बर, संडे मेल, लोकमत, जीन्यूज, एनडीटीवी आदि मीडिया समूह के साथ काम कर चुके हैं। उनकी राजनीति मेरी जान, डिजास्टर: मीडिया एंड पॉलिटिक्स, संसद: लोकतंत्र या नजरों का धोखा, आदिवासियों पर टाडा आदि प्रमुख किताबें प्रकाशित हुई हैं। उन्हे पत्रकारिता में उत्कृष्टता के लिए दो बार रामनाथ गोयनका पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, पहली बार 2005-06 में और दूसरी बार 2007-08 में प्रदान किया गया। रवीश का ब्लॉग 'प्रसूनवाजपेयी.इट्समाइब्लॉग.कॉम' है। रवीश ने वर्ष 2008 में यह ब्लॉग बनाया।

पुण्य प्रसून वाजपेयी अपने ही नाम से बना रखे ब्लॉग 'प्रसूनवाजपेयी.इट्समाइब्लॉग.कॉम' (http://prasunbajpai.itzmyblog.com/) पर समाजिक व राजनीतिक सरोकारों पर नियमित

रूप से लिखते हैं। रवीश कुमार ने नीले रंग के 'ब्लॉग हैडर' में स्वयं की 'मिड शॉट' तस्वीर के साथ माइक व अपना नाम लिखा हुआ है। ब्लॉग में दायीं तरफ अनेक कॉलम में गेजेट्स लगाए हुए हैं। जिसमें ऊपर से नीचे क्रमश ईमेल पर सब्क्राइब कीजिए, ट्विटर पर जुड़े, नई किताबें, मेरे ब्लॉग को अंग्रेजी में पढ़िए, मेरा परिचय, पोस्ट्स लेबल और आर्काइव दे रखा है। नई किताबें कॉलम के अंतर्गत पुण्य प्रसून वाजपेयी ने स्वयं द्वारा लिखी गईं दो पुस्तकों 'राजनीतिक मेरी जान' और 'डिजास्टर - मीडिया और पॉलिटिक्स' की तस्वीरें दी हुई हैं।

मेरा परिचय कॉलम के अंतर्गत पुण्य प्रसून वाजपेयी ने स्वयं के बारे में 'दूसरा व्यक्ति बिंदु' शैली में लिखा है। उन्होंने स्वयं के बारे में बताया है कि उन्हें प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में 20 साल से अधिक कार्य करने का अनुभव है। साथ ही उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में स्वयं को मिले 'इंडियन एक्सप्रेस गोयनका अवार्ड फॉर एक्सीलेंस' और रामनाथ गोयनका पुरस्कारों का जिक्र किया है। पुण्य प्रसून वाजपेयी समाजवादी विचारधारा का पत्रकार माना जाता है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने वर्ष 2016 में 1 जनवरी, 2016 से 31 दिसंबर, 2016 के बीच विभिन्न विषयों पर अपने ब्लॉग पर 64 पोस्ट्स लिखीं। पुण्य प्रसून वाजपेयी ने जनवरी में 5, फरवरी में 4, मार्च में 5 अप्रैल में 3, मई में 6, जून में 4, जुलाई में 10, अगस्त में 1, सितंबर में 7, अक्टूबर में 6, नवंबर में 7 और दिसंबर में 6 पोस्ट डाली हैं।

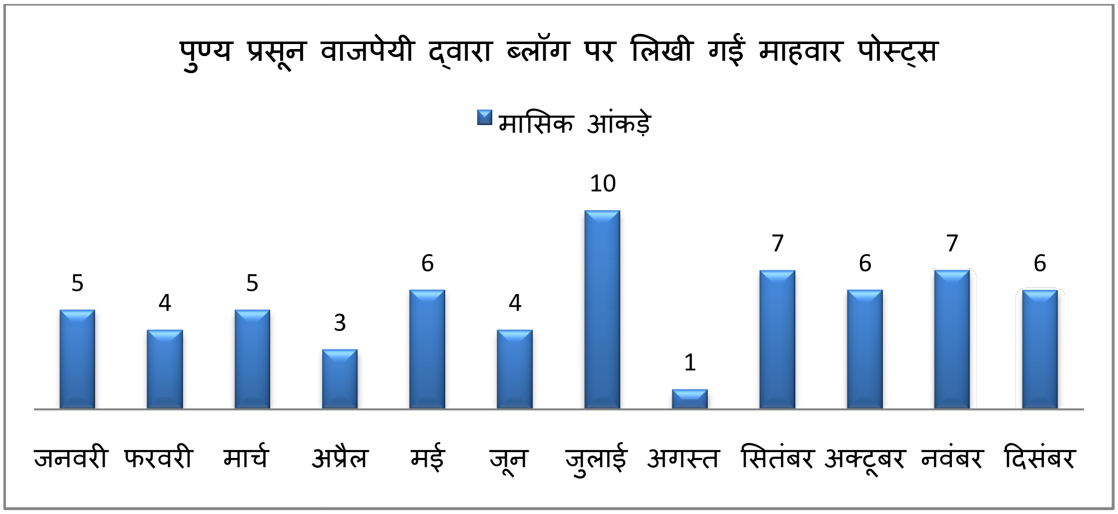

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने अपनी पोस्ट्स में सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, मीडिया, आतंकवाद और स्वयं के विषय सहित अन्य विषयों पर लेख लिखे हैं। वर्ष 2016 में सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर 9, राजनीतिक पर 27, आर्थिक गतिविधियों पर 7, मीडिया पर 6, आतंकवाद पर 10, अन्य विषयों पर 5 पोस्ट्स लिखी हैं। पुण्य प्रसून वाजपेयी ने स्वयं के बारे में कोई भी पोस्ट्स नहीं लिखी है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी को **समाजवादी** विचारधारा का पत्रकार माना जाता है। दिसंबर 2001 में संसद पर हुए हमले के दौरान लगातार 5 घंटे रिपोर्टिंग करने के लिए खूब चर्चा बटोरी। पुण्य प्रसून वाजपेयी किसी खबर को समग्रता से पेश करने वाले पत्रकार माने जाते हैं। पुण्य पुण्य वाजपेयी की राजनीतिक और सामाजिक रिपोर्टिंग एक अलग पहचान रखती है।

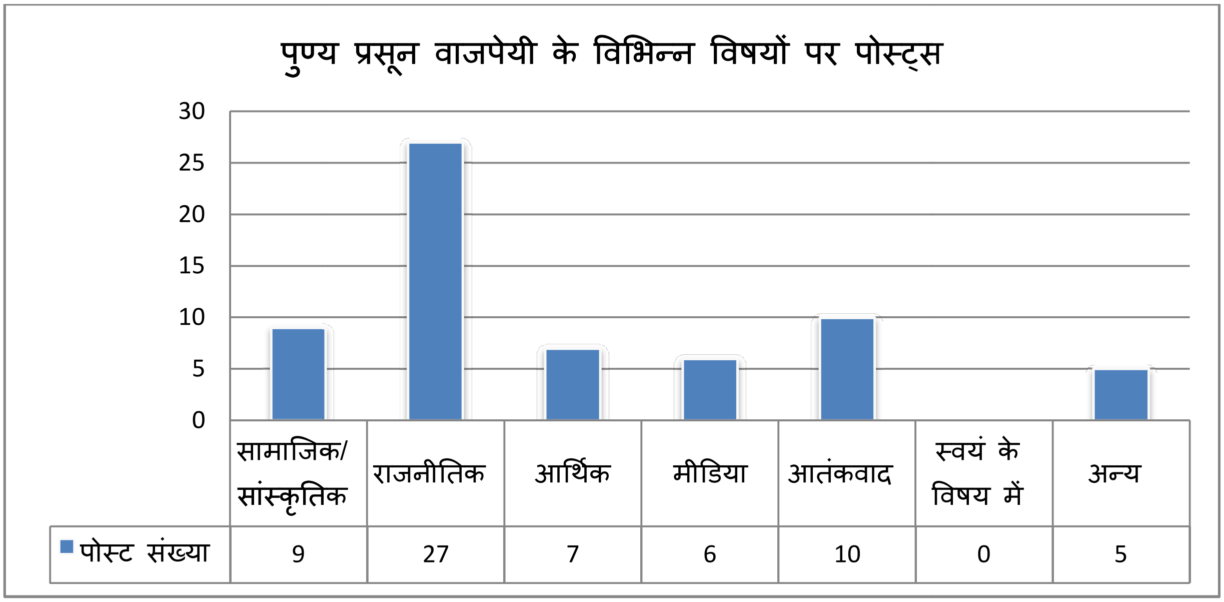

पुण्य प्रसून वाजपेयी की विभिन्न विषयों पर लिखी गई पोस्ट्स का विषय अनुसार प्रतिशत

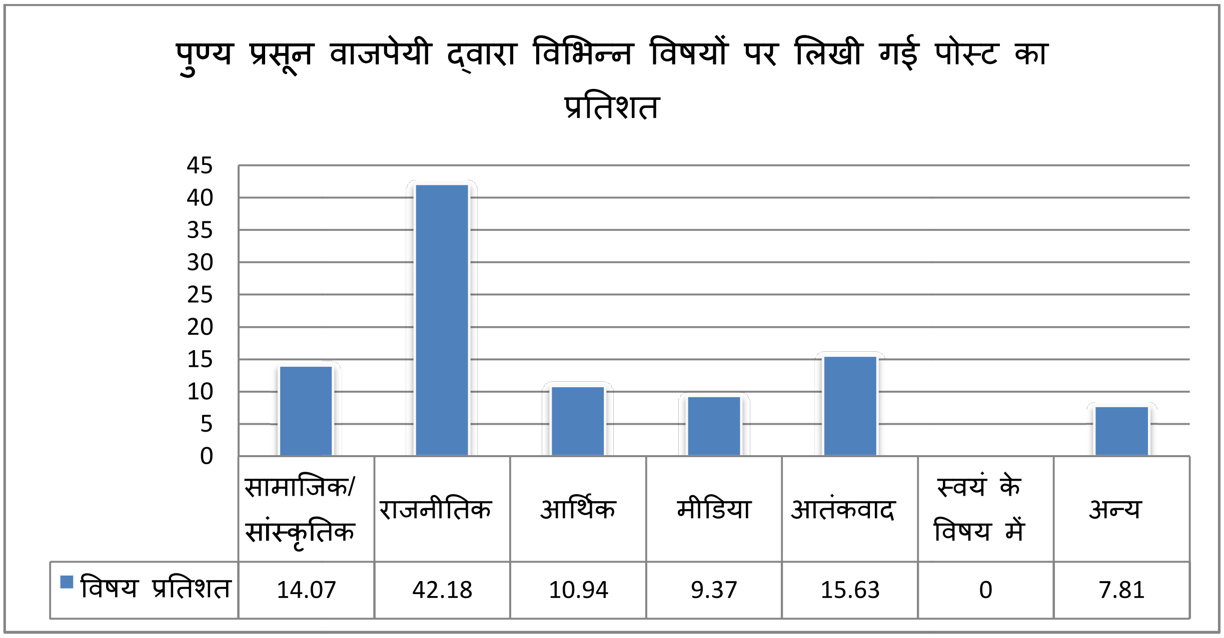

अंशुमान तिवारी

अंशुमान तिवारी भाषायी आर्थिक पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान रखते हैं। अंशुमान तिवारी वर्तमान में इंडिया टुडे हिन्दी मैगजीन में संपादक पद पर कार्यरत हैं। इससे पहले वे दैनिक जागरण में सहायक संपादक व नेशनल ब्यूरो के हेड थे। वे मनी भास्कर डॉट कॉम के संपादक रहे। तिवारी आर्थिक पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। कॉमनवेल्थ - 2010 घोटले को उजागर करने में उनकी बड़ी भूमिका मानी जाती है। इस इन्वेस्टीगेटिंग रिपोर्टिंग के लिए उन्हें रामनाथ गोयनका सम्मान से सम्मानित किया गया।

अंशुमान तिवारी का ब्लॉग का नाम 'अर्थार्थ अंशुमान' है। ब्लॉग के नाम में 'अर्थ' शब्द आर्थिक को संबोधित करता है। अंशुमान तिवारी अपने ब्लॉग आर्थिक विषयों पर मुखर होकर लिखते हैं। इसके अलावा

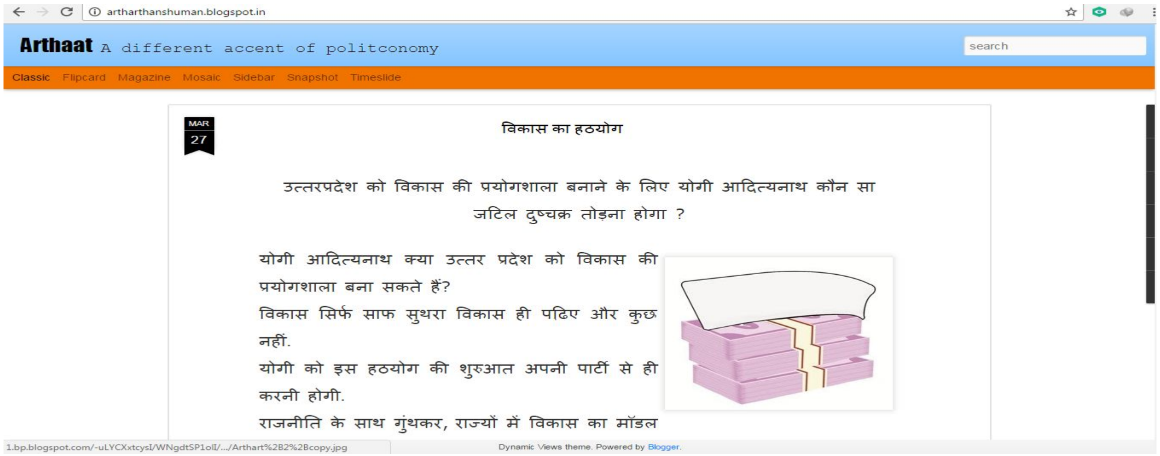

वह समाज, राजनीति आदि से संबंधित समसामयिक विषयों पर भी लिखते रहते हैं। उनके समाज और राजनीति से संबंधित अधिकांश समसायिक लेख भी आर्थिक परिदृश्य के आसपास ही रहते हैं। अंशुमान तिवारी ने वर्ष 2009 से ब्लॉगिग करना प्रारंभ किया। अंशुमान तिवारी ने अपना ब्लॉग गूगल के ब्लॉगर प्लेटफॉर्म पर बना रखा है।

अंशुमान तिवारी ने वर्ष 2016 में 1 जनवरी, 2016 से लेकर 31 दिसंबर, 2016 तक कुल 52 लेख अपने ब्लॉग पर लिखे। जिसमें जनवरी में 4, फरवरी में 4, मार्च में 3, अप्रैल में 4, मई में 5, जून में 4, जुलाई में 4, अगस्त में 5, सितंबर में 5, अक्टूबर में 4, नवंबर में 5, दिसंबर में 5 पोस्ट्स अपने पर लिखीं। ब्लॉग पर लिखी गई अधिकांश पोस्ट्स पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में अंशुमान तिवारी बाइलाइन से प्रकाशित हुई हैं।

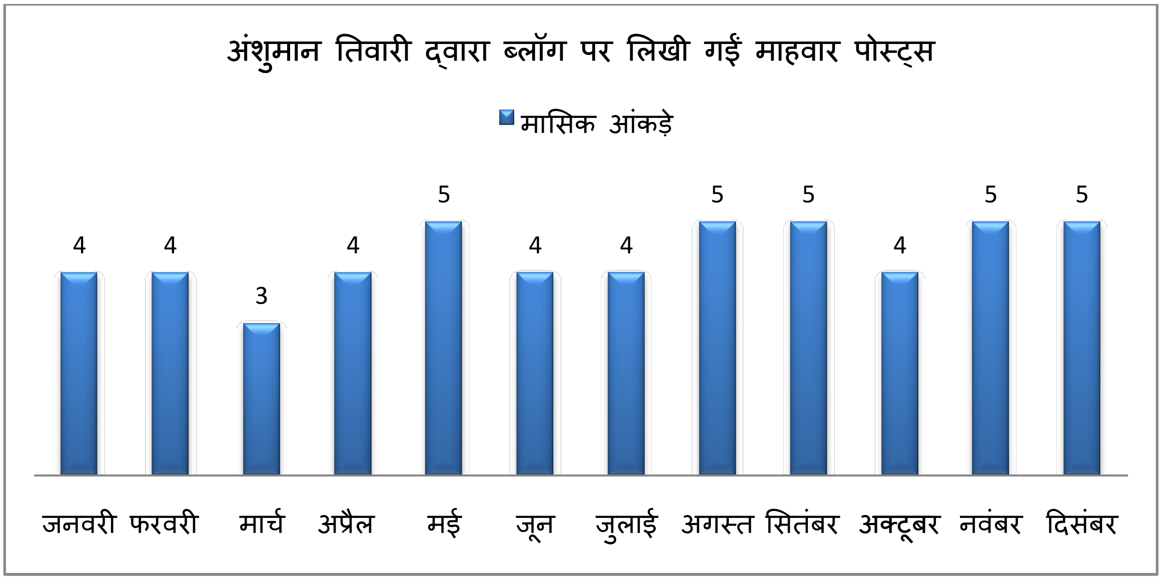

अंशुमान तिवारी ने वर्ष 2016 में 1 जनवरी, 2016 से 31 दिसंबर, 2016 के बीच ब्लॉग 'अर्थार्थ अंशुमान' पर सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और आतंकवाद से

संबंधित लेख लिखे हैं। अंशुमान तिवारी ने मीडिया, स्वयं के विषय में कोई पोस्ट नहीं लिखी है। उन्होंने सबसे अधिक लेख आर्थिक विषय पर लिखे हैं। कुल लिखे गए 52 लेखों में से 43 लेख आर्थिक विषयों पर हैं, जबकि सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर 2 लेख, राजनीतिक विषयों पर 6 लेख और आतंकवाद से संबंधित 1 लेख लिखा है।

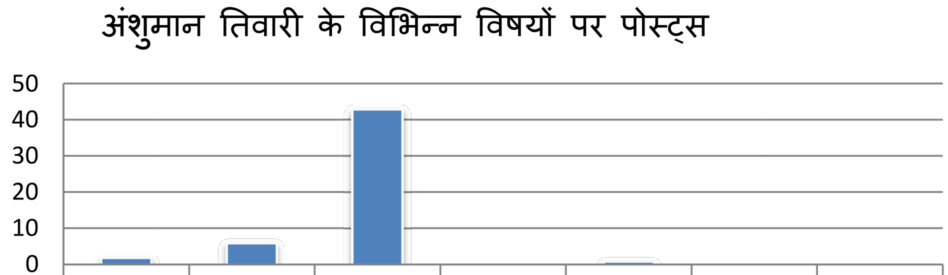

	सामाजिक/ सांस्कृतिक	राजनीतिक	आर्थिक	मीडिया	आतंकवाद	स्वयं के विषय में	अन्य
पोस्ट संख्या	2	6	43	0	1	0	0

अंशुमान तिवारी द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखी गई पोस्ट्स का विषय अनुसार प्रतिशत

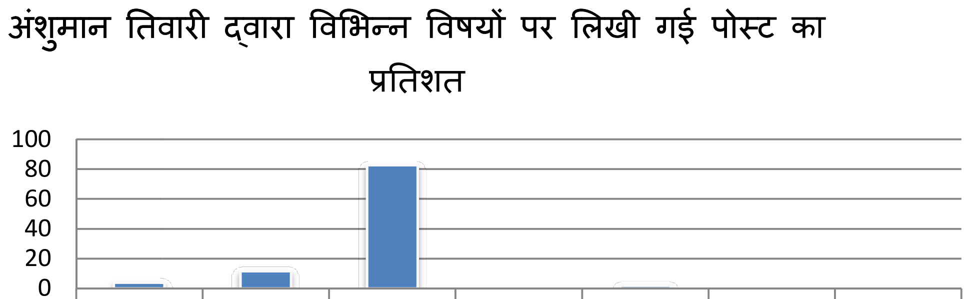

	सामाजिक/ सांस्कृतिक	राजनीतिक	आर्थिक	मीडिया	आतंकवाद	स्वयं के विषय में	अन्य
विषय प्रतिशत	3.85	11.54	82.69	0	1.92	0	0

शशि शेखर

शशि शेखर हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम है। वर्तमान में वे हिन्दुस्तान मीडिया समूह के 'दैनिक हिन्दुस्तान', कादंबिनी और नंदन के संपादक हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विषय में एमए शशि शेखर पिछले करीब तीस वर्षों से विभिन्न मीडिया समूहों में संपादकीय भूमिका में काम कर रहे हैं। शशि शेखर महज 24 वर्ष की आयु में तत्कालीन प्रतिष्ठित हिन्दी दैनिक समाचार पत्र 'आज' के संपादक बन गए थे। इसके बाद उन्होंने आजतक, अमर उजाला और हिन्दुस्तान में संपादक की भूमिका में काम किया।

फेम इंडिया वेबसाइट ने अपने एक लेख में शशि शेखर को आधुनिक भारतीय प्रिंट मीडिया का ट्रेंड सेंटर बताया है। वेबसाइट ने इसका आधार फेम इंडिया और एशिया पोस्ट द्वारा कराए गए सर्वे के आधार पर बताया है। शशि शेखर को उत्तर प्रदेश रत्न और माधव ज्योति अलंकरण से सम्मानित किया जा चुका है। शशि शेखर ने चार किताबें भी लिखी हैं।

शशि शेखर ने अपना ब्लॉग दैनिक हिन्दुस्तान समाचार पत्र की वेबसाइट लाइव हिन्दुस्तान डॉट कॉम द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे ब्लॉग प्लेटफार्म पर बना रखा है। जो न्यूज वेबसाइट पर 'आजकल' नाम से दिखायी देता है।

Live हिन्दुस्तान.com

ओपिनियन > ताजा ओपिनियन | आजकल | मेल बॉक्स | जीना इसी का नाम है | मेरी कहानी | संपादकीय | नजरिया | नश्तर | तिरछी

आजकल

बानवे साल के अटल बिहारी वाजपेयी

अटल बिहारी वाजपेयी आज अपनी सार्थक जिंदगी के 92 वर्ष पूरे करने जा रहे हैं। उनकी यह जीवन-यात्रा एक ऐसे व्यक्तित्व का सफरनामा है, जिसने अपनी हर सांस के साथ भारतीय सभ्यता, संस्कृति, समाज और राजनीति को...

Sat, 07 Jan 2017 11:12 PM IST | अटल बिहारी वाजपेयी | पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी | अटल बिहारी वाजपेयी का जन्मदिन | अन्य...

जन-विश्वास का निर्णायक वर्ष

पिछले दिनों हम भारत-पाक सीमा के नजदीक मौजूद तनोट माता मंदिर के प्रांगण में खड़े थे। प्रसाद बेचने वाले से मैंने पूछा, 'कैसा चल रहा है?' बुझी आवाज में उसने जवाब दिया, 'हुकुम, बहुत...

Sat, 07 Jan 2017 10:53 PM IST | भारत पाक सीमा | जोधपुर | पटना | अन्य...

अमन की कहानी कुछ कहती है

साल के अंतिम दिनों में अगर कोई मुझसे पूछे कि आप किस सामाजिक बुराई से मुक्ति चाहेंगे, तो मेरा जवाब होगा, पारिवारिक बिखराव और बच्चों के भटकाव से। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए नई दिल्ली के अमन से बात...

Sun, 18 Dec 2016 12:07 AM IST | सामाजिक बुराई | पारिवारिक बिखराव | बच्चों के भटकाव | अन्य...

शशि शेखर ने अपने ब्लॉग पर 1 जनवरी, 2016 से लेकर 31 दिसंबर, 2016 तक कुल 57 पोस्ट डाली हैं। शशि शेखर द्वारा ब्लॉग पर डाली गई अधिकांश पोस्ट हिन्दुस्तान समाचार पत्र के **संपादकीय** पेज पर प्रकाशित हुई हैं। शशि शेखर ने अपने ब्लॉग पर जनवरी में 5, फरवरी में 3, मार्च में 5, अप्रैल में 6, मई में 4, जून में 5, जुलाई में 6, अगस्त में 5, सितंबर में 5, अक्टूबर में 6, नवंबर में 3 और दिसंबर में 4 पोस्ट डाली हैं।

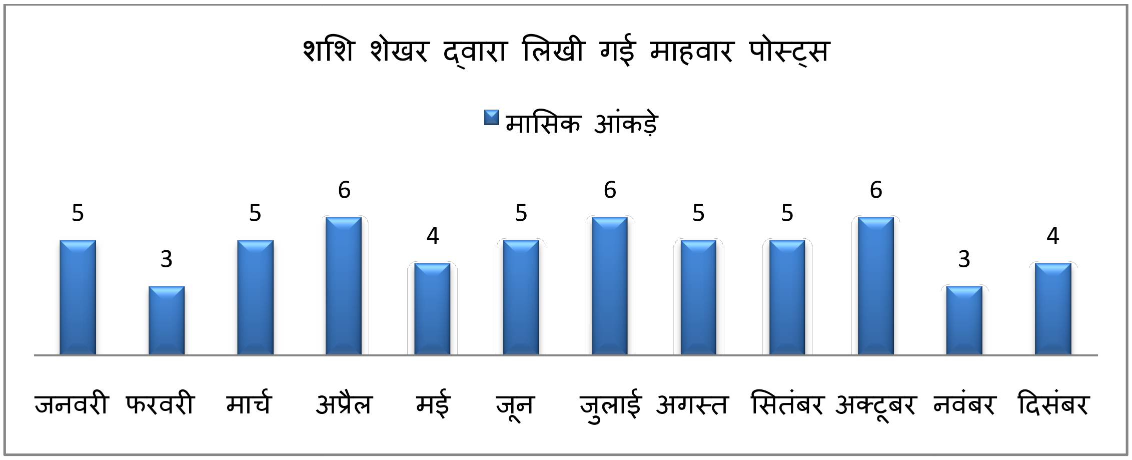

शशि शेखर ने वर्ष 2016 में सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, मीडिया, आतंकवाद सहित अन्य विषयों पर 57 पोस्ट्स अपने ब्लॉग पर लिखी हैं। शशि शेखर ने क्रमश: सामाजिक-सांस्कृतिक विषय पर 19, राजनीतिक विषय पर 23, आर्थिक विषय पर 1, मीडिया पर 3, आतंकवाद विषय पर 5, स्वयं के विषय में 3 व अन्य विषयों पर 3 पोस्ट्स लिखी हैं।

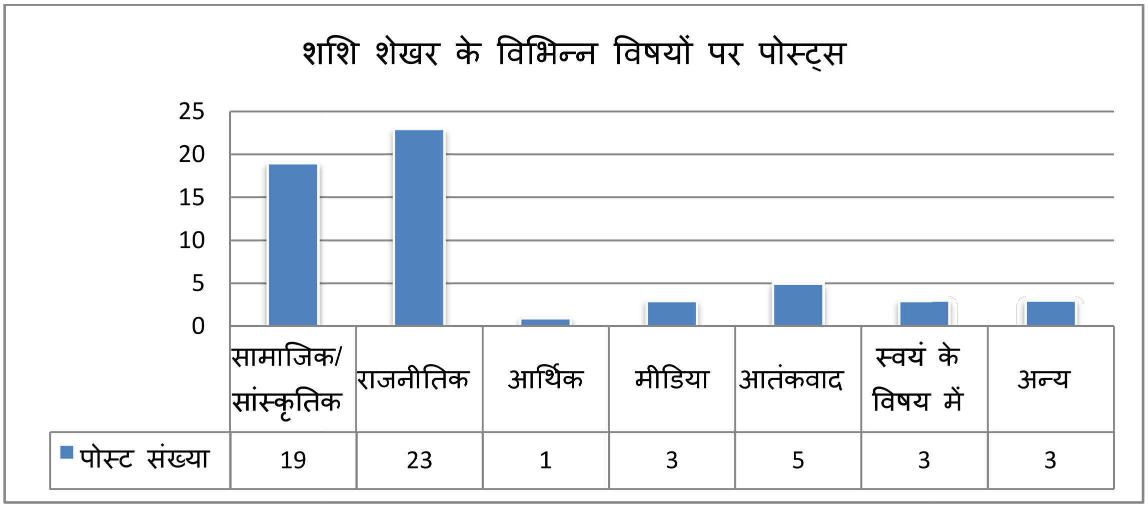

शशि शेखर द्वारा लिखी गईं विभिन्न विषयों पर पोस्ट्स का विषय अनुसार प्रतिशत

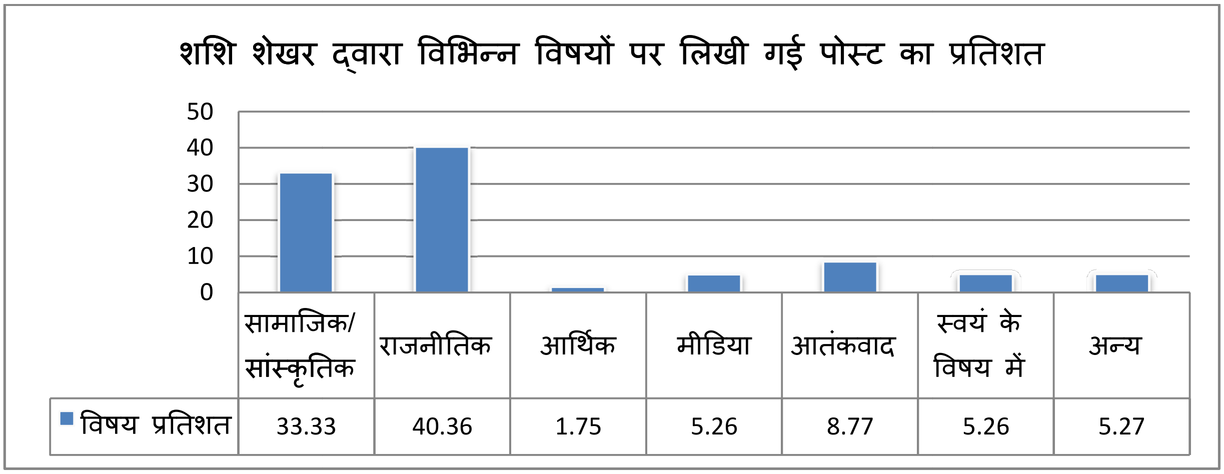

सुधीर राघव

सुधीर राघव वर्तमान में हिन्दी दैनिक समाचार पत्र ‘अमर उजाला’ चड़ीगढ़ में ‘समाचार संपादक’ के पद पर हैं।। सुधीर राघव का ब्लॉग ‘सुधीर राघव’ (http://sudhirraghav.blogspot.in/) नाम से है।[6] सुधीर राघव ने अपना ब्लॉग ब्लॉगर के प्लेटफॉर्म बना रखा है। उन्होंने ब्लॉगिग करना 2008 में प्रारंभ किया। सुधीर राघव अपने ब्लॉग पर स्वयं कि बारे में लिखते हैं कि ‘एक मुसाफिर जिसे चलना है ताकि कोई मंजिल नई न रहे, अंजानी न रहे एक इच्छा जिसे हमेशा अतृप्त रहना है ताकि रहस्य छिपे न रहें, दबे न रहें’। सुधीर राघव वामपंथी शैली के पत्रकार माने जाते हैं।

सुधीर राघव ने अपने ब्लॉग का ‘हेड टाइटल’ नाम के अनुसार ही ‘सुधीर राघव : चर्चा और चिठ्ठ’ दे रखा है। ब्लॉग का टाइटल कैप्शन ‘आओ अपने भीतर की लय का साझा करें’ दे रखा है। सुघीर राघव के ब्लॉग टैम्पलेट में दायीं ओर गतिशील आइकन पैनल दिया हुआ है, जिस पर करसर ले जाने पर ‘पॉपुलर पोस्ट्स’, ‘सब्सक्राइब’, ‘माई ब्लॉग लिस्ट’, ‘ब्लॉग आर्काइव’ और ‘अबाउट मी’ के आइकन दिए हुए हैं। अन्य ब्लॉग्स की तरह ही नई पोस्ट सबसे ऊपर दिखायी देती हैं।

सुधीर राघव ने 1 जनवरी, 2016 से लेकर 31 दिसंबर, 2016 तक अपने ब्लॉग पर विभिन्न विषयों पर कुल 118 पोस्ट डाली हैं। उन्होंने जनवरी में 1, फरवरी में 7, मार्च में 9, अप्रैल में 14, मई में 13, जून में 8, जुलाई में 10, अगस्त में 11, सितंबर में 14, अक्टूबर में 11, नवंबर में 7 और दिसंबर में 13 पोस्ट डाली हैं। सुधीर राघव की बहुत सी पोस्ट्स काव्य शैली में लिखी गई हैं। सुधीर राघव की अधिकांश ब्लॉग पोस्ट शशि शेखर और अंशुमान तिवारी के विपरीत मुख्यधारा मीडिया में प्रकाशित नहीं है।

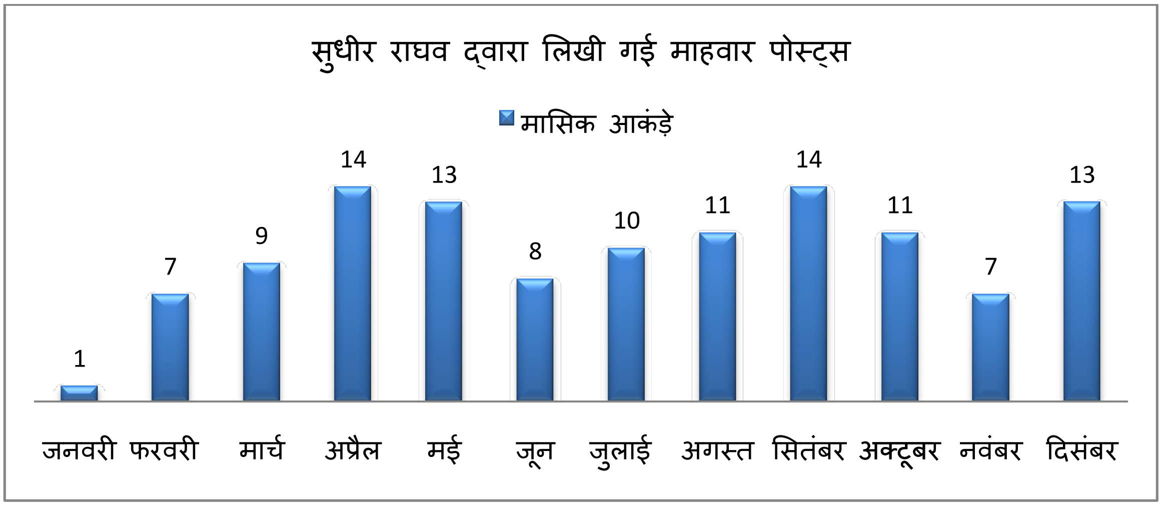

सुधीर राघव ने वर्ष 2016 में ब्लॉग पर सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक व स्वयं के विषय में लेख लिखे हैं। जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर 11 लेख, राजनीतिक विषयों पर 30 लेख, आर्थिक विषयों पर 8, स्वयं के विषय में 6 और अन्य विषयों पर 63 लेख लिखे हैं। सुधीर राघव के अन्य विषयों की श्रेणी के अंतर्गत अधिकांश उन लेखों को डाला गया है, जो रहस्यवाद काव्य शैली में लिखे गए हैं। सुधीर राघव ने मीडिया और आतंकवाद के विषय में कुछ नहीं लिखा है।

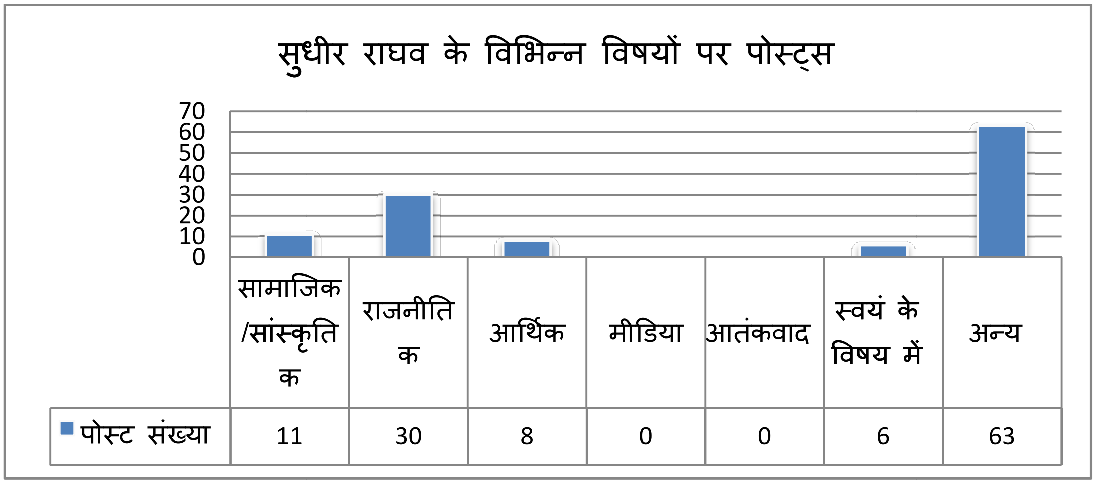

सुधीर राघव द्वारा विभिन्न विषयों पर डाली गई पोस्ट्स का विषय अनुसार प्रतिशत

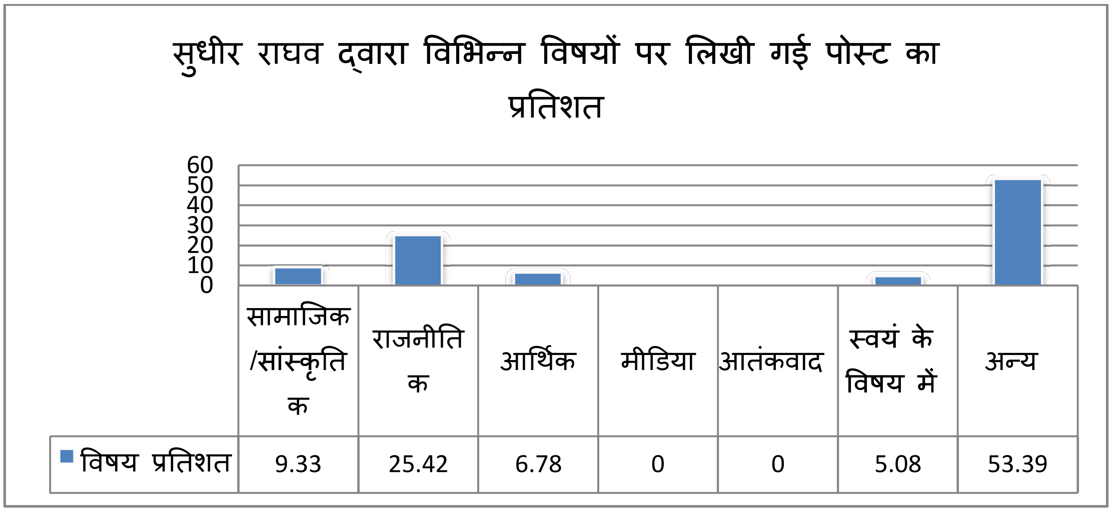

संदर्भ सूची :

1. एनडीटीवी हिन्दी वेबसाइट. Retrieved from https://khabar.ndtv.com/
2. https://hi.wikipedia.org/रवीश-कुमार/
3. कस्बा. Retrieved from http://naisadak.org/
4. सुदर्शन न्यूज वेबसाइट, Retrieved from http://www.sudarshannews.com/category/national/ravish-kumar-and-sanket-upadhyay-face-trouble-2959
5. prasunbajpai.itzmyblog.com
6. https://artharthanshuman.blogspot.in
7. http://www.fameindia.co/shashi-shekhar-2/
8. https://www.livehindustan.com/blog/editorial/news
9. http://sudhirraghav.blogspot.in/

साहित्य समीक्षा

किसी पत्रकार को किसी मीडिया संस्थान में काम करते हुए तमाम प्रकार की बंदिशों का सामना करना पड़ता है। यदि इसे पत्रकारिता की आजादी के नजरिए से देखा जाए तो इससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रभावित होती है। लेकिन ब्लॉगिंग के विषय में ऐसा नहीं है। सामान्यतौर पर ब्लॉगिंग में वह सब बंदिशें लागू नहीं होती हैं जो किसी मीडिया संस्थान में काम करते हुए एक मीडिया कर्मी पर लागू होती हैं।

ब्लॉगिंग से अभिव्यक्ति की आजादी को नए आयाम मिल रहे हैं, जिससे पत्रकारिता एक नया क्षितिज तैयार कर रही है। ब्लॉग पर एक पत्रकार सार्वजनिक जीवन के अलावा निजी जीवन के अनुभवों को भी लिख पाता है, जिसकी मुख्यधारा मीडिया के मंचों से बहुत कम संभावना रहती है। ऐसे अनेक पत्रकारों के नाम गिनाए जा सकते हैं, जो पत्रकारिता के साथ-साथ ब्लॉगिंग की दुनिया में विशेष पहचान रखते हैं।

बीसवीं सदी के जानें माने पत्रकार एजे लाइबलिंग ने कहा था कि प्रेस की स्वतंत्रता उन्हीं के द्वारा नियंत्रित की जाती है जो इसके मालिक हैं। एजे लाइबलिंग के वक्तव्य से पता चलता है कि मुख्यधारा मीडिया की स्वतंत्रता को कई कारक प्रभावित करते हैं, जिसमें व्यवसायिक ढांचे से लेकर मालिक-मीडिया कर्मियों के निजी स्वार्थ तक शामिल हैं। हालांकि इंटरनेट की दुनिया की इस धारणा का कभी हद बदलने का प्रयास किया है। उसने लोगों को बोलने-लिखने के लिए सीमा रहित सार्वजनिक मंच प्रदान किया है। उपरोक्त मुद्दों का जिक्र क्लाइन व बरस्टीन ने अपनी किताब 'ब्लॉग: हाउ दा न्यूएस्ट मीडिया रिवोल्यूशन इज चैंजिंग पॉलिटिक्स, बिजनेस एंड कल्चर' मे किया है।

इसी बात को बालटाटजिस ने आगे बढाया कि ब्लॉग और सोशल मीडिया के मंच आम नागरिकों के अलावा पत्रकारों के लिए भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को नए पंख दे रहे हैं, जब

एक पत्रकार मीडिया के किसी व्यावसायिक ढांचे के अंतर्गत काम कर रहा होता है तो उसपर भी कई शर्तें लागू होती हैं। एक पत्रकार या संपादक को खबर चलाते समय मीडिया संस्थानों के हितों को भी ध्यान रखना पड़ता है। किसी पत्रकार या संपादके पास इतनी स्वतंत्रता नहीं होती है कि वह मीडिया संस्थान के हितों के खिलाफ जाकर सामाजिक सरोकारों की बात कर सके। एक संपादक मीडिया संस्थान के हितों के दायरे में रहकर ही संपादकीय आजादी का इस्तेमाल कर सकता है और उसी दायरे के अंदर रहकर ही समाजिक सरोकारों पर स्टैंड ले सकता है।

हिन्दी ब्लॉगिंग की शुरुआत से सक्रिय अविनाश वाचस्पति व रविन्द्र प्रभात का मानना है कि ब्लॉग्स सूचनाओं को जीरो कॉस्ट पर पाठकों तक पहुंचाते हैं, जबकि मुख्यधारा मीडिया को अपने पाठकों व दर्शकों तक खबरें पहुंचाने के लिए भारी खर्चा करना पड़ता है। मुख्यधारा मीडिया को खर्चा का प्रबंध करने के लिए विज्ञापन मॉडल पर निर्भर रहना पड़ता है। पत्रकारिता में विज्ञापन मॉडल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में कहीं न कहीं अवरोध पैदा करता है। हालांकि अखबारों व टीवी समाचार चैनलों की खबरों पर लोग ब्लॉग्स के मुकाबले ज्यादा भरोसा करते हैं। जबकि अखबरों की खबरों की वैधता समाचार पत्रों के ई-संस्करण तक बरकरार रहती है, लेकिन ब्लॉग्स के मामले में ऐसा नहीं है।

ब्लॉग पर लिखी सूचनाओं की विश्वसनीयता ब्लॉग लिखने वाले लेखक पर अधिक निर्भर करती है। यदि ब्लॉग लिखने वाला पत्रकार है तो उस ब्लॉग और उस पर लिखे गए लेखों की विश्वसनीयता किसी मुख्यधारा मीडिया की खबर या सूचना से कम नहीं मानी जाएगी, बल्कि पूरी संभावना है कि पत्रकार के ब्लॉग्स पर कोई घटना मुख्यधारा मीडिया के मुकाबले ज्यादा स्वतंत्रता के साथ अभिव्यक्त होगी।

इसी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए जिल वाटकर रेटबर्ग अपनी किताब में लिखते हैं कि ब्लॉग संवाद को निरंतर विस्तार देता है यह सिटीजन जर्नलिज्म को भी नए आयाम दे रहा है। ब्लॉग लेखन में रेफरेंस की सुविधा रहती है, जिसे हाइपरटेक्स्ट या लिंक के जरिए पाठकों तक आसानी

से पहुंचाया जा सकता है। ब्लॉग में टेक्स्ट के साथ ऑडियो व वीडियो भी डाली जा सकती है। इंटरनेट के मंच पर ब्लॉग सभी चीजें एक साथ उपलब्ध करा देता है। वहीं अखबारों या टेलीविजन के मामले में ऐसा नहीं है। अखबार के पाठकों को आडियो व वीडियो उपलब्ध नहीं कराया जाता है। वहीं टेलीविजन के दर्शकों के लिए टेक्स्ट उपलब्ध कराना आसान नहीं। साथ ही, जब एक प्रोफेशनल पत्रकार ब्लॉगिंग करता है तो ब्लॉग की वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता, विश्वसनीयता बढ़ती है। हालांकि ब्लॉग के मंच पर हर ब्लॉगर को स्वतंत्र पत्रकार व निष्पक्ष ओपिनियन रखने वाला कहा जाता है।

पिछले दो दशकों के दौरान ब्लॉग जर्नलिज्म करने वाले ब्लॉगरों ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं जो मुख्यधारा मीडिया में अपनी जगह नहीं बना पाईं या सही संदर्भों व सच्चाई के साथ दुनिया के सामने नहीं आ पाईं, लेकिन ब्लॉगरों ने उसे दुनिया तक पहुंचाया। रिबेका ब्लड इस बात का जिक्र अपनी किताब 'वी हेव गोट एक ब्लॉग हाउ वेबलॉग्स चैंजिंग अवर कल्चर' में किया है। वें बताती है कि ब्लॉग के जरिए घटनाओं को रिअल टाइम में दुनिया के सामने बिना किसी बाधा के पहुंचाया जा सकता है। ब्लॉगिंग ने दुनिया के उन लोनों की यादों को भी जीवित रखा है जो सरकारी दमनचक्र, समाज विरोधी तत्वों के जुल्म या आतंकवादी कार्रवाइयों के शिकार हुए। हालांकि इस विषय का विश्लेषण करते हुए सुनील सक्सेना निष्कर्ष निकालते हैं कि एक पत्रकार सामान्य तौर पर तीन प्रकार से सूचनाएं प्राप्त करता है एक डायरेक्ट ऑब्जर्वेसन यानी प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा, दूसरा सेकेंडरी सोर्स से यानी किसी व्यक्ति या द्वितीयक श्रोत से, तीसरा किसी तीसरे श्रोत से या दस्तावेजों की मदद से। लेकिन इंटरनेट ने सूचनाएं प्राप्त करने का चौथा माध्यम उपलब्ध कराया है, जिसे ऑनलाइन श्रोत भी कहा जा सकता है। पत्रकारों की ब्लॉग्स के भी उसी ऑनलाइन श्रोत का एक हिस्सा हैं।

हिन्दी के ब्लॉग्स कभी-कभी मुख्यधारा मीडिया को भी चुनौती देते हुए नजर आते हैं। ब्लॉग्स में आई खबरें भी मुख्यधारा मीडिया को प्रभावित करने लगी हैं। हिन्दी ब्लॉगिंग का

बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाले रवीन्द्र प्रभात अपनी किताब 'हिन्दी ब्लॉगिंग का इतिहास' में लिखते हैं कि यह कई बार हो चुका है कि किसी महत्वपूर्ण ब्लॉग पर प्रकाशित हुई पोस्ट 24 घंटे के अंदर मुख्यधारा मीडिया के लिए मुख्य खबर बन गई। इसके अलावा जिन विषयों को मुख्यधारा मीडिया अक्सर छुने से परहेज करता है, ब्लॉग्स पर उन विषयों पर गंभीर बहस देखी जा सकती है। इन बहसों में देश के जाने-माने पत्रकार भी सक्रिय रहते हैं।

'द हैंडबुक ऑफ ग्लोबल ऑनलाइन जर्नलिज्म' में यूजीनिया सियापारा व एड्रियास वेजेलिस जिक्र करते हैं कि पत्रकारों के ब्लॉग जनसंवाद की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाते हैं। इसका प्रमुख कारण यह भी है कि पत्रकारों की लेखन शैली जनसंवाद की होती है जिसे वे पत्रकारिता के दौरान सीखते हैं। जब कोई पत्रकार अपने ब्लॉग पर लिखता है तो उसका प्रभाव ज्यादा होता है। पत्रकारों के ब्लॉग लेखों का खास जोर सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों को लेकर होता है। सामान्यत: यह भी देखा गया है कि एक आम लेखक ब्लॉग पर मुद्दों से ज्यादा अपनी भावनाओं और धारणाओं के विषय में अधिक लिखता है, जबकि एक पत्रकार मुद्दों को लेकर गंभीर चर्चा के अलावा जरूरत पड़ने पर व्यवस्था पर सवाल भी खड़े करता है।

वही, क्रिस एटन एंड जेम्स एफ हेमिल्टन की 2008 में आई किताब 'अल्टरनेटिव जर्नलिज्म' में वे लिखते हैं कि ब्लॉगिंग पत्रकारिता बुर्जुआ पत्रकारिता के खिलाफ एक सफल अभियान है। यह वैकल्पिक पत्रकारिकता का सबसे बड़ा मंच है। यहां सामंतवादी सोच व परंपराओं को निर्भीकता के साथ चुनौती दी जा सकती है। ब्लॉगिंग की दुनिया में आर्थिक व राजनीतिक दबाव जैसे कोई कारक काम नहीं करते हैं। आर्थिक व राजनीतिक दबाव के वातावरण में एक पत्रकार सामाजिक सरोकारों के साथ न्याय नहीं कर पाता है और दुविधा में बना रहता है। ब्लॉगिंग पत्रकारों के लिए बिना किसी दबाव के निष्पक्षता के साथ अपनी बात रखने का एक विकल्प प्रदान करती है।

जेनेट कॉलोजी (2006), पत्रकारिता विभिन्न माध्यमों के जरिए की जाती है, जिसमें मुख्यत प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया शामिल है। प्रिंट मीडिया में वे शामिल हैं, जहां कागज पर छापकर सूचना व खबरों का प्रसार किया जाता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टीवी, रेडियो व इंटरनेट शामिल हैं। हालांकि आधुनिक दौर में तकनीक विकास के साथ सूचना के सभी माध्यमों का कन्वर्जेन्स हो रहा है। ब्लॉग और सोशल मीडिया से मुख्यधारा प्रभावित हो रहा है तो वहीं अखबारों व समाचार चैनलों की खबरों सोशल मीडिया व ब्लॉग के लेख प्रभावित रहते हैं। इस बहस को का आगे बढ़ाते हुए स्टुअर्ट एलन (2006) लिखते हैं कि मुख्यधारा मीडिया में पूर्णकालिक काम करने वाले पत्रकारों को भी आंशिक रूप से ब्लॉगिंग करते हुए देखा जा सकता है। इसके पीछे प्रमुख कारण मुख्यधारा मीडिया में विभिन्न प्रकार की बंदिशों व सीमाओं का होना है।

वर्ल्ड प्रेस दिवस के दिन यूनेस्को की निदेशक एरिना बोकोवा एजेडा - 2016 नामक रिपोर्ट के आमुख में अपना संदेश देती हैं कि सूचनाओं को हासिल करना प्रत्येक व्यक्ति के मौलिक अधिकारों के अंतर्गत आता है। साथ ही, यह मानवाधिकारों का मामला है। वो आगे लिखती हैं कि इस समय पूरी दुनिया विभिन्न प्रकार की चुनौतियों व मुसीबतों का सामना कर रही है। ऐसे में सत्य और गुणवत्तापूर्ण सूचनाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। आवश्यकता है कि पूरी दुनिया में प्रेस की स्वतंत्रता के लिए वातावरण तैयार किया जाए व लोगों को सूचनाएं प्राप्त करने के अधिकार को सुनिश्चित किया जाए।

वहीं दूसरी ओर 'एथिकल जर्नलिज्म नेटवर्क' द्वारा जारी रिपोर्ट 'अनटोल्ड स्टोरिज- हाउ करप्शन एंड कोनफिलिक्ट्स स्टाल्क द न्यूजरूप' के अनुसार निश्चित रूप से पत्रकारिता का उद्देश्य मानवता व मानव अधिकारों के लिए श्रेष्ठतम करना है, लेकिन कारपोरेट और राजनीति का पत्रकारिता में घालमेल उसे अपने उद्देश्य से भटका देता है। इन हालातों में पत्रकारिता को समझौतावादी रूख अपनाना पड़ता है। पेड न्यूज और प्राइवेट ट्रीटीज कुछ ऐसे ही मामले हैं जो

प्रेस की स्वतंत्रता और सूचनाओं के निर्बाध प्रवाह को प्रवाहित करते हैं। संपादकों व पत्रकारों के निजी स्वार्थ खबरों को प्रभावित करते हैं। कुछ ऐसे मामले होते हैं जो मीडिया हाउस को पता ही नहीं चल पाता है और रिपोर्टर द्वारा ही अपने स्तर पर मैनेज कर लिया जाता है। इसके अलावा मीडिया हाउस के भ्रष्टाचार द्वारा संपादकीय स्वतंत्रता भी प्रभावित होती है। मीडिया हाउस आर्थिक लाभ के लिए अपने एडवरटाइजर या फंड प्रदान करने वाले के खिलाफ नहीं जा पाते हैं।

'रिपोटर्स विदआउट बॉडर्स संस्था' द्वारा प्रतिवर्ष जारी की जानी 'वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स' के अनुसार के भारत की रैंकिंग वर्ष 2017 में 136 है, जबकि यह वर्ष 2016 में 133 थी। संस्था अपनी रिपोर्ट में लिखती है कि प्रेस की स्वतंत्रता को सरकार द्वारा भी नियंत्रित किया जा रहा है। सरकार ने विदेश से प्राप्त होने वाली आर्थिक मदद के मामले में भी नए व सख्य कानून बना दिए हैं, जिससे कुछ मीडिया संस्थानों को आर्थिक हालातों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि 'मीडिया चरित्र' पुस्तक में आशीष कुमार (2016) कहते हैं कि विदेश से प्राप्त होने वाली आर्थिक मदद से चैनलों की संपादकीय स्वतंत्रता प्रभावित होती। मीडिया संस्थानों को आर्थिक मदद देनी वाली सस्थाओं और देशों के हितों को भी ध्यान रखना पड़ता है, वे उनके खिलाफ समाचार चलानें में हिचकते हैं।

भारत में प्रेस की स्वतंत्रता के लिए कोई अलग से कानून नहीं बना है प्रेस की स्वतंत्रता भारत में संविधान के मौलिक अधिकारों द्वारा प्राप्त हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19, 20, व 21 अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। साथ कुछ शर्तों के युक्ति-युक्ति प्रतिबंध भी लगाते हैं, जिसमें राष्ट्र सुरक्षा, मानहानि आदि विषय शामिल हैं। भारत से चलने वाले किसी चैनल या अखबार के संपादक की स्वतंत्रता भी इन्हीं प्रावाधनों के अंतर्गत आती है।

मार्कस पैलिसियस (2003) ने लिखा कि ब्लॉग्स ऐसे माध्यम हैं, जहां बिना किसी पब्लिसर्स के किसी सूचना को पूरी दुनिया में प्रसारित किया जा सकता है, आम व खास दोनों ही प्रकार के लोगों के बीच ब्लॉग के प्रचलन में आने का यह सबसे बड़ा कारण है। साथ ही वेबलॉग

पर पत्रकारिता की मौजूदगी और स्वीकृति ने लोगों के बीच ब्लॉग को 'कम्युनिकेशन टूल' के रूप में विकसित किया है। अमिताभ श्रीवास्तव व आज्ञाराम पांण्डेय (2013) आधुनिक दुनिया में ब्लॉग आम आदमी के लिए एक सार्वजनिक रूप से बात रखने का लोकतांत्रिक मंच है। इसकी सीमा रहित अंनत आजादी ही वह कारण है जो मुख्यधारा में सफल पत्रकारों को भी अपने मंच पर लिखने के लिए मजबूर कर देती है।

मार्क लेसे व जेरी लेंसन (2015) अखबार और मैंगजीन में एडिटोरियल पेज होते हैं। साथ किसी-किसी अखबार मे ओपएड नामक पेज पाया जाता है। सामान्यत: एडिटोरियल पेज को पूरी तरह अखबार की ओपिनियन माना जाता है। जब ओपएड पेज विपरीत विचारों के लेखों को भी जगह दी जाती है। न्यूज आधारित ब्लॉग के बारे में कहा जा सकता है कि पूरा ब्लॉग ही संपादकीय होता है, जिसमें नीरस तथ्ययुक्त खबरों से अधिक दृष्टिकोण पर अधिक बल रहता है। जहां एक लेखक अपने को अधिक स्वतंत्रता के साथ अभिव्यक्त करता है। केविन क्वामाटो (2003) के अनुसार हालांकि ब्लॉग जर्नलिज्म को शब्दों के अंदर पूरी तरह परिभाषित बहुत कठिन है। किसी विषय पर खबर पढ़ने के गूगल पर पहुंचा व्यक्ति सर्च इंजन में कीवर्ड डालकर उसे तलाश सकता है। यदि ब्लॉग का लेख उस कीवर्ड के अनुसार सटीक बैठता है तो दुनिया किसी भी कोने में बैठा हुआ व्यक्ति उस लेख जरूर पढ़ेगा।

मौजूदा समय में ब्लॉग विभिन्न बहसों को शुरू करने वाले भी साबित हुए। राजनीति से लेकर सामाजिक मुद्दों पर बहस को प्रारंभ करानें में ब्लॉग्स नें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है (होमेरो गिल जुएंगा व अन्य, 2011)। इसी के संदर्भ में देखा जाए तो भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी के ब्लॉग पर लिखे गए लेखों ने कई बार राष्ट्रीय मीडिया का ध्यान अपनी ओर खींचा और उनके लेख बड़ी बहस का मुद्दा बने हैं। रवीश कुमार द्वारा अपने ब्लॉग लिखे गए लेख भी कई बार मीडिया के सुर्खियां बने हैं, जिसके जबाव में रोहित सरधाना सहित अन्य पत्रकारों ने अपने लेख लिखे।

ब्लॉग के प्रारंभ होने के बाद सबसे पहले वॉल और राबिन्सन ने अपनी किताब

लापेना जेएफ (2009) अपने शोध पत्र में लिखते हैं कि एक अच्छा संपादक किसी देश में प्रेस की स्वतंत्रता संवैधानिक लोकतंत्र की प्राथमिकता होती है। लोकतंत्र में प्रेस की स्वतंत्रता लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करती है। साथ ही वे लिखते है कि एक अच्छा संपादक कभी मरता नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए सीमाओं से परे जाकर कार्य करता है। गुन्नार बेरगल्ड (2003) अपनी अध्ययन रिपोर्ड में लिखते हैं कि समय के साथ पत्रकारिता और ब्लॉगिंग एक दूसरे को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके पीछे विभिन्न कारणों को गिनाया जा सकता है, उसमें से एक कारण है कि ब्लॉग में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ रचनात्मकता प्रदर्शित करने का विस्तृत क्षितिज मौजूद रहता है। इसके साथ ही उसमें त्वरितता, पारस्परिक संवाद, बाजार के दबाव से मुक्त आदि प्रमुख पहलू शामिल हैं।

'काउसिल ऑफ यूरोप' ने 2015 में 'जर्नलिज्म एट रिस्क: थ्रीट, चैलेंजिज एंड परस्पेक्टिव' नाम से एक रिपोर्ट जारी की जिसमें वर्णन किया कि पत्रकारिता के सामने अनेक प्रकार की चुनौतियां हैं, जिसमें सरकारी सेंसरशिप, राजनीतिक दवाब, समूह विशेष से नजदीकियां, पेशे में असुरक्षा, कार्य के दौरान पत्रकारों के जीवन को खतरा, सूचना प्रदान करने वाले सूत्रों की जान का खतरा आदि कुछ प्रमुख चुनौतियां है जो लोकतांत्रिक समाज के अंदर ही मौजूद हैं। युद्ध दौरान रिपोर्टिंग करते हुए बहुत पत्रकारों ने अपनी जान गंवाई। युद्ध के अलावा भी सत्य को पत्रकारिता के जरिए लोगों तक पहुंचाने के लिए भी तमाम पत्रकारों को अपनी जान खोनी पड़ी है। ये सारी चुनौतियां अभिव्यक्ति को प्रभावित करती है। इन चुनौतियों को देखते हुए कहा जा सकता है की सलाम पैक्स और उससे ब्लॉगों ने युद्ध के दौरान मानवाधिकारों के हनन की घटनाओं को दुनिया के पहुंचाने में बड़ी भूमिका निभायी है। जेडी लसिका (2004) को अपने एक लेख में लिखते हैं कि ब्लॉग पत्रकारिता वैकल्पिक आवाजों के लिए एक आउटलेट की तरह हैं। इऩ आउटलेट पर अभिव्यक्ति की उर्जा से भरी हुई आवाजों को सुना जा सकता है।

ब्लॉगिंग जर्नलिज्म को जे जर्नलिज्म के नाम से भी जाना जाता है। ट्रैसी ब्राउन (2013) अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि ब्लॉग जर्नलिज्म के दौरान भी बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सबसे प्रमुख बात है पत्रकारिकता के नजरिए का आभाव, पेशेवर लोगों की तरह पूर्णता न हो पाना, संसाधनों का कमी, तकनीकी जानकारी का अभाव, समय की चुनौतिया, ब्लॉग का नियमित अपडेट न हो पाना, ये कुछ ऐसी चुनौतियां हैं सामान्यत जिनका ब्लॉगरों का सामना करना पड़ता है। बहुत से पत्रकारों के ब्लॉग नियमित अपडेट नहीं हो पाते है। नियमित पोस्ट न मिलने के कारण पाठक भी कम होने लगते हैं।

बोटन और क्रेप्स (1990) अपनी पुस्तक इनवेस्टिगेटिंग कम्युनिकेशन: एन इंट्रोडक्शन टू रिसर्च मेथड में लिखते हैं कि टेक्स्चुअल एनालिसिस (शाब्दिक विश्लेषण) संचार शोध के अंतर्गत प्रयोग किया जाना महत्वपूर्ण शोध तकनीक है। इसके अंतर्गत दृश्य व श्रव्य दोनों ही प्रकार के संचार संदेशों का विवेचन, वर्णन, शैली, विशेषता व प्रकृति का विश्लेषण किया जाता है। एलन मैकी (2005) अपनी पुस्तक, टेक्स्चुअल एनालिसिस: एक बिगनर गाइड में टेक्स्चुअल एनालिसिस के बारे में लिखते हैं कि टेक्स्चुअल एनालिसिस के अंतर्गत किसी के टेक्स्ट का शैक्षिक अनुमान लगाकर उसका अधिक से अधिक सटीक विवेचन करने की कोशिश की जाती है, जिससे पता लगाया जा सके कि अन्य व्यक्ति संसार के बारे सोचते हैं। वास्तव में यह सूचनाओं को एकत्रित करने का महत्वपूर्ण तरीका है। इसे टेक्स्ट के शोध अध्ययन के लिए एकमात्र महत्वपूर्ण तरीका भी कहा जा सकता है। युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया (1974) द्वारा जारी की पुस्तक प्रिंसिपल एंड प्रैक्टिसिस ऑफ टेक्स्चुअल एनालिसिस में लिख गया है कि टेक्स्चुअल एनालिसिस एक कम्प्युटर तार्किक इंजन है।

श्रीनिवासन रामास्वामी (2010) अपने शोध पत्र में लिखते हैं कि इंटरनेट क्रांति के बाद ब्लॉग की संसार सूचचाओं का जखीरा है। इसके टेक्स्चुअल एनालिसिस द्वारा महत्वपूर्ण सामने आते हैं, जिनसे इंटरनेट संचार की दुनिया को समझने व अनुमान लगाने में मदद मिलती है।

संदर्भ

1. क्लाइन व बरस्टीन. (2005). *ब्लॉग: हाउ दा न्यूएस्ट मीडिया रिवोल्यूशन इज चैंजिंग पॉलिटिक्स, बिजनेस एंड कल्चर.* केरौसेल प्रेस.
2. अविनाश वाचस्पति व रविन्द्र. (2011). *हिन्दी ब्लॉगिंग: अभिव्यक्ति की नई क्रांति.* हिन्दी साहित्य निकेतन.
3. जिल बॉलकर रेटबर्ग. (2008). *ब्लॉगिंग: डिजिटल मीडिया एंड सोसाइटी.* पॉलिटी पब्लिकेशन.
4. रिबेका ब्लड. (2002). *वी हेव गोट ए ब्लॉग: हाउ वेबलॉग्स चैंजिंग अवर कल्चर.* परसियस बुक.
5. सुनील सक्सेना. (2012). *वेब जर्नलिज्म 2.0.* टाटा मैक्ग्रा हिल.
6. रवीन्द्र प्रभात. (2011). *हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास.* हिंदी साहित्य निकेतन.
7. यूजीनिया सियापारा व एड्रियास वेजेलिस. (2012). *द हैंडबुक ऑफ ग्लोबल ऑनलाइन जर्नलिज्म.* विली ब्लैकवेल
8. क्रिस एटन एंड जेम्स एफ हेमिल्टन. (2008). *अल्टरनेटिव जर्नलिज्म.* सेज पब्लिकेशन.
9. जेनेट कॉलोजी. (2006). *कवर्जेंस जर्नलिज्म: राइटिंग एंड रिपोर्टिंग अक्रॉस द न्यूज मीडिया.* रॉमैन एंड लिटिलफिल्ड पब्लिशर्स.
10. स्टुअर्ट एलन. (2006). *ऑनलाइन न्यूज.* मैक्ग्रा हील पब्लिसिंग हाउस.
11. मार्कस पैलिसियस. (2003). *ऑनलाइन जर्नलिज्म बाय जर्नलिस्ट.*
12. आज्ञाराम पाण्डेय व अमिताभ श्रीवास्तव. (जनवरी, 2013). *ए कंटेंट एनालिसिस ऑफ जर्नलिस्ट ब्लॉग्स विद स्पेशल रेफरेंस टू ड्राइविंग फोर्स टू ब्लॉग राइटिंग.*

13. मार्क लेसे व जेरी लेंसन. 2015. द एलिमेंट ऑफ ब्लॉगिंग: एक्सपेंडिंग द कनवर्सेजन ऑफ जर्नलिज्म
14. केविन क्वामाटो. 2003. डिटिजल जर्नलिज्म: इमरजिंग मीडिया एंड चेंजिंग होराइजन ऑफ जर्नलिज्म. राउमैन लिटिलफील्ड पब्लिसर्स.
15. होमेरो गिल डे जुएंगा, सेथ सी लेविस व अन्य. 2011. ब्लॉगिंग एज ए जर्नलिस्टिक प्रैक्टिस: ए मॉडल लिंकिंग, परसेप्शन, मोटिवेशन एंड विहेवियर. सेज पब्लिकेशऩ.
16. वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम डे - 2016, एजेडा, यूनेस्को डायरेक्टर संदेश
17. अनटोल्ड स्टोरिज- हाउ करप्शन एंड कोनफिलिक्ट्स स्टाल्क द न्यूजरूप. 2015. एथिकल जर्नलिज्म नेटवर्क.
18. वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स. 2017. रिपोटर्स विदआउट बॉडर्स संस्था
19. आशीष कुमार. (2016). संपादन. अमिताभ श्रीवास्तव. मीडिया चरित्र. पुष्पांजलि प्रकाशन. दिल्ली.
20. वृजकिशोर शर्मा. (2017). भारत का संविधान. अशोक के धोष प्रकाशन. दिल्ली. पृष्ठ.40
21. Lapena J. F. (2009). Editorial independence and editor-owner relationship: Good editors never die, they cross just the line. Singapore Med J. 2009, 50(12):1120
22. Gunnar Berglund (2003). A study book on blogging.
23. Council of Europe report. (2015). Journalism at risk: Threats, challenges and perspectives.
24. सलाम पैक्स ब्लॉग
25. J.D. Lasica. (2004). Blogging is the form of journalism. Perseus pulising. ch. 29
26. Jin Shang and Hao Zhang. (2012). J blogging in china : development, significance and challenges.
27. Tracy brown. (2013). Blogger or journalist? Evaluating what is the press in digital age. Rosen publishing group.
28. Frey, L, Botan, C, & Kreps, G. (1999). Investigating Communication: An introduction to research methods. (2nd ed.). Boston: Allyn & Bacon.
29. Alan McKee (2005). Textual Analysis: A beginner guide. (3rd ed.). Sage publication.

30. University of California. (1974). Principles and practices of textual analysis. Pg 58

31. Srinivasan Ramaswamy. (2010). Blog Analysis: Trends and Predictions. Berkeley education.

शोध प्रविधि

शोध में विभिन्न विचारधाराओं से कथित रूप से संबंद्ध पांच प्रमुख टीवी, अखबार व समाचार पत्रिकाओं के हिन्दी पत्रकारों के ब्लॉग्स का चयन किया गया है। एबीपी से संबंद्ध पुण्य प्रसून वाजपेयी सीनियर कंसलिं्टग एडिटर एनडीटीवी के संपादक रवीश कुमार, इंडिया टुडे के संपादक अंशुमान तिवारी, हिन्दुस्तान समूह में संपादक शशि शेखर और अमर उजाला में न्यूज एडिटर पद कार्यरत सुधीर राघव के ब्लॉग्स का सलेक्टिव सेंपलिंग विधि से चयन किया गया है।

प्रमुख चैनलों के संपादकों का चयन टीआरपी के आधार पर और अखबार व पत्रिका के संपादकों चयन सर्कुलेशन के आधार किया है। टीआरपी रेटिंग में शोध के दौरान 1 जनवरी, 2016 से 31 दिसंबर, 2016 के बीच टॉप टेन में रहने वाले चैनलों के संपादकीय पदों पर आसीन पत्रकारों के ब्लॉग्स को अध्ययन के लिए चुना है। रवीश का कस्बा ब्लॉग, पुण्य प्रसून वाजपेयी का का स्वयं के नाम से ब्लॉग है, शशि शेखर का ब्लॉग, अशुंमान तिवारी के 'अर्थार्थ' नाम से ब्लॉग, सुधीर राघव का स्वयं के नाम से ब्लॉग्स का सलेक्टिव विधि से चयन किया है।

इस शोध के अंतर्गत वरिष्ठ हिन्दी पत्रकारों के ब्लॉग्स के टेक्स्युअल एनालिसिस के जरिए इन्हीं विषयों पर निष्कर्ष निकाला है।

टेक्स्चुअल एनालिसिस संचार शोध का महत्वपूर्ण साधन है। इसका प्रयोग अभिलिखित व दृश्य संदेशों के विशेषताओं की व्याख्या व विवेचना करने में प्रयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य टेक्स्ट के अंतर्गत दिए संदेशों की विषयवस्तु, संरचना, कार्यों का वर्णन करना होता है। टेक्स्चुअल एनालिसिस के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण होता है अध्ययन के लिए टेक्स्ट के प्रकार का

चुनाव और उसके अध्ययन के लिए विधि के प्रकार का प्रयोग का निर्णय। टेक्स्ट को मुख्यतय दो भागों में विभाजित किया जाता है।

A. संचार की लिखित प्रतिलिपि (verbatim recordings)
B. संचार के परिणाम (output of communication)

टेक्स्चुअल एनालिसिस की पद्धति

टेक्स्चुअल एनालिसिस के लिए प्रमुख रूप से चार प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है।

1. आलंकारिक आलोचना (rhetoric criticism)
2. विषयवस्तु विश्लेषण (content analysis)
3. अंत:क्रिया विश्लेषण (interaction analysis)
4. उपलब्धि अध्ययन (performance studies)

आलंकारिका आलोचना सामान्यत: नकारात्मक संकेतार्थों के साथ की जाती है। आलंकारिक आलोचना शब्द से ही स्पष्ट हो जाता है कि आलंकारिक रूप से प्रस्तुत किए गए विषय की आलोचना के साथ विश्लेषण करना है। आलंकारिक आलोचना विधि का इस्तेमाल शब्दाडंबरपूर्ण संवाद, जिसमें विषय को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा पेश किया जाता है, के टेक्स्चुल एनालिसिस में किया जाता है। इस प्रकार के टेक्स्ट का विश्लेषण करते समय उसकी सत्यता सामने लाने के लिए नकारात्मक पहलुओं की ओर ध्यान डाला जाता है। अरस्तु की परिभाषा के अनुसार रिहिटोरिक (रेटरिक) का अर्थ धारणा या प्रतिपादन का उपलब्ध अर्थ और आलोचना का अर्थ किसी भी मानवीय गतिविधि को सुव्यवस्थित रूप से मूल्यांकित करना है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आलंकारिक आलोचना वह विधि है जिससे किसी दिए हुए टेक्स्ट में निहित संदेशों की प्रतिपादन शक्तियों का सुव्यवस्थित रूप से मूल्यांकन, विश्लेषण, वर्णन किया जाता है।

एड्रयू (1983) के अनुसार आलंकारिक आलोचना के लिए पांच बिंदुओं का ध्यान रखा जाता है।

I. संदेश में निहित अर्थों पर प्रकाश डालना।
II. संदेश का सामाजिक, एतिहासिक, सांस्कृतिक संदर्भों के साथ विश्लेषण करना।
III. संदेश का मूल्यांकन करने के लिए सामाजिक आलोचना विधियों का इस्तेमाल।
IV. उदाहरण व प्रमाणों के साथ प्रतिपादित संदेश की प्रमाणिकता की जांच करना।
V. उन पहलुओं का वर्णन करना जिससे प्रतिपादन प्रभावित हुआ है या हो सकता है।

आलंकारिक आलोचना विधि प्रमुख रूप से दो भागों में विभाजित किया जाता है।

I. पारंपरिक आलंकारिक आलोचना (Classical rhetoric) – इसके अंतर्गत प्रतिपादित प्राचीन संवादों व साहित्य का विश्लेषण किया जाता है।
II. समकालीन आलंकारिक आलोचना (Contemporary rhetoric) – इसका प्रयोग वर्तमान संचार संदेशों के अध्ययन के लिए किया जाता है।

इन्हें निम्न उपभागों में बांटा जा सकता है।

A. ऐतिहासिक आलोचना में विश्लेषण किया जाता है कि संदेश में प्राचीन घटना को कितनी सटीकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। संदेश की सत्यता व प्रमाणीकता जांचने के लिए संदर्भों का सहारा लिया जाता है। साथ ही लेखक द्वारा प्रस्तुत किए गए दावों की भी ऐतिहासिक संदर्भों के साथ जांच-पड़ताल की जाती है।
B. मौखिक इतिहास के द्वारा भी वर्तमान में लिखे गए लेखों या बोली गए घटनाओं के तथ्यों की जांच की जाती है। इसके द्वारा यह जांचने में मदद मिलती है कि प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं के इतिहासीकरण में संचार की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है।
C. ऐतिहासिक घटना अध्ययन से संबंधी टेक्स्ट का संचार में भूमिका से अध्ययन किया जाता है, जो किसी ऐतिहासिक घटना विशेष से संबंधित हो।

D. आत्मकथा या जीवनसंबंधी अध्ययनों में उस टेक्स्ट का विश्लेषण किया जाता है, जो समाज और इतिहास के महत्वपूर्ण व प्रसिद्ध व्यक्तियों से संबंधित रहा है। इसमें उनके कथनों, भाषणों, जीवनियों, लेखों आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है।

E. सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन के अंतर्गत किया जाता है कि किस संदर्भ में आंदोलन ने इतिहास व वर्तमान को प्रभावित किया।

F. नव-अरस्तूवाद आलोचना के अंतर्गत आलंकारिक आलोचना की अरस्तू द्वारा बतायी गई विधि का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें शब्दाबंरपूर्ण विश्लेषण तथ्यों के साथ किया जाता है।

G. शैली आलोचना में प्रतिपादित संदेश का एक निर्धारित समुच्चय के साथ विश्लेषण की परंपरा से हटकर काम किया जाता है। शैली अलोचना विधि का प्रारूप टेक्स्ट की विश्लेषित की जाने वाले टेक्स्ट की प्रकृति के अनुसार बदलता रहता है। टेक्स्ट की प्रकृति के अनुसार टेक्स्ट एनालिसिस करने के लिए शैली अलोचना विधि की उपविधियों का इस्तेमाल किया जाता है। जो निम्न हैं - न्यायिक अलंकारिक विधि - इस प्रकार की शैली में कानूनी व न्यायिक मसलों से जुड़े हुए टेक्स्ट का विश्लेषण किया जाता है। विचारात्मक अलंकारिक विधि - इस विधि का प्रयोग वर्तमान, भविष्य और राजनीतिक व्याख्यानों के विश्लेषण के लिए किया जाता है।

H. नाटकीयतायुक्त आलोचना - विद्वान केनेथ बुर्के इस विधि का इस्तेमाल टेक्स्ट एनालिसिस करते समय पांच प्रमुख बिन्दुओं पर ध्यान देना होता है -

   I. कार्य (Act) - एक निश्चित संदेश जो संचारक द्वारा उत्पन्न किया जाता है।
   II. उद्देश्य (Purpose) - संदेश का कारण।
   III. कारक (Agent) - व्यक्ति जो संचारक की भूमिका है।
   IV. साधन (Agency) – संदेश प्रेषित करने के लिए जिस माध्यम का प्रयोग किया गया।

V. पंचत्व विश्लेषण (Pentadic Analysis) - जैसा शब्द से ही स्पष्ट है इस विधि में टेक्स्ट का विश्लेषण उपरोक्त पांच तत्वों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

I. लाक्षणिक आलोचना (Metaphoric Criticism) – इस प्रकार की विधि का प्रयोग उन टेक्स्ट्स के विश्लेषण के लिए किया जाता है, जिनकी सत्यता हम सीधे तौर पर नहीं जानते हैं।

J. कथात्मक आलोचना (Narrative Criticism) – इस विधि उन विषयों के विश्लेषण में किया जाता है, जिनका प्रस्तुतीकरण कहानी के रूप में हुआ हो।

K. कल्पना आलोचना (fantasy criticism) – जिन विषयों में कल्पना का प्रयोग अधिक किया गया होता है उनका टेक्स्ट एनालिसिस करने के लिए फंतासी क्रिटिसिज्म का प्रयोग किया जाता है।

L. महिलावादी आलोचना (Feminist Criticism) - इसमें टेक्स्ट का विश्लेषण इस प्रकार किया जाता है कि पता चल सके नारी के प्रति किस प्रकार दृष्टिकोण अपनाया गया है, और प्रतिपादित संदेश महिला वर्ग के प्रति क्या धारणा रखता है।

टेक्स्चुअल एनालिसिस के लिए आलंकारिक आलोचना विधि का प्रयोग करते समय निम्न चार चरणों (Steps) का प्रयोग किया जाता है। -

I. अध्ययन के लिए टेक्स्ट का चुनाव
II. टेक्स्ट के अनुसार विशेष आलंकारिक आलोचना विधि का चुनाव
III. चयनित विधि के अनुसार टेक्स्ट का विश्लेषण
IV. आलोचनात्मक निबंध लेखन

आलंकारिक आलोचना विधि के अनेक प्रकार है, जिनका प्रयोग विभिन्न प्रश्नों के उत्तर प्रदान करने के लिए किया जाता है जैसे -

I. टेक्स्ट और उसके संदर्भों के बीच क्या संबंध है?
II. क्या पाठक या दर्शक वर्ग प्रतिपादित टेस्क्ट के माध्यम से सच्चाई जान पा रहा है?

III. टेक्स्ट के माध्यम से आलंकारिता/शब्दांडरपूर्णता के बारे में क्या पता चलता है?

2. विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) - इसका प्रयोग दिए हुए टेक्स्ट में संदेशों की पहचान करने और संदेशों में निहित विशेषताओं की पहचान करने, गणना करने और विश्लेषण करने में किया जाता है। विषयवस्तु विश्लेषण को मुख्यतय दो भागों में विभाजित किया जाता है। -

A. गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण (Qualitative Content Analysis) – इस प्रकार के विश्लेषण में संदेश में निहित गुणों पर अधिक ध्यान दिया जाता है बनिस्पत संदेशों की संख्या के।

B. परिमाणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण (Quantitative Content Analysis) - इसमें टेक्स्ट में निहित संदेशों व टेक्स्ट का परिमाणात्मक विश्लेषण किया जाता है।

- विषयवस्तु विश्लेषण को अप्रच्छन्न विधि माना जाता है। क्योंकि इसमें अध्ययन करने के लिए टेक्स्ट का उत्पादन नहीं किया जाता है, बल्कि पूर्व से मौजूद टेक्स्ट का ही अध्ययन किया जाता है।
- विषयवस्तु विश्लेषण में सामान्यत: गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण विधि का ही अधिक प्रयोग किया जाता है। जिसके लिए प्रमुख दो चरणों का इस्तेमाल किया जाता है -

टेक्स्ट का चुनाव - सर्वप्रथम विश्लेषित किए जाने वाले टेक्स्ट का चुनाव किया जाता है, जिसमें अखबार, पत्रिकाएं, किताबें, सार्वजनिक संदेश या ऑनलाइन सामग्री ब्लॉग आदि सम्मिलित होते हैं।

विश्लेषण इकाई सुनिश्चित करना - सर्वप्रथम उचित संदेश इकाई कोड की पहचान की जाती है। जिसे इकाईकरण की प्रक्रिया कहा जाता है।

इकाईकरण की प्रक्रिया के लिए निम्म इकाई कोड में विभाजित किया जाता है -

भौतिक इकाई (physical unit) – इसमें विषवस्तु का विस्तार और समय के अनुसार आंकलन किया जाता है।

अर्थ इकाई (Meaning unit) - इसमें अर्थ, भाव व उद्देश्य के आधार पर विषयवस्तु का विश्लेषण किया जाता है।

वाक्य रचना इकाई (syntactical units) – इसमें विषयवस्तु के विश्लेषण के समय पैराग्राफ, वाक्यरचना और शब्दों की रचना पर ध्यान दिया जाता है।

संदर्भ संबंधी इकाई (referential unit) – इसे संकेत इकाई भी कहा जाता है। इसमें भौतिक या लौकिक इकाइयों का इस्तेमाल विषयवस्तु का छुपे हुए सकेतों के साथ विश्लेषण किया जाता है।

विषयक इकाई (thematic unit) – इसमें संदेश के अंदर की विषवस्तु का विश्लेषण किया जाता है।

3. अंत:क्रिया विश्लेषण - (interaction analysis) – इसमें अध्येता व्यक्तिगत रूप से मिलकर संवाद के जरिए विषयवस्तु के विश्लेषण के लिए तथ्य एकत्रित करता है।

A. अंत:क्रिया का वर्णन करते समय अध्येता निम्न विशेषताओं को मुख्य रूप से ध्यान में रखता है।

- किसी संवाद में शब्द और वाक्य रचनाओं से ज्यादा व्यक्ति की शारीरिक भाषा संवाद को संप्रेषित करती है। अंत:क्रिया विश्लेषण इस प्रकार की भाषायी विशेषताओं का भी गहनता के साथ विश्लेषण किया जाता है।
- संवाद के विषय पर ध्यान दिया जाता है, जिस विषय विशेष को चर्चा का केन्द्रबिंदू रखा गया है।
- अंत:क्रिया के द्वारा अभिव्यक्ति और प्रतिक्रिया विशेष को भी ध्यान में रखा जाता है।

B. समूह निर्णय प्रक्रिया में शामिल लोगों का निम्न मौलिक क्रियाओं को पूर्ण करना आवश्यक है, जो कि अपेक्षित क्रियाएं कही जाती हैं।

- निर्णय लेने की स्थिति की सपूर्ण और सही समझ
- क्रिया के विभिन्न व्यवहारिक पहलुओं की गहन समझ।
- वैकल्पिक चुनाव के साथ जुड़े हुए सकारात्मक परिणामों का सही और संपूर्ण आकलन।
- वैकल्पिक चुनाव के साथ जुड़े हुए नकारात्मक परिणामों का सही और संपूर्ण आकलन।

C. अध्येता को संवाद की प्रक्रिया के दौरान घटने वाली प्रत्येक क्रिया और संवाद के क्रियात्मक पक्ष पर गहनता से दृष्टि रखनी होती है।

D. संवाद में भाग लेने प्रत्येक व्यक्ति के आपसी संबंधों का भी विश्लेषण के दौरान ध्यान रखा जाता है।

E. अंतःक्रिया से संबंधित अन्य चरों पर भी ध्यान दिया जाता है, जो संवाद को प्रभावित करते हैं -

- अंतःक्रिया में भाग लेने वालों की व्यक्तिगत विशेषताएं किस प्रकार उनके व्यवहार को अंतःक्रिया के समय प्रभावित करती हैं।
- जनसांख्कीय विशेषताएं जैसे, लिंग, जाति, धर्म, प्रजाति किस प्रकार अंतःक्रिया को प्रभावित करती हैं।
- संवाद प्रस्तुतीकरण की कला भी अंतःक्रिया को प्रभावित करती है।
- चिंता तत्व अंतःक्रिया के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- संज्ञात्मक जटिलता
- लगाव की कला
- रक्षात्मकता
- अकेलापन या एकांत की चाह
- नियंत्रण की परिधि या सीमा

- आत्मविश्वास व आत्मपरिपूर्णता
- स्वयं समीक्षा
- मतभेदों का सहन करने की क्षमता

अंत:क्रिया विश्लेषण के दौरान प्रमुख रूप से दो कार्य शामिल होते हैं - सबसे पहले सावधानी पूर्वक अंत:क्रिया के नमूने का चुनाव करना होता है और बाद में उसका विश्लेषण

प्रदर्शन अध्ययन (performance studies) – इसके अंतर्गत किए गए संवाद के फलस्वरूप उत्पन्न हुए परिणामों के आधार पर संवाद का प्रदर्शन आधारित विश्लेषण किया जाता है।

शोध प्रश्न

1. वरिष्ठ हिन्दी पत्रकारों के ब्लाग्स पोस्ट्स का मुख्य कथ्य क्या है?
2. ब्लाग्स पोस्ट्स के कथ्य में क्या साम्यता है?
3. ब्लाग्स पोस्ट्स के कथ्य में विविधता क्या है?

राजनीतिक विषयों पर ब्लॉग्स

राजनीति और मीडिया में गहरा संबंध है। चाहे वह मीडिया का इलेक्ट्रॉनिक, प्रिंट स्वरूप हो या आमजन के मोबाइल में पहुंच चुका न्यू मीडिया, सभी राजनीति को गहरे प्रभावति करते हैं।[1] मीडिया राजनीति वर्ग पर दबाव बनाता है और उनकी नीतियों और योजनाओं को प्रभावित करता है। मीडिया का अधिकांश समय राजनीतिक विषयों को 'कवर' करने में गुजरता है। इसी प्रकार राजनीति भी मीडिया को अपने हिसाब से प्रभावित करती रहती है। वहीं मीडिया संस्थानों के प्रमुख जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग भी अपनी विचारधारा, राजनीतिक व कॉरपोरेट के दबाव में काम करते हैं, जिसके परिणास्वरूप समाचारों के दृष्टिकोणों में परिवर्तन आता है।[2]

राजनीति के प्रारंभिक दौर से ही कूटनीति और धरातलीय व्यावहारिकता अधिक प्रभावी रही है। लेकिन आज तकनीक के नए स्वरूपों ने राजनीति के स्वरूप को भी बदल दिया है। अस्सी के दशक तक किसी राजनेता की छवि उसके संघर्ष और जन के बीच किए गए कार्यों से बनती थी। लेकिन वर्तमान में सोशल मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा नेताओं की छवियों का गढ़ा जा रहा है। सोशल मीडिया चुनावों का प्रभावित करने लगा है।[3] भारत में 2014 में आम चुनाव रहे हों या अमेरिका में राष्ट्रपति पद का चुनाव न्यू मीडिया ने इन चुनावों को गहरे से प्रभावित किया। मोदी की 'चाय पर चर्चा', नीतीश के लिए 'बिहारी बनाम बहारी' जैसे नारों का चुनाव में प्रचारित होना न्यू मीडिया की ही देन रहा है।

इसी प्रकार पत्रकारों के ब्लॉग्स भी राजनीतिक गतिविधियों को अपने अंदाज में प्रभावित करते हैं। पत्रकार वर्ग द्वारा अपने ब्लॉग्स पर लिखी गई टिप्पणियां व लेख अत्यधिक

महत्व रखते हैं। पत्रकारों के लेखों को आम जन के बीच अधिक विश्वसनीयता की दृष्टि से देखा जाता है, साथ ही इनके लेखों में विशेषज्ञता होती है। रवीश कुमार, पुण्य प्रसून वाजपेयी, शशि शेखर, अंशुमान तिवारी, सुधीर राघव आदि के ब्लॉग्स रानजीतिक लेखों के मामले में विशेष स्थान रखते हैं। वर्ष 2016 में जनवरी से लेकर दिसंबर तक रवीश कुमार ने अपने ब्लॉग्स ‘कस्बा’ पर 92 पोस्ट्स, पुण्य प्रसून वाजपेयी ने अपने ब्लॉग्स पर 27, शशि शेखर ने 23, अंशुमान तिवारी ने 6 और सुधीर राघव ने अपने ब्लॉग्स पर 30 पोस्ट्स राजनीतिक विषयों से संबंधित लिखी हैं। इसके राजनीति लेखों पर पाठकों ने अनेकों प्रतिक्रियाएं दी हैं।

विश्लेषण के लिए इन पत्रकारों के ब्लॉग्स लेखों को विभिन्न उप भागों में बांट लिया है, जोकि भारतीय राजनीतिक विषयों पर पोस्ट्स, अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक विषयों पर पोस्टस, राष्ट्रवाद नक्सलवाद आतंकवाद अलगाववाद विषयों पर राजनीति, सांप्रदायिक विषय पर राजनीति, भ्रष्टाचार पर राजनीति व अन्य विषयों पर राजनीति आदि हैं।

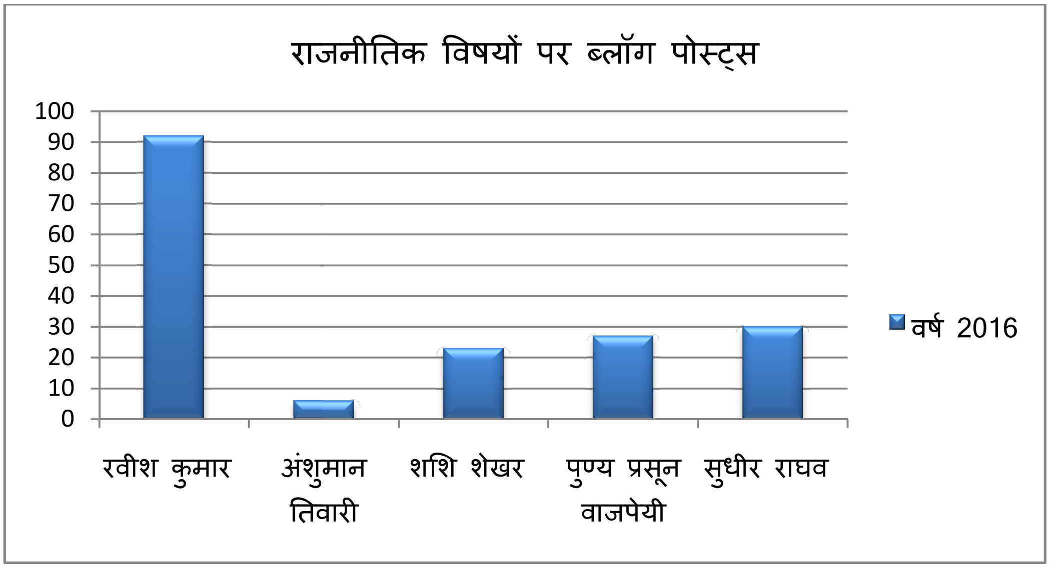

X अक्ष - हिन्दी मीडिया पत्रकारों के नाम

Y अक्ष - वर्ष 2016 में पत्रकारों द्वारा अपने-अपने ब्लॉग पर लिखी गईं राजनीतिक पोस्ट्स की संख्या

रवीश कुमार, अंशुमान तिवारी, शशि शेखर, पुण्य प्रसून वाजपेयी व सुधीर राघव द्वारा अपने-अपने ब्लॉग्स पर लिखे गए विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों में से राजनीतिक विषयों से संबंधित लेखों का प्रतिशत चार्ट

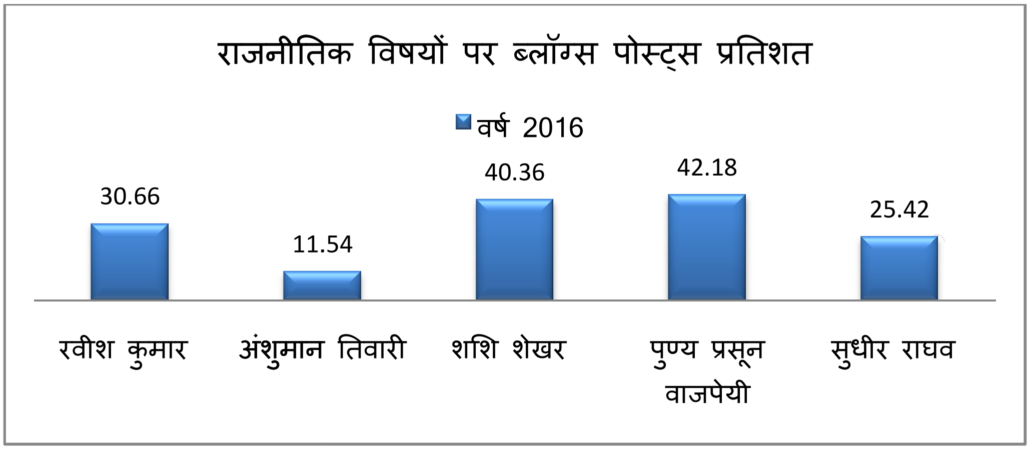

भारतीय राजनीतिक विषयों पर पोस्ट्स :

अंशुमान तिवारी ने 5 जनवरी, 2016 को अपने ब्लॉग 'अर्थार्थ' पर ''आकस्मिकता के विरुद्ध''[4] शीर्षक से डाली पोस्ट में देश के विकास के लिए राजनीतिक स्थिरता और निरंतरता को आवश्यक बताया है। वे लिखते हैं कि वर्ष 2016 में राजनीति और सरकारों

को आकस्मिकता के खिलाफ और निरंतरता के लिए संकल्प लेना चाहिए। देश के विकास के लिए बार-बार नई रणनीतियां बनाने और उन्हें अचानक बदलते रहने से विश्व समुदाय के मन में देश के प्रति विश्वास कम होता जाता है। इसलिए देश के विकास के लिए ठोस और स्थायी नीतियां बननी चाहिए। इसके लिए वे भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रशंसा करते हैं कि मोदी सरकार इस दिशा में काम कर रही है, लेकिन अभी कई महत्वपूर्ण निर्णय और लेने की आवश्यकता है। हालांकि उन्होंने उन योजनाओं या नीतियों का विशेषतय विश्लेषण नहीं है।

वहीं दूसरी ओर 6 जनवरी को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने अपने ब्लॉग पर ‘‘संघ मान रहा है बीजेपी को परिपक्व नेतृत्व चाहिए’’[5] शीर्षक से डाली पोस्ट में अमित शाह को बीजेपी का अध्यक्ष बनाए जाने और लालकृष्ण आडवाणी औक मुरली मनोहर जोशी के राजनीतिक समयों का विश्लेषण किया है। इसी प्रकार का एक लेख पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 23 जनवरी, 2016 को डाला है जिसमें उन्होंने संघ व बीजेपी के नजरिए से अमित शाह को अध्यक्ष बनाए जाने का विश्लेषण किया है।[6]

रवीश कुमार ने 8 फरवरी, 2016 को ‘‘हिटलर सिर्फ ‘हिटलर’ नहीं होता है’’[7] शीर्षक से पोस्ट डाली है। पोस्ट के शीर्षक में प्रयोग किए गए दूसरे हिटलर शब्द को इनवरटिड कोम के अंदर रखा, रवीश ने इसका प्रयोग अन्य व्यक्ति के लिए किया है, जिसकी तुलना हिटलर से की है। लेख समर्थन के लिए अमेरिका के वाशिंगटन में संग्रहालय की 15 तस्वीरों का भी इस्तेमाल किया है। एक तस्वीर में जूतों के ढेरों को दिखाया है, जिन्हें हिटलर की क्रूरता के शिकार लोगों का बताया जाता है। अन्य कुछ चित्रों में नाजी क्रूरता के इतिहास को अमेरिका के दृष्टिकोण से दिखाया गया है। रवीश लेख को भारतीय संदर्भ में घुमाते हुए आरोप लगाते हैं कि भारत में नेताओं के ऐसे भी समर्थक हैं जो हिटलर

जैसा नेता यहां भी चाहते हैं। लेख में हिटलर शब्द का भाव देश के प्रधानमंत्री मोदी से जुड़ता है। रवीश का लेख आशंकाओं पर आधारित है, उन्होंने अपनी बात के समर्थन में कोई तथ्य नहीं दिए हैं।

इसी प्रकार 'हिटलरी' शब्द का प्रयोग करते हुए सुधीर राधव ने 14 अप्रैल, 2016 को ''हिटलरी है या लोकतंत्र''[8] शीर्षक से डाली पोस्ट में आरोप लगाया है कि सरकार देश लोकतंत्र का खत्म कर रही है। यदि कोई व्यक्ति सरकार के खिलाफ बोलना चाहता है तो उसे या विपक्षी पार्टी का प्रवक्ता बता दिया जाता है या फिर उसका विरोध किया जाने लगता है। लेख में सुधीर राघव ने 'भक्त' शब्द का इस्तेमाल सरकार के समर्थकों के लिए किया है। साथ सरकार शब्द का इस्तेमाल विस्मयकारी सूचक चिन्ह के साथ किया है। वे सरकार पर आरोप लगाते हैं कि सरकार के खिलाफ बोलने पर उनकी जीवन का खतरा पैदा हो गया है। हालांकि वे स्पष्ट नहीं करते हैं कि किस माध्यम से और किस मुद्दे के खिलाफ बोलने से लोगों को या उनकों बोलने से रोका गया है। हालांकि वे लेख में सरकार के खिलाफ ही बोल रहे हैं। लेख में स्पष्ट नहीं हो रहा है कि वह लोकतंत्र में अभिव्यक्ति को कौन सा स्तर है जहां बोलने से रोका जा रहा है।

12 फरवरी, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने ''सपने जगाती राजनीति का एक वर्ष''[9] शीर्षक से डाली पोस्ट में अरविंद केजरीवाल सरकार के कार्यकाल के एक वर्ष का विश्लेषण किया है। लेख में वे अरविंद केजरीवाल के कार्यकाल की समीक्षा करते हुए लिखते हैं केजरीवाल लोगों की अपेक्षाओं पर पूरी तरह खरे नहीं उतर रहे हैं। हालांकि वे आलोचना करते समय केजरीवाल की प्रशंसा भी करते हैं। लेख में दोनों नकारात्मक व सकारात्मक दोनों पहलूओं की समीक्षा की है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 5 मार्च, 2016 को ''पारंपरिक राजनीति को कन्हैया की चुनौती शीर्षक''[10] से डाले लेख में जेएनयू में हुए देश विरोधी नारेबाजी के बाद मीडिया के जरिए देश के फलक पर आए कन्हैया को छात्र राजनीति का प्रतीक मानकर देश में भविष्य की राजनीति का विश्लेषण किया है। लेख में उन्होंने राष्ट्रवाद और राष्ट्रविरोध के मुद्दे को महत्व नहीं दिया है। बल्कि विभिन्न ऐतिहासिक छात्र आंदोलन से बदली देश की राजनीति के तथ्य भी प्रस्तुत किए हैं। साथ ही, वे बताते हैं कि वामपंथ बंगाल, केरल से निकलकर जेएनयू के माध्यम से दिल्ली तक पहुंच गया है। वे कन्हैया को कांग्रेस के खत्म होते प्रभाव के मध्य विकल्प के तौर देखते हैं। साथ ही वे आशंका जताते हैं कि कहीं यह छात्र आंदोलन बुलबुला न साबित हो। ज्ञातव्य है कि जेएनयू के मुद्दे ने बाद में राष्ट्रवाद बनाम देश विरोध की बहस का केन्द्र बना और शांत हो गया।

इसी प्रकार, रवीश कुमार 7 मार्च, 2016 को ''क्या कन्हैया नेता बन पाएगा''[11] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में जेएनयू विवाद के बाद कन्हैया के भविष्य की संभावनाओं को लेकर बात करते हैं। रवीश कन्हैंया के बारे में 'यदि ये होगा तो ये होगा, यदि नहीं हुआ तो क्या' के आधार पर आकलन करते हैं। रवीश कन्हैया विवाद को नजरअंदाज कर उसकी खूबियां गिनाते हैं और उसमें एक कुशल नेता के दर्शन करते हैं।

एक अन्य लेख में 14 मार्च, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने ''जेएनयू, पीएमओ, मीडिया और विपक्ष नहीं चाहता भ्रष्टाचार देश में मुद्दा बने''[12] शीर्षक से डाली पोस्ट में पुण्य प्रसून वाजपेयी जेएनयू की बहसों के हवाले से कहते हैं कि पीएमओ कॉकटेल पार्टियां कर रहा है, किसान-मजदूर के सवाल गायब हैं, लोग सवाल पूछने से पहले आशंकित हैं, मीडया और समाज को बांटा जा रहा है या बंट गया है। साथ ही वे जोड़ते हैं कि यह सवाल विचारधाराओं के टकराव की वजह से हैं। इस लेख में भी पुण्य प्रसून

वाजपेयी जेएनयू में लगे अलगाववादी और देश विरोधी नारों के मामले में कोई चर्चा नहीं करते हैं, मौन साधे रहते हैं। यह पूरा लेख जेएनयू में हुए हॉस्टल सेमिनार की पृष्ठभूमि के साथ लिखा गया है, जिसमें वे स्वयं शामिल रहे, ऐसा उन्होंने अपने लेख में लिखा है। शशि शेखर, अंशुमान तिवारी व सुधीर राघव ने जेएनयू से जोड़कर राजनीति के संबंध में कोई लेख नहीं लिखा है।

11 मार्च को रवीश कुमार ने राज्यसभा सांसद विजय माल्या को ब्लॉग के जरिए खुला पत्र लिखा है।[13] पत्र की शैली व्यंग्यात्मक हैं। उन्होंने क्वात्रोची, ललित मोदी, दाऊद इब्राहिम की चर्चा करते हुए भारतीय संस्थाओं और सरकारों पर सवाल उठाएं हैं कि किस प्रकार देश से अपराधी भागते रहते हैं।

22 मार्च, 2016 को ''छात्रों भगत सिंह को कभी मत पढ़ना''[14] शीर्षक से रवीश कुमार ने छात्र राजनीति पर आपत्ति करने वाले लोगों का विरोध किया है। वे कहते हैं कि छात्र राजनीति की उपज आज के तमाम नेता ही आलोचना करते हैं कि कॉलेज-विश्वविद्यालय छात्र राजनीति के अखाड़ा बन गए हैं, जिससे वहां शिक्षा व्यवस्था बाधित रहती है, व राजनेताओं का कठघरे में खड़ा करते हैं कि वे अपनी सुविधानुसार चीजों को परिभाषित करना चाहते हैं। वे आगे लिखते हैं कि महान व्यक्तित्वों के विचारों को भी कांट छांटकर अपनी राजनीतिक सहूलियतों के हिसाब से पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है। यदि महान व्यक्तित्वों को यदि मूल रूप में पढ़ाया जाने लगे तो पढ़ने वाले छात्र राजनीतिक व्यवस्थाओं के खिलाफ खड़े हो जाएंगे।

इसी प्रकार सुधीर राघव ने 9 मई को ‘‘वीर सावरकर’’[15] शीर्षक से लेख लिखा है, जिसमें उन्होंने वीर सावरकर पर सवाल उठाएं हैं साथ सरकार पर आरोप लगाया है कि वह पाठ्यक्रमों का भगवाकरण करने की कोशिश कर रही है।

रवीश कुमार ने 22 मार्च, 2016 को ‘‘प्राइवेट कंपनियों में आरक्षण के बहाने पासवान का प्राइवेट जोखिम’’[16] पोस्ट में लिखते हैं कि दलित राजनीति करने वाले नेता प्राइवेट कंपनियों में आरक्षण की मांग करते हैं तो पहले उन्हें ऐसा कानून बनाना चाहिए कि जिसमें प्रत्येक छह महीने या एक वर्ष में सरकार को सरकारी नौकरियों के आरक्षण सहित आंकड़े जारी करने का प्रावधान हो। आरक्षण का समर्थन करते हुए रवीश कुमार ने लेख में राजनेताओं द्वारा प्राइवेट कंपनियों में आरक्षण की मांग करने पर तंज करते हुए सवाल उठाएं हैं।

इसी प्रकार अंशुमान तिवारी ने 21 मार्च, 2016 को ‘‘नौकरियों के बाजार में आरक्षण’’[17] शीर्षक से डाली पोस्ट में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और बीजेपी की राय को आरक्षण के संबंध में स्पष्ट किया है। उनके अनुसार आरएसएस जातीय आरक्षण पर समीक्षा चाहता वहीं बीजेपी राजनीतिक कारणों से इससे बचना चाहती है। लेकिन इसके विपरीत 5 जुलाई को पुण्य प्रसून वाजपेयी ‘‘जात ही पूछो नेता की’’[18] शीर्षक से लिखे लेख में जाति आधारित राजनीति की आलोचना करते हैं। हालांकि वे नौकरियों में आरक्षण के संबंध में कुछ नहीं लिखते हैं।

रवीश कुमार 29 मार्च को डाली गई पोस्ट ‘‘संवैधानिक संकट के बहाने संकट का संविधान’’[19] में उत्तराखंड राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाने की प्रक्रिया पर सवाल उठाएं हैं। इसके लिए उन्होंने सरकार की मंशा पर भी सवाल खड़े किए हैं।

रवीश कुमार ने 3 अप्रैल, 2016 को अपने ब्लॉग पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस के नाम खुला पत्र लिखा है[20], जिसमें उन्होंने आरोप लगाया है कि वे सरकार चलाने के बजाए विचारधारा थोपने का काम कर रहे हैं। भारत माता की जय बोलना आवश्यक है या प्रदेश के विकास की ओर ध्यान देना। रवीश भारत की जय न बोलने वालों का बचाव करते हैं। इस विषय पर वे कट्टर वामपंथी दिखायी देते हैं, उनके अनुसार राष्ट्रवाद की कोई प्रासंगिकता नहीं है। इसी प्रकार का एक और अन्य लेख में रवीश कुमार ने 4 अप्रैल, 2016 को ''देवेन्द्र फड़नवीस जी बताइये तो कब-कब कहां-कहां जय बोलना है''[21] शीर्षक के साथ डाली गई पोस्ट में ऑडियो क्लिप डाली है, जिसमें महाराष्ट्र सरकार के राष्ट्रवादी नजरिये पर वामपंथी अंदाज में सवाल उठाएं हैं।

रवीश कुमार ने 16 अप्रैल, 2016 को डाली पोस्ट ''मोदी जी राहुल जी क्या आप आईसीयू में गए थे''[22] में केरल हुए हादसे के बाद राजनीतिक आवाजाही की आलोचना की है। उनका कहना है कि घटनास्थल पर राजनीतिक आवाजाही के कारण बचाव कार्यों में दिक्कत आई। साथ ही वे सलाह देते हैं कि राहुल गांधी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा छोड़कर हादसे के दो-तीन बाद दौरा करना चाहिए था। उनका तर्क है कि सरकारी मशीनरी को इनकी सुरक्षा और व्यवस्था में भी लगना पड़ा, जिसके कारण बचाव कार्यों में दिक्कतें आईं। हालांकि वे मीडिया के व्यवहार को लेकर कोई टिप्पणी नहीं करते है, जो राजनेता के घटनास्थल पर नहीं पहुंचने पर लापरवाही का आरोप लगाने लगता है। केरल के कोल्लम में हुए मंदिर परिसर पटाखा हादसे में सैकड़ों लोगों की जान चली गई थी।

22 अप्रैल, 2016 को रवीश कुमार ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों के लिए अपने ब्लॉग पर एक खुला पत्र लिखा है।[23] लेख में उन्होंने शिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी, सुरक्षा के प्रति

उनके नजरिए की आलोचना की है। हालांकि रवीश में इन सभी मुद्दों पर क्या पॉलिसी होनी चाहिए या क्या रणनीति होनी चाहिए के बारे में कुछ नहीं लिखा है।

इसी तारीख 22 अप्रैल को रवीश कुमार ''स्वपन दास गुप्ता को राज्य सभा के लिए बधाई''[24] लेख में वे लिखते हैं स्वप्न दास गुप्ता दक्षिणी पंथी विचाराधारा के पत्रकार हैं, उनके लेख वामपंथ विचारधारा के माने वाले अखबारों में भी छपते रहते हैं। रवीश खुद को वामपंथी विचारधारा का पत्रकार मानते हैं। उन्होंने लेख में स्वप्न दास गुप्ता को राज्यसभा के लिए मनोनित किए जाने पर बधाई दी है। हालांकि उन्होंने लेख में एक जगह स्वप्न दास गुप्ता को पार्टी विशेष का पत्रकार भी कह डाला है। राज्यसभा के लिए सरकारों द्वारा पत्रकारों का मनोनित किया जाना कोई नई बात नहीं है। लेख में स्वप्न दास गुप्ता के ट्विटर हैंडल और उनके लेखों के चित्र भी लगाएं हैं।

रवीश कुमार ने 24 अप्रैल, 2016 की पोस्ट ''झूठी राजनीति का सच्चा शॉप - फोटोशॉप''[25] में लिखते हैं कि वर्तमान राजनीति में सौहार्दयता का माहौल समाप्त होता जाता है। किसी नेता द्वारा विपक्षी पार्टी के नेता से मुलाकात की तस्वीरों का राजीतिक फायदे के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कभी-कभी विरोधियों द्वारा फोटोशॉप की गई झूठी तस्वीरों को वायरल कराया जाता है और उसका राजनीतिक फायदा लिया जाता है। रवीश कुमार लेख में आगाह करते हैं कि इस प्रकार का चलन देश की राजनीति के लिए हितकर नहीं है। लेख के समर्थन में उन्होंने दो तस्वीरें पेश की हैं, एक तस्वीर में राजनाथ सिंह प्रकाश करात को लड्डू खिला रहे हैं। रवीश कुमार दावा करते हैं कि यह तस्वीर झूठी है। इसे राजनाथ सिंह द्वारा प्रधानमंत्री मोदी को लड्डू खिलाने की तस्वीर का फोटोशॉप करके बनाया गया है।

रवीश कुमार 6 मई, 2016 को ‘‘यह पानी की नहीं, प्रचार की रेल है’’[26] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में महाराष्ट्र में सूखे के समय सरकार द्वारा भेजी गई रेल में रवीश कुमार राजनीतिक कोण देखते हैं। हालांकि रवीश ने आजादी के इतने वर्ष बाद भी देश में आए साल किसी न किसी कोने में होने वाली सूखे की समस्या के स्थायी समाधान न हो पाने के कारणों की कोई चर्चा नहीं की है। लेख में पेय जल जैसी गंभीर समस्याओं के बारे में समग्रता के साथ नहीं लिया गया है। जल समस्या के संबंध में विशेषज्ञ जानकारी के लेख होने चाहिए। रवीश इस लेख में राजनीतिक कारण तो ढूंढ लेते हैं लेकिन यह नहीं बताते हैं कि महाराष्ट्र के उस जलसंकट का तात्कालिक समाधान किस प्रकार निकालना चाहिए था।

इसी प्रकार जल समस्या के विषय पर रवीश कुमार ने 14 मई, 2016 को ‘‘सूखे के कारण वो डूब कर मर गई’’[27] शीर्षक से एक और पोस्ट डाली है। कुंए के पानी पर तैरते हुए मृत महिला के शरीर के दो चित्र लगाएं हैं। रवीश ने सरकारी तंत्र पर तंज कसा है कि इस महिला की मौत कुंए में डूबकर नहीं बल्कि नकारा सरकारी तंत्र, जिसमें सरकारें व प्रशासन शामिल है के कारण हुई है। यदि सरकारों ने पानी की उचित व्यवस्था की होती तो उस महिला को न तो पानी भरने के लिए कुंए के पास आना पड़ता और न ही उसका पैर फिसलता। रवीश ने इस घटना बहुत मार्मिक तरीके से पत्रकारिता के शब्दों में बांधा जो पूरी व्यवस्था को आईना दिखाता है।

रवीश कुमार ने 15 मई, 2016 को ‘‘मोदी सरकार के दो साल- क्या किसी के पास दूसरा तथ्य है या एक ही सत्य है’’[28] शीर्षक से लिखी पोस्ट में सरकार की समीक्षा करते हुए विपक्ष की भूमिका पर सवाल उठाए हैं। जब सरकार कोई आंकड़ा जारी करती है तो विपक्ष क्यों नहीं उन गांवों को जाकर देखता है कि आंकड़ों में कितनी हकीकत है। उन्होंने

विदेश मंत्रालय, ऊर्जा मंत्रालय, परिवहन मंत्रालय के आंकड़े भी दिए हैं। उन्होंने मीडिया को संबोधित करते हुए लिखा है कि किसी मीडिया को जाकर सरकारी आंकड़ों की जांच पड़ताल करनी चाहिए, हालांकि वे स्वयं पत्रकार और एक राष्ट्रीय समाचार चैनल के संपादक हैं, वे स्वयं और अपने चैनल की ओर से इस संबंध में कोई आश्वासन नहीं देते हैं।

इसी प्रकार, 16 मई, 2016 को रवीश कुमार ने ''मोदी सरकार दो साल - संघर्ष के आलस्य से जूझती कांग्रेस''[29] में आरोप लगाया है कि कांग्रेस विपक्ष की भूमिका को सही तरीके नहीं निभा पा रही है। मोदी सरकार में कांग्रेस एक भी बड़ा मौका नहीं ढूंढ पाई है, जिसके जरिये वह मोदी सरकार से सवाल-जवाब कर सके। रवीश कुमार के दोनों ही लेखों में साल के कामकाज की कोई स्वस्थ समीक्षा नहीं की गई है बल्कि अधिक ध्यान विपक्षी पार्टी की आलोचना पर दिया गया है कि वह बीजेपी की नीतियों का सख्ती के साथ विरोध नहीं कर पा रहे हैं।

लेकिन शशि शेखर ने 'दो बरस बाद प्रधानमंत्री मोदी' शीर्षक से डाली पोस्ट में नरेन्द्र मोदी के दो साल के कार्यकाल का विश्लेषण किया है। लेख में प्रधानमंत्री के दो साल के कार्यकाल की प्रशंसा की गई जो 16 मई, 2016 को पूरा हुआ। वे लिखते हैं कि कुछ लोग मोदी को अक्खड़ बताते हैं। लेकिन, शशि शेखर व्यक्तिगत मुलाकात के आधार पर दावा करते हैं कि उनका या अन्य संपादक साथियों का कभी ऐसा अनुभव नहीं रहा है। वे प्रधानमंत्री की व्यवहारकुशलता की प्रशंसा करते हुए उनकी तुलना मनमोहन सिंह से करते हैं। शशि शेखर ने लिखा है कि मनमोहन सिंह केवल लोगों से औपचारिकता व नीरसता के साथ मिलते थे, वहीं मोदी की मुलाकातों में आत्मीयता रहती है। वे मोदी सरकार की

नीतियों की प्रशंसा करते हैं। पूरे लेख में पत्रकारिता के नजरिये से सरकार की कहीं भी आलोचना नहीं की गई है।

इसी लेख में वे दिल्ली के उस भद्रलोक की भी आलोचना करते हैं, जो लुटियन्स जोन के बाहर के व्यक्ति को आसानी से स्वीकार नहीं करता है। इस लुटियस जोन में राजनीतिक रूप से क्षेत्रीय नेताओं को शीर्ष पदों पर आसानी से स्वीकार नहीं किया जाता है। इस लेख में उनका इशारा प्रधानमंत्री बनने से पूर्व नरेन्द्र मोदी की आलोचना करने वाले दिल्ली आधारित बुद्धिजीवियों व राजनीतिक लोगों की ओर है।

शशि शेखर की पोस्ट के विपरीत सुधीर राघव ने 12 जुलाई, 2016 को ''जयचंद और मोदी''[30] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में मोदी की तुलना जयचंद करते हैं। उनका मानना है कि मोदी ने पाकिस्तान जाकर नवाज शरीफ की के पिता के पैर छूकर देश को धोखा दिया है। किसी भी पत्रकार को लोकतंत्र में जनहित के लिए आलोचना करने का अधिकार है। लेकिन सुधीर राघव प्रधानमंत्री पद की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाले शब्दों का इस्तेमाल किया है। लेख में पत्रकार के लिए आवश्यक शालीनता और मर्यादाओं का ध्यान नहीं रखा गया है।

इसी प्रकार का एक अन्य लेख सुधीर राघव ने ''मोदी की लोकप्रियता''[31] हेडलाइन के साथ 25 मार्च, 2016 को पोस्ट किया है, इसमें वे मोदी पर आरोप लगाते हैं कि वे जमाखोरों, लठैतों के लोकप्रिय नेता बन गए है। वे आरोपों का आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं कि भाजपा इस प्रकार की नीतियों के सहारे ही 2025 तक सत्ता में रहना चाहती है। वे लिखते हैं कि मोदी सैनिकों, किसानों और शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। हालांकि यहां भी उन्होंने किसी प्रकार के तथ्य या आंकड़े नहीं दिए हैं।

रवीश कुमार 19 मई को रवीश ने भारतीय जनता पार्टी को भारतीय जुझारू पार्टी कहा है।[32] इस लेख अपने अन्य लेखों के एकदम विपरीत भारतीय जनता पार्टी की असम में मिली जीत की प्रशंसा की है, इसके लिए उन्होंने पार्टी के संगठन और उसके कार्यकर्ताओं की मेहनत को जिम्मेदार माना है। इसके पीछे उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के छह दशकों से ज्यादा के परिश्रम को माना है। लेख में उन्होंने कांग्रेस सरकार के कमजोर होते संगठन की ओर भी इशारा किया है। दूसरी ओर, 1 जून, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ''कैसे बदलेगी राहुल गांधी की कांग्रेस''[33] शीर्षके से पोस्ट डाली है। इसमें में उन्होंने कांग्रेस पार्टी में शीर्ष नेतृत्व से लेकर कार्यकर्ता स्तर तक भ्रम की स्थिति की बात कही गयी है। वे लिखते हैं कि कांग्रेस नेतृत्व में बड़ी सर्जरी की आवश्यकता है ताकि संगठन को पुन खड़ा किया जा सके।

वहीं, शशि शेखर 2 अप्रैल को ''बदलाव की बेचैनी, बेलगाम लालसाएं''[34] शीर्षक डाली पोस्ट में राष्ट्रीय पार्टियों में पीढ़ी परिवर्तन के समय उभरने वाले नेतृत्व संकट का राजनीतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से विश्लेषण किया है। वे ऐतिहासिक उदाहरणों के साथ लिखते हैं कि कांग्रेस में राष्ट्रीय स्तर पर पीढ़ी परिवर्तन हो रहा है। राहुल गांधी को बाहर लड़ाइयों से ज्यादा पार्टी के अंदर की लड़ाइयों से जूझना पड़ रहा है। वे बीजेपी के बारे में लिखते हैं कि प्रादेशिक स्तर पर बीजेपी के साथ भी यही समस्या है।

शशि शेखर तर्क देते हैं कि बिहार व दिल्ली के विधान सभा चुनावों में हार के पीछे नकारे जा चुके पुरानी पीढ़ी के चेहरे हैं। वे लिखते हैं कि बीजेपी को दिल्ली और बिहार में पीढ़ी परिवर्तन की आवश्यकता है। इसी प्रकार अंशुमान तिवारी ने 8 अगस्त को ''एनडीए की जरूरत''[35] शीर्षक से डाली पोस्ट में लिखा है कि परिणाम देनी वाली सरकार के लिए आवश्यक है एनडीए और बीजेपी का विस्तार हो, बिना राज्यसभा में बहुमत प्राप्त किए

सरकार अपने योजनाओं के अनुसार काम नहीं कर सकती है। अंशुमान तिवारी का यह लेख बीजेपी के सरकार के बारे में लिखे गए अधिकांश लेखों के एकदम विपरीत है। अंशुमान तिवारी में अपने अधिकांश लेखों में बीजेपी सरकार की कड़ी आलोचना की है।

21 मई, 2016 को शशि शेखर ने ''दिल्ली पर भारी पड़ते देशज''[36] शीर्षक से लेख लिखा है। इसमें वे कांग्रेस और भाजपा को नसीहत देते हैं कि भारत जैसे विशाल देश में सत्ता हासिल करने या बरकरार रखने के लिए अपने-अपने क्षेत्रीय क्षत्रपों को तलाशना और मजबूत करना होगा, जो अपने दम पर पार्टी को जिताने में सफल हों। लेख में संतुलन का ध्यान रखा गया है। कांग्रेस और भाजपा दोनों ही पार्टियों को समान स्तर से सलाह दी गई है। लेख में पार्टी विशेष के प्रति किसी प्रकार के पूर्वाग्रहों को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

रवीश कुमार ने 13 जून, 2016 को ''राजनीतिक गिरोह का गढ़ है राज्य सभा''[37] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में संविधान निर्माताओं की राज्यसभा की रचना के पीछे की मंशा और वर्तमान स्वरूप को लेकर समीक्षा की है। उनका मानना है कि वर्तमान राज्यसभा संविधान निर्माताओं के सपनों को पूरा नहीं करती है। रवीश ने राज्यसभा के हुए 2016 के चुनावों को भी इसी दृष्टि से देखते हैं।

23 जून, 2016 को रवीश कुमार ने ''क्या मायावती को लिखा हुआ भाषण नहीं पढऩा चाहिए''[38] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें लिखा हुआ पढ़ने और बिना लिखा हुआ बोलने वाले राजनेताओं की शारीरिक भाषा का विश्लेषण किया है। वे इस प्रयोग के दोनों स्वरूपों को मायावती पर देखते हैं। मायावती अक्सर अपनी जनसभाओं में या प्रेस कांफ्रेस में लिखा हुआ पढ़ती हैं, लेकिन स्वामी प्रसाद मौर्या के पार्टी छोड़ने के बाद की गई प्रेस

कांफ्रेस को उन्होंने बिना कागजों के संबोधिक किया था, जिसे रवीश ने अच्छा बताया है। हालांकि रवीश ने किसी अन्य नेता से मायावती की कोई तुलना नहीं की है। मायावती की वाक शैली का एकतरफा विश्लेषण किया है। साथ ही मायावती के श्रोताओं को किस प्रकार की शैली पसंद है इसका भी जिक्र नहीं किया गया हो।

रवीश कुमार 29 जून, 2016 को डाली गई पोस्ट ''सांतवे वेतन आयोग के हिसाब से वेतन देकर कोई अहसान नहीं कर रही सरकार''[39] में मीडिया के उस विश्लेषण की आलोचना है, जिसमें कहा गया था कि उन महकमों मानवीय संसाधनों की कटौती करनी चाहिए, जिसमें काम नहीं होता है। हालांकि रवीश कुमार ने अपने समर्थन के लिए स्पष्ट कारण नहीं दिए हैं। साथ ही यह स्पष्ट नहीं किया है कि केवल समाजवादी विचारधारा के आधार पर सरकारी महकमों का क्यों संचालन किया जाना चाहिए। वे इस बात के बारे कुछ नहीं लिखते हैं कि क्या समाजवादी नीतियों को प्राइवेट सेक्टर की नौकरियों में भी लागू किया जाना चाहिए? क्या इस नीति को मीडिया संस्थानों में लागू किया जा सकता है?, जहां बाजार के अनुसर मानव संसाधनों की कटौती होती रहती है। साथ ही वे स्पष्ट नहीं करते हैं कि अनावश्यक नौकरी के पदों की कटौती के निर्णयों को किस प्रकार गलत ठहराया जा सकता है।

27 जून, 2016 को रवीश कुमार ने ''पच्चीस साल की उम्मीदें-नाउम्मीदें''[40] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने प्रधानमंत्री चंद्रशेखर द्वारा विदेश में सोना रखने की घटना व पीवी नरसिम्महा राव की उदारवादी नीतियों से लेकर वर्तमान तक देश के विकास की राजनीतिक इतिहास की पृष्ठभूमि के साथ विश्लेषण किया है। साथ ही, वे चिंता जताते हैं कि इतनी वर्षों बाद भी देश में जो 32 रुपये रोजाना कमाता है वह गरीब नहीं। वे नक्सलवाद के हिंसा की सिद्धांत की आलोचना करते हैं, लेकिन वे उनके जन, जल,

जंगल, जमीन के अधिकारों के संबंध में दिए गए तर्कों को स्वीकार करते हैं। वे देश में राजनीतिक इच्छाशक्तियों की आलोचना करते हैं और इस सबके लिए राजनीतिक शक्तियों को जिम्मेदार ठहराते हैं।

6 जुलाई, 2016 को रवीश कुमार कैबिनेट विस्तार के संबंध में ''मंत्रीमंडल विस्तार का क्या आधार है''[41] शीर्षक के साथ लेख लिखा है, उन्होंने लिखा है कि सरकार में मंत्रियों के फेरबदल को मीडिया अपने ही अंदाज में व्याख्या करता है। कभी कभी यह व्याख्या मीडिया के नजरिए कम राजनीतिक नजदीकियों के अनुसार होती हैं। रवीश ने यहां मीडिया की समीक्षा के साथ समाज की राजनीतिक समझ की प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला है। इसी तारीख को डाली गई एक अन्य पोस्ट में 'बोगस दलीलों के दौर में कैबिनेट विस्तार' शीर्षक से मत्रिमंडल विस्तार या फेरबदल करने की प्रक्रिया पर होने वाली बहसों की समीक्षा की है।

रवीश कुमार ने 6 जुलाई, 2016 को ही ''एम जे अकबर के नाम रवीश कुमार का पत्र''[42] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में इडिया टुडे के पूर्व संपादक व जाने माने पत्रकार एमजे अकबर को बीजेपी सरकार में विदेश राज्यमंत्री बनाए जाने पर व्यंग्यात्मक शैली में तंज कसा है, उन्होंने एमजे अकबर की पत्रकारिता को लेकर भी सवाल किए हैं। हालांकि रवीश के इस पत्र के जबाव में टीवी के अन्य पत्रकारों ने भी रवीश को पत्र लिखे और उनकी मंशा पर सवाल उठाने वाले प्रश्न किए गए।

रवीश कुमार ने 7 जुलाई, 2016 को डाली गई अपनी पोस्ट में स्मृति ईरानी को सोशल मीडिया पर बिना आधार के ट्रोल करने वालों की आलोचना करते हुए इसे नारी विरोधी बताया है।[43] उन्होंने मुख्यधारा मीडिया पर भी आरोप लगाएं हैं कि वह भी बिना तथ्यों

के सोशल मीडिया की तरह व्यवहार कर रहा है। एक अखबार का हवाला देते हुए उन्होंने लिखा है कि स्मृति ईरानी को अहंकारी और अज्ञानी बताना मीडिया की नैतिकता के खिलाफ है। स्मृति ईरानी के मंत्री होने के नाते उनकी व्यक्तिगत छवि की समीक्षा से ज्यादा जरूरी है उनकी नीतियों, कार्यों की समीक्षा की जानी चाहिए।

9 जुलाई, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने ''स्मृति ईरानी के पर किसने कतरे''[44] शीर्षक से डाली पोस्ट में सवाल उठाया गया है कि स्मृति ईरानी का संघ की इच्छा के विरुध्द क्यों हटाया गया। पुण्य प्रसून वाजपेयी इसे सरकार और संघ के बीच शिक्षा नीति पर टकराव के रूप में देखते हैं। हालांकि मुख्यधारा मीडिया की खबरों में ऐसा नहीं दिखाया गया। 10 जुलाई, 2016 को रवीश कुमार ने ''राज्य के लिए राज्य का होना, मारना और मरना''[45] शीर्षक के साथ कविता पोस्ट की है।

23 जुलाई, 2016 को शशि शेखर ने ''विजय पर्व पर वीरों की चिंता''[46] शीर्षक से डाली पोस्ट में रक्षा मामलों सरकारों द्वारा बरती जानी लापरवाही की ओर एतिहासिक उदाहरणों के साथ ध्यान खिंचा है। उन्होंने यह लेख कारगिल विजय दिवस के मौके पर लिखा है। प्रत्येक 26 जुलाई को देश में कारगिल विजय दिवस बनाया जाता है। वे भारतीय मानस की आलोचना करते हैं कि वे इतिहास से सबक नहीं लेते हैं चाहे सिकंदर के आक्रमण के दौरान का प्राचीन समय रहा हो या मौजूद समय।

शशि शेखर लिखते हैं कि 1962 की हार भी सेना, खुफिया तंत्र और राजनीतिक वर्ग की लापरवाही के कारण ही हुई, भारत को अपना एक बड़ा भूभाग गवाना पड़ा। कारगिल युद्ध के दौरान भी उन्हीं गलतियों के कारण 500 से अधिक जवानों की जान गवानी पड़ी। वे सरकारों और लोगों से अपील करते हैं कि उनको इतिहास से सबक लेने होंगे

और देश की सुरक्षा के लिए हर समय तैनात होना होगा। इसी प्रकार पुण्य प्रसून वाजपेयी 22 मार्च, 2016 को ''आजादी के संघर्ष के प्रतीकों की परीक्षा''[47] शीर्षक लिखते हैं कि राष्ट्र की प्रतीकों की उर्जा को जीवंत रखना चाहिए, वे लोगों को प्रेरित हैं और सुखद व प्रगतिशील भविष्य की संभावनाओं को जीवित रखते हैं।

22 जुलाई को रवीश कुमार ने ''गुस्सा जायज हो सकता है, गाली नहीं''[48] शीर्षक से पोस्ट डाली है, जिसमें राजनीतिक भाषा की मर्यादाओं पर ध्यान खींचते हुए लिखते हैं कि वर्तमान सार्वजनिक संवाद की भाषा में गिरावट आयी है। सार्वजनिक मंचों से भी भाषा के संयम तोड़ा जा रहा है। आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति ने इस स्थिति के लिए जिम्मेदार ठहाराया। हालांकि रवीश मीडिया जोकि इस भाषा के लिए मंच प्रदान करता है। लाइव डिबेट के दौरान एंकर राजनेता को उकसाते हैं, को लेकर कोई टिप्पणी नहीं की है।

रवीश कुमार ने 24 जुलाई, 2016 को ''नेता महान आए हैं''[49] शीर्षक के साथ चार लाइन की कविता पोस्ट की है। इसमें उन्होंने राजनेताओं और चुनावी माहौल पर व्यंग्यात्मक तंज कसा है। 19 अगस्त, 2016 को रवीश कुमार ने 'क्या राहुल गांधी कर्नाटक में पदयात्रा करेंगे' शार्षक से डाली गई पोस्ट में किसानों की आत्महत्या और राजनीतिक वर्ग की जवाबदेही पर टिप्पणी की है। पोस्ट में विभिन्न राज्यों में किसान आत्महत्या के आंकड़े दिए हैं।

रवीश कुमार ने 20 अगस्त, 2016 को ''500 से अधिक दफ्तर बनाने वाली किसी पार्टी के बारे में आपने सुना है''[50] पोस्ट में डाली गई है। इसमें भारतीय जनता पार्टी द्वारा नए कार्यकाल के उद्घाटन और देश के अधिकांश जिलों में अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस बीजेपी के कार्यकाल बनाने की योजना एक बड़ी खबर है, लेकिन मीडिया में इसे पर्याप्त

जगह न मिलने पर आश्चर्य जताया है। रवीश का मानना है कि किसी पार्टी का यह निर्णय मीडिया के नजरिये बड़ी खबर नहीं लगता हो, लेकिन भविष्य में इसके बड़े राजनीतिक प्रभाव सामने आएगा, जिसकों नजरअंदाज किया जाता है।

रवीश कुमार ने 22 अगस्त, 2016 को ''गोद में बैठे शिवराज सिंह चौहान की तस्वीर के पांच विश्लेषण''[51] में शिवराज सिंह चौहान की दो तस्वीरों का पांच तरीके से विश्लेषण किया है। एक तस्वीर में सरकारी महकमें के लोगों ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पानी से बचाने के लिए गोदी में उठा रखा है। दूसरी तस्वीर में शिवराज सिंह के जूतों को सुरक्षाकर्मी लेकर चल रहा है और शिवराज सिंह नंगे पैर हैं। इसमें रवीश में भारतीय राजनीतिक संस्कृति पर तंज कसा है, साथ ही इस प्रकार की तस्वीरों को मीडिया के लिए मसाला बताया है। रवीश कुमार 29 अगस्त, 2016 को ''धर्म पति है और राजनीति पत्नी तो वो कौन है''[52] शीर्षक से डाली पोस्ट में हरियाणा सरकार के उन मंत्रियों की आलोचना की है, जो डेरा सच्चा सौदा के एक स्कूल के लिए पचास लाख रूपये दे आए। रवीश का यह लेख इसलिए महत्वपूर्ण है कि वर्ष 2017 के अंतिम महीनों में बाबा राम रहीम को अदालत ने दोषी ठहरा दिया है। जबकि यह लेख रवीश कुमार द्वारा 1 वर्ष पूर्व लिखा गया था।

27 जुलाई, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने ''इरोम के राजनीति में आने के मायने''[53] शीर्षक से डाली पोस्ट में सवाल खड़ा करते हैं कि क्या आंदोलन कर रहे लोगों का मांग पूरी करने या करवाने के लिए आखिरी रास्ता राजनीति में ही आना है। इसके लिए वे लोकतंत्र के सभी स्तंभों की आलोचना करते हैं कि लोग उनके जरिए अपने हक क्यों नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं।

वहीं, शशि शेखर ने 14 अगस्त, 2016 को "इरोम की कहानी कुछ कहती है"[54] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने अपनी मांग को लेकर इरोम द्वारा किए अहिंसक आंदोलन की तुलना महात्मा गांधी के अहिंसक आंदोलन से की है। तर्क के समर्थन में उन्होंने पूरे गांधी आंदोलन को संक्षिप्त में लिखा है। वे लिखते हैं कि भारतीय लोकतंत्र में असहमतियों की पूरी गुंजाइश, लेकिन केवल एक ही शर्त है अहिंसा। साथ ही इरोम के राजनीति में आने की खबरों और पहलुओं का भी विश्लेषण किया है।

वहीं 22 अगस्त को अंशुमान तिवारी ने "बुरे दिन इंसाफ के"[55] शीर्षक से डाले लेख में सरकार और न्यायपालिका के बीच जारी अधिकारों की राजनीतिक लड़ाई को न्याय व्यवस्था और लोकतंत्र की गरिमा के खिलाफ बताया है। वहीं, 15 सितंबर, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने विश्व लोकतंत्र दिवस के अवसर पर "राजनीतिक सत्ता में समाया भारत का लोकतंत्र"[56] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने लिखा है की लोकतंत्र एक राजनीतिक सच है। लेख में वे लोकतंत्र के उतार-चढ़ाव व उसकी बारीकियों के बारे में भी बताते हैं। साथ ही वे लेख में दुख प्रकट करते हैं कि हमारा लोकतंत्र सियासी परिवारों के ताने बाने में उलझ के रह गया है।

1 सितंबर, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने "कठघरे में केजरीवील"[57] शीर्षक से डाली पोस्ट में केजरीवाल के मंत्रियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगने पर केजरीवाल के रूख की आलोचना की है। वे लिखते हैं कि आम आदमी पार्टी का गठन आंदोलन के जिन सपनों के साथ हुआ था वह गलत होते दिखायी दे रहे हैं। वे आलोचना करते हैं कि केजरीवाल का रूख में अन्य पार्टी के शीर्ष नेताओं की तरह है, जो अपने नेता पर आरोप लगने पर उनका बचाव करता है।

दूसरी ओर, 8 सितंबर, 2016 को रवीश ने ''तो फिर सवाल कौन पूछेगा''[58] शीर्षक से साथ लेख पोस्ट किया है, इसमें उन्होंने आप पार्टी के नेता संदीप कुमार पर लगे आरोपों के संबंध में मीडिया और राजनीतिक वर्ग की प्रतिक्रियाओं की समीक्षा की है। लेख में रवीश कुमार पुलिस जांच और पीड़ित महिला के बयानों को बाद जो तथ्य आए हैं उन पर सवाल किए हैं। आरोप को लेकर मीडिया को भी तथ्यों की ओर ध्यान देने के लिए कठघरे में खड़ा किया है। हालांकि यह बात रवीश पर भी लागू होती है जब वे पत्रकारिता करते हैं।

इसी प्रकार, अंशुमान तिवारी 10 अक्टूबर, 2016 को ''चूक गए आप''[59] शीर्षक से लिखते हैं कि आम आदमी पार्टी की कार्यशैली उसके वायदों के अनुसार नहीं है। वे पार्टी पर प्रशासनिक व सैध्दांतिक पतन का आरोप लगाते हैं। साथ ही वे सुझाव देते हैं कि पार्टी को जीवित रखने के लिए उसे अधिक सजग और संवेदनशील होने की आवश्यकता है।

रवीश कुमार ने 4 सितंबर, 2016 को ''कांग्रेस के बारे में क्या कहा जाए, तीस दिनों की राहुल यात्रा के बाद देखेंगे''[60] में राहुल के राजनीतिक व्यक्तित्व की समीक्षा की है। समीक्षा में आलोचना व अन्य पार्टी के शीर्ष नेताओं के साथ तुलना की है। लेख में राहुल गांधी की अधिकांश तुलना नरेन्द्र मोदी के साथ की गई। पार्टी के संगठनों की आपस में तुलना की गई है, जिसमें राहुल गांधी की संगठन पर पकड़ को मोदी की तुलना में कम बताया है। राहुल गांधी की देश के अंदर तीस दिन की राजनीतिक यात्रा को उनके आंकलन के लिए सबसे बढ़िया घटना बताया है।

''शहाबुद्दीन सबको चाहिए लेकिन ज्यादा किसे चाहिए''[61] शीर्षक से 9 सितंबर को रवीश ने एक और लेख डाला है, जिसमें उन्होंने आरजेडी के नेता शहाबुद्दीन को कोर्ट द्वारा

दोषी करार दिए जाने पर राजनीति के अपराधीकरण की ओर ध्यान खींचा है। रवीश का मानना है कि प्रत्येक पार्टी को जिताऊ उम्मीदवार चाहिए, चाहे वे शहाबुद्दीन के रूप में ही क्यों न हो।

14 सितंबर, 2016 को रवीश कुमार ने ''हटना है तो अखिलेश, नहीं हटना है तो मुलायम''[62] शीर्षक से डाले गई पोस्ट में उत्तर प्रदेश की सपा पार्टी में उत्तराधिकार को लेकर चले घमासान पर चर्चा की है। इसमें उन्होंने अंदाजा लगाया है कि पार्टी की कमान मुलायम सिंह के पास रहेगी। हालांकि रवीश का आकलन गलत सिद्ध हुआ और पार्टी कार्यकताओं ने युवा चेहरा अखिलेश को चुना।

रवीश कुमार ने 16 सितंबर, 2016 को ''शिवपाल ही भारतीय राजनीतिक दलों को लोकपाल हैं''[63] लिखे लेख में समाजवादी पार्टी के अंदर नेतृत्व को लेकर चली लड़ाई को सोची-समझी राजनीतिक रणनीति बताया है। इस लड़ाई में शिवपाल को मोहरा बनाया गया है। रवीश कहते हैं कि शिवपाल जैसे लोग हर पार्टी में होते हैं, जिन्हें समय आने पर राजनीतिक फायदे के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। इस्तेमाल किए जाने में इस्तेमाल हो रहे नेता की भी सहमति होती है।

वहीं शशि शेखर ने 17 सितंबर, 2016 को ''परिवार, सरकार और सामंजस्य''[64] शीर्षक के साथ लिखे गए लेख में मुलायम परिवार में मचे घमासान को उत्तराधिकार प्राप्ति की सामान्य प्रक्रिया से जोड़ा है। शशि शेखर इतिहास के तथ्यों के आधार पर लिखते हैं कि राजा सदैव अपने खून के सबसे नजदीकी को ही सत्ता सौंपता है। मुलायम सिंह ने भी रणनीतिक तरीके से वही किया है।

शशि शेखर बताते हैं कि करूणानिधि ने स्टालिन को सत्ता सौंपी, बाला साहब ठाकरे ने अपने प्रिय भतीजे को दरकिनार कर उद्धव ठाकरे को उत्तराधिकारी बनाया। वे अपनी बात का समर्थन करते हैं कि सत्ता के अधिकांश मामलों में ऐसा ही होता है। साथ ही दावा करते हैं कि मुलायम सिंह के घनिष्ठ संबंधी उत्तराधिकार की इस घटना के बारे में पहले से ही जानते थे। इस बात को पहले लेख में वे शिवपाल की छवि को रवीश कुमार की भांति अपराधियों का समर्थन करने वाली बताते हैं, हालांकि शशि शेखर रवीश कुमार की तरह शिवपाल के लिए सहानभूति प्रकट नहीं करते हैं।

रवीश कुमार ने 22 सितंबर, 2016 को ‘‘युद्ध करने के लिए प्रधानमंत्री ये 35 कदम उठाएं’’[65] शीर्षक से डाली पोस्ट में युध्द उन्माद की आलोचना की है। उन्होंने इसके लिए उड़ी हमले के बाद आ रही खबरों व सोशल मीडिया के ट्रेंड की कड़ी आलोचना की है। वे आरोप लगाते हैं कि मीडिया स्टूडियो के जरिए ही पूरे देश में युद्ध का माहौल बना देता है। व्यंग्यात्मक लहजे में वे कहते हैं प्रधानमंत्री को समाचार पैनलों के स्टूडियो मे बैठकर युद्ध की प्लानिंग करनी चाहिए, एंकर उसकी घोषणा करेंगे।

इसी प्रकार, रवीश कुमार ने 25 सितंबर, 2016 को ‘‘प्रधानमंत्री के भाषण से क्या प्राइम टाइम टीवी बदल जाएगा’’[66] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में इससे पहले की पोस्ट की तरह युद्ध की चाहत रखने वाली मुख्यधारा मीडिया की आलोचना की है, इसके लिए उन्होंने केरल में प्रधानमंत्री द्वारा दिए भाषण को आधार बनाया है, जो कहते हैं की हमें युद्ध गरीबी से करना है, भुखमरी से करना, जातिवाद से करना है। रवीश मीडिया से सवाल करते हैं कि मीडिया प्रधानमंत्री के भाषणों से सबक लेकर युद्ध की भाषा बोलना बंद कर देगा। हालांकि इस भाषण के बाद भारतीय सेना पाकिस्तान अधिग्रहित कश्मीर में घुसकर सर्जीकल स्ट्राइकक किया था।

1 अक्टूबर, 2016 को शशि शेखर ने ''बापू जयंती पर जंग की बात''[67] शीर्षक से डाली पोस्ट में पाकिस्तान की सीमा में घुसकर की गई सर्जिकल स्ट्राइक व आम और राजनीतिक लोगों की प्रतिक्रियाओं बारे में लिखा है। वे लिखते हैं कि यह सुखद और संयोग है कि अहिंसा के पुजारी गांधी जयंती से पूर्व हुआ है। शशि शेखर का इशारा है कि सर्जीकल की घटना एक राजनीतिक घटना है। हालांकि वे स्पष्ट नहीं करते हैं कि क्या सर्जीकल की घटना सही थी या गलत थी।

7 अक्टूबर, 2016 को रवीश ने ''कांग्रेस का वो कार्यकर्ता''[68] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में बीजेपी और कांग्रेस के दो विनम्र कार्यकर्ताओं की बात करते हैं, जिन्होंने रिपोर्टिंग के दौरान उनकी सेवा की थी। साथ ही, रवीश अपील करते हैं कि प्रत्येक पार्टी के कार्यकर्ता को इसी प्रकार का होना चाहिए। वहीं, 21 अक्टूबर, 2016 को रवीश कुमार ने ''मिशनरी भाजपा का मिशन अभियान, कितना सफल कितना असफल''[69] शीर्षक से डाली पोस्ट में भारतीय जनता पार्टी द्वारा विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों और लोकसभा चुनाव के दौरान सीटों को एक निश्चित संख्या निर्धारित की थी, जिसमें कई बार वे सफल रहे और कई बार वे असफल रहे। रवीश ने इस मामले में कई राज्यों के आंकड़े भी दिए हैं। वहीं 13 दिसंबर को सुधीर राघव द्वारा ''भाजपा का ब्लैकहोल''[70] शीर्षक से डाली पोस्ट में लिखते हैं कि मोदी भाजपा के लिए कभी हितकर नहीं हो सकते हैं वे बिना तथ्यों के आरोप लगाते हैं मोदी उद्योगपतियों के धन से किए प्रचार से स्टार बने हैं।

रवीश कुमार ने 21 अक्टूबर, 2016 को ''अखिलेश ने जब नीरज का बक्सा उठाया''[71] शार्षक से एक और पोस्ट डाली है, जिसमें उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के बचपन के मित्र नीरज के बारे में लिखा है। अखिलेश और नीरज बचपन में एक साथ पढ़ते थे। वहीं, रवीश कुमार ने 24 अक्टूबर, 2016 को डाली गई पोस्ट ''कालिदास

मार्ग पर सपा की डाल पर बैठा असली कालीदास कौन है''[72] में राजनेताओं के स्वायत्ता की बात कही गई है।

रवीश कुमार लिखते हैं कि जिस नेता की स्वायत्ता जितनी अधिक होती व उतना ही बड़ा जननेता होता है। इस तर्क समर्थन में रवीश ने तीन बड़ी घटनाओं का जिक्र तीन राजनेताओं के साथ किया है। एक घटना 2016 की है, जिसमें अखिलेश ने अपनी स्वायत्ता हासिल करने के लिए अपने परिवार से बगावत की और पार्टी पर कब्जा कर लिया। दूसरी घटना नरेन्द्र मोदी से संबंधित है, 2014 के आम चुनाव आने से पहले पार्टी में रस्साकशी जारी थी, लालकृष्ण आडवाणी व सुषमा स्वराज का खेमा चाहता था कि पार्टी चुनाव के बाद प्रधानमंत्री तय करे, जबकि यह लड़ाई नरेन्द्र मोदी का खेमा जीता और प्रधानमंत्री का पद के लिए उन्हें पार्टी की ओर से चुनाव से पहले ही उम्मीदवार मान लिया गया।

रवीश कुमार ने 26 अक्टूबर, 2016 को ''किसान भाईयो कर्ज लें तो पांच करोड़ से ऊपर लें''[73] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में, भारतीय बैंकों की एनपीए असेट की वसूली न होने के पीछे राजनीतिक वर्ग की कमजोरी को जिम्मेदार ठहराया है। वहीं, रवीश कुमार ने 31 अक्टूबर, 2016 ''असहमतियों के सरदार थे पटेल, फिर असहमतियों को कुचलने वाले सरदार का नाम कैसे ले सकते हैं''[74] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में सरदार बल्लभ पाई पटेल के जन्मदिवस पर विभिन्न नेताओं द्वारा ट्विटर पर डाली गई पोस्टों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही सवाल किए गए हैं हम नेताओं को केवल प्रतीकात्मक रूप से याद करते हैं, उनके आदर्शों पर पार्टियां क्यों नहीं चलती हैं।

15 अक्टूबर, 2016 को शशि शेखर ने “जयराम जयललिता के बहाने”[75] शीर्षक से सपाट लेख लिखा है। लेख में पत्रकारिता के नजरिये से कोई दृष्टिकोण न के बराबर है। इसमें पांच राज्य उत्तर प्रदेश, बंगाल, उड़ीसा, तमिलनाडू और सिक्किम के राजनीतिक उत्तराधिकारियों के बारे में चर्चा की गई है, साथ ही सत्तासीन पार्टियों के राजनीतिक इतिहास को लिखा गया है। लेख किसी भी पार्टी या नेता के बारे में कोई भी ‘स्टैंड’ नहीं लेता है। लेख में तमिलनाडू राज्य में जयललिता के उत्तराधिकारी को लेकर विशेष चर्चा की गई है, साथ ही बताया गया है कि उन्होंने किस प्रकार वाडियार की कृपा से एमजी राजमचंद्रन की विरासत को राजनीतिक कुशलता से प्राप्त किया था। उड़ीसा के नवीन पटनायक, सिक्किम के पवन कुमार चामलिंग, बंगाल में ममता बनर्जी और उत्तर प्रदेश में मायावती के उत्तराधिकार राजनीति के बारे में लिखा गया है।

रवीश कुमार ने 4 नवंबर, 2016 को “बीएमडब्ल्यू कार दलितों को नहीं कुचलती है प्रधानमंत्री जी”[76] शीर्षक से डाली पोस्ट में वर्ष 2016 को रामनाथ गोयनका अवार्ड कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने कुछ घटनाओं का जिक्र करते हुए मीडिया की कुछ मुद्दों पर आलोचना की थी। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी के भाषण की आलोचना करते हुए रवीश लिखते हैं कि उन्होंने इस खबर के संबंध में खूब गुगल किया और जांच पड़ताल की, लेकिन इस प्रकार की कोई खबर दिखायी नहीं दी, जिसमें लिखा था कि बीएमडब्ल्यू कार ने किसी दलित को कुचला। इसके जरिये रवीश प्रधानमंत्री बयान की सत्यता पर सवाल उठाते हैं। वे लिखते हैं कि मीडिया इस प्रकार की कोई खबर नहीं चलाता है।

इसी प्रकार, रवीश कुमार ने 6 नवंबर, 2016 को “सवालों से किसे नफरत हो सकती है”[77] शीर्षक से डाली पोस्ट में जनता और मीडिया द्वारा सवाल पूछना लोकतंत्र के लिए

जरूरी बताया है। वे सरकार पर आरोप लगाते हैं कि सरकार ने लोगों को डरना शुरू कर दिया है कि वे सवाल नहीं पूछ सकते हैं। हालांकि रवीश ने इसके पीछे कोई प्रमाण या घटना का जिक्र नहीं किया है। रवीश कहते हैं कि सवाल पूछना लोकतांत्रिक व्यवस्था में संविधान प्रदत्त है, जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जवाबदेही के साथ जुड़ा हुआ है।

शशि शेखर ने 25 नवंबर को ''सौवें साल में इंदिरा गांधी''[78] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें शशि शेखर ने इंदिरा गांधी से अपनी मुलाकात के ब्यौरे के साथ शुरू करके उनके जीवनकाल के विभिन्न घटनाक्रम को पिरोया है। लेख का अधिकांश लेख इंदिरा गांधी से जुड़ी हुई एतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ लिखा गया है। लेख में इंदिरा के समय इलाहाबाद की पत्रकारिता के स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, ब्लू स्टार ऑपरेशन, इंदिरा गांधी की उनके अंगरक्षकों द्वारा हत्या व उनके अंतिम दर्शन के लिए पधारे 127 राष्ट्र के प्रमुख व्यक्तियों का भी वर्णन किया है। लेख ऐतिहासिक सूचनापरक लेख है। लेख इंदिरा गांधी साथ लेखक के जुड़ाव को पदर्शित करता है।

इसी तारीख 25 नवंबर को शशि शेखर ने एक और लेख ''बड़े कदम की राह में दुश्वारियां''[79] शीर्षक से पोस्ट डाली है। लेख में उन्होंने नोटबंदी और पाकिस्तान के खिलाफ की गई सर्जिकल स्ट्राइक का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नजरिए से राजनीतिक विश्लेषण किया है। उन्होंने नोटबंदी के दौरान हुई लोगों को हुई परेशानियों का जिक्र करते हुए मोदी के फैसले की प्रशंसा है। शशि शेखर ने लिखा है कि मोदी ने राजनीतिक नफा नुकसान की चिंता किए बिना नोटबंदी के फैसले को लागू किया। साथ ही वे सर्जिकल स्ट्राइक फैसले को भी प्रधानमंत्री का साहसिक कदम बताया है। साथ ही वे याद दिलाते हैं कि मोदी से देश का बहुत अपेक्षाएं हैं। लेख में सरकार की स्वस्थ्य समीक्षा का अभाव दिखायी है, उन्होंने सरकार की किसी भी काम अलोचना नहीं की है।

दूसरी ओर 29 नवंबर, 2016 की पोस्ट में पुण्य प्रसून वाजपेयी ''एकला चलकर बनेंगे मिस्टर क्लीन''[80] शीर्षक से लिखते हैं कि मोदी नोटबंदी, सर्जीकल स्ट्राइक, जीएसटी जैस बड़े फैसले अपने दम पर ले रहे हैं। क्या उनसे सवाल नहीं किए जा सकते हैं। वे आरोप लगाते हैं कि पूर्ण बहुमत की सरकार होने और विपक्ष के कमजोर होने के कारण उनके राजनीतिक फैसलों को कोई चुनौती नहीं दे पा रहा है। वहीं सुधीर राघव 6 अक्टूबर को ''सवाल दर सवाल''[81] शीर्षक से डाली पोस्ट में सरकार द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान सेना से वीडियो रिकोर्डिंग करवाने, उसे देखने और लेकिन सार्वजनिक न करने को लेकर सरकार की आलोचना की है।

रवीश कुमार ने 4 दिसंबर, 2016 को ''विपक्ष को सबसे पहले अपना विपक्ष बनाना होगा''[82] शीर्षक से डाली पोस्ट में केन्द्र में विपक्ष की आलोचना की है। रवीश कहते हैं कि लोकतंत्र की सुंदरता इसी बात हैं कि विपक्ष जीवंत होना चाहिए, सरकार से सवाल पूछने वाला होना चाहिए, लेकिन वर्तमान में विपक्ष लोकतंत्र की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पा रहा है।

रवीश कुमार ने 22 दिसंबर, 2016 ''प्रधानमंत्री के नाम में एक नदी है मगर वह गंगा नहीं है''[83] हेडलाइन के साथ अपने ब्लॉग पर डाली पोस्ट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आलोचना की है, इसमें उन्होंने बीजेपी के नेताओं द्वारा गंगा कहने पर आपत्ति दर्ज करते हुए लिखा है कि प्रधानमंत्री गंगा जैसे पवित्र नहीं है, नाही वे कोई देवता है। साथ ही व्यंग्य करते हैं कि कोई ब्लॉक स्तर का नेता उन्हें चार वेद ही न बता डाले। हालांकि रवीश प्रधानमंत्री की ईमानदारी पर कटाक्ष करते समय कोई तथ्य या प्रमाण नहीं देते हैं। इस लेख में रवीश प्रधानमंत्री की आलोचना करते समय पत्रकारिता के नजरिए से गंभीरता का अभाव रहा है।

रवीश कुमार 28 दिसंबर को ''बामुलाहिजा होशियार .. 2017 में स्वर्ग युग आ रहा है''[84] डाली गई इस पोस्ट में व्यंग्यात्मक लहजे में तंज कसा है कि नई साल में भ्रष्टाचार, नक्सलवाद, आतंकवाद सब खत्म हो जाएगा। लेख में गाने, कविता, शायरी को सम्मिलित किया है, जो नववर्ष के आगाज को शब्दों में कह रही हैं।

21 दिसंबर, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने ''करप्शन की गंगोत्री राजनीति से निकलती है, अब तो मान लीजिए''[85] शीर्षक से डाली पोस्ट में चुनाव आयोग द्वारा राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पार्टियों की सूची जारी करते समय 200 क्षेत्रीय पार्टियों को सूची से बहार करने की खबर के आधार पर लिखा है चुनाव आयोग का कहना है कि यह पार्टियां न तो चुनाव लड़ती हैं और न ही चंदे का हिसाब देती हैं। यह पार्टियां मनी लॉर्डिंग के मामलों में लिप्त हैं। इसी आधार पर पुण्य प्रसून वाजपेयी तर्क रखते हैं कि भ्रष्टाचार की गंगा राजनीति से निकलती है।

रवीश कुमार 31 दिसंबर, 2016 को ''मैं पचास दिनों के बाद किसी को जूता मारने की सोच के खिलाफ हूं''[86] इस लेख में नोटबंदी के दौरान लोगों से प्रधानमंत्री और उनकी पार्टी द्वार किए गए राजनीतिक वादों की आलोचना की गई है। हालांकि पूरा लेख शीर्षक के साथ न्याय नहीं करता है। पूरे लेख में उन्होंने पचास जूते मारने के बात किस आधार पर लिखा है, और यह किस घटना या व्यक्ति की ओर इशारा है?

अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक विषयों पर पोस्ट्स

शशि शेखर ने 9 जनवरी, 2016 को ''ताजा हवा के संकेत''[87] शीर्षक से डाली पोस्ट में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विदेश नीति और राजनीतिक कुशलता की प्रशंसा की

है। उन्होंने पाकिस्तान के राजनीतिक लोगों की राजनीतिक कुशलता की आलोचना भी की है। लेख मोदी की विदेश नीति की कुशलता को स्वीकरोक्ति देता है।

इन सबके विपरीत सुधीर राघव 26 जून को ‘‘शाखा बाबू’’[88] शीर्षक से लिखे लेख में मोदी को शाखा बाबू नाम से संबोधित किया गया है, जो पत्रकारिता की नैतिकता दृष्टिकोण से सही नहीं कहा जा सकता है। साथ ही वे मोदी सरकार की अमेरिका के संबंध में विदेश नीति की आलोचना करते हैं। लेख में गंभीरता की कमी है।

16 जनवरी, 2016 को शशि शेखर ने अपने ब्लॉग पर ‘‘शरीफ को सहारे की जरूरत’’[89] शीर्षक से अंतरराष्ट्रीय राजनीति से संबंधित लेख लिखा हैं। इसमें उन्होंने पाकिस्तान में जारी कट्टरवाद को विकास का सबसे बड़ा अवरोधक बताया है। उन्होंने पाकिस्तान की राजनीति और सरकार की नीतियों की आलोचना की है। वह पाकिस्तान की असफलता के लिए पाकिस्तानी राजनीतिक लोगों को जिम्मेदार ठहराते हैं। शशि शेखर ने पाकिस्तान की तुलना अन्य मुस्लिम देशों जैसे इंडोनेशिया आदि से करके उसे आईना दिखाने का प्रयास किया है। साथ ही वह भारत को भी सावधान करना चाहते हैं कि असफल पड़ोसी कभी भी राष्ट्र के लिए हितकर नहीं हो सकता है। वे सफल पड़ोसी के रूप में चीन को रखते हैं और तर्क देते हैं कि भारत-चीन के बीच सीमा विवाद गौंण हैं और व्यापारिक समझौते महत्वपूर्ण हो चले हैं। वे आगे लिखते हैं कि भारत में शांति कहीं न कहीं पाकिस्तान के विकास पर निर्भर करती है।

27 मार्च को सुधींर राघव ने ‘‘भारत के पानी पर पाकिस्तान की राजनीति’’[90] लेख के माध्यम से पाकिस्तान को कठघरे में खड़ा किया है साथ भारतीय राजनेताओं की आलोचना की है कि भारत अपनी नदियों के पानी भी इस्तेमाल नहीं कर पा रहे है। वहीं,

8 अक्टूबर, 2016 को ''मोदी ने नवाज की दोस्ती के लिए सेना की साख को दाव पर लगाया''[91] शीर्षक से डाले लेख में सुधीर राघव ने आरोप लगाया है कि पाकिस्तान के मामले में मोदी की विदेश नीति ठीक नहीं है। पाकिस्तान में मामले में मोदी अपने निजी संबंधों के आधार पर विदेशी नीति संचालित कर रहे हैं।

इसी प्रकार, सुधीर राघव ने 2 अप्रैल, 2016 को ''पाक में लोकप्रिय होते मोदी''[92] शीर्षक से डाली पोस्ट में पाकिस्तानी पत्रकार मरियाना बाबर के हवाले से लिखा है कि मोदी की गलत आर्थिक, सामरिक और विदेश नीतियों उन्हें पाकिस्तान में भी लोकप्रिय बना दिया है। वे पाकिस्तान के खिलाफ राजनीतिक मंचों से ही बात करते हैं, लेकिन उचित अंतरराष्ट्रीय मंचों से उसके खिलाफ कोई भी कदम नहीं उठाते हैं। हालांकि लेख में कुछ तथ्य पूरी तरह सही नहीं हैं, जैसे लेख में लिखा गया है कि मोदी जी मंचों से चीन और पाकिस्तान को अपना मित्र बताते हैं। अजहर मसूद, हाफिज सईद और दाऊद इब्राहिम को सौपने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंचों से मुद्दा न उठाना आदि।

17 अप्रैल, 2016 को शशि शेखर ने ''हमारे हुक्मरानों का क्षमापर्व''[93] शीर्षक से लिखे गए लेख में अंतरराष्ट्रीय राजनेताओं द्वारा अपनी कूटनीतिक सफलताओं और आंतरिक राजनीति को चमकाने के लिए मांफी मांगने की परंपरा का उल्लेख किया है। वे बताते है कि किस प्रकार कनाडा के दो-दो प्रधानमंत्रियों ने अपनी आंतरिक राजनीति में सिखों का समर्थन प्राप्त करने के लिए भारत से कामागाटामारू की घटना के लिए आधिकारिकरूप से माफी मांगी है। इसी प्रकार अमेरिका ने जापान पर परमाणु बम गिराने को लेकर मांफी मांगी है। हालांकि उसने वियतनाम, इराक, अफगानिस्तान क्यूबा में किए गए नरसंहार के लिए माफी नहीं मांगी है, कारण चीन को घेरने के लिए भारत के साथ

जापान का भी साथ चाहिए। जापान प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने कारिया से युद्ध के समय वहां की महिलाओं को सेक्स गुलाम बनाने के लिए सार्वजनिक मांफी मांगी है।

साथ ही शशि शेखर लेख में इंग्लैंड के प्रधानमंत्री, महारानी और वहां के राजकुमार की आलोचना करते हैं कि उन्होंने भारत में जलियावाला बाग हत्याकांड के लिए मांफी नहीं मांगी है। शशि शेखर ने अपनी शैली के अनुसार अंतरराष्ट्रीय माफी राजनीति का विश्लेषण विस्तृत एतिहासिक घटनाक्रमों के साथ किया है। विश्व में चल रहे इस प्रकार के घटनाक्रमों को एक साथ समग्रता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

24 मई को सुधीर राघव ''ईर बीर फत्ते''[94] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में ईरान भारत द्वार विकसित किए जा रहे चाबहार पोर्ट योजना की आलोचना करते हैं। वे पोर्ट के विकास के लिए भारत द्वारा दी जा रही आर्थिक मदद को निर्रथक बताते हैं। वे चीन की पर्ल ऑफ स्ट्रिंग पॉलिसी के विरूद्ध पोर्ट के समारिक महत्व के बारे में कोई चर्चा नहीं करते हैं। लेख में तथ्यों व सामरिक रणनीतियों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया है। लेख में लेखक मंशा पूरी तरह साफ नहीं है कि किन कारणों से और किस आधार पर चाबहार परियोजना में भारत की भूमिका की आलोचना कर रहे हैं।

रवीश कुमार ने 8 जून, 2016 को ''भारत को अमेरिका से कितना फायदा है''[95] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने आलोचनात्मक शैली में टिप्पणी की है कि भारत के राजनेता अमेरिका से अधिक उम्मीद क्यों लगाए रहते हैं। साथ ही, उन्होंने भारतीय मीडिया पर आरोप लगाया है कि नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा को अनावश्यक रूप से अधिक कवरेज दिया गया। लेख में अमेरिका मीडिया द्वारा दिए गए कवरेज का भी जिक्र किया है। उन्होंने विदेशी अखबारों की हेडलाइनों को भी अखबार के नाम के साथ

लगाया है। विभिन्न समझौतों की संभावना का भी जिक्र लेख में है। रवीश में भारतीय नेता के विदेशों में मिल रहे महत्व से भी चिंतिंत दिखायी देते हैं। हालांकि रवीश ने लेख में अपनी चिंताओं के कारणों का स्पष्ट नहीं किया है।

रवीश ने 9 जून, 2016 को ''मिस्टर मोदी बनाम श्रीमान मोदी''[96] शीर्षके से डाली गई पोस्ट में देश में दिए जाने वाले मोदी के हिन्दी के भाषणों और अंतरराष्ट्रीय मंचों से अंग्रेजी में दिए जाने वाले मोदी के भाषणों की तुलना है। लेख के उन्होंने कई जगह व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग है और कई जगह तंज कसे हैं। रवीश ने अधिकांश जगह मोदी की भाषण शैली की आलोचना की है। लेख में नरेन्द्र मोदी के भाषणों की विषयवस्तु पर कोई भी टिप्पणी नहीं की है। इस दृष्टिकोण से लेख में समग्रता की कमी है।

24 जून, 2016 को ''ब्रिटेन के बहाने - आ अब लोकल हो चलें''[97] शीर्षक से रवीश कुमार ब्रिटेन के यूरोपीयन संघ से बाहर होने की प्रक्रिया के पीछे दक्षिणपंथ के उभार को देखते हैं। वे दक्षिणीपंथियों को कुतर्की बताते हैं, साथ ही चिंता जाहिर करते हैं कि पूरे विश्व में दक्षिणपंथ का उभार हो रहा है।

26 जून को रवीश कुमार ने ''एनएसजी में भारत को झटका टाइप विश्लेषण''[98] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें भारत की एनएसजी में सदस्यता के लिए किए जा रहे प्रयासों पर व्यंग्य किया गया है। वह एनएसजी की सदस्यता की प्रयासों का भारत के स्वाभिमान के साथ जोड़ते हैं, और इसे नकारात्मक रूप से प्रस्तुत करते हैं। लेख में रवीश ने देश के लिए एनएसजी के महत्व, नुकसान या प्रक्रिया के बारे में कोई तथ्यात्मक जानकारी नहीं दी है। इसी तारीख को उन्होंने ''ब्रेक्जिट - जनता को गरियाने का नया प्रोजेक्ट''[99] शार्षक

से उन्होंने एक पोस्ट और डाली है। इसमें रवीश ने ब्रेक्जिट के घटना के संबंध में लीव और रिमेन शब्द का विश्लेषण किया है। ब्रेक्जिट की घटना को वह दक्षिणपंथी घटना के रूप में परिभाषित करते हैं। हालांकि ग्रीस के यूरोपीय यूनियन से अलग होने के बारे में कोई चर्चा नहीं करते हैं।

शशि शेखर ने 7 अगस्त, 2016 को ''पाकिस्तान की भारत ग्रंथि''[100] शीर्षक से पोस्ट डाली है। लेख में उन्होंने भारत के प्रति पाकिस्तान की आशंकाओं के पीछे कारणों और प्रभावों के बारे में लिखा है। वे लिखते हैं पाकिस्तान के सत्ताधारी लोग भ्रष्टाचार में डूबे रहते हैं इसलिए देश के लोगों का ध्यान बांटे रखने के लिए उन्होंने कश्मीर की आजादी और भारत के खिलाफ नफरत के एजेंडे तैयार कर रखे हैं। इसी कारण, नई दिल्ली की पाकिस्तान के साथ राजनीतिक रिश्ते सुधारने की कोशिशें असफल हुई हैं। साथ ही, वे अपने लेख में पाकिस्तान द्वारा बुरहान बानी को शहीद बताने की भी आलोचना करते हैं।

शशि शेखर ने 27 अगस्त को ''काश, जिन्ना कुछ संवेदनशील होते''[101] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने पाकिस्तान की असफलताओं के पीछे जिन्ना को जिम्मेदार ठहराया है, जिसने धर्म के नाम पर एक अलग देश की मांग। शशि शेखर ने अपनी एतिहासिक शैली के अनुसार आजादी और पाकिस्तान बनने के पूरे घटनाक्रम का ब्यौरा दिया है। लेख के अंत में उन्होंने कश्मीर और बलोच के बारे में भी लिखा है। कश्मीर की समस्या के लिए शशि शेखर ने पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराया है। साथ ही उन्होंने मोदी द्वारा ब्लूचिस्तान की आजादी के समर्थन के लिए प्रशंसा की है।

रवीश ने 22 अगस्त, 2016 को ''दो लोग मिलकर एक लेख क्यों लिखते हैं''[102] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में अंग्रेजी अखबार में दो बड़े व्यक्तित्वों द्वारा लिखे जाने वाले

संयुक्त लेख की व्यंग्यात्मक तरीके से समीक्षा की है। रवीश इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हैं दो व्यक्ति मिलकर किस प्रकार एक लेख लिख सकते हैं। लेख में उनका इशारा अमेरिका के एक शीर्ष अखबार में प्रकाशित हुए बराक ओबामा और नरेन्द्र मोदी के लेख से है।

शशि शेखर ने 4 सितंबर, 2016 को ''कूटनीति के करतब और हम''[103] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने बताया है कि जहां कूटनीति असफल होती है, वहीं युद्ध शुरू होता है। कुटनीति के लिए स्थायित्व व धैर्य की जरूरत होती है। उन्होंने भारत और अमेरिका के बदलते रिश्तों और संधियों का भी जिक्र किया है, साथ ही दोनों देशों के एतिहासिक घटनाक्रमों को भी याद दिलाया है।

30 सितंबर, 2016 को रवीश कुमार ने ''जिनके घर शीशे के बने होते हैं..''[104] शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें उन्होंने लिखा है कि राजनीतिक लोगों द्वारा फिल्म संवादों या तुकबंदी वाले वाक्यों का प्रयोग अपने राजनीतिक लाभ के लिए किया जाता है। वे लिखते हैं कि मोदी विदेशी दौरों के दौरान भी फिल्मी संवाद शैली का प्रयोग कर रह रहें हैं। वे व्यग्यं करते हैं कि विदेश नीति और कूटनीति भी फिल्मों संवादों के जरिए संचालित हो रही है। लेख में शायरी, कविताओं, टिप्पणियों का भी प्रयोग किया गया है। लेख में विशेष घटनाओं, विदेशी दौरों व फिल्म संवादों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत नहीं किया ताकि पाठक आसानी से उद्देश्य व भाव को समझ सकें। पाठक को लेख का भाव व अर्थ समझने के लिए अनुमान लगाना पड़ता है।

10 सितंबर को शशि शेखर ने "काठमाडू के कसमसाते सच"[105] शीर्षक से डाली पोस्ट में नेपाल में जारी राजनीतिक अस्थिरता पर चिंता व्यक्त की है। साथ ही वे वहां के शक्तिशाली लोकपाल की आलोचना करते हैं जो स्वयं भ्रष्टाचार का केन्द्र बन गया है।

21 अक्टूबर को रवीश ने एक और अन्य लेख "कहीं अमेरिका वाला ट्रंप दिल्ली वाला मंकीमैन तो नहीं है"[106] जिसमें डोनाल्ड ट्रंप पर व्यंग्यात्मक व राजननीतिक लेख लिखा है।

राष्ट्रवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद, अलगाववाद पर राजनीति :

6 फरवरी, 2016 को शशि शेखर "कश्मीर की बिसात पर देश के दांव"[107] शीर्षक के साथ पोस्ट डाली है। इसमें जम्मू-कश्मीर में गठबंधन सरकार के मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद के निधन के बाद उत्पन्न हुए राजनीतिक संकट का जिक्र करते हुए वहां के पर्यावरण और आतंकवाद की समस्या का भी जिक्र किया है। वे लेख में मुफ्ती मोहम्मद सईद की कश्मीर को लेकर रही रणनीतियों की प्रशंसा करते हैं। उनकी हीलिंग टच पॉलिसी का चर्चा करते हैं, जिसके जरिए कश्मीर में पर्यटन को बढ़ावा मिला और शांति स्थापित करने में मदद मिली। लेख में शशि शेखर चिंता जाहिर करते हैं कि मुफ्ती मोहम्मद सईद अपने काम को पूरा नहीं कर सके। आज घाटी में अलगवादियों द्वारा प्रयोजित होने वाली पथ्थरबाजी की घटनाओं में आइएसआइएस के झंडे दिखना चिंता के बड़े कारण हैं। कश्मीर की सुंदरता और रोजगारी आंतकवाद के कारण तहस-नहस हो गई हैं।

एक और लेख शशि शेखर ने पीडीपी के नेता मुफ्ती मोहम्मद सईद के निधन के बाद मुख्यमंत्री बनने को लेकर दो महीने चले गतिरोध और फिर महबूबा मुफ्ती के जम्मू-

कश्मीर के मुख्यमंत्री बनने को लेकर 27 मार्च, 2016 को ''श्रीनगर से यमन वाया ब्रूसेल्स''[108] शीर्षक साथ लिखा है। इसमें जम्मू-कश्मीर की राजनीतिक उठा पटकों के अलावा यमन और ब्रूसेल्ल में हुए आतंकवादी घटनाओं को भी शामिल किया है। उन्होंने ब्रूसेल्स में हुए आतंकवादी हमले में एयर हास्टेस निधि चाफेकर और यमन में हुए फॉदर उज्हुन्नाली का आतंकवादियों द्वारा अपहरण का जिक्र किया है। इसमें शशि शेखर जम्मू-कश्मीर में सरकार बनाने को लेकर महबूबा मुफ्ती के राजनीतिक व्यवहार की आलोचना करते हैं, साथ ही जम्मू-कश्मीर के भविष्य पर भी चिंता जाहिर करते हैं।

इसी प्रकार, रवीश कुमार ने 15 जुलाई को ''कश्मीर की आवाम की शिकायतें कितनी वाजिब''[109] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में राजनीतिक वर्ग और मीडिया पर आरोप लगाएं हैं कि वे कश्मीर के लोगों की समस्यों को गंभीरता से नहीं लेते हैं। रवीश कुमार जम्मू-कश्मीर शब्द का पूरा इस्तेमाल नहीं करते हैं। वह केवल चर्चा या लेखों में केवल कश्मीर का प्रयोग करते हैं। जबकि भारत सरकार द्वारा जम्मू-कश्मीर का इस्तेमाल एक साथ किया जात है। अलगाववादियों द्वारा केवल कश्मीर शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। रवीश जम्मू में आतंकवाद के लिए जिम्मेदार पाकिस्तान या अलगाववादियों पर कोई आरोप नहीं लगाते हैं। कश्मीर समस्या के मूल में धार्मिक कट्टरता को लेकर भी वे कोई टिप्पणी नहीं करते हैं। रवीश कश्मीर में जारी समस्या को पूर्ण संदर्भ के साथ न देखकर केवल राजनीतिक नजरिये से ही देखते हैं।

रवीश कुमार 18 फरवरी, 2018 को ''किसने दी इस गुंडागर्दी की छूट''[110] शीर्षक के साथ राष्ट्रवाद की विचारधारा पर सवाल उठाते हुए लिखते हैं कि राष्ट्रवाद लोकतंत्र को खत्म करने वाली विचारधारा है। रवीश ने राष्ट्रवाद की विचारधारा को अन्य वामपंथियों की तरह जेएनयू के कन्हैया कुमार के साथ कोर्ट में हुई मारपीट से जोड़ेते हुए कठघरे में

खड़ा किया है। उनके अनुसार तथाकथित राष्ट्रवादी लोगों ने देशप्रेम को भाषा, धर्म, नस्ल, जाति और पार्टी से जोड़ दिया है। रवीश राष्ट्रवाद को लेकर अपने अन्य लेखों में भी सवाल खड़ा करते रहे हैं। 26 मार्च को ''गधों का राष्ट्रवाद''[111] शीर्षक के साथ लिखे गए लेख में रवीश की भांति ही सुधीर राघव राष्ट्रवाद की अवधारणा का विरोध करते हैं। वे अपनी बात के समर्थन में गधा और घोड़े के पात्रों पर आधारित एक कहानी भी लिखते हैं।

वहीं, रवीश कुमार और सुधीर राघव के विपरीत शशि शेखर ने 20 फरवरी, 2016 को ''इन जंगजुओं से जुझना होगा''[112] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में तीन मामलों दिल्ली स्थित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में लगे देश विरोधी नारों, कोलकाता की जादवपुर युनिवर्सिटी में दोहरायी गई इसी प्रकार की घटना और पाटियाला हाउस कोर्ट में जेएनयू के छात्र नेता कन्हैया के साथ हुई मारपीट की घटना की तस्वीर पेश करते हुए विश्लेषण करते हैं। वे लिखते हैं कि वे कौन सी मास्टर माइंट ताकतें हैं, जो देश के विश्वविद्यालयों में देश विरोधी गतिविधियां चलवा रहीं हैं। वे अलगाववादी विचारधारा के बुद्धिजीवियों को कठघरे में खड़ा करते हैं और इस प्रकार की शक्तियों से लड़ने के लिए राष्ट्रवाद की विचारधारा का समर्थन करते हैं।

10 मार्च को रवीश ''बिन परमिट के नेशनल कैसा''[113] हेडलाइन के साथ लिखे लेख में पिछले लेखों की भांति 'राष्ट्रवाद' पर सवाल खड़ा करते हैं, इसके लिए व नेशनल व एंटीनेशनल जैसे अंग्रेजी के शब्दों का सहारा लेते हैं। रवीश दूसरे देशों में हुए राष्ट्रवाद के आंदोलनों के सहारे भारतीय राष्ट्रवाद का विश्लेषण करते हैं।

7 अप्रैल, 2016 का डाली गई पोस्ट में रवीश ने श्रीनगर के एनआईटी कॉलेज में हुए बबाल को लेकर राजनीतिक लोगों पर आरोप लगाए हैं कि उन्होंने इस मुद्दे को सांप्रदायिक रूप देने की कोशिश की है।[114] उन्होंने सोशल मीडिया पर सेकुलर पत्रकारों को लेकर हमला करने वाले लोगों को भी कठघरे में खड़ा किया है कि पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाने वाल छात्रों पर पत्रकार नहीं बल्कि बीजेपी व पीडीपी की सरकार कार्रवाई करेगी, उनसे सवाल पूछे जाने चाहिए। वे लेख में बरखा दत्ता और राजदीप सरदेसाई पत्रकारों का बचाव करते हैं।

रवीश ने 8 मई, 2016 को ''लोकतंत्र को जिंदा रखने के लिए जरूरी है नागरिकों का लड़ना और धरना देना''[115] पोस्ट में लिखा है कि लोकतंत्र की जीविंत्ता के लिए धरना-प्रदर्शन और आंदोलन एक अहम हिस्सा है। यदि कोई सरकार लोगों के आंदोलनों से डरती और उनको दबाने का काम करती इसका मतलब है कि वह लोकतंत्र का गला घोट रही है। हालांकि रवीश कुमार आंदोलन के के उद्देश्यों के बारे नहीं लिखते है। कश्मीर या देश के अन्य हिस्सों में देश विरोधी आंदोलनों को किस श्रेणी में रखा जाए इस बारे में रवीश कुमार कुछ नहीं लिखा है। रवीश ने पोस्ट के साथ भीड़ के दो चित्र भी लगा रखे हैं, जिन्हें धरना-प्रदर्शन करते लोगों के रूप में दिखाया गया है।

10 अप्रैल, 2015 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने ''नक्सलबाडी से जंगलमहल''[116] शीर्षक से डाली पोस्ट में पश्चिमी बंगाल की राजनीतिक परिस्थितियों के जरिए आ रहे बदलावों का रेखांकन किया है। वे दबे जुबान वहां के बदलावों के साथ नक्सलियों की मजबूरियों से उपजे संघर्ष को भी स्वीकारते हैं। वे ममता बनर्जी के नेतृत्व की प्रशंसा करते है वे नक्सलियों को पार्टी कैडर से जोड़कर आम धारा जोड़कर रही हैं। हालांकि नक्सलियों में आशंका माहौल बना हुआ है।

वहीं सुधीर राघव 14 जुलाई, 2016 को ''संघियों की सरकारें और अलगाववाद''[117] शीर्षक से डाली पोस्ट में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और बीजेपी पर आरोप लगाते हैं कि जब ये सत्ता में प्रभावी होते हैं तो देश में अलगाववादी ताकतें सिर उठाने लगती है। इसके लिए उन्होंने 1977 में जनसंघ के सहयोग से बनी सरकार को पंजाब में उभरे आतंकवाद के लिए जिम्मेदार और 1999 में बीजेपी सरकार को कारगिल के लिए जिम्मेदार माना है। वहीं सुधीर राघव 27 जुलाई को ''संघ परिवार को संतुष्ट करना है मोदी सरकार का काम?''[118] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में सवाल करते हैं कि संघ की संतुष्टि या असंतुष्टि के हिसाब से देश की नीतियां तय की जाएंगी।

रवीश कुमार ने 27 जुलाई को पत्रकार अभिसार के लेख को अपने ब्लॉग पर ''गेस्ट ब्लॉग - राष्ट्रवाद सावधान, राष्ट्रवाद विश्राम''[119] हेडलाइन के साथ पोस्ट किया है। रवीश कुमार ने 29 जुलाई, 2016 को ''सांप्रदायिकता का नया नाम है राष्ट्रवाद''[120] शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें उन्होंने आरोप लगाया है कि धर्म, जाति, भाषा, नस्ल विशेष के आधार पर राष्ट्रवाद की परिभाषा तैयार की जा रही है। उनके अनुसार यह राष्ट्रवाद नहीं संप्रदायवाद है।

रवीश आरोप लगाते हैं कि इस प्रकार के राष्ट्रवाद को फैलाने में मीडिया की सबसे बड़ी भूमिका है, मीडिया किराने की दुकान की तरह इस राष्ट्रवाद की बिक्री कर रहा है। कभी सेना के नाम पर और कभी गाय के नाम पर राष्ट्रवाद की चर्चा की जाती है। वहीं दूसरी ओर वे सेना के बहाने राजनेताओं पर कटाक्ष करते हुए प्रश्न करते हैं कि क्या एक सांसद या विधायक की सैलरी सेना के जवान से ज्यादा होनी चाहिए, जो अपनी जान को जोखिम में डालकर देश की रक्षा में तैनात रहता है।

रवीश कुमार राष्ट्रवाद को अपने ब्लॉग पर कई लेख लिखे हैं, जिसमें वह राष्ट्रवाद की आलोचना के नए-नए तरीकों से करते हैं। वे अप्रत्यक्ष रूप से आतंकवादी बुरहान बानी के समर्थन में लिखते हैं। लेख में अंत में वे पाठकों से राजनीति और राष्ट्रवाद में फर्क करने की अपील करते हैं। वहीं, अगस्त को रवीश ने ‘‘चुनाव जीतना राष्ट्रीय कर्तव्य है तो राष्ट्रवाद क्या है’’[121] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में आरोप लगाया है कि पार्टी विशेष के लोग राजनीति के लिए राष्ट्रवाद को फैला रही हैं।

इसी प्रकार, 19 अक्टूबर को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने ‘‘राजनीतिक देशभक्ति की अंधेरगर्दी’’[122] शीर्षक से डाली पोस्ट में आलोचना करते हैं की देश के हितों को दरकिनार कर राजनीतिक लाभ के लिए देशभक्ति एजेंडे का प्रयोग क्या जा रहा है। वे इसके लिए भारत के साथ विश्व के अन्य देशों की राजनीति की भी समीक्षा करते हैं।

रवीश ने 11 अगस्त, 2016 को ‘‘मंत्री जी बौद्धिकता में आतंकवाद मत खोजिए’’[123] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में कश्मीर के मसले पर स्वतंत्रता के विचार रखने वाले लोगों पर सरकार की ओर से की गई टिप्पणी का विरोध करते हैं। वे अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर कश्मीर की आजादी के विचारों का समर्थन करते हैं। रवीश इससे पहले भी कई लेखों में कश्मीर की आजादी के समर्थन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष के रूप से लिखते रहे हैं।

26 अक्टूबर, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ‘‘सिर्फ सियासत की... कोई चोरी नहीं की’’[124] शीर्षक से लिखते हैं कि लोकतंत्र को जीवित रखने के लिए जहां राजनीति आवश्यक हैं वहीं कुछ राज्यों में राजनीति के कारण अराजकता और अस्थिरता बनी हुई। पंजाब में नशे का कारोबार, असम-बंगाल में घुसपैठ की समस्या, कश्मीर में आतंकवाद,

जातिवादी-आरक्षणवादी आंदोलन आदि। प्रसून वाजपेयी राजनीति के कारण पैदा हो रही लॉ एंड ऑर्डर की समस्या की आलोचना करते हैं।

सांप्रदायिक विषय पर राजनीति :

रवीश कुमार ने 22 मार्च, 2016 को "2016 के लिए 1924 में लिखा था भगत सिंह ने"[125] शीर्षक से डाली पोस्ट में लिखते हैं कि भगत सिंह ने आज से लगभग एक शताब्दी पहले ही लिख था कि सांप्रदायिक दंगों को फैलाने में राजनेताओं और अखबारों का हाथ होता है। रवीश ने आरोप लगाया है कि देश में सांप्रदायिकता का माहौल बनाया जा रहा है, जिसके लिए वर्तमान राजनीति और मीडिया को सबसे ज्यादा जिम्मेदार ठहराया गया है।

इसी प्रकार, 20 मई को पुण्य प्रसून वाजपेयी जब बात "हिन्दू-मुसलमान की नहीं इंसान की होगी तो तब कांग्रेस-बीजेपी भी नहीं होगी"[126] शीर्षक से डाली पोस्ट में विश्लेषण करते हैं कि बीजेपी और कांग्रेस दोनी पार्टियों का भविष्य धार्मिक राजनीति पर ही टिका है। धार्मिक राजनीति के बिना दोनों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

रवीश ने 21 जून, 2016 को "धार्मिक नहीं, भारतीय नहीं, लेकिन योग सिर्फ फिटनेस की गारंटी भी तो नहीं"[127] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को धार्मिक व राजनीतिक दृष्टि से देखते हैं। लेख में रवीश ने प्रधानमंत्री मोदी और धार्मिक गुरुओं द्वारा की गई व्याख्याओं की भी समीक्षा की है। उन्होंने कहीं भी योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलने से भारत के बढ़े गौरव पर कोई बात नहीं की, बल्कि विभिन्न मुद्दों पर हो रही राजनीति पर अधिक केंद्रित किया है। इसी प्रकार, 25 जून को सुधीर राघव ने "योग और बौद्धिक विकास का संबंध"[128] शीर्षक से डाले लेख में मोदी की

एनएसजी की सदस्यता के लिए किए जा रहे प्रयासों की आलोचना की है। लेख में योग को बौद्धिक विकास मोदी पर तंज कसने के लिए जोड़ते हैं।

रवीश कुमार 7 अगस्त, 2016 को ''गौ रक्षा से लेकर जमीन कब्जा की निंदा का वार, शनिवार''[129] पोंस्ट में रवीश कुमार प्रदेश राजनीति और राष्ट्रीय राजनीति के दो बड़े नेताओं के बयानों की चर्चा की है। रवीश दोनों के बयानों को साहसिक बताते हैं। एक बयान शिवपाल सिंह यादव का है, जिसमें वे अपनी पार्टी कार्यकर्ताओं को अवैध कार्य रोकने और सुधरने के लिए कहते हैं, वहीं दूसरा बयान मोदी का है, जिसमें में गो रक्षा के नाम पर जारी उत्पात और हिंसा को गैरकानूनी बताते हैं। हालांकि रवीश इस लेख नें अप्रासंगिक रुम से राष्ट्रवाद के मुद्दे को भी ले आते हैं। वे सामाजिक संगठनों को भी इसके लिए जिम्मेदार बताते हैं। रवीश कुमार गौ हत्या रोकने के समर्थन कोई तर्क नहीं देते हैं, बल्कि इसकी जरूरत को अनावश्यक बताते हैं।

रवीश कुमार ने 9 सितंबर, 2016 को ''राष्ट्रीय बिरयानी आयोग''[130] शीर्षक से एक लेख डाला है, जिसमें गाय के मीट और गौ हत्या को लेकर देश की मीडिया और राजनीतिक हलकों में जारी चर्चा पर टिप्पणियां की हैं। इस लेख में शाकाहारी समुदाय की भावनाओं का कोई ध्यान नहीं रखा गया है। रवीश कुमार लेख में धार्मिक मामले में अपनी विचारधारा की सहूलियत के हिसाब से व्याख्या करते हैं और उसी को पूरी तरह सही ठहराने का प्रयास करते हैं।

भ्रष्टाचार पर राजनीति :

29 अप्रैल, 2016 रवीश कुमार ने ''अगुस्ता को लेकर क्यों चल रहे हो आहिस्ता-आहिस्ता''[131] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में रक्षा खरीदे मामले में हुए घोटालों की जांच

प्रक्रिया की धीमी गति पर सवाल उठाएं हैं। उन्होंने पुरानी सरकार और वर्तमान सरकार दोनों को ही इसके लिए जिम्मेदार ठहराया है।

शशि शेखर ने 9 अप्रैल, 2016 को ''पनामा लीक्स और पुराने पाप''[132] हेडलाइन के साथ पोस्ट डाली है। लेख में पनामा पेपर में नाम आने वाले विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्षों की परेशानियों का जिक्र किया है। साथ ही उन कुछ देशों व द्विपों का भी जिक्र किया है जो काले धन को ठिकाने लगाने के लिए राजनेताओं की पसंदीदा जगह बने हुए हैं। वे व्यंग्यात्मक शैली में लिखते हैं कि बहुत लोगों को ऐसे देशों के नाम तभी पता लगते हैं जब कोई भ्रष्टाचार का बड़ा मामला सामने आता है। पनामा लीक्स में भारत के भी 500 से अधिक लोगों के नाम हैं।

शशि शेखर प्रधानमंत्री मोदी से उम्मीद करते हैं कि मामले का जांच करा कर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करेंगे। हालांकि भारत के नजरिये से पनामा खुलासे व जांच के बाद भी कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आए हैं। 4 अप्रैल को सुधीर राघव ने ''पनामा पेपर्स''[133] शीर्षक से लिखे लेख में काव्यात्मक तरीके से विश्व राजनीति नायकों और भारत के उद्योपतियों को कठघरे में खड़ा किया है।

12 जून को रवीश ने ''आपका बिकता हुआ लोकतंत्र''[134] शीर्षक से पोस्ट डाली है, जिसमें चुनावों के दौरान पैसे देकर वोट खरीदने की प्रक्रिया को लोकतंत्र के लिए खतरा बताया है। समर्थन में चुनावों के दौरान तमिलनाडू में नोटों से भरे ट्रक पकड़े जाने का भी उदाहरण दिया गया है

मोदी को जनता से माफी मांगनी चाहिए और पीएम पद छोड़ देना चाहिए। साथ ही सुधीर राघव 21 अक्टूबर को अपने लेख के द्वारा आरोप लगाते हैं कि मोदी व्यक्तिगत रूप से चीन से लगाव रखते हैं जबकि उनके समर्थक चीन का विरोध करते हैं।

अन्य राजनीतिक विषय :

21 फरवरी, 2016 को रवीश कुमार ने ''बिना बत्ती वाले चौराहे पर''[136] शीर्षक से कविता पोस्ट की है, जिसमें सत्ता व राजनीति की हनक परंपरा के बीच एक अधिकारी की कर्तव्यनिष्ठा व दयालुता को दिखाया है। वहीं 4 मार्च को पुण्य प्रसून वाजपेयी ''बीमार नेताओ से देश का इलाज''[137] शीर्षक से लिखते हैं आदर्शहीन राजनीति और राजनेताओं के सहारे देश की तस्वीर को नहीं बदला जा सकता है।

रवीश कुमार ने 13 मार्च, 2016 को ''साइज जीरो संघी वाया खाकी नेकर''[138] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में नेकर के पहनावे का व्यंग्यात्मक वर्णन किया है। साथ ही, उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अपने ड्रेस कोड में बदलाव की आलोचनात्मक टिप्पणी है, इसे वे संघ की विचारधारा के रूप में न ही सही लेकिन प्रतिबद्धता में बदलाव के रूप में देखते हैं, हालांकि वे खुद ही बताते हैं कि संघ के शुरुआती दौर में पतलून थी व खाकी शर्ट थी, बाद में हाफ पैंट को ड्रेस कोड के रूप में स्वीकार किया गया, यानी कि संघ समय-समय पर अपने ड्रेस कोड में परिवर्तित करता रहा है।

रवीश कुमार ने 26 मार्च, 2016 को '''आधार कार्ड से जुड़ा आपकी प्राइवेसी का मुद्दा अलजेबरा का सवाल नहीं है''[139] लेख को रवीश कुमार देश में हुए विभिन्न दंगों के जिक्र के साथ शुरू करते हैं। वे तर्क देते हैं कि अधिकांश दंगों में पहचान विशेष के लोगों को सामूहिक रूप से निशाना बनाया गया। लेख के अंत में रवीश पहचान को आधार कार्ड के

जोड़ देते हैं और आशंका जाहिर करते हैं कि इस बात क्या गारंटी राज्य यानी सत्ता उन आंकड़ों का अपने फायदे के लिए या जरूरत पड़ने पर दंगा कराने के लिए इस्तेमाल नहीं करेगा। रवीश कुमार आधार मामले से जुड़े किसी प्रकार के दंगे का कोई उदाहरण नहीं दे पाते हैं।

रवीश कुमार ने 1 अप्रैल को ''एक्ट ऑफ गॉड - खतरे की आशंका के बावजूद अनदेखी जिम्मेदार कौन'' शीर्षक से डाली पोस्ट में कलकत्ता में हुए सड़क हादसे के लिए सरकारी महकमों और राजनीतिक वर्ग को दोषी माना है।[140] उन्होंने हादसे में राजनीतिक वर्ग की लीपापोती को भी गलत बताया है। हालांकि रवीश इन विषयों पर मीडिया रिपोर्टिंग की भूमिका को लेकर कोई सवाल नहीं उठाए हैं।

रवीश कुमार ने 28 मई, 2016 को ''क्यों न फीस जमकर बढ़ा दी जाए''[141] शीर्षक से लिखे लेख में प्राइवेट स्कूलों द्वारा वसूली जा रही मोटी फीसों के लिए सरकारों व शिक्षा विभागों को कठघरे में खड़ा किया है।[141] उन्होंने आरोप लगाया है कि मीडिया भी स्कूल की खबरों को जब दिखाता है जब स्कूलों में बड़ा हो जाए या एडमिशन का समय हो। सरकारें भी मीडिया खबरों के अनुसार आचरण करती हैं।

रवीश कुमार ने 4 जून, 2016 को ''सत्याग्रह के नाम पर गुंडागर्दी''[142] शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें मथुरा के जवाहर बाग में हुई घटना और प्रशासन की राजनीतिक वर्ग के दबाव में मजबूरी को बताया है। किस प्रकार राजनीतिक शह के चलते लोग तर्कहीन सत्याग्रहों की आड़ में अपने अवैध धंधे चलाते हैं। रवीश लेख में हरियाणा के बाबा रामपाल की घटना और जयगुरू देव आश्रम में उत्तराधिकार की घटना पर हुए बवाल का भी जिक्र किया है। इसे रवीश ने प्रशासन और कानून व्यवस्था की नाकामी माना है।

रवीश कुमार ने 3 जुलाई, 2016 को ''इतिहास की राष्ट्रीय की राष्ट्रीय कार्यशाला चल रही है''[143] शीर्षक से राजनीतिक कविता पोस्ट की है।

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
राजनीति/ राजनीतिक	350	1.534	27	0.4428	37	0.1362	348	0.9744	11	0.1106
वामपंथ/ वामपंथी	06	0.0252	0.00	0.00	03	0.0110	19	0.0532	0.00	0.00
समाजवाद	09	0.0378	0.00	0.00	09	0.0337	03	0.0084	0.00	0.00
राष्ट्रवाद/ राष्ट्रवादी	105	0.4407	0.00	0.00	0.00	0.00	21	0.0587	14	0.1394
सांप्रदायिक / सांप्रदायिकता	21	0.0881	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	02	0.0199
दलित	82	0.3257	0.00	0.00	0.00	0.00	28	0.0784	0.00	0.00

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार	अंशुमान तिवारी	शशि शेखर	पुण्य प्रसून वाजपेयी	सुधीर राघव

शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
हिन्दू/मुसलमान	40	0.1679	0.00	0.00	06	0.0221	13	0.0363	07	0.0697
आरक्षण	39	0.1637	17	0.2780	01	0.0037	09	0.0252	0.00	0.00
संघ	166	0.6721	10	0.1635	07	0.0258	127	0.3549	04	0.0398
सरकार/सरकारों	324	1.36	80	1.30	57	0.1890	148	0.4144	52	0.5178

संदर्भ सूची :

1. वर्चुअल वर्ल्ड: टेक्नोलॉजी, साइबरबोल, रियलिटी(2002) ऑक्सफोर्ड प्रकाशन.
2. एनाबेला, मेसक्युटा (2012). युजर परसेप्शन एंड इनफ्लुएशिंग फेक्टर ऑफ टेक्नालॉजी. आईजीआई ग्लोबल प्रकाशन. पेज 130.
3. लिंडग्रेन, सिमोन (2017). डिजिटल मीडिया एंड सोसाइटी. सेज पब्लिकेशन. पेज 127
4. तिवारी, अंशुमान. (2016, जनवरी, 5). आकस्मिकता के विरुद्ध. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

5. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जनवरी, 6). संघ मान रहा है बीजेपी को परिपक्व नेतृत्व चाहिए. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_6.html
6. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जनवरी, 23). संघ-सरकार के बीच अमित शाह फिर अध्यक्ष. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_23.html
7. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 8). हिटलर सिर्फ 'हिटलर' नहीं होता है. Retrieved from http://naisadak.org/hitler-sirf-hitler-mein-nahi-hota-hai/
8. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 14). हिटलरी है या लोकतंत्र. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html
9. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, फरवरी, 12). सपने जगाती राजनीति का एक वर्ष. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/02/blog-post_12.html
10. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मार्च, 5). पारंपरिक राजनीति को कन्हैया की चुनौती शीर्षक. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/03/blog-post_5.html
11. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 7). क्या कन्हैया नेता बन पाएगा. Retrieved from http://naisadak.org/will-kanhaiya-become-a-leader/
12. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मार्च, 14). जेएनयू, पीएमओ, मीडिया और विपक्ष नहीं चाहता भ्रष्टाचार देश में मुद्दा बने. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/03/blog-post_14.html
13. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 11). सांसद विजय माल्या को ब्लॉग के जरिए खुला पत्र. Retrieved from http://naisadak.org/vijay-mallaya-bhag-gaya/
14. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 22). छात्रों भगत सिंह को कभी मत पढ़ना. Retrieved from http://naisadak.org/

15. राघव, सुधीर. (2016, मई, 9). वीर सावरकर. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/05/blog-post_9.html

16. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 22). प्राइवेट कंपनियों में आरक्षण के बहाने पासवान का प्राइवेट जोखिम. Retrieved from http://naisadak.org/

17. तिवारी, अंशुमान. (2016, मार्च, 21). नौकरियों के बाजार में आरक्षण. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

18. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई, 4). जात ही पूछो नेता की. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/07/blog-post_04.html

19. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 29). प्राइवेट कंपनियों में आरक्षण के बहाने पासवान का प्राइवेट जोखिम. Retrieved from http://naisadak.org/

20. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 3). देवेन्द्र फणनवीस को रवीश का खुला पत्र. Retrieved from http://naisadak.org/letter-to-maha-cm-on-bharat-mata/

21. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 4). रेडियो रवीश - देवेन्द्र फड़नवीस जी बताइये तो कब-कब कहां-कहां जय बोलना है. Retrieved from http://naisadak.org/radio-ravish-devendra-fadnavis-kab-kab-kahan-kahan-jay-bolna-hai/

22. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 16). मोदी जी राहुल जी क्या आप आईसीयू में गए थे. Retrieved from http://naisadak.org/modi-rahul-n-vip-in-icu/

23. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 22). राज्यों के सभी मुख्यमंत्रियों का खुला पत्र. Retrieved from http://naisadak.org/

24. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 22). स्वप्न दास गुप्ता को राज्य सभा के लिए बधाई. Retrieved from http://naisadak.org/swapanjournalist-and-rajya-sabha/

25. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 24). झूठी राजनीति का सच्चा शॉप - फोटोशॉप. Retrieved from http://naisadak.org/photoshop-is-the-new-shop/

26. कुमार, रवीश. (2016, मई, 6). यह पानी की नहीं, प्रचार की रेल है. Retrieved from http://naisadak.org/paani-nahi-prachar-ki-rail-hai/

27. कुमार, रवीश. (2016, मई, 14). सूखे के कारण वो डूब कर मर गई. Retrieved from http://naisadak.org/drought-and-death/

28. कुमार, रवीश. (2016, मई, 15). मोदी सरकार के दो साल- क्या किसी के पास दूसरा तथ्य है या एक ही सत्य है. Retrieved from http://naisadak.org/modi-govt-second-year/

29. कुमार, रवीश. (2016, मई, 16). मोदी सरकार दो साल - संघर्ष के आलस्य से जूझती कांग्रेस. Retrieved from http://naisadak.org/modi-second-year-and-cong/

30. राघव, सुधीर. (2016, जुलाई, 12). जयचंद और मोदी. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/07/blog-post_12.html

31. राघव, सुधीर. (2016, मार्च, 25). मोदी की लोकप्रियता. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/03/blog-post_25.html

32. कुमार, रवीश. (2016, मई, 19). भारतीय जुझारू पार्टी. Retrieved from http://naisadak.org/bhartiya-jhujharu-party/

33. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जून). कैसे बदलेगी राहुल गांधी की कांग्रेस. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/06/blog-post.html

34. शेखर, शशि. (2016, अप्रैल, 2). बदलाव की बेचैनी, बेलगाम लालसाएं. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-discomfort-of-change-523887.html

35. तिवारी, अंशुमान. (2016, अगस्त, 8). अगस्त को एनडीए की जरूरत. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

36. शेखर, शशि. (2016, मई, 21). दिल्ली पर भारी पड़ते देशज. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-native-get-success-in-delhi-534966.html

37. कुमार, रवीश. (2016, जून, 16). राजनीतिक गिरोह का गढ़ है राज्य सभा. Retrieved from http://naisadak.org/rajya-sabha-means-what/

38. कुमार, रवीश. (2016, जून, 23). क्या मायावती को लिखा हुआ भाषण नहीं पढ़ना चाहिए. Retrieved from http://naisadak.org/why-mayawati-should-not-use-written-speech/

39. कुमार, रवीश. (2016, जून, 29). सांतवे वेतन आयोग के हिसाब से वेतन देकर कोई अहसान नहीं कर रही सरकार. http://naisadak.org/seventh-pay-commission/

40. कुमार, रवीश. (2016, जून, 27). पच्चीस साल की उम्मीदें-नाउम्मीदें. Retrieved from http://naisadak.org/

41. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 6). मंत्रीमंडल विस्तार का क्या आधार है. Retrieved from http://naisadak.org/mantri-mandal-vistaar-ka-kya-hai-aadhar/

42. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 6). एम जे अकबर के नाम रवीश कुमार का पत्र. Retrieved from http://naisadak.org/letter-to-akbar-by-a-journalist-called-ravish-kumar/

43. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 7). स्मृति ईरानी की निंदी में बीमार होते लोग. Retrieved from http://naisadak.org/critics-of-smriti-becoming-troll/

44. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई, 9). स्मृति ईरानी के पर किसने कतरे. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_23.html

45. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 10). राज्य के लिए राज्य का होना, मारना और मरना. Retrieved from http://naisadak.org/poetry-in-a-state-of-turmoil/

46. शेखर, शशि. (2016, जुलाई, 23). विजय पर्व पर वीरों की चिंता. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-concern-of-warriors-on-victory-day-546668.html

47. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मार्च, 22). आजादी के संघर्ष के प्रतीकों की परीक्षा. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/03/blog-post_22.html

48. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 22). गुस्सा जायज हो सकता है, गाली नहीं. Retrieved from http://naisadak.org/abuse-vs-abuse/

49. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 24). नेता महान आए हैं. Retrieved from http://naisadak.org/neta-mahaan-aaye-hain/

50. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 20). 500 से अधिक दफ्तर बनाने वाली किसी पार्टी के बारे में आपने सुना है. Retrieved from http://naisadak.org/bjp-is-going-to-make-500-offices/

51. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 22). गोद में बैठे शिवराज सिंह चौहान की तस्वीर के पांच विश्लेषण Retrieved from http://naisadak.org/goud-mein-baithe-shivraj-singh/

52. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 29). धर्म पति है और राजनीति पत्नी तो वो कौन है. Retrieved from http://naisadak.org/muni-ji-in-haryana-assembly/

53. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई, 27). इरोम के राजनीति में आने के मायने. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/07/blog-post_27.html

54. शेखर, शशि. (2016, अगस्त, 14). इरोम की कहानी कुछ कहती है. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-story-of-irom-sharmila-say-something-551068.html

55. तिवारी, अंशुमान. (2016, अगस्त, 22). बुरे दिन इंसाफ के. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

56. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, सितंबर, 15). राजनीतिक सत्ता में समाया भारत का लोकतंत्र. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/09/blog-post_15.html

57. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, सितंबर, 1). कठघरे में केजरीवील. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/09/blog-post.html

58. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 8). तो फिर सवाल कौन पूछेगा. Retrieved from http://naisadak.org/

59. तिवारी, अंशुमान. (2016, अक्टूबर, 10). चूक गए आप. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

60. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 4). कांग्रेस के बारे में क्या कहा जाए, तीस दिनों की राहुल यात्रा के बाद देखेंगे. Retrieved from http://naisadak.org/

61. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 10). शहाबुद्दीन सबको चाहिए लेकिन ज्यादा किसे चाहिए. Retrieved from http://naisadak.org/everybody-wants-shabuddin/

62. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 14). हटना है तो अखिलेश, नहीं हटना है तो मुलायम. Retrieved from http://naisadak.org/

63. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 16). शिवपाल ही भारतीय राजनीतिक दलों को लोकपाल हैं. Retrieved from http://naisadak.org/each-needs-shiv-pal/

64. शेखर, शशि. (2016, सितंबर, 17). परिवार, सरकार और सामंजस्य. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-family-government-and-harmony-562142.html

65. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 22). युद्ध करने के लिए प्रधानमंत्री ये 35 कदम उठाएं. Retrieved from http://naisadak.org/pm-should-take-these-35-steps-to-wage-war/
66. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 25). प्रधानमंत्री के भाषण से क्या प्राइम टाइम टीवी बदल जाएगा. Retrieved from http://naisadak.org/war-against-poverty-not-pakistan/
67. शेखर, शशि. (2016, अक्टूबर, 1). बापू जयंती पर जंग की बात. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-talking-about-war-on-gandhis-jayanti-569915.html
68. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 7). कांग्रेस का वो कार्यकर्ता. Retrieved from http://naisadak.org/story-of-a-cong-worker/
69. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 21). मिशनरी भाजपा का मिशन अभियान, कितना सफल कितना असफल. Retrieved from http://naisadak.org/bjp-ka-mission-kitna-paas-kitna-fail/
70. राघव, सुधीर. (2016, दिसंबर, 13). भाजपा का ब्लैकहोल. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/12/blog-post_13.html
71. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 21). अखिलेश ने जब नीरज का बक्सा उठाया. Retrieved from naisadak.org/old-pic-of-akhilesh-yadav/
72. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 24). कालिदास मार्ग पर सपा की डाल पर बैठा असली कालीदास कौन है. Retrieved from http://naisadak.org/its-over-to-akhilesh-or-will-be-over/
73. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 26). किसान भाईयो कर्ज लें तो पांच करोड़ से ऊपर लें. Retrieved from http://naisadak.org/

74. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 31). असहमतियों के सरदार थे पटेल, फिर असहमतियों को कुचलने वाले सरदार का नाम कैसे ले सकते हैं. Retrieved from http://naisadak.org/sardar-patel-is-the-hero-of-dissent/
75. शेखर, शशि. (2016, अक्टूबर, 15). जयराम जयललिता के बहाने. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-tamil-nadu-chief-minister-jayaram-jayalalithaa-shed-576706.html
76. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 4). बीएमडब्ल्यू कार दलितों को नहीं कुचलती है प्रधानमंत्री जी. Retrieved from http://naisadak.org/media-never-writes-bmw-car-crashed-dalit-mr-pm/
77. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 6). सवालों से किसे नफरत हो सकती है. Retrieved from http://naisadak.org/those-who-hates-questions/
78. शेखर, शशि. (2016, नवंबर, 25). सौवें साल में इंदिरा गांधी. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-indira-gandhi-in-1ooth-year-606170.html
79. शेखर, शशि. (2016, नवंबर, 25). बड़े कदम की राह में दुश्वारियां. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-difficulties-of-major-step-598828.html
80. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, नवंबर, 29). एकला चलकर बनेंगे मिस्टर क्लीन. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/11/blog-post_29.html
81. राघव, सुधीर. (2016, अक्टूबर, 6). सवाल दर सवाल. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/10/blog-post_6.html
82. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 4). विपक्ष को सबसे पहले अपना विपक्ष बनाना होगा. Retrieved from http://naisadak.org/what-ails-opposition/

83. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 22). प्रधानमंत्री के नाम में एक नदी है मगर वह गंगा नहीं है. Retrieved from http://naisadak.org/pm-has-a-river-in-his-name-but-not-ganga/

84. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 28). बामुलाहिजा होशियार .. 2017 में स्वर्ग युग आ रहा है. Retrieved from http://naisadak.org/2017-is-coming-with-golden-age/

85. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, दिसंबर, 21). करप्शन की गंगोत्री राजनीति से निकलती है, अब तो मान लीजिए. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/12/blog-post_21.html

86. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 30). मैं पचास दिनों के बाद किसी को जूता मारने की सोच के खिलाफ हूं. Retrieved from http://naisadak.org/why-i-am-opposed-to-beating-anyone-with-shoes/

87. शेखर, शशि. (2016, जनवरी, 9). ताजा हवा के संकेत. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-hints-of-fresh-air-511751.html

88. राघव, सुधीर. (2016, जून, 26). शाखा बाबू. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/05/blog-post_26.html

89. शेखर, शशि. (2016, जनवरी, 16). शरीफ को सहारे की जरूरत. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-pakistan-pathankot-attack-nawaz-sharif-mikhail-gorbachev-512819.html

90. राघव, सुधीर. (2016, मार्च, 27). भारत के पानी पर पाकिस्तान की राजनीति. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

91. राघव, सुधीर. (2016, अक्टूबर, 8). मोदी ने नवाज की दोस्ती के लिए सेना की साख को दाव पर लगाया. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

92. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 2). पाक में लोकप्रिय होते मोदी. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

93. शेखर, शशि. (2016, अप्रैल, 17). हमारे हुक्मरानों का क्षमापर्व. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-kshamaparva-of-our-rulers-526575.html

94. राघव, सुधीर. (2016, मई, 24). ईर बीर फत्ते. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/05/blog-post_24.html

95. कुमार, रवीश. (2016, जून, 8). भारत को अमेरिका से कितना फायदा है. Retrieved from http://naisadak.org/bharat-ko-america-se-kitna-fayda/

96. कुमार, रवीश. (2016, जून, 9). मिस्टर मोदी बनाम श्रीमान मोदी. Retrieved from http://naisadak.org/pm-modi-vs-pradhan-mantri-modi/

97. कुमार, रवीश. (2016, जून, 24). ब्रिटेन के बहाने - आ अब लोकल हो चलें. Retrieved from http://naisadak.org/brexit-means-no/

98. कुमार, रवीश. (2016, जून, 26). एनएसजी में भारत को झटका टाइप विश्लेषण. Retrieved from http://naisadak.org/why-foreign-policy-is-misunderstood/

99. कुमार, रवीश. (2016, जून, 26). ब्रेक्जिट - जनता को गरियाने का नया प्रोजेक्ट. Retrieved from http://naisadak.org/brexit-is-pro-people/

100. शेखर, शशि. (2016, अगस्त, 7). पाकिस्तान की भारत ग्रंथि. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-pakistans-indian-gland-549606.html

101. शेखर, शशि. (2016, अगस्त, 27). काश, जिन्ना कुछ संवेदनशील होते. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-alas-jinnah-be-some-sensitive-554388.html

102. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 22). दो लोग मिलकर एक लेख क्यों लिखते हैं. Retrieved from http://naisadak.org/story-behind-joint-byline/

103. शेखर, शशि. (2016, सितंबर, 3). कूटनीति के करतब और हम. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-tricks-of-diplomacy-and-us-556543.html

104. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 30). जिनके घर शीशे के बने होते हैं.. Retrieved from http://naisadak.org/

105. शेखर, शशि. (2016, सितंबर, 10). काठमाडू के कसमसाते सच. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-rabble-truth-of-kathmandu-559130.html

106. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 21). लेख कहीं अमेरिका वाला ट्रंप दिल्ली वाला मंकीमैन तो नहीं है. Retrieved from http://naisadak.org/trump-is-a-monkey-man-for-media/

107. शेखर, शशि. (2016, फरवरी, 6). कश्मीर की बिसात पर देश के दांव. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-blog-about-kashmir-politics-515708.html

108. शेखर, शशि. (2016, मार्च, 27). श्रीनगर से यमन वाया ब्रुसेल्स. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-srinagar-yemen-via-brussels-522641.html

109. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 15). कश्मीर की आवाम की शिकायतें कितनी वाजिब. Retrieved from http://naisadak.org/kashmir-ke-awaam-ki-shikayatein-kitni-waajib/

110. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 18). किसने दी इस गुंडागर्दी की छूट. Retrieved from http://naisadak.org/kisne-di-is-gundagardi-ki-chooth/

111. राघव, सुधीर. (2016, मार्च, 26). गधों का राष्ट्रवाद. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/03/blog-post_26.html

112. शेखर, शशि. (2016, फरवरी, 20). इन जंगजुओं से जुझना होगा. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-delhi-jawaharlal-nehru-university-india-517802.html

113. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 10). बिन परमिट के नेशनल कैसा. Retrieved from http://naisadak.org/

114. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 7). सांप्रदायिकता फैलाने से पहले एनआईटी श्रीनगर के छात्रों की सुन लीजिए. Retrieved from http://naisadak.org/

115. कुमार, रवीश. (2016, मई, 8). लोकतंत्र को जिंदा रखने के लिए जरूरी है नागरिकों का लड़ना और धरना देना. Retrieved from http://naisadak.org/jaruri-hai-dharna-aur-ladna/

116. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, अप्रैल, 10). नक्सलबाडी से जंगलमहल. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/04/blog-post.html

117. राघव, सुधीर. (2016, जुलाई, 14). संघियों की सरकारें और अलगाववाद. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/07/blog-post_14.html

118. राघव, सुधीर. (2016, जुलाई, 27). संघ परिवार को संतुष्ट करना है मोदी सरकार का काम. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/07/blog-post_27.html

119. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 27). गेस्ट ब्लॉग - राष्ट्रवाद सावधान, राष्ट्रवाद विश्राम. Retrieved from http://naisadak.org/राष्ट्रवाद-सावधान-राष्ट/

120. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 29). सांप्रदायिकता का नया नाम है राष्ट्रवाद. Retrieved from http://naisadak.org/nationalism-is-the-new-name-of-communalism/

121. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 24). चुनाव जीतना राष्ट्रीय कर्तव्य है तो राष्ट्रवाद क्या है. Retrieved from http://naisadak.org/winning-election-is-national-duty/

122. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, अक्टूबर, 19). राजनीतिक देशभक्ति की अंधेरगर्दी. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/10/blog-post_19.html

123. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 11). मंत्री जी बौद्धिकता में आतंकवाद मत खोजिए. Retrieved from http://naisadak.org/intellectual-terrorism-is-nothing-but-nonsense/

124. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, अक्टूबर, 26). सिर्फ सियासत की... कोई चोरी नहीं की. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/10/blog-post_26.html

125. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 22). 2016 के लिए 1924 में लिखा था भगत सिंह ने. Retrieved from http://naisadak.org/idea-of-bhagat-singh/

126. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मई, 20). हिन्दू-मुसलमान की नहीं इंसान की होगी तो तब कांग्रेस-बीजेपी भी नहीं होगी. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/05/blog-post_20.html

127. कुमार, रवीश. (2016, जून, 21). धार्मिक नहीं, भारतीय नहीं, लेकिन योग सिर्फ फिटनेस की गारंटी भी तो नहीं. Retrieved from http://naisadak.org/

128. राघव, सुधीर. (2016, जून, 25). योग और बौद्धिक विकास का संबंध. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/06/blog-post_25.html

129. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 7). गौ रक्षा से लेकर जमीन कब्जा की निंदा का वार, शनिवार. Retrieved from http://naisadak.org/in-the-name-of-cow-and-land-ravish/

130. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 9). राष्ट्रीय बिरयानी आयोग. Retrieved from http://naisadak.org/national-biryani-commission/

131. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 29). अगुस्ता को लेकर क्यों चल रहे हो आहिस्ता-आहिस्ता. Retrieved from http://naisadak.org/augusta-westland-issue/

132. शेखर, शशि. (2016, अप्रैल, 9). पनामा लीक्स और पुराने पाप. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-panama-papers-leaks-525173.html

133. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 4). पनामा पेपर्स. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_4.html

134. कुमार, रवीश. (2016, जून, 12). आपका बिकता हुआ लोकतंत्र. Retrieved from http://naisadak.org/aapka-bikta-hua-loktantra/

135. राघव, सुधीर. (2016, अक्टूबर, 21). . Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/10/blog-post_21.html

136. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 21). बिना बत्ती वाले चौराहे पर. Retrieved from http://naisadak.org/bina-batti-waale-chaurahe-par/

137. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मार्च, 4). बीमार नेताओ से देश का इलाज. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/03/blog-post_04.html

138. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 13). साइज जीरो संघी वाया खाकी नेकर. Retrieved from http://naisadak.org/size-zero-sanghi-via-khaki-shots/

139. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 26). आधार कार्ड से जुड़ा आपकी प्राइवेसी का मुद्दा अलजेबरा का सवाल नहीं है. Retrieved from http://naisadak.org/aadhar-card-privacy-is-not-a-problem-of-alzebra/

140. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 1). एक्ट ऑफ गॉड, खतरे की आशंका के बावजूद अनदेखी, जिम्मेदार कौन. Retrieved from http://naisadak.org/calcutta-flyover-collapse/

141. कुमार, रवीश. (2016, मई, 28). क्यों फीस जमकर बढ़ा दी जाए. Retrieved from http://naisadak.org/fee-should-be-increased-many-fold/

142. कुमार, रवीश. (2016, जून, 4). सत्याग्रह के नाम पर गुंडागर्दी. Retrieved from http://naisadak.org/satyagrah-ke-naam-par-gundagardi/

143. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 3). इतिहास की राष्ट्रीय की राष्ट्रीय कार्यशाला चल रही है. Retrieved from http://naisadak.org/history-in-a-workshop-of-politics/

सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर ब्लॉग्स

मौजूदा समय में सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। लोगों में ग्राम संस्कृति से नगरीय जीवन की ओर चलन बढ़ा है। नगरीय समाज में भी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। संवाद के तकनीकी माध्यमों के विकास के साथ सामाजिक दायरा भी सिकुड़ता जा रहा है।[1] डिजिटल होते समाज के साथ सामाजिक संबंध भी वर्चुअल होते जा रहे हैं। इसके लिए कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि टीवी, मोबाइल, कम्प्युटर की दुनिया इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार है।[2] आज हर व्यक्ति समय का एक बड़ा हिस्सा स्क्रीन पर बिताता है, वह स्क्रीन मोबाइल की हो या टीवी या कम्प्युटर की। ये स्क्रीन्स समाज के विचारों को गहराई से प्रभावित कर रही हैं।[3]

हालांकि इन सभी समीक्षाओं के बीच बहुत कुछ ऐसा भी है जो इस तकनीक ने समाज के लिए सकारात्मक दिया है, जैसे ब्लॉग्स, फेसबुक, ट्विटर। इस प्रकार की अनेक ब्लॉग्स साइटों और माइक्रोब्लॉगिंग वेबपेजों के माध्यम से दुनिया को आपस में जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है।[4]

सामाजिक मुद्दों पर अपनी बात रखने के लिए ब्लॉग्स महत्वपूर्ण साधन हैं। सामाजिक मुद्दों की पत्रकारिता के लिए ब्लॉग्स सकारात्मक भूमिका में दिखायी देते हैं। यहां रियल टाइम में अपने विचारों को पोस्ट किया जा सकता है। इनका समाज पर व्यापक प्रभाव भी पड़ता है।[5] 1 जनवरी, 2016 से लेकर 31 दिसंबर, 2016 के बीच अनेक घटनाएं ऐसी हुईं जो ब्लॉग्स के कारण पूरी दुनिया में चर्चित हुईं। ब्लॉग्स लेखन की वजह से अनेक मुद्दों पर जनमत तैयार हुआ। इस दौरान ब्लॉग्र्स ने न सिर्फ मुद्दों

को उठाया बल्कि अपना दृष्टिकोण भी स्पष्ट किया। पत्रकार ब्लॉगर्स के ब्लॉग्स में सामाजिक मुद्दों पर अनेक लेख लिखे गए।

वर्ष 2016 में 01 जनवरी, 2016 से लेकर 31 दिसंबर, 2016 के बीच रवीश कुमार ने अपने ब्लॉग कस्बा पर सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों से संबंधित 46 पोस्ट्स, अंशुमान तिवारी ने दो, शशि शेखर ने 19, पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 09 और सुधीर राघव ने 11 पोस्ट्स क्रमश अपने-अपने ब्लॉग्स पर पोस्ट्स की हैं।

पत्रकारों की सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों से संबंधित ब्लॉग पोस्ट्स को विश्लेषण की सुविधा के लिए महिलाओं से संबंधित पोस्ट्स, वंचित वर्ग से संबंधित पोस्ट्स, जीवन शैली से संबंधित पोस्ट्स, बाजारवाद से संबंधित पोस्ट्स, परंपराओं से संबंधित पोस्ट्स और धार्मिक विषयों से संबंधित पोस्ट्स में उप विभाजित कर लिया है।

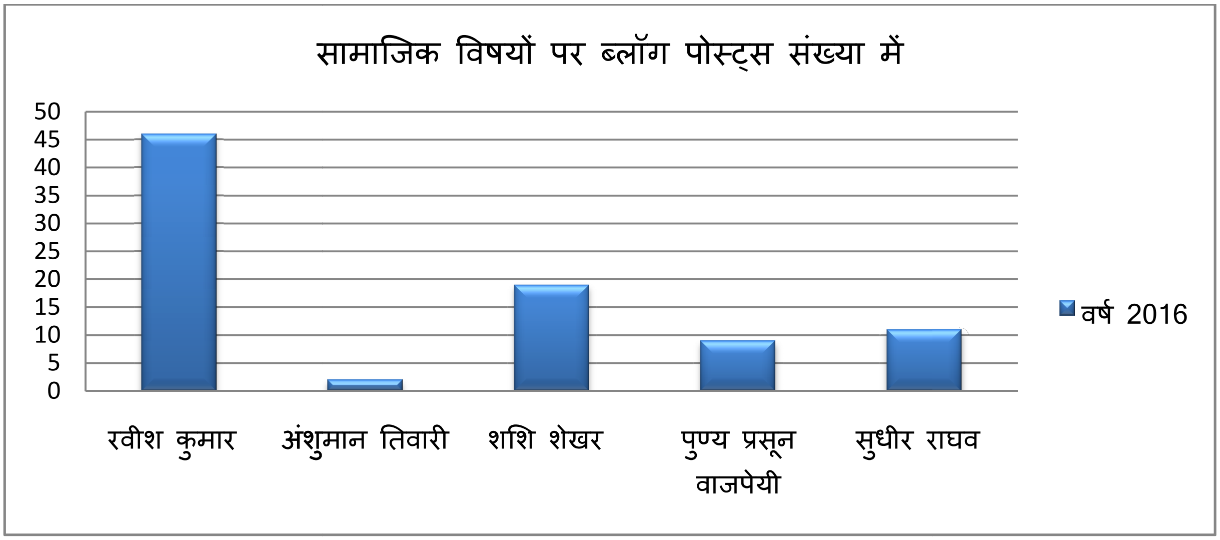

रवीश कुमार, अंशुमान तिवारी, शशि शेखर, पुण्य प्रसून वाजपेयी व सुधीर राघव द्वारा अपने-अपने ब्लॉग्स पर लिखे गए विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों में से सामाजिक विषयों से संबंधित सामाजिक लेखों का प्रतिशत चार्ट

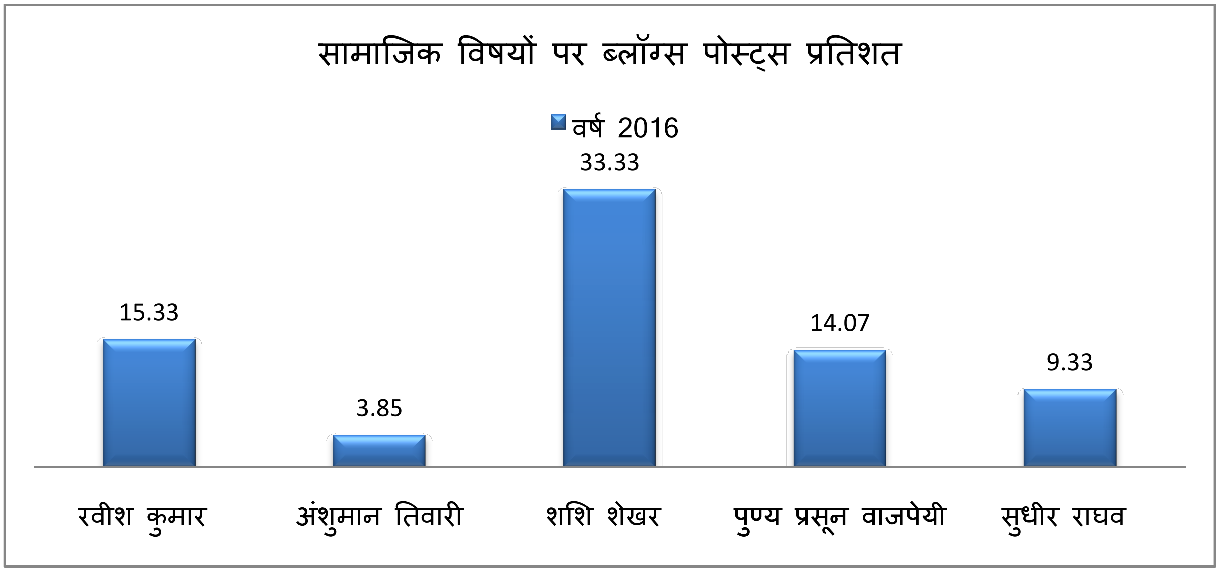

महिलाओं से संबंधित पोस्ट :

शशि शेखर ने 30 जनवरी, 2016 को "और हमारे वक्त की औरतें"[6] हेडलाइन के साथ अपने ब्लॉग पर पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने मंदिर और दरगाह में महिलाओं के प्रवेश पर रोक की परंपराओं की आलोचना की है। शनि शिंगणापुर, सबरीमाला मंदिर, हाजी अली की दरगाह में वर्जित रहे महिलाओं के प्रवेश पर लेख लिखा है। साथ ही उन्होंने शनि शिंगणापुर के अपने अनुभव के जरिए बताने की कोशिश की है कि किस प्रकार धार्मिक स्थलों की गतिविधियों और परंपराओं में समाज के अनुसार बदलाव आ रहे हैं। वे पच्चीस साल पूर्व की गई अपनी यात्रा और वर्तमान यात्रा के बारे में तुलनात्मक रूप से लिखते हैं। साथ ही वह राजनीतिक लोगों की भी आलोचना करते हैं जो रूढिवादी परंपराओं को बदलने में रूचि नहीं लेते हैं यदि कोई समाज रूढिवादी परंपराओं से निकलकर उनको बदलने का साहस करते हैं तो वोट बैंक के लिए राजनेता उसका विरोध कर देते हैं।

दूसरी ओर अंशुमान तिवारी ने 18 अप्रैल, 2016 धार्मिक स्थलों पर ''यह किसका धर्म''[7] शीर्षक से डाली पोस्ट में भारत के धार्मिक केन्द्रों को दुनिया का सबसे बड़ा कम्यूनिटी सेंटर बताया है। इस लेख में उन्होंने मुख्यत हिन्दू धार्मिक केन्द्रों की व्यवस्था और सामाजिक योगदान के बारे में लिखा है। उन्होंने लेख में धार्मिक स्थलों के अनुमानित आंकड़े भी दिए हैं। उन्होंने धार्मिक स्थलों को लाखों लोगों को रोजगार देने वाला एक बड़ा आर्थिक तंत्र बताया है। साथ ही अंशुमान ने शशि शेखर के लेख की भांति कुछ धार्मिक स्थलों पर महिला व पुरुषों के साथ किए जाने वाले भेदभाव की आलोचना की है। उन्होंने धार्मिक स्थलों पर अव्यवस्थाओं के कारण होने वाली मौतों का भी मुद्दा उठाया है, इसके लिए उन्होंने धार्मिक केन्द्र को प्रबंधन के साथ सरकार को जिम्मेदार ठहराया है।

वहीं, रवीश कुमार अंशुमान तिवारी और शशि के विपरीत हिन्दू परंपराओं के खिलाफ लिखते हैं। वे 4 मार्च, 2016 को 'सिंधु जो आपको गाली दे रहे हैं[8]' शीर्षक से डाली गई पोस्ट में एक मलयाली महिला एंकर के बार में लिखते हैं, जिसका नाम सिंधु है। इसमें वे हिन्दु संस्कृति के बचाव के लिए काम करने वाले संगठनों को गुंडा बताते हैं और 'इंटरनेट हिन्दू' कहते हुए रवीश कहते हैं कि आजकल हिन्दू गुंड़े इंटरनेट पर भी मौजूद हैं। हालांकि महिला पत्रकार की आलोचना के पीछे के कारणों को नहीं बताते हैं। लोगों की आलोचना की आजादी को वे उनकी कुंठा बताते हैं और मीडिया की अभिव्यक्ति की आजादी को मौलिक अधिकार। उनके किसी भी लेख में हिन्दू धर्म के अलावा किसी धर्म के बारे में नाकारत्मक नहीं कहा गाया।

20 मार्च, 2016 को शशि शेखर ''दर्द का दरिया पार करती औरतें''[9] शीर्षक से डाली पोस्ट में दुनिया भर में महिलाओं के साथ हो रहे अत्याचारों के बारे में बताते हैं। लेख के प्रारंभ में बैंगुई देश की घटना को जिक्र किया है, जिसमें संयुक्त राष्ट्र संघ की

ओर से तैनात बुरूंडी के शांति सैनिक ने बैंगुई की एक 13 साल की लड़की साथ बलात्कार किया और वह गर्भवती हो गई, उसने बच्चे को जन्म दिया। शशि शेखर उसकी पीड़ा को शब्दों के माध्यम से लिखते हैं कि उस नाबालिग लड़की की गोद में वह बच्चा पूरी जिंदगी उसके साथ किए गए अत्याचार को याद दिलाता रहेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ के नौकशाह इस प्रकार के बच्चों को 'शांति रक्षक बच्चे' कहते हैं। इस प्रकार की शब्दावली पीड़ित महिलाओं के घावों पर नमक छिड़कने के समान है। संयुक्त राष्ट्र के शांति सैनिकों पर इस प्रकार के अक्सर आरोप लगते रहे हैं। शशि शेखर बलात्कार के वैश्विक आंकड़े रखते हैं। अमेरिका और इंग्लैंड की जगह शीर्ष दस में। विकसित देशों में बलात्कार के ज्यादा मामले सामने आते हैं। साथ ही भारत के निर्भया कांड की भी याद दिलाते हैं।

शशि शेखर ने 21 अगस्त, 2016 को ''चांदी की ठसक या सोने की कसक''[10] शीर्षक से पोस्ट किए लेख में खेलों में भारत की महिला खिलाड़िया द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में किए जा रहे शानदार प्रदर्शन के बहाने देश में महिलाओं की स्थिति वे ऐतिहासिक घटनाओं का भी जिक्र किया है। वे लिखते हैं कि महिलाएं विश्व में देश का नाम कर रही हैं, लेकिन ऑनर कीलिंग और कन्या भ्रूण हत्या हमारे समाज पर कलंक के समान है।

शशि शेखर ने भारतीय समाज के मन की हार-जीत के मनोविज्ञान का विश्लेषण ऐतिहासिक संदर्भ के साथ किया है। वे लिखते हैं कि भारतीय समाज में ऐसा क्या हो गया था कि वह लगातार दो हजार वर्षों तक विदेशियों तक हारता है। राजपूत राजा युद्ध में मारे जाते थे और रानियां जौहर कर लेती थीं, लेकिन साधारण महिलाओं और पुरूषों का क्या होता था इसका चारण इतिहासकारों ने कोई जिक्र नहीं किया है। शशि शेखर

आगे लिखते हैं कि भारतीयों को एतिहासिक हार मानसिकता से निकलना होगा और जीत की मानसिकता बनानी होगी। खेलों के मामले में भी यही बात लागू होती है।

29 जुलाई को रवीश कुमार द्वारा "इरोम शर्मिला का संघर्ष"[11] नाम से डाली गई पोस्ट में वें इरोम शर्मिला के संघर्ष की कहानी के जरिए लोकतंत्र की सुंदरता को धरना, प्रदर्शन और आंदोलनों में बताते हैं। वे इरोम शर्मिला को साहसी महिला बताते हैं। इस लेख को महिला के साहस और आंदोलन को एक साथ लिखते हैं। वे टीआर सुब्रमणयम कमेटी की जरिए व कॉलेजों-विश्वविद्यालयों में छात्र राजनीति को उचित ठहराते हैं, और कमेटी, राजनेताओं, मीडिया की साजिश बताते हैं कि वे छात्र आंदोलनों से डरकर छात्र राजनीति को जड़ से ही खत्म करना चाहते हैं। रवीश इस लेख में छात्र राजनीति के कारण शिक्षा की गुणवत्ता में आ रही कमियों के बारे चर्चा करने से बचते हैं। लेख में अफस्पा कानून के विरोध में लिखते हैं, लेकिन उन कारणों जो राष्ट्रसुरक्षा के लिए चुनौती बने हुए हैं, जिसके कारण अफस्पा लागू करना पड़ा के बारे में कोई बात नहीं करते हैं। लेख में इरोम के व्यक्तिगत जीवन, प्रेम प्रसंग और विवाह की चर्चाओं के बारे में भी लिखा गया है।

रवीश कुमार द्वारा 30 अगस्त, 2016 को "स्कर्ट दोष के शिकार भारतीय मर्दों से अपील"[12] पोस्ट में लिखते हैं कि किसी महिला के पहनावे से ज्यादा पुरुषों की सोच ज्यादा जिम्मेदार है। पश्चिमी सभ्यता में स्कर्ट पहनी जाती है, लेकिन भारत के पूर्वोत्तर राज्य की महिलाओं भी स्कर्ट पहनती हैं, उसे सुलू कहा जाता है, यह उनका पारंपरिक परिधान है। यदि कोई पुरुष किसी महिला को स्कर्ट में देखकर गलत नजरों से देखता है तो यह उसका दोष है और उसे भारतीय संस्कृति की ही जानकारी नहीं है। रवीश इस लेख के ऊपरी हिस्से में प्रभावति करने वाले तथ्य देते हैं और प्रगतिवादी दृष्टिकोण के

साथ लिखते हैं। लेकिन दूसरे हिस्से में रवीश कुमार इस बहाने हिन्दूवादी संघटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हाफ पैंट पर भी तंज कसते हैं। वे हिन्दू मंदिरों में पुजारियों द्वारा पहने जाने वाले कटी वस्त्र पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हैं, यहां इन दोनों विषयों पर की गई टिप्पणी उनकी वामपंथी विचारधारा से प्रेरित है। रवीश ने अगस्त, 2016 में सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों से संबंधित अपने ब्लॉग पर 9 पोस्ट डाली हैं।

रवीश कुमार द्वारा 29 सितंबर, 2016 को ''हिन्दी की लड़कियां - स्वर्ण कांता''[13] पोस्ट में उन्होंने अपने मित्र अविनाश दास की पत्नी स्वर्णकांता, जो बीबीसी हिन्दी में काम करती हैं के जरिए हिन्दी पट्टी की आधुनिक लड़कियों की समाज की दकियानूसी परंपराओं के खिलाफ बुलंद करती आवाजों की एक झलकी पेश करने की कोशिश की है। रवीश ने पूरे मामले को किस्सागोई के तरीके में पेश किया है, जो प्रभावी संदेश के साथ समाप्त होता है। इसमें महिला सशक्तीकरण को मिलते नए आयामों को पेश किया है। कहीं-कहीं आजादी सामान्य सामाजिक मर्यादाओं का भी उल्लंघन करती नजर आती है, जिसे महिला सशक्तीकरण के लिए आवश्यक कदम के रूप में दिखाया गया है।

5 दिसंबर, 2016 को शशि शेखर ने ''क्या आप डोरिस फ्रांसिस को जानते हैं''[14] शीर्षक से डाली पोस्ट में गाजियाबद के खोड़ा में रहने वाली डोरिस फ्रांसिस की जीवंटता की कहानी लिखी है। जिसने अपने बेटे को सड़क हादसे में खोने के बाद खोड़ा चौराहे पर ट्रेफिक को सुगम बनाने का काम किया। इसके कारण वह कैंसर से पीड़ित हो गई, लेकिन उसने समाज सेवा का काम नहीं छोड़ा। लेख में एसिड पीड़ित महिला लक्ष्मी और किन्नर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी के जीवंटता का भी उल्लेख किया है। लक्ष्मी ने तेजाब की खुली बिक्री के खिलाफ और लक्ष्मी नारायण की कानूनी लड़ाई ने किन्नरों को तीसरे जेंडर

के रूप में मान्यता दिलायी। वे लेख के अंत में लोगों से इनसे प्रेरणा लेने और समाज के लिए कुछ करने के लिए अपील करते हैं।

वंचित वर्ग से संबंधित पोस्ट :

10 जनवरी, 2016 की पोस्ट में रवीश ने एक बिल्ली की तस्वीर पोस्ट की है, जिसका शीर्षक दिया है ''कोलकाता की बिल्ली''[15]। इस चित्र में बिल्ली लोहे की रिक्शानुमा गाड़ी पर टंगी हुई पिन्नियों में से पिछले दोनों पैरों पर खड़े होकर कुछ निकाल रही है। रवीश ने इस चित्र के जरिए कोलकता जीवन की जद्दोजहद को प्रकट करने की कोशिश की है। वहीं पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 31 मार्च, 2016 को ''कोलकाता एक ऐसा शहर''[16] शीर्षक से डाली पोस्ट में कोलकाता शहर की जीवंत तस्वीर शब्दों के मध्यम से पेश की है, जिसमें अमीरी और गरीबी दोनों के रंग शामिल हैं। लेख में महान हस्तियों के कोलकाता के संबंध में हुए अनुभवों को नामों के साथ दिया है। उनके अनुसार कलकत्ता की कहानी हिन्दुस्तान की कहानी है। पोस्ट में कोलकाता में वर्ष 2016 में हुए पुल हादसे और उसमें मारे गए लोगों के बारे में लिखा है। इसके लिए उन्होंने राजनीतिक भ्रष्टाचार को दोषी माना है।

वहीं शशि शेखर ने 23 जनवरी, 2016 को ''गणतंत्र को मजबूत बनाते नौजवान''[17] शीर्षक से डाली पोस्ट में दलित, पिछड़ी राजनीति के नाम पर समाज को बांटते लेखकों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं की आलोचना की है। वे लिखते हैं कि ऐसी क्या अभिव्यक्ति की आजादी, जिससे देश, समाज को खतरा पैदा हो या उसमें प्रेम, सौहार्द कम होता है। यह अभिव्यक्ति की आजादी नहीं बल्कि उनकी कुंठाएं हैं, जो अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर व्यक्त की जा रही हैं। साथ ही, वे उन बुद्धिजीवियों और

लेखकों को भी कठघरे में खड़ा करते हैं जिन्होंने रोहित वेमुला की आत्महत्या और अभिव्यक्ति के नाम पद छोड़े या पुरस्कार वापिस किए। वे लिखते हैं कि इस प्रकार के अतिरेक फैसलों से समाज में विभाजन की खाई बढ़ती है। समाज के इन अग्रणी लोगों द्वारा यदि रचनात्मक कार्य किए जाते जो ज्यादा भला होता।

वहीं दूसरी ओर, रवीश ने 30 जनवरी, 2016 को ''बर्तन की संप्रभुता के आगे कविता''[18] नाम से डाली पोस्ट में कविता के जरिए जातिगत व्यवस्था, राजनीति और सामाजिक ढांचे को लेकर तंज कसा है। इस पोस्ट में वे राष्ट्रवाद की धारणा पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष करते हैं। कविता में उन्होंने व्यक्तिगत व निराशात्मक टिप्पणियां भी की हैं।

सामाजिक ऊंच-नीच पर सुधीर राघव ने 18 अप्रैल, 2018 को ''गुलाम क्यों बने''[19] शीर्षक से डाली पोस्ट में भारतीय समाज पर कटाक्ष किया है कि जिस समय पूरी दुनिया में वैज्ञानिक खोजें हो रही थीं, तोप और इंजन बन रहे थे, उस समय भारत में यह तय किया जा रहा था कि कौन मंदिर में घुसेगा और कौन नहीं। इस लेख में उन्होंने हिन्दू समाज में विभिन्न प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा के लिए माता शब्द के इस्तेमाल पर कटाक्ष किया है। लोग गोबर और गोमूत्र से स्नान करके वावजूद प्लेग से मर रहे थे। सुधीर राघव के अनुसार इन्हीं कारणों के कि मध्य एशिया और यूरोप के लोगों ने हमें गुलाम बनाया। लेख में वैदिक विज्ञान के बारे में कोई चर्चा नहीं। साथ ही उन कारणों की भी चर्चा नहीं की गई है, जिसके कारण मध्य काल में किस प्रकार वैदिक विज्ञान लुप्त हो गया और लोग रूढिवादी हो गए।

शशि शेखर ने 30 अप्रैल, 2016 को "क्योंकि आज मई दिवस है"[20] शीर्षक पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने मजदूर की स्थिति के बारे में लिखा है। भारत के मजदूरों के बारे में चिता करते हुए वे लिखते हैं कि न तो अधिकांश के पास न तो जरूरी सुरक्षा उपकरण होते हैं और न ही उनका बीमा होता है। समय-बेसमय कठिन परिस्थितियों में उनसे काम लिया जाता है। लेख में खाड़ी के देशों में भारतीय मजदूरों के साथ होने वाले अत्याचारों के बारे में भी चर्चा की है। जन हितों के बारे में बात करने के मामले में पत्रकारिता की सीमाओं और प्रभावों के बारे में भी लिखा है।

रवीश कुमार 8 मई, '2016 को "ये उस लड़की बारे में है"[21] शीर्षक से डाले गए पोस्ट केरल में दलित लड़की की हुई हत्या और बलात्कार को सिस्टम और समाज की नाकामी दिखाया है। उस लड़की को समाज का एक हिस्सा मदद कर रहा था तो दूसरा हिस्सा उसकी जान के पीछे पड़ा था। जाति के आधार पर तिरस्कृत किया जा रहा था, कुए से पानी नहीं भरने दिया जाता था। पुलिस ने उनकी शिकायत दर्ज नहीं की। यह सब वहां हुआ जहां साक्षरता 100 प्रतिशत है। रवीश सवाल उठाते हैं कि 100 फीसदी साक्षरता के बावजूद केरल में प्रतिदिन 4 बलात्कार होते हैं। हालांकि रवीश कुमार लेख के अंत में घटना के पीछे अन्य कारणों के मुकाबले जातिगत व्यवस्था को ज्यादा जिम्मेदार ठहराते हैं, जबकि इसी राज्य में हो रहे अन्य बलात्कारों के संबंध में कोई जातिगत आंकड़े प्रस्तुत नहीं करते हैं।

5 फरवरी, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने "अब देश का कंधा नहीं, सत्ता का धंधा देखें"[22] शीर्षक से डाली पोस्ट में दलित, मजदूर और किसानों की सामाजिक और अर्थिक स्थिति के बारे में लिखा है। वे लिखते हैं कि राजनीतिक रूप से दलितों की चिंता की बात ने समाज को जोड़ने के बजाए बांटने का काम किया है। उन्होंने राज्य को दलित

उत्पीड़न रोकने में असफल होने पर कठघरे में खड़ा किया है। उन्होंने लेख में मुस्लिमों के आर्थिक-सामाजिक पिछड़ेपन के बारे में भी लिखा है।

इसी प्रकार, रवीश कुमार द्वारा 20 जुलाई को ''गाय नहीं है दलित जो चाहे हांक ले जाए''[23] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में गुजरात में चार दलितों के साथ हुई मारपीट की घटना के बारें में लिखते हैं कि भारतीय समाज की दलितों के प्रति आज भी सोच पूरी तरह से नहीं बदली है। दलितों का उत्पीड़न किया जा रहा है। उनको जाति के कारण सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाता है। मारपीट की जाती है। हालांकि रवीश कुमार गुजरात की घटना को राष्ट्रवाद की विचारधारा से जोड़कर विरोधभास भी पैदा करते हैं। वे तिरंगा रैलियों को औचित्य पूछते हैं। रवीश कुमार सोशल मीडिया को भी दलितों के प्रति पूर्वाग्रहों से ग्रसित बताते हैं। सोशल मीडिया पर उनको अपमानित किया जाता है। हालांकि उनका यह कहना बिना तथ्यों के है। वे गाय के मुद्दे को भी दलितों से जोड़ देते हैं। उनका मानना है कि संसद में 131 सांसद अनुसूचित जाति व जनजाति से हैं। रविश आरोप लगाते हैं कि ये दलित सांसद भी दलितों की बात नहीं करते केवल राजनीति के लिए अंबेडकर की बात करते हैं।

रवीश कुमार ने 10 अगस्त, 2016 को ''बहराईच में बीस रूपये के लिए बच्चे की मौत हो गई''[24] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में सरकारी महकमे की जवाबदेही और समाज की संवेदनहीनता पर करार वार करते हैं। इसमें में 20 रुपये न देने पर हुई बच्चे की मौत के लिए समाज और तंत्र को जिम्मेदार बताते हैं। साथ ही वे इसी बहाने अपनी पत्रकारिता की शैली के अनुसार राष्ट्रवाद, संतसमाज और विकासवाद को भी निशाने पर लेते हैं। रवीश डॉक्टरों के व्यावसायिक हो जाने को संवेदनहीनता से जोड़ते हैं।

शशि शेखर ने 24 सितंबर को "असली भारत के हक में"[25] शीर्षक से डाली पोस्ट में भारत में गरीबी के पीछे सोच और उसके क्रियान्वयन को जिम्मेदार ठहराया है। भारत में अग्रेजों आने से पूर्व पूरे विश्व का 25 प्रतिशत माल का उत्पादन भारत में किया जाता था, जो सन 1900 में घटकर महज दो प्रतिशत ही रह गया था। आज मध्यवर्गीय परिवारों से निकले बच्चे स्टार्टअप भरोसा करने से ज्यादा किसी के यहां नौकरी करके नौकर बनना चाहते हैं। लेख में सामान्य भारतीयों में व्यावसायिक सोच की कमी की आलोचना की है। इस लेख में उन्होंने गरीबी के लिए सरकारी नीतियों की जिम्मेदारी के बारे स्पष्ट लिखा है।

इसी प्रकार, रवीश कुमार द्वारा 24 दिसंबर, 2016 को "चेन्नई की गंदगी"[26] नाम से डाली गई' पोस्ट में चित्र व कैप्शन के जरिए बताया है कि किस प्रकार एक व्यक्ति होटल के बाहर पड़ी जूठन में भोजन तलाश रहा है। यह सब नीति आयोग व गरीबी रेखा तय करने वाली व्यवस्था के गाल पर करारा तमाचा है। सरकार किसी की भी हो इस त्रासदी को समझने व सुलझाने की किसी ने कोशिश नहीं की।

बाजारवाद से संबंधित पोस्ट :

रवीश कुमार 24 फरवरी, 2016 को "वाशिंगटन की छतों पर एंटेना क्या कर रहा है"[27] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में अमेरिकी समाज और भारतीय समाज के पुराने टेलीविजन समाज की तुलना करते हैं। वे पुराने समय को याद करते हुए पोस्ट में लिखते हैं कि किस प्रकार डीटीएच या केबल तकनीक आने से पूर्व एंटिना घूमाकर सिग्नल सेट किए जाते थे। भारत में डीटीएच आने से टीवी एंटिना का प्रचलन लगभग समाप्त हो गया है, लेकिन अमेरिका की छतों पर अब भी इन्हें देखा जा सकता है। इसके जरिए वे

तकनीक व समाज के व्यवहार के आपसी संबंध को चित्रों के जरिए दिखाते हैं। इस पोस्ट में अमेरिका में छत पर लगे हुए एंटिना की तस्वीर भी दी है।

इसी प्रकार, रवीश 27 फरवरी, 2016 को "अमेरिका में महाबली गाड़ियां"[28] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में वे अमेरिका की सुपर पॉवर की छवि गाड़ियों में देखते हैं। पोस्ट में उन्होंने 9 चित्रों का प्रयोग किया है, इसमें बड़े-बडे अमेरिकी ट्रकों के चित्रों का इस्तेमाल किया है। अपवादस्वरूप एक चित्र पैडल रिक्शे के दिया है, जो अमेरिका सड़कों पर चल रहा है। वहीं, रवीश कुमार ने 28 फरवरी, 2016 को "थान और कटपीस में अंतर"[29] नामक शीर्षक से डाली गई पोस्ट में अमेरिका के टाइम स्क्वायर की तुलना दिल्ली के लाजपतनगर से करते हैं। रवीश कुमार विकास के आधुनिक मॉडलों में खामियां निकालते हैं, चाहे वो अमेरिका का विकास का मॉडल हो या भारत का। इन दोनों पोस्ट्स में रवीश कुमार विकास में सामाजिक मानसिकताओं का विश्लेषण दो देशों के संदर्भ में करते हैं। इसके लिए उन्होंने तकनीक विकास की तुलना का सहारा लिया है।

रवीश कुमार ने 27 अप्रैल, 2016 को "यामाहा आरएक्स 100 भी कोई सपना है"[30] शीर्षक के साथ लिखे गए लेख में बताते है कि समय के साथ समाज के मानक वाहन व तकनीक के संदर्भ में भी बदल जाते हैं। उदाहरण के साथ वे बताते है कि कभी यामाहा आरएक्स 100 बाइक को लोक खूब पंसद किया करते थे, लेकिन समय के साथ नई मोटरवाहन की नई तकनीकों के ईजाद से अन्य बाइक्स ने उसका स्थान ले लिया है। पोस्ट में डाले गए फोटो को वो अपने अनुभव से जोड़कर पेश करते हैं।

इसी 28 अक्टूबर, 2016 को शशि शेखर ने "प्रथम वचन, जो फिट है, वही हिट है"[31] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने लिखा है कि किस प्रकार शरीर को व्यापार

और ख्याति का माध्यम बना दिया है और आश्चर्य यह है कि समाज उनकी सनक को स्वीकार भी करता है। वह मिस्र और ताजमहल की एतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा करते हैं, जिनका निर्माण मृत शरीरों को सुरक्षित रखने के लिए किया गया था। वे फिल्म इडस्ट्री के फिल्मी कलाकारों के शरीर की भी चर्चा करते हैं, जिनके शरीर के आकार पर करोड़ों का व्यवसाय किया जाता है। कंपनियों के शीर्ष पदों प्रमोशन करते समय लोगों के स्वास्थ्य की जांच की जाती है। शशि शेखर कहते हैं कुछ देर के लिए देह को भूल चाहिए और भाररहित होकर तैरने लगिए। इस लेख में वे समाज के शरीर बोध को विश्लेषित करते हैं।

जीवन शैली से संबंधित पोस्ट :

सुधीर राघव ने 7 फरवरी को ''वसंत की गुदगुदी''[32] शीर्षक से डाली पोस्ट में वेलेटाइन सप्ताह की सामाज और प्रकृति की हलचलों की व्यंग्यात्मक व्याख्या की है। वे वेलेटाइन डे को महिला सशक्तीकरण के रूप में देखते हैं। इस दौरान युवाओं की बोर्ड परीक्षाओं का समय होने कारण उनका वसंत तनाव के साथ निकलता है। व्यापारियों व रसोई की वेलेटाइन की खुशियों को छोड़कर बजट पर निगाहें लगी रहती हैं। शशि शेखर ने 13 फरवरी यानी वेलेंटाइन सप्ताह के मौके पर ''तकनीक के दौर में प्रेम''[33] शीर्षक से लिखे लेख में समाज में दरकते रिश्तों को जिक्र किया है। लिखा है कि किस प्रकार तकनीक, महत्वकांक्षाएं और परंपराहीन आधुनिकता समाज में रिश्तों को कमजोर कर रही है। उन्होंने दिल्ली में एक व्यवसायी द्वारा वेलेंटाइन वीक के मौके पर अपनी प्रेमिका की नृंशस हत्या का भी जिक्र किया है। मुंबई हाइकोर्ट ने 2012 में वादी प्रताप भोंसले के विषय में टिप्पणी की कि लव मैंरिज में तलका का प्रतिशत ज्यादा दिखायी देता है। उन्होंने लेख में तलाक के मामलों में होते इजाफे के आंकड़े भी दिए हैं। साथ ही लिखते

हैं कि वे न तो प्रेम विवाह के खिलाफ हैं न ही प्रेम विवाह हालांकि ये सभी आकंड़े चौकाते जरूर हैं।

21 फरवरी, 2016 को रवीश कुमार ''गेस्ट पोस्ट - और तब आएगी क्रूरता''[34] नामक शीर्षक से कविता के रूप में डाली गई पोस्ट में समाज के भविष्य को दिखाने की कोशिश करते हैं। रवीश इस पोस्ट में नकारात्मक भाव के साथ समाज की भाव शून्ययता के बारे में इशारा करते हैं। वे आशंका जाहिर करते हैं, आने वाले समय में समाज हथियारों और बदला लेने की भावना में जीने लगेगा, देश भी इसी भाव के साथ जिएंगे। हालांकि रवीश वर्तमान की आतंकी और हिंसात्मक घटनाओं के बारे में कुछ नहीं लिखते हैं, केवल भविष्य के बारे में लिखा है। रवीश ने कविता में समाज में हो रहे सकारात्मक बदलावों के बारे में भी कोई चर्चा नहीं की। वे समाज को केवल पतन और निराशा की और गिरता हुआ देखते है।

रवीश 24 फरवरी, 2016 की पोस्ट में ''अमरीका में गरीबी है या गरीबी जैसी है''[35] हेडलाइन के साथ 13 रंगीन चित्रों का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें अमेरिकी समाज को चित्रित किया गया है। इसमें वे तथ्यों के साथ अमेरिकी जीवन के बारे में बात करते हैं। वे तीसरी दुनिया के देशों के उन लोगों की धारणाओं के तोड़ने के कोशिश करते हैं, जो सोचते हैं कि अमेरिका विकास के मामले में स्वर्ग है। वे बताते हैं कि अमेरिका के वाशिंगटन डीसी से निकलते ही उसी प्रकार सड़के टूटी मिलती हैं, जिस प्रकार दिल्ली से निकलते ही गाजियाबाद की। वहां एक समान बने घरों में भी गरीबी बसती है, लेकिन स्वरूप अलग है। इसके लिए उन्होंने टूटे हुए खिड़की के शीशे, जर्जर दरवाजे, पुरानी गाड़ियां, सड़क के किनारे बिखरी हुई गंदगी के चित्रों दिए हैं। सभी चित्रों के दिए तथ्यों में

रवीश भारत को अमेरिका से बेहतर दिखाते हैं। रवीश कुमार ने इस पोस्ट में लगाए चित्र अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान स्वयं खीचें हैं।

रवीश कुमार 24 फरवरी, 2016 की पोस्ट ''पुराने पोस्टर''[36] में पोस्टरों के चित्रों के जरिए समाज में हो रहे बदलावों को दिखाते हैं। जिसमें दिल्ली और मुंबई के विकास के चित्रों के साथ व्यंग्यात्मक तंज किया है। रवीश कुमार 3 मार्च, 2016 को लिखे लेख ''मुर्दे लौट कर आए हैं''[37] में काव्य के रूप में लिखते हैं कि समाज में जड़ता आती जा रही है। लोग मुर्दा हो गए हैं। अन्य कविताओं की तरह रवीश की इस कविता में भी निराशा के भाव भरे हुए हैं। इस कविता के जरिए बताना चाहते हैं समाज की नकारात्मकता, निराशा, कुंठा सोशल मीडिया पर भी दिखायी देती है। हालांकि वे ये नहीं बताते हैं कि निराशा व कुंठा किन संदर्भों में है।

रवीश कुमार 1 अप्रैल, 2016 को अपने ब्लॉग कस्बा पर डाली गई ''उन आखिरी पलों में जब भारत हार रहा था''[38] शीर्षक से पोस्ट में एक क्रिकेट मैच में भारत की हार और समाज की प्रतिक्रिया के बारे में लिखते हैं। वे लिखते हैं कि भारत में क्रिकट खेल से बढ़कर है। यहां लोग खेल को भी देश की प्रतिष्ठिता और मान सम्मान से जोड़ देते हैं। जबकि खेल को खेल की तरह लेना चाहिए। खेल में जीत से प्यार करने वाले लोगों को हार से भी उतना ही प्यार करना चाहिए। रवीश कुमार यहां क्रिकेट की हार के बहाने अपने अन्य लेखों की तरह अप्रासंगिक रूप राष्ट्रवाद की भावना पर अप्रत्यक्ष रूप से चोट करते प्रतीत होते हैं।

रवीश कुमार 11 अप्रैल, 2016 को ''नानी के जाना.. बहुत कुछ टूट जाना''[39] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में रवीश रंजन शुक्ला की नानी की यादों और उनकी मृत्यू के

बाद के गम को गेस्ट ब्लॉग के रूप में लिखा है। रवीश कुमार ने 1 अगस्त, 2016 को ''ये जो जिंदगी है''[40] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में एक चित्र लगाया लगाया है, जिसमें दो व्यक्तियों को खाट पर बैठकर ताश खेलते हुए दिखाया गया है। इसी तारीख को उन्होंने 'गाय के नाम पर' पर एक और चित्र पोस्ट किया है, जिसमें एक गाय सड़क के किनारे पड़े हुए कूड़े के ढेरों पर अपना खाना तलाश रही है। रवीश ने यह चित्र गाय के नाम पर की जा रही राजनीति पर व्यंग्यात्मक रूप से पोस्ट किया है। हालांकि रवीश ने इसमें नगर निगमों के दायित्वों, कूड़े के ढेरों, आवारा जानवरों के लिए विभागों की जिम्मेदारियों को लेकर कोई सवाल नहीं किए हैं।

एक अगस्त की एक अन्य पोस्ट में रवीश कुमार संगमरमर की सिंगल पीस घोड़े की तस्वीर को पोस्ट किया है।[41] इसमें वे पहाड़ों के किए जा रहे दोहन को केन्द्र में रखते हैं। वे लोगों के विलासी शौकों की आलोचना करते हैं व लोगों को मिल रहे रोजगार को गौंण रखते हैं, जबकि एक अन्य पोस्ट में रवीश चाइना के समानों की दिवाली पर खरीददारी को रोजगार से जोड़कर आवश्यक बताने की कोशिश करते हैं। दोनों ही मुद्दों पर उनकी विचारधारा विरोधभासी नजर आती है।

रवीश कुमार द्वारा 27 अगस्त 2016 को ''ट्रक टैम्पो पुराण''[42] पोस्ट में दो चित्र लगाए हैं, एक चित्र में शिव की विशालकाय मूर्ति को ट्रक में दिखाया गया है, दूसरे चित्र में भारत के ट्रकों के पीछे लिखे स्लोगन को दिखाया गया है, जिस पर लिखा है 'वीरों की धरती, जवानों का देश, जिला आजमगढ़ राज्य उत्तर प्रदेश'। रवीश कुमार द्वारा 27 अगस्त, 2016 को ''गाजियाबाद का रीडर कैफे''[43] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में गाजियाबाद के बेतरतीब विकास के साथ इंदिरापुरम में खुले एक नए रीडर कैफे की

रचनात्मकता और 'इनोवेटिव आइडिया' कके बारे में बताया गया है। रवीश कुमार चित्रों के समाज की मानसिकता के बारे में बताने का प्रयास किया है।

रवीश द्वारा 30 अगस्त, 2016 को ''बिकनी का नाम परमाणु परीक्षण स्थल के नाम पर''[44] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में रवीश एक रोचक जानकारी देते हैं, तैरते समय महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले पोशाक बिकनी के नाम का ईजाद अमेरिका में स्थित एक परमाणु परीक्षण स्थल के नाम से हुआ है। इसके लिए उन्होंने उस परीक्षण स्थल पर बिकनी नाम से लगे बोर्ड की तस्वीर भी पोस्ट की है। साथ ही एक वस्त्र की एक अन्य तस्वीर भी पोस्ट की है।

रवीश कुमार द्वारा 7 सितंबर, 2016 को ''भोजपुरी भारत के इतिहास का पसीना है''[45] शीर्षक से लिए लेख में भोजपुरी भाषा के महत्व और उसके लिए काम करनी की आवश्यकता के बारे में बताया है। भोजपुरी भाषा को बिहारीपन की आत्मा कहा गया है। रवीश ने 10 सितंबर को '''ऐसा भी होता है''[46] शीर्षक से डाली पोस्ट में एक तस्वीर लगाई है, जो 'फायर्ड कर्मचारी' साइन बोर्ड लगे रेस्टोरेंट का है। इसी प्रकार 11 सितंबर को ''क्या यही आर्ट है''[47] शीर्षक डाली गई पोस्ट में एक चित्र लगाया है, जिसमें टैम्पों के ऊपर पेंट की गई लकड़ियों को दिखाया गया है। चित्र के साथ कोई कैप्शन नहीं दिया गया है।

रवीश कुमार द्वारा 18 सितंबर, 2016 को ''जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी''[48] शार्षक से डाली पोस्ट में राजनेताओं और राजनीतिक पार्टियों द्वारा देश के लिए कुर्बानी देने वाले लोगों के नाम का इस्तेमाल का अपने स्वार्थ करन वालों पर तंज कसा है। उन्होंने समाज को नेताओं से ईमानदार बताया है। वे लिखते हैं कि समाज शहीदों को आत्मगौरव के लिए याद करता है, लेकिन राजनेता उसका इस्तेमाल अपने

हितों के लिए करता है। हालांकि इस दौरान उऩ्होंने पार्टी खास पर अप्रत्यक्ष रूप से अधिक हमला बोला है। लेख में उन्होंने समाज की मानसिकता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। लेख में उन्होंने एक जगह आतंकवाद और राष्ट्रवाद को भी आपस में जोड़ दिया है।

20 सितंबर, 2016 को रवीश कुमार ने ''राजदूत की सवारी''[49] नाम से डाली पोस्ट में मैक्सिको के राजदूत के टैम्पो वाहन को चित्र के जरिए दिखाया है। मैक्सिको के राजदूत टैम्पो के जरिए चलते हैं, जिस पर राजदूत का विशेष नंबर और देश का झंडा लगा रहता है। टैम्पो को मैक्सिको के प्रसिद्ध कलाकार ने रंग-रोगन से सजाया है। रवीश कुमार द्वारा 24 सितबंर, 2016 को ''पटना के दो पब्लिक स्पेस की कहानी शीर्षक''[50] से डाली गई पोस्ट में पटना शहर के दो बड़े सार्वजनिक मैदानों पटना का गांधी मैदान और संजय गांधी जैविक उद्यान के बारे में लिखा है। इसमें दोनों ही मैदानों की सामाजिक गतिविधियों को पोस्ट में लगाए गए 7 चित्रों के माध्यम से की गई है। चित्रों के साथ लंबे-लंबे कैप्शन दिए गए हैं। रवीश कुमार द्वारा 24 सितंबर को ''पटना के लड़के, लड़कियां और पिंक''[51] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में एक पुलिस अधिकारी के कमेंट, पुलिस समाज और पिंक फिल्म के बारे में बताया गया है।

रवीश कुमार द्वारा 2 अक्टूबर, 2016 को ''ये क्या जगह है दोस्तों''[52] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में रहस्यवादी कविता के सहारे जीवन और समाज को समझाने और समझने की कोशिश कर रहे हैं। रवीश कुमार द्वारा 3 अक्टूबर, 2016 को ''इस दिवाली चीन का माल जरूर खरीदें''[53] डाली गई पोस्ट में गरीबों के नाम पर चीन का सामान खरीदने की बात करते हैं। अर्थव्यवस्था की गहराई की बात कहे बिना वे चीन के समान खरीददारी में गरीबों का कल्याण दिखाते हैं। राष्ट्रवाद की विचारधारा पर भी हमला करते

हैं, जो चीन का सामान खरीदने के विरूद्ध सोशल मीडिया पर अभियान चला रही है। हालांकि चीन के समान के समर्थन के पीछे के तर्कों को आंकड़ों के साथ प्रस्तुत नहीं करते हैं। केवल भावनाओं के आधार पर पूरा लेख लिखा गया है।

10 अक्टूबर को रवीश कुमार द्वारा ''अनेक भीड़ बनाम एक भीड़''[54] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में भीड़ के चरित्र पर बात करते हैं। भीड़ पर सोशल मीडिया की अफवाहों द्वारा नियंत्रित होने का आरोप भी लगाते हैं। भीड़ के व्यवहार का वर्णन करते हुए रवीश हिन्दू त्यौहारों के क्रियाकलापों पर कटाक्ष करते हैं। रवीश अपनी किसी भी पोस्ट में हिन्दू धर्म के अलावा किसी भी अन्य धर्म को लेकर कोई भी नकारात्मक टिप्पणी नहीं मिलती है। वे अन्य धर्मों की कुरीतियों को लेकर भी कोई चर्चा नहीं करते हैं बल्कि तीन तलाक जैसे गंभीर मुद्दों को धार्मिक बता बचाव करते हैं। साथ ही, हिन्दुओं के मामलों में सरकारों पर धर्म विशेष का ठप्पा लगा आलोचना करते हैं। रवीश ने लेख में दलितों के प्रति समाज के व्यवहार को भी समाज से हटाकर भीड़ से जोड़ दिया है। राजनेताओं द्वारा भीड़ के राजनीतिक लाभ में प्रयोग करने को लेकर भी टिप्पणियां की गईं है। मीडिया व संवाद के साधन किस प्रकार भीड़ के विचारों को प्रभावित व परिवर्तित करते हैं इसको लेकर भी लिखा गया है। इस महत्वपूर्ण लेख में लोकतंत्र में लोगों की भूमिका को दरकिनाकर कर लोगों को भीड़ के रूप में अधिक प्रस्तुत किया गया है, जिसके विभिन्न स्वरूप व व्यहार हैं।

रवीश कुमार द्वारा 12 अक्टूबर को ''दिवाली के दिन ये गलती मत करना''[55] शीर्षक से डाली पोस्ट में रवीश कुमार वामपंथियों की शैली में दशहरा वाले दिन भेजे जाने शुभकामना संदेशों की विभिन्न तर्कों के साथ आलोचना करते हैं। असत्य पर सत्य की जीत का दिखावा क्यों। रवीश का तर्क है कि मौजमस्ती के लिए बने त्यौहारों क

लोगों ने नैतिकता के पर्व के रूप में बदल दिया है। दशहरा वाले दिन भेजे वाले शुभकामना संदेशों ने नैतिकता के नाम पर त्यौहार को बोरियत में बदल दिया है। दशहरा पर लोगों द्वारा भेजे जाने वाले संदेशों की आलोचना करते समय रवीश लोगों की भावनाओं का सम्मान करना भी भूल जाते हैं। रवीश कुमार द्वारा 13 अक्टूबर, 2016 को ''तो जनाब आज आपने स्कूल में क्या सीखा''[56] डाली गई पोस्ट में एक अंग्रेजी गाने के जरिए स्कूल की संस्कृति पर नजर डाली है।

शशि शेखर ने 29 अक्टूबर को ''दीप तले अंधेरे की बात''[57] शीर्षक से पोस्ट में समाज में बढ़ रही आपराधिक प्रवृत्तियों के लिए सामाजिक नैतिक मूल्यों के पतन को जिम्मेदार ठहराते हैं। वे अपील करते हैं कि लोगों को गांधी के रामराज्य की स्थापना के लिए दीवाली के पर्व पर संकल्प लेना चाहिए। साथ ही वे उस राजनीतिक वर्ग की भी आलोचना करते हैं जिसने राम और रामराज्य को राजनीति का अखाड़ा बना दिया है और जिन्होंने गांधी को तो माना लेकिन उनकी कल्पना रामराज्य को भूला दिया।

18 दिसंबर, 2016 को शशि शेखर ने ''अमन की कहानी कुछ कहती है''[58] शीर्षक से डाली पोस्ट में भारत में कमजोर होती परिवार संस्था को लेकर चिंता प्रकट की है। देश में तलाक के मामले बढ़ रहे हैं। परिवारों में दरकन से बच्चों में भटकाव आ रहा है। इसके लिए एक शोध के हवाले से लिखते हैं, जिन बच्चों के माता पिता में तलाक हो जाता है उनके बच्चों में अपराध की प्रवृत्ति बढ़ने की संभावना कई गुना रहती है। वे आलोचना करते हैं कि भारत को तलाक की इस पाश्चात्य बुराई से बचकर रहना होगा।

वहीं दूसरी ओर, रवीश कुमार द्वारा 19 दिसंबर, 2016 को ''जब मर्दों को पानी ढोना पड़ता है''[59] शीर्षक से लिखे गए लेख में उन्होंने तस्वीरों के साथ देश के कई हिस्सों

में जारी पानी की समस्या और इसके साथ जुड़े महिलाओं के संघर्ष को पुरुषों से जोड़कर दिखाया है। विकास के साथ पानी की बुनियादी सुविधाएं भी पूर्ण नहीं हो पाई हैं। तस्वीरों में पुरुषों को पानी भरते और ढोते हुए दिखाया गया है। समस्या के प्रस्तुतीकरण में रवीश ने स्वयं द्वारा खिंची गईं पांच तस्वीरों को पोस्ट किया गया है।

साथ ही, सड़कों के किनारे लगे हुए गंदगी के अंबरों को दिखाते हुए 'स्वच्छ भारत अभियान' पर सवाल उठाया गया है, इस में अर्थ प्रकट किया गया है कि देश में स्वच्छता को सामाजिक बनाना होगा सरकारी योजनाओं के जरिए बहुत अधिक हासिल नहीं होगा। व्यंग्यात्मक लहेज के साथ रवीश दो चित्र डाले हैं, जिसमें सभी धर्मों के प्रतीक चिन्हों को दिखाया है, उन चित्रों को सार्वजनिक जगहों पर लगाया गया है, जिनको लोग पेशाबघर की तरह इस्तेमाल करने लगते हैं। उन्होंने चित्र के जरिए बताने की कोशिश की आदमी अपने लाभ के लिए भगवान का भी इस्तेमाल कर लेता है।

26 दिसंबर को रवीश कुमार द्वारा ''गोरखपुर से अब श्रीलंका भी जाने लगे हैं लोग''[60] हैंडिग के साथ डाली गई पोस्ट में बताया गया है कि भोजपुरी बोलने वाले लोग देश के किसी भी हिस्से में मिल जाएंगे। भोजपुरी बोलने वाले लोग काम की तलाश में तमिलनाडू के रास्ते श्रीलंका भी चले जाते हैं। रवीश भोजपुरी की बात करते समय स्वयं से जोड़कर गौरवान्वित लगते हैं। रवीश कुमार ने 26 दिसंबर, 2016 को ''मरीना ओ मरीना''[61] शीर्षक से पोस्ट डाली है, जिसमें मरीना बीच पर लगे हुए बॉलीवुड व दक्षिण भारतीय फिल्मी कलाकारों के आदमकद कटआउटों को भारत में फिल्म और फिल्मी कलाकारों की दिवानगी से जोड़कर दिखाया है।

परंपराओं से संबंधित पोस्ट :

रवीश कुमार 14 जनवरी, 2016 को कस्बा नामक अपने ब्लॉग में सामाजिक मुद्दे पर ''हमारे देश में महापुरुषों को भूलने की प्रथा समाप्त हो गई''[62] शीर्षक से लिखे गए लेख में लिखते हैं कि सोशल मीडिया महापुरुषों की जन्मदिवस व पुण्यतिथियों वाले दिन संदेशों से भर जाता है। इस लेख के जरिए वे बताना चाह रहे है कि जिन महापुरुषों की स्मृतियों धूमिल हो गई थीं उन्हें सोशल मीडिया ने समाज के लोगों के बीच पुन: याद करवाया है। हालांकि रवीश इस पोस्ट में व्यंग्यात्मक लहजे में महापुरुषों को याद करने के तरीकों पर पत्रकारिता के नजरिये से चोट भी करते हैं। वे लिखते है कि क्या सोशल मीडिया उनको वास्तविक स्वरूप में याद कर रहा है या उसने अपने अनुसार महापुरुषों की छवियां तैयार कर ली हैं। हालांकि उनका मानना है कि महापुरुषों को याद करने का मतलब केवल उनके जन्मदिवस या पुण्यतिथि को याद करने से ही नहीं है।

शशि शेखर 28 अक्टूबर, 2016 को ''मुंहजोर नहीं पर मुंहचोर तो मत बनिए''[63] शीर्षक से डाली पोस्ट में बड़े शहरों में त्योहारों की परंपराओं को निभाने में आनी वाली समस्याओं को एक मार्मिक कहानी के माध्यम से रखा है। उन्होंने एक महिला के बारे में लिखा है जो उत्तर भारत के छोटे कस्बे से निकलकर नोएडा की एक बहुमंजिला सोसाइटी में रहती है। उसका पति बहुराष्ट्रीय कंपनी में कम्प्यूटर इंजीनियर है। भारत में नवरात्रों के अंतिम दिन यानी नवमी को कन्याओं और लांगूरों को जिमाने की परंपरा है। महानगरों में क्रंकीट के जंगलों के बीच कन्या और लांगूर मिलना बड़ा कठिन हो जाता है। उसकी सोसाइटी का गार्ड इसका इंतजाम करता है। लेकिन जब उसे पता चलता है कि उसके घर आईं कन्याएं और लांगूर, जिनके हाथ में कलावे बंधे हुए थे मुस्लिम थे। पहले वह थोड़ी सकपकाती है, लेकिन बाद में उनका पूजन करती है, भोजन-पकवान खिलाड़ी

और उन बच्चों के मुठ्ठियों को दक्षिणा से भरकर पैर छूती है और आशीर्वाद लेती है। शशि शेखर इन छोटी घटना को समाज के लिए मिसाल के तौर पर देखते हैं। साथ ही मीडिया व समाज के ठेकेदारों पर आरोप लगाते हैं कि वे मंदिर-मस्जिदों की चारदीवारी से बाहर निकलकर इनको क्यों नहीं देख पाते हैं। लेख कहानी शैली में लिखा गया है। लेख अंत में एक समाज के बीच सौहार्द संदेश देने का प्रयास करता है।

धार्मिक मामलों पर पोस्ट्स :

वहीं, 20 मार्च को शशि शेखर ''इस होलिका में आपको जो जलाना है''[64] शीर्षक से लिखते हैं कि होली के त्यौहार समाज के बीच मेल मिलाप बढ़ाने का त्योहार है सभी पुरानी कटुताओं को भूलाने के लिए रंग का त्योहार को मनाया जाता है। इसी बहाने वे विश्व बिरादरी में चल रही विभाजनकारी नीतियों की भी चर्चा की करते हैं। इस लेख में उन्होंने राष्ट्रपति बनने से पूर्व डोनाल्ड ट्रप की मुस्लिम वर्ग पर की गई टिप्पणी को लेकर आलोचना की है। इसी प्रकार जर्मनी की दक्षिणपंथी पार्टी 'अल्टरनेटिव फॉर जर्मनी' के नेता फ्रॉके पिट्री की उस बयान को लेकर आलोचना की है जिसमें उन्होंने कहा था कि जर्मनी घुस रहे शरणार्थियों की घुसते ही गोली मार देनी चाहिए। साथ ही वे अकबरूद्दीन औवेसी के उस बयान की आलोचना की करते जिसमें उन्होंने 'सिर काट दो लेकिन भारत माता की जय नहीं बोलेंगे' की बात कहते हैं।

इसी प्रकार सुधीर राघव ने 15 मार्च, 2016 को ''भारत माता की जय''[65] शीर्षक से डाली पोस्ट में राष्ट्रवाद की आलोचना की है। उनके अनुसार जिस देश में राष्ट्रवाद की भावना प्रबल होती जाती है वहां जाति-धर्म में झगड़े होने लगते हैं। राघव के अनुसार राष्ट्रवाद पश्चिम की देन है। हमारी संस्कृति राष्ट्रवाद नहीं वसुधैवकुटुम्बकम सीखाती है।

भारत माता की जय बोलना राष्ट्रवाद है न कि वसुधैवकुटुम्बकम। वे कहते हैं कि हम भारत की जय नहीं बोलना चाहते हैं बल्कि दूसरे वर्ग के लोगों से बुलवाना चाहते हैं। सुधीर राघव 'भारत की जय' को धार्मिक विषय बताते हैं।

सुधीर राघव ने 5 जुलाई, 2016 को ''वक्त''[66] शीर्षक के साथ डाली पोस्ट में धर्म को हिंसा और आतंकवाद के लिए जिम्मेदार बताया है। इस लेख में उन्होंने मुस्लिम, क्रिस्चियन, ज्यूस, हिन्दू सभी धर्मों के कट्टरवाद को हिंसा के लिए उत्तरायी बताया है। रवीश कुमार 18 मई, 2016 को अपने ब्लॉग पर ''संकटों की समझ कैसे बने''[67] शीर्षक के साथ लिखते हैं कि समाज में महंगाई के साथ जीवनशैली बदल रही है और उसके वहन करने की क्षमता उस अनुपात नहीं बढ़ रही है। सही मुद्दे और तथ्य जनता तक नहीं पहुंच पार रहे हैं। राजनीति, मीडिया असमर्थ है इसलिए धर्म जाति के भावुक मुद्दों पर बात की जा रही है।

2 फरवरी को सुधीर राघव ने ''नकारात्मक ऊर्जा जैसी कोई चीज नहीं होती''[68] शीर्षक से डाली पोस्ट में हिन्दू धर्म के आधुनिक आध्यात्मिक गुरुओं पर आरोप लगाया है कि उन्होंने चीन और मंगोलिया से आयी शब्दावलियों के आधार अपनी दुकान चलाने के लिए सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जाओं का भारतीय जनमानस में प्रचारित कर दिया है। अपनी बात के आधार के लिए वे दुनिया में विभिन्न खोजों के बारे में बताते हैं कि प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि उर्जा केवल उर्जा होती नाकारात्मक या सकारात्मक नहीं। लेख में उर्जा के संबंध में किए विभिन्न प्रयोगों पर संक्षिप्त रूप में लिखा भी गया है। सुधीर राघव ने इस लेख में संसार के मिथ्या होने के वैदिक सिध्दांत को क्वाटंम सिंद्धात के आधार पर सही बताने की कोशिश की है, साथ ही उन्होंने चीन

पर आरोप लगाया है कि वह भारत में समाज के बीच वैज्ञानिक मानसिकता को खत्म करना चाहता है।

सुधीर राघव 11 अप्रैल, 2016 को ''धर्म एक खोज''[69] शीर्षक से लिखे गए एक अन्य लेख में लिखते हैं कि धर्म की खोज ही इसलिए की गई ताकि लोग बुद्धिमान न बन सकें और धर्म के नाम पर अपना व्यापार कर सकें। इसलिए पहले राजा को ईश्वर के रूप में प्रचारित किया गया। धर्म के नाम पर ही समाज में विषमता पैदा की गई। सुधीर राघव वामपंथियों के सिध्दांत को धर्म से जोड़कर लिखते हैं कि मालिक और नौकर संबंध के कारण ही समाज ने कथित प्रगति है, जिसमें वह असंतुष्ट और बैचेन है, लेकिन यह सब धर्म ने पैदा किया।

रवीश कुमार द्वारा 5 सितंबर, 2016 को ''वैशाली में वेटिकन की झांकी''[70] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में पांच तस्वीरों के साथ बड़े-बड़े कैप्शन दिए गए हैं। इस पोस्ट में वैशाली में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति से मिश्रित ईसाई मिशनरियों की झांकी को चित्र सहित वर्णन किया है। यह पोस्ट वेटिकन सिटी द्वारा मदर टेरेसा को संत की उपाधि दिए जाने के संदर्भ में डाली गई है। इसमें समाचार चैनलों द्वारा धार्मिक कवरेजों की भी समीक्षा की गई। अपनी शैली के अनुसार रवीश ने संत की उपाधि को मदर की उपाधि से कम आंका है। उन्होंने महामण्डलेश्वर और शंकाराचार्य की उपाधियों के संबंध में अलोचनात्मक टिप्पणियां की हैं।

पर्यावरण व समाज' से संबंधित पोस्ट : सुधीर राघव ने 5 अप्रैल, 2016 को ''करोड़ा सिंह का परिवार''[71] शीर्षक से डाले लेख करोड़ा सिंह नाम के व्यक्ति के पक्षी प्रेम और प्रकृति प्रेम के बारे में लिखा है। वे पक्षियों के लिए पानी और भोजन की व्यवस्था करते हैं।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 12 अप्रैल, 2016 को ''पानी के संकट को नहीं इसके धंधे को समझे''[72] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने विकसित होते भारत में पानी की समस्या के बारे में लिखा है। वे लिखते हैं कि भारत विकसित होता ऐसा देश है जहां पानी के प्रबंधन पर कोई गंभीर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। पानी के बिना थर्मल एनर्जी पैदा नहीं हो सकती है। बिजली से जमीन के अंदर के पानी का दोहन किया जाता है। फैक्ट्रियों के जहरीले कचरे को पानी के साथ नदियों में बहा दिया जाता है। वे आरोप लगाते हैं कि भारत ही ऐसा देश है जहां विकास के लिए पर्यावरण को हासिये पर रख दिया है। वे भविष्य के बारे में सावधान करते हैं कि 2050 तक भारत सहित दुनिया में पानी का संकट पैदा होने वाला है। पर्यावरण संकट के लिए वे सरकारों व समाज दोनों को जिम्मेदार ठहराते हैं।

इसी प्रकार का लेख 23 अप्रैल, 2016 को शशि शेखर ने ''भगीरथ की प्यासी संतानें''[73] शीर्षक से लिखे लेख में पानी की समस्या और समाज के प्रकृति के प्रति व्यवहार को रखांकित किया है। लोगों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति की बुनियादी तत्वों को भी अतिक्रमण किया जा रहा है। मुंबई में बिल्डरों और सरकारों ने मिलकर समुद्र के किनारों का अतिक्रमण किया है। पहाड़ों का दोहन किया जा रहा है। नदियां मर रही है। गंगा और यमुना की भी हालत ठीक नहीं है। काली व हिंडन जैसी सैकड़ों नदियां दम तोड़ चुकी हैं। उत्तराखंड जो कि विभिन्न नदियों का उद्भभव स्थल, ग्लेशियर व झीलों का घर है, उसकी 40 हजार मानव बस्तियों में से करीब 20 हजार जलाभाव से पीड़ित है। गरमियों के दिनों में यह समस्या और विकराल हो जाती है। शशि शेखर लिखते हैं कि प्रकृति को जीवित रखने के लिए उसके शोषण को रोकना होगा, उसके साथ प्रेम सहचर्य बढ़ाना होगा। साथ ही वे तंज कसते हुए लिखते हैं कि यह केवल सरकार या

किसी राजवंश का काम नहीं है। प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को भगीरथ बनना होगा। शशि शेखर ने पर्यवारण की समस्याओं को तथ्यों के साथ उठाया है। पूरा लेख पाठक बांधे रहता है और पर्यावरण की समस्याओं के बारे में सोचने के लिए बाध्य करता है।

इसी प्रकार का लेख शशि शेखर ने 30 अप्रैल, 2016 को ''जल, जीवन और जिम्मेदारी''[74] शीर्षक के साथ पोस्ट किया है। उनका यह लेख कादम्बिनी में प्रकाशित हो चुका है। इस लेख में पानी और गरीबी को लेकर राजनेताओं की दृष्टि और प्रयासों की आलोचना की है। वे आरोप लगाते हैं कि लुटियन्स जोन में रहने वाले नेता जो बोतलबंद महंगा पानी पीते हैं वह उन लोगों की पीड़ा को क्या समझ सकते हैं, जिन्हें पीने का साफ पानी भी उपलब्ध नहीं है। देश के करीब 20 करोड़ से ज्यादा लोगों के लिए साफ पानी उपलब्ध नहीं है। शशि शेखर ने लेख में महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त क्षेत्र में भेजी की गई ट्रेन पर की गई राजनीति की कड़ी आलोचना की है। वे आलोचना करते हैं कि जलसंकट के लिए प्रकृति के साथ राजनेता और समाज दोनों ही जिम्मेदार हैं। समाज ने उचित प्रबंधन नहीं किया और सरकार ने ऐसी नीतियां व योजनाएं या तो बनायी नहीं या क्रियान्वयन नहीं किया, जिससे जल व प्रकृति का संरक्षण हो सके।

वहीं, 26 अप्रैल, 2016 को अंशुमान तिवारी ''पानी की खेती''[75] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में वर्चुअल वाटर इंपोर्ट और एक्पोर्ट के बारे में लिखते हैं कि चीन और मिश्र जैसे देश पैदावार के लिए अधिक जल की आवश्यकता वाली फसलों का आयात कर रहे हैं। इसे वर्चुअल वाटर इंपोर्ट कहा जाता है। इस मामले में भारत वर्चुअल वाटर एक्सपोर्ट देश है। वे जल संकट के मामले में भारत को नीतिगत बदलावों का सुझाव देते हैं। देश में जल के संकट को पर्यावरण व मानसून से ज्यादा नीतिगत स्तर पर देखते हैं। भारत

में वाटर मैपिंग और वाटर फुटप्रिंट की आवश्यकता के अनुसार फसल पैदा करने की सलाह देते हैं। अंशुमान तिवारी भारत को पानी के ग्लोबल ट्रेड में पिछड़ा हुआ बताते हैं। हालांकि इससे जुड़े हुए किसानों के हित और उनकी आर्थिक परिस्थितियों के बारे में नहीं लिखा गया है। पूरा लेख पानी पर केन्द्रित लिखा गया है, पानी से जुड़े हुए किसानों के हितों पर कोई चर्चा नहीं की गई है।

सुधीर राघव ने 27 जनवरी, 2016 को ''प्रदूषण के खर दूषण नाम''[76] से पोस्ट डाली है, इसमें उन्होंने प्रदूषण के लिए अमेरिका और यूरोप को दोषी माना है। उनके अनुसार अमेरिका और यूरोप के वैज्ञानिक-विचारकों ने ऐसी शब्दावलियां विकसित कर ली हैं, जिसके जरिए वे औद्योगिक क्रांति के दौरान दुनिया के पर्यावरण को बर्बाद करने के दोषों से बच जाना चाहते हैं। लेकिन पर्यावरण बचाने की सारी जिम्मेदारी अब विकासशील देशों पर डाल दी जाती हैं। सुधीर राघव ने दुनिया भर होने वाले कैंसरों के लिए अमेरिका जैसे देशों के परमाणु परीक्षणों को जिम्मेदार माना, जिसके कारण जल-थल-नभ में रेडियोएक्टिव पदार्थ घुल गए हैं। साथ ही वे आरोप लगाते हैं अमेरिका जैसे देश इन तथ्यों का कभी भी दुनिया के सामने नहीं आना देना चाहते हैं।

इसी प्रकार का एक अन्य लेख शशि शेखर ने 4 जून, 2016 को ''जल, जंगल और जिम्मेदारी''[77] शीर्षक से पोस्ट किया है। यह लेख पर्यावरण दिवस के अवसर पर लिखा गया है। इसमें प्रकृति और इंसान के बीच खत्म होते आत्मीय रिश्ते को एक कहानी के जरिए बताया है। कहानी में इंसान के स्वार्थ को प्रकृति के लिए सबसे घातक बताया है। वे लिखते हैं कि पहाड़ों का दोहन किया जा रहा है। शहरों के कचरे ने नदियों को नाले में बदल दिया है। वन सिकुड़ते जा रहे हैं। वन्य जीवों का शिकार किया जा रहा है। व्यक्ति द्वारा प्रकृति संरक्षण की परंपराओं का भुलाया जा रहा है। शशि शेखर ने

दुनिया भर में हो रहे पर्यावरण में बदलावों को आंकड़ो के जरिए बताया है। पिछले 25 सालों में औसत 0.5 डिग्री सेल्सियस की प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। हालांकि इस लेख में शशि शेखर ने सुधीर राघव की तरह किसी भी विकसित देश को सीधे आरोप नहीं लगाया है, केवल पर्यावरण के सिध्दांतों के आधार पर बात की है।

18 जून, 2016 को शशि शेखर ने ''पितृ दिवस पर प्रकृति चिंतन''[78] शीर्षक से डाली पोस्ट में वन्य जीवों के प्रति लोगों के व्यवहार की चर्चा की है। वे उन लोगों की आलोचना करते हैं जो नेशनल पार्कों में प्रकृति के सम्मान और ज्ञान के बजाए मौज मस्ती को जाते हैं और जानवरों को परेशान करते हैं। साथ ही वे नील गाय की समस्या से परेशान किसान और आवारा कुत्तों के परेशान शहरवासियों के बारे में भी चर्चा करते हैं। दूसरे मामले में वे टिप्पणी करते हैं कि इस मामले में द्वद हो सकता है कि इसमें मानवीय पहलू अधिक महत्वपूर्ण है, जिसमें जानवरों का संरक्षण किया जाए या किसानों के हित जो दिन रात मेहनत करके देशवासियों का पेट भरता है। लेखक ने तार्किक आधार पर वन्य संरक्षण करने की बात कही है।

29 सितंबर को शशि शेखर ने ''बदलते वक्त में दीवाली''[79] शीर्षक से डाली पोस्ट में समय के साथ त्योहारों में आ रहे पारंपरिक बदलावों के बारे में लिखा है। दिवाली का मुद्दा प्रमुखता के साथ उठाते हुए लिखते हैं कि राम ने आम लोगों, गरीबों, आदिवासियों को अपने से जोड़। स्त्री की रक्षा के लिए असुरों और आतताइयों से लड़े। जीवन में सदैव मर्यादा और सत्य का पालन किया है। लेकिन आज उसी त्योहार को प्रदूषण का जरिया बना दिया है। साथ ही वे उन लोगों की भी आलोचना करते हैं कि जो इस बारे में मीडिया में दिखाने से उन्हें हिन्दू विरोधी बता देते हैं। दिवाली से होने वाले प्रदूषण पर लिखने वाले पत्रकारों के खिलाफ सोशल मीडिया पर अभियान चलाया जाता है, उनके

लिए अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि वे क्रिसमस और नववर्ष पर छोड़े जाने वाले पटाखों के बारे में कोई जिक्र नहीं करते हैं, यह भी सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 1 नवंबर, 2016 को ‘‘दिल्ली से एलओसी तक हवा में घुलता जहर’’[80] पोस्ट में दिवाली के बाद दिल्ली पर छाए प्रदूषण के मुद्दे को उठाया है। उन्होंने लेख को बच्चों की सेहत से जोड़कर प्रस्तुत किया है। साथ ही उन्होंने सीमा पर जारी गोलाबारी के कारण कश्मीर में प्रवासी पक्षियों में आई कमी को भी रेखांकित किया है। कश्मीर में हिंसा के कारण बंद स्कूलों की ओर भी ध्यान खींचा है। पुण्य प्रसून वाजपेयी की शैली एक ही लेख में कई मुद्दे एक साथ उठाने की शैली है।

इसी प्रकार का एक अन्य लेख पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 7 नवंबर, 2017 को ‘‘चकाचौंध की व्यवस्था से अब तो सचेत हो जाओ’’[81] शीर्षक से डाली पोस्ट में प्रदूषित हवा से घुटती दिल्ली व पर्यावरण प्रदूषण के लिए सरकार की नीतियों का दोषी ठहराया है। देश की राजधानी दिल्ली में कचरा प्रबंधन की समस्या की ओर भी ध्यान खींचा है। बच्चों की गुमशुदगी, किसान, जमीन, पराली की समस्या आदि पर भी पुण्य प्रसून वाजपेयी ने सरकारी नीतियों को कठघरे में खड़ा किया है। ट्रांसपोर्ट की बढ़ती समस्या और डीजल के बढ़ते वाहनों की ओर ध्यान खींचा है। हालांकि पुण्य पसून वाजपेयी ने समस्यों को रेखांकित किया है, लेकिन कोई समाधान प्रस्तुत नहीं किया है।

दूसरी ओर शशि शेखर ने 3 दिसंबर, 2016 को ‘‘ये आफत आसमान से नहीं उतरी’’[82] शीर्षक से डाली पोस्ट में दिवाली पर पटाखों के कारण प्रदूषित हुई दिल्ली के लिए यहीं के लोगों को जिम्मेदार ठहराया है। साथ ही उन्होंने राजनीतिक वर्ग को कठघरे

में खड़ा किया है कि वे समाधान निकालने की बजाय एक दूसरे पर आरोप लगाकर जिम्मेदारियों से भागना चाहते हैं।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 1 नवंबर, 2016 को ''पानी को लेकर होगा अगला युद्ध''[83] शीर्षक से डाली पोस्ट में दुनिया में पानी की समस्या की ओर इशारा किया है। नील नदी के पानी को लेकर मिश्र, सूडान, इथोपिया, जॉर्डन नदी के पानी को लेकर इश्राइल, जॉर्डन, सीरिया, लेबनान, यूराल सी नदी के पानी को लेकर कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उजबेकिस्तान और सिंध नदी के पानी को लेकर भारत-पाकिस्तान ब्रह्मपुत्र नदी के पानी को लेकर चीन और भारत आदि देशों में टकराव होता रहता है। पुण्य प्रसून वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान के हवाले से लिखा है कि भविष्य तेल के लिए नहीं पानी पर अधिकार के लिए बंदूके खरीदी जाएंगी। लेख में उन्होंने केवल समस्या के बारे में लिखा है, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक वर्ग या समाज से कोई अपील नहीं की है। लेख में पानी को लेकर हुई संधियों और हिंसा के भी आंकड़े दिए हैं।

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
भारत	54	0.1874	26	1.2726	44	0.2131	42	0.3891	10	0.2327
देश	27	0.0937	11	0.5384	64	0.3100	66	0.6115	06	0.1396
दुनिया/संसार	24	0.0833	09	0.4405	32	0.1550	26	0.2409	12	0.2792
समाज/सामाजिक	23	0.0798	04	0.1958	28	0.1357	07	0.0649	05	0.1163
दलित	06	0.0208	0.00	0.00	04	0.0194	09	0.0834	01	0.0233
धर्म/धार्मिक	06	0.0208	26	1.2727	16	0.0755	01	0.0093	13	0.3025

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
मंदिर / तीर्थ	0.00	0.00	10	0.4894	10	0.533	0.00	0.00	04	0.0931
पानी/वाटर	37	0.1284	46	2.2516	32	0.1550	111	1.0283	06	0.1396
हवा	1	0.0035	0.00	0.00	12	0.0581	15	0.1390	0.00	0.00
प्रदूषण/जहर	03	0.014	01	0.0489	09	.0429	16	0.1482	02	0.0465

संदर्भ सूची :

1. क्लाइन व बरस्टीन. (2005). *ब्लॉग: हाउ दा न्यूएस्ट मीडिया रिवोल्यूशन इज चैंजिंग पॉलिटिक्स, बिजनेस एंड कल्चर.* केरौसेल प्रेस.
2. रेटबर्ग, जिल बॉलकर (2008). *ब्लॉगिंग: डिजिटल मीडिया एंड सोसाइटी.* पॉलिटी पब्लिकेशन.
3. जुएंगा, होमेरो गिल डे, व जुएंगा, सेथ सी (2011).
4. ब्लॉगिंग एज ए जर्नलिस्टिक प्रैक्टिस: ए मॉडल लिंकिंग, परसेप्शन, मोटिवेशन एंड विहेवियर. सेज पब्लिकेशऩ.
5. पैलिसियस, मार्कस. (2003). *ऑनलाइन जर्नलिज्म बाय जर्नलिस्ट.*
6. शेखर, शशि. (2016, जनवरी, 30). और हमारे वक्त की औरतें. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-indian-astrology-saturn-justice-democracy-women-population-514679.html
7. तिवारी, अंशुमान. (2016, अप्रैल, 18). यह किसका धर्म. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/
8. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 4). सिंधु जो आपको गाली दे रहे हैं. Retrieved from http://naisadak.org/those-who-abuse-sindhu/
9. शेखर, शशि. (2016, मार्च, 20). दर्द का दरिया पार करती औरतें. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-women-crosses-river-of-pain-519633.html
10. शेखर, शशि. (2016, अगस्त, 21). चांदी की ठसक या सोने की कसक. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-rusticity-of-silver-or-gold-weary-552449.html

11. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 29). इरोम शर्मिला का संघर्ष. Retrieved from http://naisadak.org/irom-sharmila-ka-sangharsh/
12. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 30). स्कर्ट दोष के शिकार भारतीय मर्दों से अपील. Retrieved from http://naisadak.org/men-can-also-wear-skirt-and-feel-safe/
13. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 29). हिन्दी की लड़कियां - स्वर्ण कांता. Retrieved from http://naisadak.org/hindi-ki-larhkiyan/
14. शेखर, शशि. (2016, दिसंबर, 5). क्या आप डोरिस फ्रांसिस को जानते हैं. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-do-you-know-doris-francis-619780.html
15. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 10). कोलकाता की बिल्ली. Retrieved from http://naisadak.org/कोलकाता-की-बिल्ली/
16. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मार्च, 31). कोलकाता एक ऐसा शहर. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/03/blog-post_31.html
17. शेखर, शशि. (2016, जनवरी, 23). गणतंत्र को मजबूत बनाते नौजवान. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-youngster-are-strengthening-republic-513755.html
18. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 30). बर्तन की संप्रभुता के आगे कविता. Retrieved from http://naisadak.org/bartan-ki-samprabhuta-ke-aage-kavita/
19. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 18). गुलाम क्यों बने. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_18.html
20. शेखर, शशि. (2016, अप्रैल, 30). क्योंकि आज मई दिवस है. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-because-today-is-may-day-530745.html

21. कुमार, रवीश. (2016, मई, 8). ये उस लड़की बारे में है. Retrieved from http://naisadak.org/ये-उस-लड़की-के-बारे-में-है-ज/

22. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, फरवरी, 5). अब देश का कंधा नहीं, सत्ता का धंधा देखें. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/02/blog-post.html

23. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 20). गाय नहीं है दलित जो चाहे हांक ले जाए. Retrieved from http://naisadak.org/dalits-are-not-cow/

24. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 10). बहराईच में बीस रूपये के लिए बच्चे की मौत हो गई. Retrieved from http://naisadak.org/a-child-died-in-bahraich-for-twenty-rupees/

25. शेखर, शशि. (2016, सितंबर, 24). असली भारत के हक में. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-favor-of-real-india-565906.html

26. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 24). चेन्नई की गंदई. Retrieved from http://naisadak.org/why-chennai-is-so-dirty/

27. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 24). वाशिंगटन की छतों पर एंटेना क्या कर रहा है. Retrieved from http://naisadak.org/washington-ki-chaton-par-antenna/

28. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 27). अमेरिका में महाबली गाड़ियां. Retrieved from http://naisadak.org/big-cars-of-usa/

29. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 28). थान और कटपीस में अंतर. Retrieved from http://naisadak.org/thaan-aur-cutpiece-mein-antar/

30. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 27). यामाहा आरएक्स 100 भी कोई सपना है. Retrieved from http://naisadak.org/yamaha-rx100/

31. शेखर, शशि. (2016, अक्टूबर, 28). प्रथम वचन, जो फिट है, वही हिट है. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-which-is-fit-these-are-hit-584862.html
32. राघव, सुधीर. (2016, फरवरी, 7). वसंत की गुदगुदी. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/02/blog-post.html
33. शेखर, शशि. (2016, फरवरी, 13). तकनीक के दौर में प्रेम. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-love-in-the-age-of-technology-516806.html
34. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 21). गेस्ट पोस्ट - और तब आएगी क्रूरता. Retrieved from http://naisadak.org/aur-tab-aayegi-krurta/
35. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 24). अमरीका में गरीबी है या गरीबी जैसी है. Retrieved from http://naisadak.org/america-mein-garibi-hai-ya-garibi-jaisi-hai/
36. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 24). पुराने पोस्टर. Retrieved from http://naisadak.org/purane-poster/
37. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 3). मुर्दे लौट कर आए हैं. Retrieved from http://naisadak.org/murde-laut-aaye-hain-ravish/
38. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 1). उन आखिरी पलों में जब भारत हार रहा था. Retrieved from http://naisadak.org/un-aakhiri-palon-mein-jab-bharat-haar-raha-tha/
39. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 11). नानी का जाना.. बहुत कुछ टूट जाना. Retrieved from http://naisadak.org/ नानी-का-जाना-बहुत-कुछ-टुट-ज/
40. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 1). ये जो जिंदगी है. Retrieved from http://naisadak.org/ye-jo-hai-zindagi/

41. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 1). लकड़ी की काठी संगमरमर का घोड़ा. Retrieved from http://naisadak.org/lakadi-ki-kathi-sangmarmar-ka-ghoda/

42. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 27). ट्रक टैम्पो पुराण. Retrieved from http://naisadak.org/ट्रक-टेम्पो-पुराण/

43. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 27). गाजियाबाद का रीडर कैफे. Retrieved from http://naisadak.org/readers-cafe-in-indirapuram/

44. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 30). बिकनी का नाम परमाणु परीक्षण स्थल के नाम पर. Retrieved from http://naisadak.org/bikini-was-named-after-nuclear-site/

45. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 7). भोजपुरी भारत के इतिहास का पसीना है. Retrieved from http://naisadak.org/never-dare-to-tempre-with-bhojpuri/

46. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 10). ऐसा भी होता है. Retrieved from http://naisadak.org/ऐसा-भी-होता-है/

47. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 11). क्या यही आर्ट है. Retrieved from http://naisadak.org/क्या-यही-आर्ट-है/

48. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 18). जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी. Retrieved from http://naisadak.org/uri-martyred/

49. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 20). राजदूत की सवारी. Retrieved from http://naisadak.org/ambassadors-auto/

50. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 24). पटना के दो पब्लिक स्पेस की कहानी. Retrieved from http://naisadak.org/gandhi-maidan-where-patna-runs/

51. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 24). पटना के लड़के, लड़कियां और पिंक. Retrieved from naisadak.org/pink-in-the-eyes-of-a-policeman/

52. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 2). ये क्या जगह है दोस्तों. Retrieved from http://naisadak.org/slefless-selfie-and-brand-they-take-away-from-you/
53. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 3). इस दिवाली चीन का माल जरूर खरीदें. Retrieved from http://naisadak.org/please-buy-chinese-product-on-diwali/
54. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 10). अनेक भीड़ बनाम एक भीड़. Retrieved from http://naisadak.org/6606-2/
55. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 12). दिवाली के दिन ये गलती मत करना. Retrieved from http://naisadak.org/never-read-and-delete-messages-on-dussehra/
56. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 13). तो जनाब आज आपने स्कूल में क्या सीखा. Retrieved from http://naisadak.org/what-did-you-learn-in-school-today/
57. शेखर, शशि. (2016, अक्टूबर, 29). दीप तले अंधेरे की बात. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-need-to-fight-from-darkness-586124.html
58. शेखर, शशि. (2016, दिसंबर, 18). अमन की कहानी कुछ कहती है. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-story-of-aman-tell-something-634080.html
59. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 19). जब मर्दों को पानी ढोना पड़ता है. Retrieved from http://naisadak.org/jab-mardo-ko-paani-dhona-parhtaa-hai/
60. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 26). गोरखपुर से अब श्रीलंका भी जाने लगे हैं लोग. Retrieved from http://naisadak.org/gorakhpur-to-sri-lanka-migration-is-in-the-gene-of-poor/
61. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 26). मरीना ओ मरीना. Retrieved from http://naisadak.org/मरीना-ओ-मरीना/

62. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 14). हमारे देश में महापुरुषों को भूलने की प्रथा समाप्त हो गई. Retrieved from http://naisadak.org/hamare-desh-mein-mahapurashon-ko-bhulne-ki-pratha-samapt-ho-gayi-hai/

63. शेखर, शशि. (2016, अक्टूबर, 28). मुंहजोर नहीं पर मुंहचोर तो मत बनिए. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-do-not-be-a-bashful-580997.html

64. शेखर, शशि. (2016, मार्च, 20). इस होलिका में आपको जो जलाना है. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-women-crosses-river-of-pain-519633.html

65. राघव, सुधीर. (2016, मार्च, 15). भारत माता की जय. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/03/blog-post.html

66. राघव, सुधीर. (2016, जुलाई, 5). वक्त. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/07/blog-post.html

67. कुमार, रवीश. (2016, मई, 18). संकटों की समझ कैसे बने. Retrieved from http://naisadak.org/sankaton-ki-samajh-kaise-banein/

68. राघव, सुधीर. (2016, फरवरी, 2). नकारात्मक ऊर्जा जैसी कोई चीज नहीं होती. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/02/blog-post.html

69. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 11). धर्म एक खोज. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post.html

70. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 5). वैशाली में वेटिकन की झांकी. Retrieved from http://naisadak.org/वैशाली-में-वेटिकन-की-झां/

71. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 5). करोड़ा सिंह का परिवार. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post.html

72. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, अप्रैल, 12). पानी के संकट को नहीं इसके धंधे को समझे. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/04/blog-post_12.html
73. शेखर, शशि. (2016, अप्रै, 23). भगीरथ की प्यासी संतानें. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-shashi-shekhar-allahabad-society-water-528694.html
74. शेखर, शशि. (2016, अप्रैल, 30). जल, जीवन और जिम्मेदारी. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-water-crisis-and-behavior-of-our-parliamentarian-529878.html
75. तिवारी, अंशुमान. (2016, अप्रैल, 26). पानी की खेती. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/
76. राघव, सुधीर. (2016, जनवरी, 27). प्रदूषण के खर दूषण. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html
77. शेखर, शशि. (2016, जून, 4). जल, जंगल और जिम्मेदारी. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-water-forest-and-responsibility-537539.html
78. शेखर, शशि. (2016, जून, 18). पितृ दिवस पर प्रकृति चिंतन. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-nature-concerns-on-fathers-day-540115.html
79. शेखर, शशि. (2016, सितंबर, 29). बदलते वक्त में दीवाली. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-changed-mood-of-diwali-celebration-568476.html
80. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, नवंबर, 1). दिल्ली से एलओसी तक हवा में घुलता जहर. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_23.html

81. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, नवंबर, 7). चकाचौंध की व्यवस्था से अब तो सचेत हो जाओ. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_23.html

82. शेखर, शशि. (2016, दिसंबर, 3). ये आफत आसमान से नहीं उतरी. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-we-are-responsible-for-pollution-612989.html

83. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, नवंबर, 1). पानी को लेकर होगा अगला युद्ध. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_23.html

आर्थिक विषयों पर ब्लॉग्स

एक समय था जब राजनीतिक व्यवस्था सबको नियंत्रित करती थी। लेकिन समय के साथ इसमें बदलाव आया है, अब राजनीति से ज्यादा आर्थिक गतिविधियां महत्व रखती हैं। देश और विश्व में जारी आर्थिक गतिविधियां ही राजनीति की दिशाधारा तय करने लगी हैं। यह सिध्द हो चुका है कि दुनिया की विकसित, विकासशील और अल्पविकसित देश विश्व के अन्य देशों के साथ आर्थिक संबंधों के बिना विकास की गति को रफ्तार नहीं दे सकते हैं। इसे अमेरिका के उदाहरण से समझा जा सकता है। यह देश राजनीतिक रूप से इसलिए मजबूत है क्योंकि दुनियाभर की अर्थव्यवस्थाओं पर अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रण रखता है।[1] वर्तमान में इसी प्रकार का प्रयास चीन, भारत, रूस, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका जैसी तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं द्वारा भी किया जा रहा है।

पिछले करीब ढाई दशकों से भारत में भी तेजी से आर्थिक गतिविधियां हो रही हैं। वर्ष 2016 भी आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र में रहा है। भारत में कर आरोपण की जीएटी व्यवस्था लागू की गई। भारत सरकार द्वारा 8 नवंबर, 2016 की आधी रात को लिया गया विमुद्रीकरण के फैसले ने सभी चौका दिया। 500 व 1000 रूपये के नोटों का चलन से वापिस ले लिया गया। देश के एटीएम व बैकों के सामने लंबी-लंबी कतारें लगी रहीं। जिसकी सामाजिक व राजनीतिक प्रतिक्रिया देखने को मिली। मीडिया का एक वर्ग जहां जीएसटी और विमुद्रीकरण के समर्थन में रहा वहीं एक वर्ग इसके विरोध में भी रहा। विमुद्रीकरण के योजना के पीछे सरकार का तर्क था कि इससे देश में काले धन के साथ जाली नोट भी चलन से बाहर हो जाएंगे। इसके अलावा भ्रष्टाचार के पुराने मामले भी

चर्चा में आते रहे। पनामा पेपर्स लीक मामले ने दुनिया भर के राजनीतिक व व्यावसायिक लोगों को प्रभावित किया।

देश में आर्थिक पत्रकारिता के प्रारंभ होने के इतिहास पर नजर डाले तो यह पत्रकारिता के इतिहास के साथ ही प्रारंभ हो जाता है। जेम्स अगस्ट्स हिक्की के अखबार बंगाल गजट में बंदरगाहों पर मालवाहक जहाजों की गतिविधियों की खबरें छपती थीं, जिससे व्यापारियों के माल आने की सूचना प्राप्त हो जाती थी। तकनीक के विकास के साथ आर्थिक पत्रकारिता के स्वरूप में बदलाव आया है। प्रारंभ में आर्थिक पत्रकारिता मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा का ही विषय माना जाता था, लेकिन समय के साथ क्षेत्रीय भाषाओं में भी आर्थिक पत्रकारिता होने लगी। मुख्य धारा के अखबारों में आर्थिक गतिविधियों से संबंधित अलग से पृष्ठ छपने लगे।[2]

मीडिया जगत की शीर्ष कंपनियों ने मध्यम वर्ग के हिन्दी पाठकों के लिए न्यूज चैनल व आर्थिक पत्रकारिता को पूर्णतय समर्पित हिन्दी अखबार प्रारंभ किए। न्यू मीडिया के चलन के साथ आर्थिक गतिविधियों के समर्पित विभिन्न ब्लॉग भी इंटरनेट की दुनिया में सामने आए। इसी प्रकार देश के प्रतिष्ठित हिन्दी पत्रकारों के द्वारा अपने ब्लॉग्स पर देश में चल रही आर्थिक गतिविधियों पर समसामयिक लेख प्रकाशित होते रहे। इसमें मुख्य रूप से अंशुमान तिवारी, सुधीर राघव, रवीश कुमार, शशि शेखर व पुण्य प्रसून वाजपेयी शामिल हैं। वर्ष 2016 में जनवरी से लेकर दिसंबर तक अंशुमान तिवारी ने 43, पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 7, शशि शेखर अर्थव्यवस्था के संबंध बहुत कम लिखते हैं, एक वर्ष में उन्होंने केवल एक लेख ही अपने ब्लॉग पर डाला है, सुधीर राघव ने 8 व रवीश कुमार ने 27 पोस्ट्स क्रमश अपने-अपने ब्लॉग पर पोस्ट की हैं।

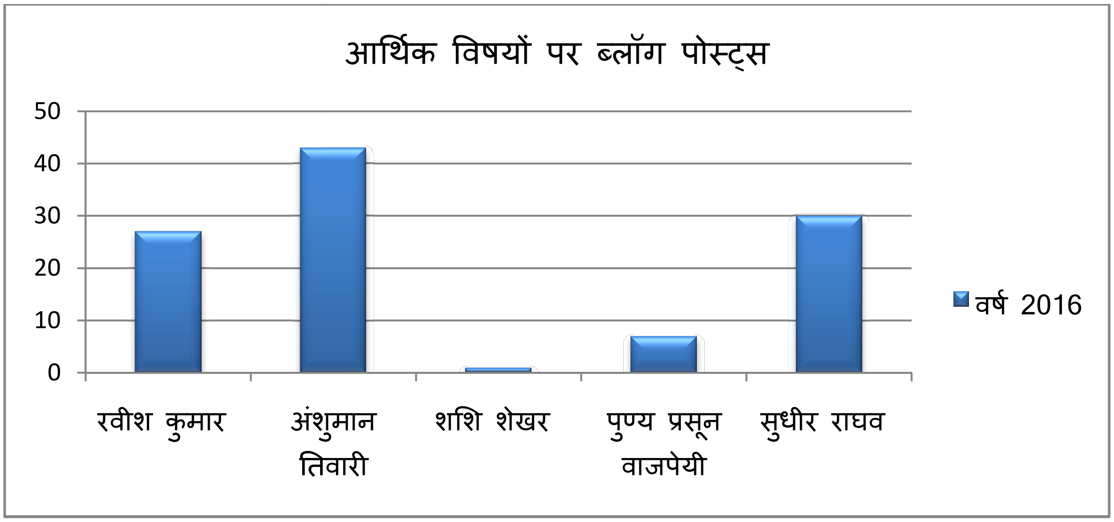

X अक्ष - पत्रकार ब्लॉगर्स के नाम

Y अक्ष - पत्रकार ब्लॉगर्स द्वारा वर्ष 2016 में लिखी गई ब्लॉग पोस्ट्स की संख्या

रवीश कुमार, अंशुमान तिवारी, शशि शेखर, पुण्य प्रसून वाजपेयी व सुधीर राघव द्वारा अपने-अपने ब्लॉग्स पर लिखे गए विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों में से आर्थिक विषयों से संबंधित लेखों का प्रतिशत चार्ट

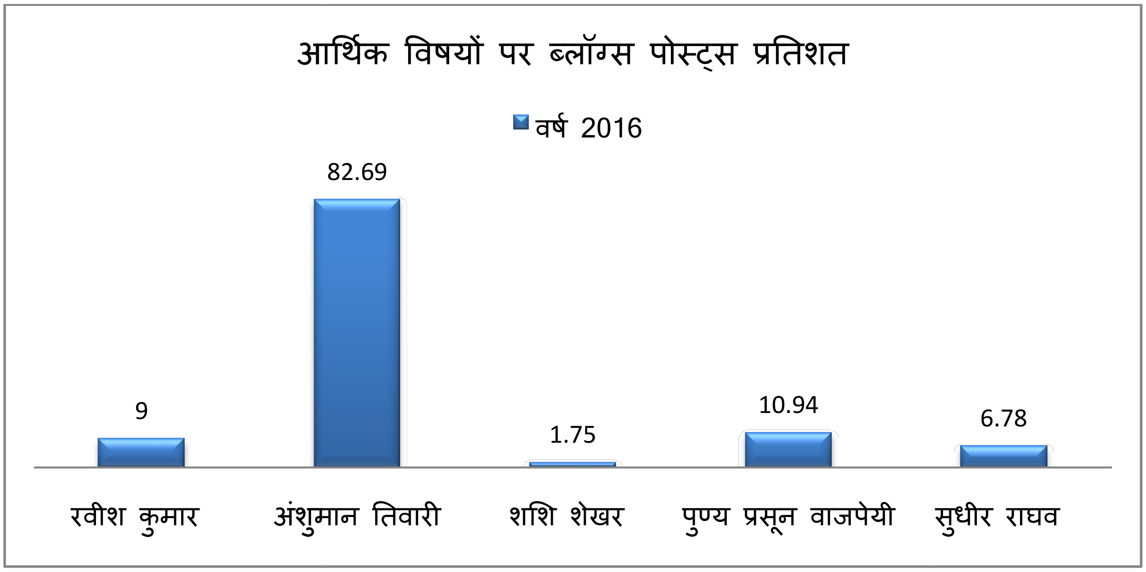

भारतीय अर्थव्यवस्था पर लेख

अंशुमान तिवारी 25 जनवरी, 2016 के अपने लेख ''मंदी की बैलेस सीट''[3] में भारत की नई आर्थिक संभावनाओं को स्टार्ट अप में देखते है, वे उनकी समीक्षा करते हैं और साथ ही सरकार की योजनाओं की कसौटी को परखते हैं। वे लिखते हैं कि इसके जरिए मेक इन इंडिया के सपने के पूरा किया जा सकता है। 28 मार्च को अंशुमान तिवारी कॉल ड्राप की समस्या को उठाते हुए 'न सर्विस मिली न हर्जाना' शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने कॉल ड्राप और डाटा स्पीड के मुद्दे को डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया योजनाओं में बाधा बताया है। इसके विपरीत रवीश कुमार और पुण्य प्रसून वाजपेयी इन योजनाओं की आलोचना राजनीतिक नजरिये के साथ करते हैं। सुधीर राघव के लेखों में मोदी सरकार की सभी आर्थिक योजनाओं की आलोचना बिना तथ्यों के व्यंग्यात्मक शब्दों के साथ की गई है।

फरवरी, 2016 को अंशुमान तिवारी ''मंदी स्वच्छता मिशन''[4] शीर्षक के साथ भारत सरकार के बजट पूर्व लेख लिखा है। इसमें उन्होंने नमामि गंगे, स्वच्छता मिशन योजनाओं की समीझा की है। वे नमामि गंगे और स्वच्छता मिशन योजनाओं को जागरूकता योजना से निकालकर आर्थिक योजनाओं के रूप में क्रियान्वयन करने पर बल देते हैं, अपनी बात के समर्थन में विस्तृत तथ्य व विश्लेषण प्रस्तुत किए हैं।

रवीश कुमार 3 मार्च 2016 को अपने ब्लॉग पर ''2022 का किसान बनाम 2014 का किसान''[5] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से सवाल करते हैं किस प्रकार से देश के किसानों की आय दोगुनी होगी? रवीश मोदी की योजना पर तंज कसते हुए लिखते हैं कि देश का किसान भी 2022 में मालामाल हो जाएगा। आगे रवीश

व्यंगात्मक लहजे में कहते हैं कि किसान अभी से अपना हिसाब लगाना शुरू कर दे कि उसे अपनी बड़ी आय कैसे और कहां खर्च करनी है। हालांकि वह अपने लेख में वर्तमान स्थिति और पिछली सरकारों में किसानों की आर्थिक हालातों का तुलनात्मक अध्ययन नहीं देते है। आगे वह अपनी बात को सिद्ध करने के लिए कृषि अर्थशास्त्री देवेंद्र शर्मा का उदाहरण देते हैं। साथ ही रवीश किसानों को एक कैलकुलेटर रखने की भी सलाह देते हैं कि उसे अभी से अपनी बड़ी दोगुनी रकम को कितना और किस मद में खर्च करना है।

अंशुमान तिवारी ने 6 मार्च, 2016 को ''ग्रोथ के सूरमा''[6] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने रवीश की बात को ही आगे बढ़ाया है कि मोदी सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुधारने में नाकाम रही है। सरकार के बजट प्रावधानों में भी इसकी कोई विशेष चिंता नहीं दिखायी देती है। किसान और ग्रामीण लोगों की हालत खस्ता है। लेख में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संबंध में पिछले बजटों का भी तुलनात्मक अध्ययन आंकड़ो के साथ पेश किया है। हालांकि रवीश कुमार के लेख में तथ्यों का अभाव दिखायी देता है। इससे पूर्व 8 फरवरी, 2016 के लेख में भी अंशुमान तिवारी ''सबसे बड़े मिशन का इंतजार''[7] शीर्षक के साथ लिखे लेख में खेती-किसानी के संबंध में बनी सरकारी योजनाओं की विफलता की बात करते हैं।

इसी प्रकार, 21 नवंबर, 2016 को सुधीर राघव ने भी किसानों और गरीबों की चिंता करते हुए एक लेख पोस्ट किया है, जिसका शीर्षक ''गरीब और किसान ही निशाने पर''[8] रखा है। उन्होंने इस पोस्ट में किसानों की पीड़ा को नोटबंदी से भी जोड़ा है।

17 फरवरी, 2016 को अंशुमान तिवारी ''इक्यानवे के फेर में रेलवे''[9] शीर्षक से डाली पोस्ट में लिखते हैं कि रेलवे के कायाकल्प के लिए 1991 के आर्थिक सुधारों के

लिए उठाए गए राजनीतिक इच्छाशक्ति युक्त कदमों की आवश्यकता है। लेख बजट और रेलवे से संबंधित आकंड़ों से भरा हुआ है। वहीं, 26 फरवरी को सुधीर राघव ने ''प्रभूजी मेरी रेल से खेल न करो''[10] शीर्षक के साथ ब्लॉग पर पोस्ट डाली है। इसमें रेलवे के संबंध में सरकार की आलोचना बिना आंकड़ों के व्यंग्यात्मक शैली में की है, उन्होंने आर्किमिडिज, पाइथागोरस, न्यूटन और आइंस्टाइन के सूत्रों की व्याख्या व्यंग्य के साथ रेलवे से जोड़कर की है। लेख न तो रेलवे को कोई सुझाव देता है और न ही उसकी स्वस्थ्य समीक्षा करता है। शशि शेखर, रवीश कुमार और पुण्य प्रसून वाजपेयी ने रेल बजट से संबंधित कोई भी लेख पोस्ट नहीं किया है।

अंशुमान तिवारी ने 24 फरवरी, 2016 को ''तीस बनाम सत्तर''[11] शीर्षक से लेख लिखा है, एम्बीट रिसर्च संस्था के आकंड़ो का विश्लेषण करते हुए लिखा गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था तीन रफ्तार वाली अर्थव्यवस्था बन गई है। लेख में विभिन्न सेक्टरों के विकास के आकंड़े दिए हुए हैं, जिसके आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था को तीन रफ्तार वाली अर्थव्यवस्था कहा गया है। पोस्ट सूचनाओं और सिद्धांतों से भरी होने के बावजूद पठनीय और रूचिकर है। साथ ही इसमें सरकार की उन योजनाओं भी आलोचना की जो सब्सिडी के आधार पर चलती हैं। वहीं, 21 सितबंर, 2016 को ''बजट बंद होने से दौड़ेगी''[12] रेल शीर्षक से लिखे लेख में अंशुमान तिवारी संभावना जताते हैं कि रेल बजट के आम बजट में विलय होने रेलवे के पुनर्गठन के लिए स्वर्णिम अवसर साबित हो सकता है।

अंशुमान तिवारी ने 4 अप्रैल, 2016 को ''व्यापार कूटनीति का शून्य''[13] शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें उन्होंने लिखा है कि विदेश नीति के यदि सैद्धांतिक पक्ष का निकाल दिया जाए व्यापारिक सफलताओं या निर्यात से विदेश नीति की सफलताओं का

आकलन किया जाता है। इस लेख में अंशुमान ने भारत सरकार की नीतियों की आलोचना की है, उन्होंने अपनी बात के समर्थन में व्यापार आंकड़ो के साथ ही, सरकार द्वारा जारी की जाने वाली आर्थिक समीक्षा का प्रयोग किया है।

वहीं, पुण्य प्रसून वाजपेयी 29 अप्रैल, 2016 को "तो ये देश का इकोनॉमिक मॉडल है"[14] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में विजय माल्या, बेरोजगारी, आरक्षण और भारत सरकार के रूख का विश्लेषण करते हैं। वाजपेयी लिखते हैं कि देश में बेरोजगारी बड़ी समस्या है। इस समय देश में करीब 2 करोड़ से ज्यादा लोग रजिस्टर्ड शिक्षित बेरोजगार हैं। वे युनाइटेड नेशन की रिपोर्ट के हवाले से कहते हैं कि 35 वर्ष के बाद में बेरोजगारी सबसे बड़ी समस्या होने वाली है। साथ ही, आरक्षण और योजनारहित विकास आग में घी डालने का काम कर रहा है।

प्रसून गुजरात के पाटीदार आंदोलन और हरियाणा के जाट आंदोलन के उदाहरणों के जरिए समझाने की कोशिश करते हैं कि किस प्रकार विकास ने पाटीदार और जाट समाज की कृषि योग्य भूमि को हड़प लिया है। भूमिहीन हुए इस समाज के लोग अब आरक्षण के जरिए अपनी समस्याओं के हल तलाशने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे राजनीतिक कारणों से सरकार ने स्वीकार भी कर लिया, लेकिन इससे समस्या का हल नहीं होता बल्कि अंदरूनी तौर पर समस्या और विकराल होती जाती है।

इसी लेख में पुण्य प्रसून वाजपेयी विजय माल्या के मामले की पड़ताल भी रोजगारी-बेरोजगारी के दृष्टिकोण के साथ करते हैं, वे तर्क देते हैं कि विजय माल्या ने भारतीय बैंकों से कर्ज लेकर अपनी कंपनियां स्थापित कीं और चलायीं। इन कंपनियों के जरिए 1 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिला। सरकार ने विजय माल्या के कंपनियों

में काम कर रहे 1 लाख से अधिक लोगों को अपनी जीडीपी के आंकड़ों में जोड़ लिया। विजय माल्या की कंपनियां जब असफल हुईं और सरकारी कर्ज नहीं चुका पाईं तो वह देश छोड़कर भाग गया और उसकी कंपनियों में काम करने वाले 1 लाख से अधिक बेरोजगार हो गए।

साथ ही, पुण्य प्रसून वाजपेयी आर्थिक विश्लेषण करने वालों के साथ सरकार पर भी आरोप लगाते हैं कि केवल एक ही दृष्टिकोण के साथ विश्लेषण क्यों प्रस्तुत किया जाता है। यदि विजय माल्या भारत लौट भी आते हैं तो क्या उनके साथ सुब्रत राय जैसा व्यवहार नहीं किया जाएगा। क्या इससे पैसा वापस लौट आएगा या रोजगारों का सृजन हो जाएगा। प्रसून अपने सवालों के जरिए सरकार और समाज के सामने कुछ उत्तर रखना चाहते हैं। लेकिन वे ये नहीं बताते हैं कि ऐसी परिस्थितियों में क्या करना चाहिए, जिससे बैंक दिवालिया होने से बच सकें और देश की अर्थव्यवस्था ध्वस्त होने से बच जाए।

11 अप्रैल, 2016 को अंशुमान तिवारी ने ''एक लाख करोड़ का सवाल''[15] शीर्षक से डाली पोस्ट में सब्सिडी को लेकर सवाल खड़े किए हैं। वे लिखते हैं की सब्सिडी राजनीति का जरिया बन गई है। अंशुमान तिवारी और शशि सब्सिडी के मुद्दे को एक ही भाव के साथ दो तरीके प्रस्तुत कर रहे हैं

14 जून, 2016 को अंशुमान तिवारी ने ''आंकड़ो की चमकार''[16] शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें उन्होंने जीडीपी, मुद्रास्फीति दर आदि को तैयार करने के मानकों पर चर्चा की है। साथ ही, इन मानकों को भारतीय संदर्भ में पूरी वास्तविकता का सामने लाने में असमर्थ बताया है। इसी प्रकार उन्होंने सरकार के बिजली के आंकड़ो पर व्यंग्यात्मक तंज कसा है कि किस प्रकार सरकारी एजेंसियों द्वारा दावा किया जाता है कि भारत में सरप्लस

बिजली की पैदावार की जा रही है। जबकि सच्चाई तो जून के महीने में होने वाली लगातार कटौती से आसानी से समझा जा सकता है।

28 जून को अंशुमान तिवारी ने ''रघुराम राजन और मध्य वर्ग''[17] शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें मौद्रिक नीति के बारे में लिखा गया है। साथ ही उन्होंने भारतीय बैंकिंग व्यवस्था की खामियों और मूल तत्वों के बारे में भी लिखा है। इस लेख में बैंकिंग व्यवस्था को समझाने की भी कोशिश की गई है। साथ ही, सरकार द्वारा नई मौद्रिक नीति के अपनाए जाने की भी समीक्षा की है।

जुलाई माह में अशुमान तिवारी ने आर्थिक विषयों पर अपने ब्लॉग अर्थार्थ पर 4 चार पोस्ट डाली हैं। 5 जुलाई, 2016 को अंशुमान तिवारी ''बार-बार मिलने वाला आखिरी मौका''[18] शीर्षक डाली पोस्ट में सरकार द्वारा टैक्स चोरों और काली कमाई वाले लोगों को दिए जा रहे बार-बार मौकों की आलोचना की है। साथ ही वे लिखते हैं कि सरकार की इस नीति से ईमानदार लोगों के मन भी भरोसा कम होता है और उनके साथ अन्याय की तरह है। काली कमायी करने वालों से टैक्स वसूलने और काला धन उजागर करने के लिए आजादी के बाद से ही अनेकों योजनाएं लाई गईं, लेकिन कोई भी योजना पूर्णतय सफल नहीं हुई। अंशुमान सरकार की आलोचना करते हैं कि इससे भी वे सबक नहीं लेती हैं, यह निराश करने वाली बात है।

20 जुलाई, 2016 को अंशुमान तिवारी ने ''ताकि नजर आए बदलाव''[19] शीर्षक से लेख लिखा है। इसमें उन्होंने मोदी सरकार के मंत्रीमंडल में फेरदबदल का विश्लेषण अपने आर्थिक आकलनों के आधार पर किया है। वे मोदी मत्रीमंडल में फेरदबदल के पीछे उनकी नाकामी और असफलताओं को देखते हैं। वे मोदी की प्रशंसा करते हैं कि वे बतौर

प्रधानमंत्री आंकड़ो के जरिए विकास नहीं देखना चाहते हैं बल्कि वे चाहते हैं कि बदलाव इतना और प्रभावी हो कि लोग भी उसे आसानी से महसूस कर सकें और उसे दिन-प्रतिदिन देख सकें। हालांकि अंशुमान फेरबदल का शिकार हुए मंत्रियों को उनकी कमियां और असफलता भी गिनवाते हैं।

साथ ही, वे केन्द्र का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं कि देश के अधिकांश राज्यों में अब बीजेपी की सरकार है। यदि इसके वाबजूद विकास धरातल पर नहीं दिखा तो यह सरकार की ही असफलता माना जाएगा। लेख पत्रकारिता के नजरिए बहुत अच्छा लिखा है। हालांकि इस लेख में किसी प्रकार के कोई आंकडे नहीं दिए हैं, जबकि अंशुमान के लेख सामान्यतौर पर आंकड़ों से भरे हुए होते हैं।

6 सितंबर, 2016 को अंशुमान तिवारी ने ‘‘आखिरी मंजिल की चुनौती’’[20] शीर्षक से डाली पोस्ट में कागजी दावों और जमीनी हकीकतों में से सावधान रहने की आवश्यकता बताते हैं। वे एक उदाहरण के साथ समझाते हैं कि मोदी ने विद्युतिकरण के मामले में अपनी पीठ थपथपाते हुए दावा किया था कि दिल्ली से महज 150 किमी दूर उत्तर प्रदेश राज्य के गांव नगला फतेला में आजादी के 70 साल बाद बिजली पहुंची है, लेकिन सच्चाई कुछ ही घंटों बाद सामने आ गई, मोदी को ट्विट वापिस लेना पड़ा। अंशुमान ने लेख में आंकड़ों का प्रयोग करके विभिन्न योजनाओं का विश्लेषण किया है। विषय का रोचक बनाने के लिए विकास के राजनीतिक दावों और जमीनी हकीकतों के उदाहरण भी दिए हैं।

रवीश कुमार 25 नवम्बर, 2016 को अपने ब्लाग पर ‘‘ईएफजीएच...जीडीपी...घाघों रानी...कितना पानी..’’[21] शीर्षक से लिखी पोस्ट में वह सरकार से सवालिया अंदाज में पूछते हैं कि हर तरफ जीडीपी की चर्चा हो रही है। रवीश कुमार लिखते हैं कि मैं जीडीपी

के आंकड़ों को लेकर ज्यादा उम्मीदें नहीं करता। सरकारें आजकल जीडीपी की ही भाषा बोल रही हैं। वह यहां सवाल कर रहे हैं कि जीडीपी ऐसी क्या चीज है जिसके बढ़ने से देश में सिर्फ एक फीसदी लोगों के हाथ में 58 फीसदी संपत्ति आ जाती है। मालदार और अधिक मालदार हो जाते हैं।

वहीं 23 नवंबर, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने ''गरीबों पर कहा सबने लेकिन गरीबों की सुनी किसने?''[22] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें भारत में गरीबी को आंकड़ों की जमीनी हकीकत से जोड़कर पेश किया है। इसमें उन्होंने बताया है कि प्रत्येक वर्ष सरकार 5 लाख करोड़ रुपये टैक्स में से कॉरपोरेट जगत का किसी न किसी प्रकार से माफ कर देती है। वहीं सरकार ग्रामीण भारत के विकास के लिए कुल 4 लाख करोड़ रुपये भी खर्च नहीं करती है। भारत में 80 फीसदी से ज्यादा लोगों की आय 5 हजार रुपये मासिक से भी कम है।

आर्थिक भ्रष्टाचार पर पोस्ट्स

रवीश कुमार ने 1 मार्च, 2016 को ''वो रहा काला धन वो आ गया अरे वो तो''[23] शीर्षक से अपने ब्लॉग में व्यंग्यात्मक शैली में लिखते हैं कि वित्तमंत्री अरूण जेटली से तमाम लोग दल बनाकर मिलने आते हैं। साथ ही काले धन पर नरम रहने की बात करते हैं। इसमें वह बताते हैं कि किस प्रकार कालेधन पर कार्रवाई की बात को अत्यधिक प्रचार के साथ घोषित किया गया और फिर छह महीने बाद जेटली की कालेधन के ऊपर की गई चिन्ता मेल नहीं खाती। साथ ही वित्तमंत्री कालेधन पर कानून तो पास कराने में सफल रहे। जुर्माने की भी बात की गई थी। लेकिल सवाल यह है कि कितनों को पकड़ा गया और कितनों की सजा हुई। यहां पर रवीश वित्तमंत्री पर दौहरे रवैये अपनाने का

आरोप लगाते हैं। इसी प्रकार 29 अगस्त, 2016 को अंशुमान तिवारी ने काले धन को लेकर "सबसे बड़ी लड़ाई का निर्णायक मोड़"[24] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें वे लिखते हैं की कालेधन बात करने से अच्छा है कि इस मामले ठोस कार्रवाई की जाए।

रवीश कुमार 6 अप्रैल, 2016 के अपने लेख "पनामा पेपर्स को समझना हुआ आसान, पढ़िए तो मेहरबान"[25] में रवीश पनामा पेपर्स में उजागर हो रहे मामलों पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि लीक्स का मतलब खुलासा यानी कि मामूली सी जानकारी। इस मामले में वह आगे कहते हैं कि मीडिया पनामा पेपर्स में हो रहे थोड़े से खुलासे को इतना क्यों तूल दे रही है? वह लेख में मीडिया पर आरोप लगाते हैं कि मीडिया इस मामले में निष्पक्ष रिपोर्टिंग नहीं कर रहा है। हालांकि वह एनडीटीवी मीडिया हाउस को लेकर कोई टिप्पणी नहीं करते हैं।

रवीश कुमार ने 6 अप्रैल 2016 को ही एक और अन्य पोस्ट डाली है। जिसका शीर्षक है "पनामा पेपर्सः फर्जी कंपनियों में कालाधन खपाया गया?"[26] है। इस पोस्ट में भी फिर पनामा पेपर्स की बात दोहराई है। हालांकि पोस्ट में रवीश कुमार पनाना लीक पर ही सवाल उठा रहे हैं। वह आगे बताते हैं कि कोई भी इस पर बोलना नहीं चाहता। क्या इस मामले में ज्यादा वजन नहीं हैं? क्यों नहीं उद्योग जगत के बारे में ज्यादा बोला जा रहा? वह इस मामले में दुनिया में उठापटक देखना चाहते हैं। साथ ही वह पनामा पेपर्स मामले में अपनी मीडिया बिरादरी से और ज्यादा ज्यादा आवाज उठाने की उम्मीद कर कर रहे हैं। हालांकि पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ पनामा में नाम आने से अपनी कुर्सी गवां बैठे हैं।

रवीश कुमार अपनी पोस्ट में बताते है कि देश में पनामा पेपर्स में किसी बड़े नेता या दल का नाम न आने से शांति है। लेकिन वह अपनी पोस्ट में कांग्रेस द्वारा जो कागजात सुप्रीम कोर्ट में सौंपे हैं उसके इस कार्य को वह सकारात्मक रूप में देखते हैं और रवीश कुमार कार्रवाही की उम्मीद करते हैं। साथ ही उन्होंने अपनी पोस्ट में एश्वर्या राय बच्चन और वरिष्ठ वकील हरीश साल्वे इंडिया बुल्स और डीएलएफ आदि का नाम आने का जिक्र किया है और उनके द्वारा अपने पक्ष में दी गई सफाई का उल्लेख भी करते हैं।

वह इसी पोस्ट में मोसाक फोंसेका नाम की कम्पनी का जो कानूनी सलाह देती है का उल्लेख करते हैं। साथ ही वह लिखते हैं कि यही मोसाक फोंसेका कम्पनी उद्योगपति को कम्पनी बनाने और खरीदेने में मदद करती है। साथ ही, डिफॉल्टरों, ड्रग माफियाओं की भी मदद करती है। रवीश अपने ब्लॉग में सवाल उठाते हैं कि कैसे उम्मीद की जा सकती है काले धन कुबेरों पर अंकुश लगेगा। रवीश कुमार आगे लिखते हैं कि बिना ठोस सबूतों के चोर को पकड़ लेना न तो आसान है और न ही उचित। वह फोंसेका जैसी कम्पनी को आतंक और भ्रष्टाचार से जूझ दुनिया को खतरा बताते हैं। लेख में रवीश कुमार ने बैंकिंग स्टिम में घोलमेल पर भी सवाल उठाए है कि किस तरह स्विस बैंकिंग कम्पनी यूएसबी और पनामा की मोसाक फोंसेका एक दूसरे की मुनाफे में साझेदार थीं। लेख में रवीश आगे बताते हैं कि मोसाक फोंसेका के साथ लगभग 15 हजार छह सौ कम्पनियां दर्ज थीं जिसमें पांच सौ ज्यादा बैंकें ही थीं। रवीश कुमार लिखत हैं कि बैंकों की कार्यप्रणाली लगभग हर देश की फर्जी कम्पनियों लिए वरदान साबित हो रही हैं इसको उन्होंने अपने लेख में बखूबी उठाया है।

4 मई, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी "भ्रष्टाचार में डूबे देश में हेलीकॉप्टर की क्या औकात"[27] शीर्षक से लिखे लेख में भारत में आजादी के बाद से जारी भ्रष्टाचार और राजनीतिक इच्छाशक्ति पर आधारित फैसलों का तथ्यपूर्ण विश्लेषण किया है। वे केपीएमजी और वाशिंगटन की ग्लोबल फाइनेंशियल इंटीग्रेटी जैसी संस्थाओं द्वारा जारी किए गए आंकड़ो के माध्यम से बताते हैं कि आजादी के बाद से करीब 31 लाख करोड़ का काला धन भारत में सृजित हुआ है, जिसका करीब सन 1991 तक 68 फीसदी किसी न किसी प्रकार से विदेश चल गया। संसद में भ्रष्टाचार के लगभग 322 मुद्दों पर मई, 2016 तक चर्चा हो चुकी है, लेकिन कोई भी ठोस नतीजा नहीं निकला है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी इस लेख में रक्षा मामलों के घोटलों का बहुत छोटा बताते हैं वे कहते हैं कि रक्षा मामलों से जुड़े घोटाले लोगों की भावनाओं का ज्यादा उद्देलित करते हैं, जिससे राजनीतिक उद्देश्य हासिल किये जाते हैं, इसलिए उनकी चर्चा भी अधिक होती है। प्रसून देश में आर्थिक असमानताओं और किसानों की माली परिस्थितियों के बारे में भी लिखते हैं कि भारत में 3000 हजार लोगों के पास इतनी संपत्ति हैं, जिससे देश के करीब 18 करोड़ किसान-मजदूर फाइव स्टार स्तर का जीवन जी सकते हैं। इन्हीं लोगों के पास बैंकों का 1 लाख करोड़ से ज्यादा का एनपीए है। प्रसून लिखते हैं कि आजादी के बाद भारत की गरीबी के प्रतिशत आंकड़े के कोई बड़ा अंतर नहीं आया है। आजादी के समय जब देश की जनसंख्या 33 करोड़ थी तब देश में गरीबों की संख्या 18 करोड़ थी, जबकि अब देश की जनसंख्या 121 करोड़ है तो देश में करीब 42 करोड़ लोग गरीब हैं, यानी प्रतिशत के हिसाब नहीं बल्कि संख्या के हिसाब से गरीबों की संख्या बड़ा ईजाफा हुआ है। गरीबी के संबंध में पुण्य प्रसून वाजपेयी के लेख रवीश कुमार, सुधीर राघव, शशि शेखर की तुलना में अधिक तथ्यपूर्ण हैं। रवीश और शशि शेखर के आर्थिक लेखों में

आकड़ों से ज्यादा गरीबों की भावनाओं और स्थिति से जोड़कर बात कही गई है, वहीं पुण्य प्रसून वाजपेयी के लेखों में आंकड़े व तथ्य अधिक दिए गए हैं।

इसी प्रकार पुण्य प्रसून वाजपेयी ने भारत के संदर्भ में भ्रष्टाचार से संबंधित लेख 13 दिसंबर, 2016 को ''पहले सिस्टम करप्ट था अब करप्शन ही सिस्टम तो नहीं हो चला''[28] शीर्षक से लिखा है। इसमें नोटबंदी के बाद पकड़े गए नए नोटों के बारे में लिखा गया है। प्रसून लिखते हैं नोटबंदी का मकसद काले धन को बेकार करना था, लेकिन भारत के बैंकिंग सिस्टम ने पूरी योजना पर ही पानी फेर दिया है। वह कहते हैं कि भारत में करप्शन सिस्टम को हिस्सा बन गया है, लोगों ने इसे सहज रूप से स्वीकार लिया है। इस लेख में वे बैंकिंग व्यवस्था को कठघरे में खड़ा करते हैं और भ्रष्टाचार के लिए बड़ा जिम्मेदार ठहराते हैं। साथ ही वे कहते हैं कि यदि तंत्र ही भ्रष्टाचार मे लिप्ट हो जाएगा तो भ्रष्टाचार से लड़ना लगभग असंभव है।

विमुद्रीकरण पर पोस्ट्स

रवीश कुमार 12 नवम्बर, 2016 को अपनी पोस्ट ''दादी नानी को चोर बना, ये फैसला ले गया उनकी आजादी भी''[29] बड़े सहज अंदाज में लिखते हैं कि गांव देहात में एक परम्परा है, जिसमें घर की बुजुर्ग महिलाएं विपरीत समय के लिए एक-एक पाई जोड़कर रसोई के बर्तनों में इक्ट्ठा करती हैं। रवीश के लिखते हैं कि मोदी सरकार के नोटबंदी के फैसले ने किस प्रकार दादी और नानी को भी घर के लोगों के बीच चोर साबित करत दिया है। उनकी एक झटके में पोटली बाहर आ गई। अब सब के बीच उन्हें हंसी का पात्र बनना पड़ रहा है। अब गांव, गली और मोहल्लों के लोग उन पर ठहाके लगाके उन पर हंस रहे हैं। रवीश ने अपने लेख में ऐसी महिलाओं की पीड़ा को अपने

ब्लॉग पर साझा किया है। वह अपनी पोस्ट में मंदिरों पर भी खीज निकालते हैं कि उन्होंने भी इस नोटबंदी के दौरान काला धन सफेद किया। हालांकि उन्होंने मस्जिद का नाम नहीं लिया। मंदिरों द्वारा काला धन का सफेद किए जाने के पीछे कोई ठोस प्रमाण या तथ्य नहीं दिए हैं।

13 नवम्बर 2016 को रवीश ने "क्या व्यापारी-बिजनेश क्लास चोर है? काला धन के सरदार है?"[30] शीर्षक से पोस्ट डाली है। पोस्ट में वह बताते हैं कि नोटबंदी के बाद किस तरह लोगों ने सोने-चांदी में काला धन खपाया। सुनारों ने खूब से 50 फीसदी के मोटे कमीशन पर धन कुबेरों का काला धन सफेद किया। यही खेल प्रोपर्टी डीलरों ने किया। रवीश यहां व्यापारियों की मंशा पर सवाल उठा रहे हैं। यही व्यापारी हाल के दिनों तक पैन नंबर देने का विरोध कर रहे थे। वे धंधे का चौपट होने का दुःख रो रहे थे। लेकिन नोटबंदी के बाद भीड़ सबसे ज्यादा उन्हीं के यहां उमड़ी और सुनारों ने काले धन को सफेद कर दिया। हालांकि कुछ के यहां आयकर विभाग ने दस्तूर के लिए छापे भी डाले। रवीश ने नोटबंदी की घटनाओं पर बड़ी रोचकता के साथ लेख लिखा है।

14 नवंबर 2016 को रवीश "सवाल पूछना काला धन का समर्थन नहीं है सर"[31] शीर्षक से अपने ब्लॉग पर सवाल करते हैं कि नोटबंदी के बाद कितनी किल्लत आम ट्रक ड्राईवरों को उठानी पड़ी। 30 लाख से ज्यादा ट्रक सड़कों पर खडे रहे। उनका कारोबार नकदी में ही चलता है। रवीश सवाल उठाते हैं कि अगर सरकार वाकाई अगर सख्त है तो इस ट्रांसपोर्ट और लाजिस्टिक सेक्टर में नकदी में होने वाला कारोबार बंद कर देना चाहिए। रवीश कुमार सरकार से पूछते हैं कि कैसे ड्राइवरों ढाबे पर खाएगा? यहां वह उनकी समस्याओं से रूबरू कराते हैं। रवीश अपनी पोस्ट में केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी की वर्ष 2014 की पुणे की एक सभा में कही गई बात का उल्लेख करते हुए सवाल करते

हैं कि नितिन गडकरी ने कहा था कि वह जल्द ही एक कानून लाकर आरटीओ सिस्टम को समाप्त कर देंगे। इतना समय बीतने के बाद क्या हुआ अब तक ये सब आपके सामने है।

रवीश कुमार की तरह ही, 23 दिसंबर, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी द्वारा ''मोदी जी नोटबंदी हो गई, लूटबंदी कब होगी''[32] शीर्षक से लिखते हैं कि नोटबंदी से क्या हासिल हुआ है या होगा इससे देश में भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा। प्रसून अपनी बात के समर्थन में आजादी से लेकर सन 2016 तक उजागर हुए विभिन्न घोटालों की आकंड़े के साथ लेख में लिखते हैं। वे भ्रष्टाचार के लिए राजनीतिक वर्ग को सबसे अधिक जिम्मेदार ठहराते हैं। वे बताते है कि किस प्रकार भ्रष्टाचार ने देश के विकास में अवरोध बना है। नोटबंदी की पहल भी भ्रष्टाचार को रोकने के लिए नाकाफी है। प्रसून रवीश और अंशुमान तिवारी की तरह भ्रष्टाचार को रोकने के संदर्भ में नोटबंदी को असफल तो बताते हैं, लेकिन उन विकल्पों और उपायों को बारे में कोई चर्चा नहीं करते हैं, जिनसे भ्रष्टाचार को रोका जा सके। उनके लेखों समस्या को प्रमुखता के साथ उठाया गया, लेकिन समाधान नदारद हैं।

16 नवम्बर, 2016 को रवीश कुमार अपने ब्लॉग पर ''हम साथ है लेकिन....यहां से सुनिए चांदनी चौक के व्यापारियों को......''[33] शीर्षक से चांदनी चौक में चकमक रहने वाली गलियों पसरे सन्नाटे का बात कर रहे हैं। अधिकांश समय ग्राहकों से भरी रहने वाली दुकान बंद हैं। जो खुली हैं, वहां से ग्राहक नदारद हैं। मसाले के बाजार में भी सन्नाटा है। यहां रवीश ने चांदनी चौक का आंखों देखा हाल वर्णन किया है। रवीश यहां मजदूरों के दर्द को साझा कर रहे हैं जो नोटबंदी के बाद से काम न मिलने से परेशान हैं।

परेशान वह भी हैं जो शटर गिराकर चले गए हैं। वे भय के साए में जी रहे हैं कहीं इनकम टैक्स का छापा न पड़ जाए।

19 नवम्बर, 2016 को रवीश कुमार ‘‘फैसले की नीयत तो सही लेकिन...’’[34] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नोटबंदी फैसले की समीक्षा करते हैं। वह पोस्ट में लिखते हैं कि मैंने कभी भी नीयत के आधार पर फैसले की तारीफ नहीं देखी, जिस प्रकार नोटबंदी के मामले में देखी जा रही है। वह लेख में सवाल पूछते हैं कि प्रधानमंत्री की नीयत फैसलों से भी बड़ी कैसे हो गई? रवीश यहां अपने तर्कों के आधार पर नोटबंदी के दो हिस्से बताते हैं। पहला नीयत और दूसरा लागू करने के नाम पर मचा कोहराम। रवीश अपनी पोस्ट में इस फैसले को सबसे असफल फैसला करार देते हैं। ये फैसला दस दिन तक पूरी तरह से फैल रहा। फिर भी सरकार फैसला लेने की टीआरपी में टॉप पर थी। नोटबंदी की समीक्षा करते हुए पोस्ट में लिखा है कि लोगों का सारा धंधा चैपट हो गया फिर भी आपकी नीयत ठीक। इसी लेख में रवीश कुमार प्रधानमंत्री मोदी और उनकी कैबिनेट की आलोचना करते हैं कि क्या प्रधानमंत्री नीयत से फैसला लेते हैं, उनके कैबिनेट मंत्री क्या करते हैं, वित्तमंत्री जी क्या करते हैं और अधिकारी क्या करते हैं? रवीश यहां इन सभी को सवालों के घेरे में लेते हैं। क्या देश की सरकार नीयत से ही चलती है? ये वक्त ही तय ही करेगा।

22 नवम्बर, 2016 को अपने ब्लॉग पर ‘‘कैशलेस हो जाने से टैक्स चोरी नहीं बंद होती है’’[35] शीर्षक से अपनी पोस्ट में सरकार पर तंज भरे लहजे में कहते हैं कि देश में कैशलेस व्यवस्था को इस प्रकार प्रचारित किया जा रहा है कि ये हींग की वटी है जो अर्थव्यवस्था के बदहजमियों को दूर कर देगी। भारत में टैक्स की चोरियां बंद हो जाएंगी या कम हो जाएंगी। वह अपनी पोस्ट में आगे सवाल करते हैं कि सरकार बताए अमरीका

में कहां कम हुईं हैं। आगे वह सवाल करते हैं कि थोड़ी देर के लिए मान भी ले कि पूरी आबादी इलेक्ट्रॉनिक तरीके से लेन-देन करती है तो इसकी जिम्मेदारी कौन सा अर्थशास्त्री देगा कि इससे समाधान हो जाएगा? क्या वाकई सरकार उन तमाम लेन-देन की निगरानी कर लेगी? रवीश अपनी पोस्ट में सरकार से सवाल पर सवाल करते हैं कि जिस व्यवस्था को हम अपनाने जा रहे हैं यदि वह बेकार या रद्दी ही है तो हम उसे अपनाने को क्यों उतारू हैं। यहां रवीश कैशलेस व्यवस्था की आलोचना करते हैं।

15 नवंबर, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने नोटबंदी को लेकर "संसद से नहीं बैंक से निकलेगा लोकतंत्र का राग"[36] लेख लिखा है। रवीश के विपरीत प्रसून ने नोटबंदी को लेकर केवल एक ही लेख लिखा है। रवीश कुमार ने नोटबंदी को लेकर विभिन्न पहलुओं पर अलग-अलग लेख लिखे हैं, वहीं प्रसून ने नोटबंदी को अर्थव्यवस्था से ज्यादा से लोकतंत्र की परिभाषाओं में परिभाषित करने की कोशिश की है। उनके अनुसार नोटबंदी ने लोगों को लाइनों में लगने को मजबूर कर दिया है, लोगों को लोकतंत्र को स्थापित करने के लिए भी लाइनों में लगना पड़ता है। शशि शेखर ने नोटबंदी से संबंधित कोई भी लेख नहीं लिखा है।

23 नवंबर, 2016 को "क्या खुशी ही सबसे बड़ी खबर है?"[37] शीर्षक से रवीश कुमार ने ब्लॉग पर लोगों की खुशी को लेकर भी सरकार पर सवाल उठाए है। वह एक सर्वे में खुशी को लेकर कहा जा रहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नोटबंदी के फैसले से 80 फीसदी खुश पाए गए हैं। वहीं एक दूसरा सर्वे 80 से कम करके 45 फीसदी बता रहा है। ये दोनों सर्वे एक दूसरे के विरोधाभासी हैं। हालांकि रवीश ने इन दोनों ही सर्वे पर अपनी पोस्ट पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। हालांकि वह प्रधानमंत्री से सवाल कर रहे हैं कि लोगों को बताए वह खुद अपने फैसले से कितने खुश हैं। 100 फीसदी लोग खुश हैं

या 87 फीसदी। मोदी जी आप बताएं कि बाकी के 13 फीसदी में वे क्या हैं? आगे पोस्ट में वह पूछते हैं कि आप यह सुनकर भी खुश हैं कि काला धन वालों ने मोटा कमीशन देकर अपना काला धन सफेद कर लिया है। रवीश यहां अपनी पोस्ट में एक और सवाल उठा रहे हैं कि नोटबंदी के बाद अब लोकपाल की नियुक्ति की जरूरत नहीं पड़ेगी? सरकार को अब इस पर भी अपनी राय रखनी चाहिए।

30 नवंबर, 2016 को ''किराएदारों, कामगारों को अनैतिक बनाकर कैशलकश नैतिकता कायम नहीं हो सकती''[38] शीर्षक से अपनी पोस्ट में रवीश कुमार कैशलेस व्यवस्था को ही कटघरे में खड़ा करते हैं। पोस्ट में वह तंज भरे लहजे में कहते हैं कि अब तो लोकपाल भी कैशलेस नैतिकता के आगे अपने को छोटा समझता होगा। लेख में वह कामगारों, किराएदारों और गरीब तबके की बात करते है। वह कामगारों की समस्या पर प्रकाश डालते है कि किस तरह उसको इस कैशलेश व्यवस्था में परेशानी हो रही है। साथ ही वह उन मकान मालिकों, विद्यालय संचालकों और प्रोपर्टी डीलरों को भी कटघरे में खड़ा कर रहे है। किस प्रकार ये लोग कैशलैस पर प्रवचन तो देते हैं, लेकिन जब बात खुद पर अमल करने की आती है तो यही लोग पीछे हट जाते हैं।

रवीश कुमार के मन में कैशलेस व्यवस्था को लेकर सरकार से कुछ सवाल हैं जो वह अपनी पोस्ट पर साझा कर रहे हैं। वह सरकार से पूछ रहे हैं कि नोटबंदी के समय में बताया गया कि करीब 14 लाख करोड़ की नकदी चलन में हैं। क्या कैशलेस अर्थव्यवस्था में उतनी ही मात्रा में नोट क्यों छापे जार रहे हैं, जितने कि नोट चलन में थे। रवीश आगे पूछते हैं कि क्यों दृश्य मुद्रा से अदृश्य मुद्रा की और लोगों को ढ़केला जा रहा है। क्या कैशलेस अर्थव्यवस्था में नोटों की छपाई कम नहीं होनी चाहिए। वह यहां तंज भरे अंदाज में सरकार से सवाल कर रहे हैं कि जिन देशों ने ये व्यवस्था अपनाई है

क्या उनके यहां नोट छपने बंद हो गए या पहले की अपेक्षा कम हो गए या पहल से और बढ़ गए? सरकार ने पहले से कोई अध्ययन किया? क्या दो लाख से ज्यादा एटीम बंद किए जाएंगे? रवीश का पूरा लेख सरकार से किए हुए प्रश्नों से भरा हुआ है। लेख में समस्या के समाधान या वैकल्पिक व्यवस्था के बारे में कुछ नहीं लिखा गया है। लेख में सरकार के फैसले की आलोचना अधिक है सुझावों को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

7 दिसंबर, 2016 को रवीश कुमार ने ''आर्थिक खबरों की पाठशाला''[39] शीर्षक से कटाक्ष करते हुए लिखते हैं कि नोटबंदी एक सरल सा शब्द गढ़ लिया है। विमुद्रीकरण के लिए नोटबंदी एक आसान सा शब्द है जो आम लोगों को सीधे-सीधे आसानी से समझ आ जाता है। रवीश सवाल करते हैं कि सरल शब्द गढ़ने से क्या समझने की प्रक्रिया आसान हो जाती है? लेकिन जिन लोगों की रोजी रोटी चली गई उनका क्या होगा? वह अपनी पोस्ट सरकार पर आरोप लगाते हैं कि नोटबंदी की आड़ में कॉरपोट को फायदा पहुंचाया जा रहा है, हालांकि वह कोई तथ्य प्रस्तुत नहीं करते हैं।

14 दिसंबर को पुण्य प्रसून वाजपेयी ''तो क्या 30 दिसंबर को देश असफल साबित होगा''[40] लेख में नोटबंदी की असफलता की आशंका जाहिर ही है। वे कहते हैं प्रधानमंत्री का यह दाव देश की अर्थव्यवस्था को बर्बाद भी कर सकता है। रवीश कुमार भी प्रसून की तरह ही अपने विचार जाहिर करते हैं, लेकिन वे आशंका से अधिक आलोचना अधिक करते हुए अधिक लिखते हैं। हालांकि बाद में दोनों ही लोगों को गलत कहा जा सकता है। नोटबंदी की योजना को न तो असफल कहा जा सकता है और न ही पूरी तरह सफल।

16 दिसंबर, 2016 को रवीश कुमार ‘‘सरकार है या बिग बाजार’’[41] शीर्षक से नीति आयोग द्वारा अपनाए जा रहे उपायों पर कटाक्ष करते हुए उन्हें टोटाक बताते हैं। आगे वह लिख रहे हैं कि नीति आयोग भी अब फ्लिपकार्ड और अमेजन कंपनियों की तरह एक के साथ एक फ्री की योजना लांच कर रही है तो कम्पनियों और सरकार में अंतर ही क्या रह गया। नीति आयोग ने कैशलेस को एक तरफ बढ़ना भी बताया है तो वहीं दूसरी तरफ वह लकी ड्रॉ भी निकाल रहे है। रवीश आगे लिखते हैं कि जब लेन-देन के सारे विकल्प सरकार ने बंद कर दिए गए तो यह सब बढ़ना ही था तो नीति आयोग को इन सब की क्या जरूरत थी? रवीश कुमार यहां अपने तर्को से नीति आयोग के फैसलों को गलत ठहरा रहे हैं। 25 दिसंबर को सुधीर राघव ने कैशलेस व्यवस्था की व्यंग्यात्मक लहजे में आलोचना की है। वे इसे उल्लुओं का उल्लूपन कहते हैं[42], हालांकि वे अपने लेख के समर्थन में कोई तथ्य नहीं रखते हैं, केवल आलोचना की है।

30 दिसंबर 2016 को रवीश कुमार ‘‘बिजनेस अखबारों को बांचते हुए, स्वर्ण युग की तलाश’’[43] शीर्षक से सरकार पर कटाक्ष करते हुए लिखते हैं कि नोटबंदी कि प्रक्रिया के बाद बिजनेस अखबारों को पलटा कि कहीं कोई स्वर्ण युग ही नजर आ जाए। वह बताते है कि हर अखबार में आंकड़ा बाजी चल रही है। हर अखबारों में होम लोन सस्ता हुआ, ब्याज कम हुआ। इसकी तो मोटी मोटी हेडलाइन दी जाती है। लेकिन ब्याज दरों में कटौती की खबर छोटे से कॉलम में दी जाती है। यहां वह अखबारों की आर्थिक रपोर्टिंग शैली की भी आलोचना करते हैं। इसी प्रकार का लेख सुधीर राघव ने 27 दिसंबर, 2016 को ‘‘नोटबंदी के बाद की प्लानिंग’’[44] शीर्षक से लिखा है। वे नोटबंदी के बाद के परिणामों की आशंका को लेकर व्यंग्यात्मक आलोचना करते हैं। वे सरकार पर आरोप लगाते हैं कि सरकार नोटबंदी के जरिए किसानों को बर्बाद कर रही है और कॉपोरेट का फायदा पहुंचा

रही हैं, हालांकि उनके आरोप भविष्य की आशंका पर आधारित है। न ही लेख किसी प्रकार के आंकड़े या तथ्य दिए, जिससे उनके लेख पर विश्वसनीयता में बढ़ोतरी हो। नोटबंदी पर उनकी आशंका रवीश की ही भांति है।

एफडीआई पर पोस्ट्स

22 जून, 2016 को रवीश ने ''क्या एफडीआई निवेश से गरीब लोग अमीर हो जाएंगे?''[45] शीर्षक से लिखे लेख में कहा है कि एफडीआई पर सरकार जितना हो हल्ला मचा रही है, उतना सच नहीं है। वह अपने ब्लॉग में खुद की बात सही ठहाने के लिए जयराम के माध्यम से रखते है कि किस तरह सरकार रघुराम से जनता का ध्यान हटाने के लिए सरकार ने विदेशी निवेश की घोषणा की है।

साथ ही, रवीश कुमार मीडिया पर भी हमलावर होने से भी नहीं चूके और साथ ही कहा कि जब देश की मुख्य विपक्षी पार्टी फैसले के दिन आलोचना करने से कतरा रहा और तो मीडिया क्यों इतना समीक्षा पर उतारू है। क्या वह एक दिन का भी इंतजार नहीं सकता है। रवीश यहां मीडिया द्वारा सवाल उठाने पर ही प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं। इसी लेख में वह आगे सवाल उठाते हैं कि सरकार द्वारा मछलीपालन, जलखेती और मधुमक्खी पालन में सौ फीसदी विदेशी निवेश पर तंज कसते हुए कहते हैं कि देखिए आज हम कहां आ गए? रवीश ने लेख में कोई स्पष्ट सुझाव नही दिया है। वह केवल सरकार के निर्णय की आलोचना कर रहे हैं।

रवीश कुमार एफडीआई की आलोचना करते हुए लिखते हैं कि गांधी जी के सपनों का खादी ग्रामोद्योग भी विदेशी निवेश से नहीं बचा है। वह व्यंग्यात्मक शैली में लिखते हैं कि क्या पता कि एफडीआई से भविष्य में इस क्षेत्र में तरक्की की अपार संभावानाएं

ही खुल जाएं। इसी लेख में रवीश कुमार सिंगल ब्रांड रिटेल में एफडीआई की सीमा बढ़ाने पर भी सरकार की खिचाई की है। सरकार ने अत्याधुनिक तकनीक के नाम पर रियायतों का दायरा बड़ा कर दिया है। स्थानीय कंपनी की खरीदारी की शर्त को तीन वर्ष कर दिया है। हालांकि वह आगे लिखते है कि तत्कालीन यूपीए सरकार के समय से ही सिंगल ब्रांड रिटेल में विदेशी निवेश को कुछ प्रावधानों के साथ सौ फीसदी कर दिया गया था। वर्ष 2012-2013 के दौरान खूब विरोध हुआ था, तब की विपक्षी पार्टी भाजपा खुदरा व्यापारियों के शोषण के नाम पर खूब विरोध करती थी। व्यापारी लुट जाएगा। देश के खुदरा कारोबारी समाप्त हो जाएंगे। इस प्रकार के तर्क विपक्षी पार्टी के द्वारा दिए जा रहे थे। यहां रवीश खुद का अपना नजरिया पेश कर रहे हैं कि कब किस मुद्दे पर लिखना या बोलना है। स्वयं को जो एजेंडा सूट करे उस पर खूब बोलो ऐसा उनके द्वारा लिखे लेखों में खूब देखने को मिलता है।

जीएसटी पर पोस्ट्स

11 जुलाई, 2016 को अंशुमान तिवारी ने ''तो फिर मत लाइये जीएसटी''[46] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इस लेख में जीएसटी के लागू होने से पूर्व की विभिन्न आशंकाओं से युक्त पत्रकारिता की समीक्षा दृष्टि से लिखा गया है। हालांकि अब जीएसटी लागू होने के बाद लेख की कुछ बाते बिल्कूल निर्मूल लगती हैं। इसी प्रकार 4 अगस्त, 2016 को रवीश कुमार ने ''क्या जीएसटी से टैक्स चोरी रुक जाएगी?''[47] पोस्ट में जीएसटी पर चर्चा की है। वह अपने लेख के माध्यम में राजनीतिक दलों पर निशाना साधते हैं। लेख में वह बताते हैं कि केंद्र से लेकर राज्यों तक सत्ता चाहे किसी भी दल की हो मगर आर्थिक नीतियां लगभग समान हैं। सभी का एक ही जैसा मॉडल है। अपने लेख में वह बताते हैं

कि गुड्स एवं सर्विस टैक्स से आम उपभोक्ता प्रभावित होगा। गांवों को में चल रहे छोटे और मझौले कारखाने प्रभावित होगे।

रवीश कुमार लेख में अधिकारियों को भी चेताते हैं कि आप भी जीएसटी जैसी नई समस्या के लिए तैयार रहिए। लेकिन कैसे आम उपभोक्ता प्रभावित होगे इस तर्क को वह साबित करने के लिए रवीश कुमार कोई ठोस तथ्य अपने लेख में नहीं देते है। वह सवाल करते हैं कि देश में वन टैक्स लग रहा है या टैक्स लगाने की नई प्रणाली लाई जा रही है? हालांकि रवीश कुमार ने अपनी बात को साबित करने लिए विभिन्न पार्टियों के नेताओं के बयानों का क्योट करके लिखा है।

रवीश लिखते हैं कि बीजेडी के सांसद एयू सिंह देव के बयान ''केंद्र सरकार के ही पास वीटो क्यों होना चाहिए, राज्य सरकारों के पास भी पॉवर होनी चाहिए''। बसपा के सतीश मिश्रा के वयान 'जीएसटी में वाइस चेयरमैन का पद होना चाहिए, जो केंद्र में सरकार चला रही पार्टी और विपक्षी पार्टी से अलग होना चाहिए ताकि संतुलन बना रहे'। एनसीपी के प्रफुल्ल पटेल का 'बीएमसी का राजस्व कई राज्यों से ज्यादा है। अगर राजस्व नहीं मिला तो मुंबई जैसे शहरों का काम रुक जाएगा'। शिवसेना के बयान 'जीएसटी के जरिए मुंबई को कमजोर करने की कोशिश की जा रही है। मुंबई ने कभी केंद्र से पैसा नहीं मांगा, लेकिन अब मुंबई का क्या होगा'? मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस के पी चिदंबदम के वयान 'दुनिया भर में टैक्स रेट 14.1 से लेकर 16.8 फीसदी तक हैं। भारत में भी अधिकतम दर तय होनी चाहिए। जीएटी के आने के बाद 24 से 26 फीसदी टैक्स लगता रहे तो कोई फायदा नहीं होगा। अगर सर्विस टैक्स 14.5 से बढ़कर 24 फीसदी हुआ तो महंगाई बढ़ जाएगी' आदि के बयानों का सहारा लिया है। रवीश कुमार

तंज भरे लहजे में सरकार से सवाल कर रहे हैं कि अमेरिका में जीएसटी नहीं हैं, वहां की जीडीपी 2.57 फीसदी है।

रवीश कुमार पोस्ट में आगे लिखते हैं कि जिन 140 देशों में जीएसटी लागू है वहां की हालात देखो क्या वहां इससे उछाल आया। रवीश में भविष्य आशंकाओं के साथ सवाल करते हैं कि भारत की जीडीपी में कितना उछाल आएगा और उस उछाल का आधार क्या है? रवीश तर्क देते हैं कि जिन देशों में जीएसटी लागू हुई है वहां पर न कर चोरी कम हुई और न कालेधन पर अंकुश लगा। इस तर्क के आधार पर वह यह सिद्ध करना चाहते हैं कि भारत में जीएसटी लागू करना ठीक नहीं है। हालांकि जीएसटी लागू हो चुकी है। अब तो यह वक्त ही बताएगा कि कौन सही है और कौन गलत? इसी प्रकार अंशुमान तिवारी 22 अगस्त, 2016 को ''जीएसटी हो सकता है कारगर बशर्ते''[48] शीर्षक के साथ लिखे गए लेख में सरकार को विभिन्न प्रावधानों का सुक्षाव देते हैं। सरकार द्वारा इन सुझावों का प्रयोग जीएसटी को सफल बना सकता है। हालांकि वे जीएसटी का विश्लेषण रवीश की तरह महंगाई और मंदी के मानकों के साथ नहीं करते हैं।

रवीश कुमार 4 अगस्त, 2016 की अपनी अन्य पोस्ट ''जीएसटी के नाम पर हिन्दी पाठकों की समाज सेवा''[49] में रवीश कुमार लिखते हैं कि आर्थिक मुद्दे पर सभी पार्टिया कमोवेश एक जैसा ही रुख दिखाती हैं। आर्थिक मामलों में भाजपा और कांग्रेस की एक जैसी ही नीति हैं। उनमें कोई ज्यादा विरोधाभास नहीं था। अब कैसे उम्मीद की जा सकती है कि उनमें कोई टकराव होगा। रवीश कुमार ने पूर्व वित्तमंत्री पी चिदंबरम और वर्तमान वित्तमंत्री अरुण जेटली पर तंज भरे अंदाज में लिखा है कि राज्यसभा में दोनों की उनकी बॉडी लेंग्वेज इस प्रकार की थी कि जैसे कि दोनों एक ही चैप्टर पढ़ कर आए हों साथ ही उसे अपना बताने की कोशिश का रहे हों।

यहां रवीश कुमार को दोनों के भाषणों में टकराव की उम्मीद थी। रवीश कुमार कांग्रेस की आलोचना करते हैं कि कांग्रेस जीएसटी के विरोध में कोई ठोस तर्क नहीं रख पाई। रवीश कुमार इसी पोस्ट में आगे लिखते हैं कि मैंने जीएसटी पर काफी पढ़ा है। वह तर्क देते हैं कि आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और न्यूजीलैंड की जीएसटी लागू होने के साथ इनकम टैक्स में कमी की गई है ताकि कर दाता महंगाई के झटके को सहन कर सके। रवीश कुमार सवाल करते हैं कि भारत में आयकर में कटौती पर कोई बहस नहीं हो रही वहीं दूसरी तरफ वित्तमंत्री पिछले दो बजट से कॉरपोरेट जगत पर से टैक्स घटाने का एलान किए जा रहे हैं। साथ ही वह अपने तर्क को सही साबित करने के लिए ऑस्ट्रेलिया की आर्थिक पत्रकार जेसिका इर्विन के हवाले से लिखते हैं कि जैसे ही आप इनकम टैक्स से जीएसटी की तरफ कदम बढ़ाते है, समाज में असमानता बढ़ने लगती है। यानी कि गरीबों की संख्या बढ़ती है। रवीश कुमार व्यंग्यात्मक शैली में लिखते हैं कि हो सकता है कि दुनिया में कई देश होंगे जहां जीएसटी आने के बाद लोगों कर आर्थिक स्थिति में सुधार आया हो। यदि ऐसा हुआ होता तो दुनिया में गरीबी बढ़ने की बात क्यों की जा रही है।

रवीश कुमार ने 27 अक्टूबर, 2916 के अपने लेख ''अर्थव्यवस्था की कौन सी तस्वीर सही है, बैंकों का पैसा क्यों डूब रहा है''[50] के माध्यम से बैंक के एनपीए की बात करते है। अपनी पोस्ट में वह कहते है कि यह समस्या एकाएक नहीं उपजी है। ये समस्या पिछले दस सालों से या और पहले से ही चली आ रही है। हालांकि इस विषय पर पहले कुछ कहा न गया हो। नेता इस बात को संसद में नहीं उठाते हैं। रवीश लोगों को शोध का भी सुझाव देते हैं कि वे अध्ययन करें कि कितने सांसद इस मुद्दे को लोकसभा में उठाते हैं। रवीश इकोनोमिक टाइम्स अखबार की खबर के माध्यम से कहते हैं कि जब ये

खबर आई कि एक्सिस बैंक का एनपीए बढ़ गया है तो बैंक के शेयरों में आठ फीसदी तक की गिरावट दर्ज की गई। पिछले एक साल में बैंक को यह सबसे बड़ी चपत थी।

रवीश कुमार लेख में लोगों को खुद एक्सिस बैंक का नॉन परफॉर्मिंग एसेट देखने की सलाह दे रहे हैं। आगे पोस्ट में रवीश एक्सिस बैंक की परफॉर्मिंग पर समीक्षा करते हुए बताते हैं कि पिछले एक साल में बैंक के 8722 करोड़ रुपए एनपीए से वसूली हुई। ये रकम उम्मीद से काफी कम थी। बैंक के लिए यह बुरे परिणाम के समान था। रवीश एनपीए के लिए पिछली व मौजूदा सरकार को इसके लिए दोषी ठहरा रहे है। यूपीए की सरकार ने भी इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और वर्तमान सरकार के दौरान भी एनपीए का बढ़ना जारी है। आगे वह वित्तमंत्री अरुण जेटली पर तंज कसते हुए कहते हैं कि इस सरकार के कार्यकाल में बैंकों का एनपीए बढ़ना जारी है, जबकि रोकने या वसूली के गंभीर बयान वित्तमंत्री के आ चुके हैं साथ ही और आते ही रहेंगे।

रवीश कुमार देश में नौकरियों की समीक्षा करते हुए लिखते हैं कि बेराजगारों की तादाद बढ़ रही है, नौकरी भी नहीं है, और है भी तो सैलरी नहीं बढ़ रही है। इसके साथ ही बैंकों ने क्रेडिट कार्ड के जरिए उधारी देने की गति को भी कम कर दिया है। वह यहां यह बताना चाह रहे हैं कि बैंक अब डर के माहौल में हैं। उन्हें आशंका है कि कहीं और झटका न लग जाए। एक्सिस और एचडीएफसी बैंक भी इसी डर के साए में है। रवीश कुमार यहां एक्सिस और एचडीएफ बैंकों की तरफदारी कर रहे है। दोनों बैंकों के पक्ष में अपनी बात को सिद्ध करने के लिए वह अखबारों की खबरों का भी हवाला देते हैं।

इसी प्रकार का लेख 7 जून, 2016 को अंशुमान तिवारी ने ‘‘अबकी बार बैंक बीमार’’[51] शीर्षक से लिखा है। लेख में बैंकों के एनपीए के बारे में लिखा है। वे लिखते हैं

कि भारतीय बैंकों का एनपीए न्यूजीलैंड, केन्या, ओमान, उरुग्वे जैसे देशों की जीडीपी से भी अधिक हो गया है। बैंकों का सालाना घाटा बढ़ रहा है। अंशुमान ने एनपीए डूबने को लेकर सरकार के साथ बैंकिंग व्यवस्था को भी कठघरे में खड़ा किया है। साथ ही वे सरकार, रिजर्व बैंक और बैंकों को सलाह देते हैं कि बैंकिंग व्यवस्था को तहस-नहस होने से बचाने के लिए सभी को मिलकर ठोस उपाय निकालने होंगे।

27 दिसंबर, 2016 को ''आयकर छूट के बराबर सभी नागरिकों को मिले पैसा''[52] शीर्षक से रवीश कुमार अपने ब्लॉग 'कस्बा' पर जीएसटी की हवा निकाल रहे हैं। सरकार द्वारा पहले कहा गया कि जीएसटी के आने से प्रत्यक्ष कर कम हो जाएंगे, वस्तुओं के दाम नीचे आ जाएंगे, कर चोरी बंद हो जाएगी। रवीश सवाल करते हैं कि क्या कर चोरी बंद हुई? महंगाई कम हुई? इसी प्रकार का लेख 3 अगस्त को अंशुमान तिवारी ने ''आगे और महंगाई है''[53] शीर्षक से लिखा है इसमें सरकार की आर्थिक नीतियों को महंगाई बढ़ाने वाला बताया गया है, इसके लिए उन्होंने विभिन्न आर्थिक आंकड़ों का अपने अनुसार विश्लेषण किया है।

उदारीकरण पर पोस्ट्स

12 जनवरी, 2016 को अंशुमान तिवारी ने ''उदार बाजार की गुलामी''[54] शीर्षक के साथ लिखते हैं कि कानूनी तौर पर परमिट राज खत्म होने के बावजूद भी भारतीय बाजार में अप्रत्यक्ष लाइसेंस राज जारी है। बाजार चुनिंदा कंपनियों के गुलाम बन गए हैं, सरकारी भी उनका सहयोग करती है। वे मुक्त और प्रतिस्पर्धी बाजार का समर्थन करते हैं और इसी क्रम में फेसबुक की फ्री बेसिक्स योजना का विरोध करते हैं, जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धा के खत्म होने की संभावना है। 19 जनवरी, 2016 को अंशुमान ने ''सुधारों के

सूचकांक''[55] शीर्षक के साथ सरकार की व्यापार और उद्योगों के संबंध में नियंत्रणकारी नीतियों की आलोचना की हैं। वे नई सरकारी कंपनियों या प्राधिकरणों के बनाने की भी आलोचना करते हुए लिखते हैं कि जब पहले से ही इस प्रकार प्राधिकरण मौजूद है तो इनकी क्या आवश्यकता है। हालांकि रवीश और सुधीर राघव के लेखों में समाजवाद की धारणा के समर्थन में व्यापार और उद्योगों के पर सरकारी नियंत्रण पर समर्थन दिखायी देता है।

11 फरवरी, 2016 को सुधीर राघव ने ''जेटली जी की अर्थ व्यथा''[56] शीर्षक से डाले लेख में सरकार की बजट नीतियों और आर्थिक सुधारों की आलोचना की है। आलोचना करने के लिए उन्होंने किस्सागोई का सहारा लिया है। लेख में बजट के किसी भी विशिष्ट पहलु या बिन्दु को लेकर आलोचना या समीक्षा नहीं की है। बजट से संबंधित न ही कोई आंकड़े हैं न ही कोई तुलनात्मक तथ्य। इसी प्रकार, 27 जुलाई को अंशुमान तिवारी को ''अधूरे-सुधारों का अजयाबघर''[57] शीर्षक से लिखे लेख में मोदी सरकार के आर्थिक सुधारों को अधूरा और अर्थव्यवस्था के लिए खतरे की आशंका से भरे हुए देखते हैं।

वहीं, अंशुमान तिवारी 12 सितंबर, 2016 को ''ढांचागत सुधारों की नई पीढ़ी''[58] लेख में लिखते हैं कि अत्यधिक योजनाओं का एक साथ लागू करने से अच्छा कुछ योजनाएं मजबूती के साथ शुरू करके पूर्ण की जाएं। आर्थिक सुधारों को आर्थिक उदारीकरण की दूसरी क्रांति के रूप में लागू किया जाए। सरकार की आर्थिक नीतियो को लेकर वे सरकार की समीक्षा, प्रशंसा और आलोचना एक साथ करते हैं।

विदेशी अर्थव्यवस्थाओं पर पोस्ट्स

रवीश कुमार अपने ब्लॉग पर 4 जनवरी, 2016 के लेख में ''चीन चीन चिल्ला के कौआ उड़ाओं''[59] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में चीन की अर्थव्यस्था की आलोचना करते हैं। वे लिखते हैं कि वहां सब कुछ वैसा नहीं है जैसा बताया जा रहा है। चीन में एक करोड़ तीस लाख फ्लैट खाली हैं, जो खरीददारों की बाट जोह रहे हैं। चीन में रियल स्टेट सेक्टर के अच्छे दिन नहीं चल रहे हैं। यही हाल नोएडा और राजधानी में है।

11 जून, 2016 को शशि शेखर ''स्विट्जरलैंड से आए सबक''[60] शीर्षक के साथ चुनावी रणनीति के तहत सरकारों द्वारा मुफ्त में या सब्सिडी पर दी जा रही वस्तुओं का विरोध करते हैं। वे कहते हैं कि इससे देश के नागरिक काम के प्रति लापरवाह हो जाते हैं और साथ ही सुरक्षा के खतरे भी बढ़ जाते हैं। इसके लिए शशि शेखर भारत के तीन राज्यों पंजाब, तमिलनाडू व पश्चिमी बंगाल जैसे राज्यों के उदाहरण तथ्यों के साथ रखते हैं। वे बताते हैं कि तमिलनाडू में किस प्रकार राजनीतिक लाभ के लिए लोगों को चुनावी वायदे के अनुसार मुफ्त में भोजन, साड़ियां, टीवी, सोने के मंगलसूत्र बांटे गए। इससे तमिलनाडू का राजस्व घाटा कई हजार करोड़ का हो गया है। इसके बावजूद इस प्रकार की योजनाएं चालू हैं। पश्चिमी बंगाल में चुनावी लाभ के लिए बांग्लादेशियों को घुसने से नहीं रोका गया, आज वे प्रदेश के साथ ही देश के लिए भी मुसीबत बन गए हैं। राज्य सरकारें अब भी सावधान नहीं है बोट बैंक की खातिर उनके पहचान पत्र बनवाए गए, प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष रूप से राज्य के बजट योजनाओं में उनके लिए आर्थिक प्रावधान किए जाते हैं।

शशि शेखर भारतीय आर्थिक नीतियों पर कटाक्ष करते हुए स्विट्जरलैंड का उदाहरण आदर्श रूप में सामने रखते हैं। वहां वर्ष 2016 में देश में बढ़ती बेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए ''बेसिक इनकम स्विट्जरलैंड'' नाम के संगठन को प्रस्ताव

था कि प्रत्येक नागरिक के लिए सरकार की ओर से न्यूनतम 2500 स्विस फ्रैंक मासिक दिए जाएं। संगठन का तर्क था कि इससे लोगों की न्यूनतम आय तय करने से उनकी गरीबी से लड़ने में मदद मिलेगी व गरीब और अमीर के बीच की खाई को पाटा जा सकता है। इस प्रस्ताव पर देश भर में जनमत संग्रह कराया गया, लेकिन लोगों ने इसे खारिज कर दिया। शशि शेखर ने एक वर्ष के अंदर केवल एक ही लेख आर्थिक विषय पर लिखा है। इसमें वे राष्ट्र के आर्थिक व सुरक्षा हितों को नकार कर वोट बैंक के लिए चलायी जाने वाली सामाजिक कल्याण योजनाओं का विरोध करते हैं। जबकि रवीश व सुधीर राघव राष्ट्र शब्द व उसके सिद्धांत का ही विरोध करते हैं।

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
उदारीकरण	0.00	0.00	19	0.0514	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
जीएसटी	98	0.2948	81	0.2192	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नोटबंदी/ विमुद्रीकरण/ डिमॉनेटाइजेशन	76	0.2286	14	0.0352	0.00	0.00	18	0.1970	12	0.4741
भ्रष्टाचार	03	0.0090	15	0.0406	0.00	0.00	23	0.2517	01	0.0395
जीडीपी	35	0.1053	35	0.0947	0.00	0.00	07	0.0766	0.00	0.00
विकास	05	0.0150	16	0.0433	0.00	0.00	25	0.2736	01	0.0395

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
किसान	46	0.1348	11	0.0298	01	.0824	07	0.0766	08	0.3161
महंगाई/मुद्रा स्फीति	05	0.0150	70	0.1895	0.00	0.00	01	.0109	01	0.0395
नौकरी/ रोजगार	22	0.0662	28	0.0758	02	0.1699	33	0.3611	01	0.0395
सब्सिडी	01	0.0030	34	0.0920	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

संदर्भ सूची :

1. फ्रेकिंन, बॉब. (2017). द फ्यूचर ऑफ जर्नलिज्म इन एज ऑफ डिजिटल मीडिया एंड इकोनॉमिक अनसर्टनिटी. रॉटलेज पब्लिकेशन
2. नटराजन, जे. (1955). भारतीय पत्रकारिता का इतिहास. पब्लिकेशन डिविजन. भारत सरकार. नई दिल्ली.
3. तिवारी, अंशुमान. (2016, जनवरी, 25). मंदी की बैलेस सीट. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/
4. तिवारी, अंशुमान. (2016, फरवरी, 3). मंदी स्वच्छता मिशन. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/
5. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 3). 2022 का किसान बनाम 2014 का किसान. Retrieved from http://naisadak.org/2022-का-किसान-बनाम-2014-का-किसान/
6. तिवारी, अंशुमान. (2016, मार्च, 6). ग्रोथ के सूरमा. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/
7. तिवारी, अंशुमान. (2016, फरवरी, 8). सबसे बड़े मिशन का इंतजार. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/
8. राघव, सुधीर. (2016, नवंबर, 21). गरीब और किसान ही निशाने पर. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/11/blog-post_21.html
9. तिवारी, अंशुमान. (2016, फरवरी, 17). इक्यानवे के फेर में रेलवे. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/
10. राघव, सुधीर. (2016, फरवरी, 26). प्रभूजी मेरी रेल से खेल न करो. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/02/blog-post_26.html

11. तिवारी, अंशुमान. (2016, फरवरी, 24). तीस बनाम सत्तर. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

12. तिवारी, अंशुमान. (2016, सितंबर, 21). बजट बंद होने से दौड़ेगी रेल. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

13. तिवारी, अंशुमान. (2016, अप्रैल, 4). व्यापार कूटनीति का शून्य. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

14. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, अप्रैल, 29). तो ये देश का इकोनॉमिक मॉडल है. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/04/blog-post_29.html

15. तिवारी, अंशुमान. (2016, अप्रैल, 11). एक लाख करोड़ का सवाल. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

16. तिवारी, अंशुमान. (2016, जून, 14). आंकड़ो की चमकार. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

17. तिवारी, अंशुमान. (2016,). रघुराम राजन और मध्य वर्ग. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

18. तिवारी, अंशुमान. (2016, जुलाई, 5). बार-बार मिलने वाला आखिरी मौका. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

19. तिवारी, अंशुमान. (2016, जुलाई, 20). ताकि नजर आए बदलाव. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

20. तिवारी, अंशुमान. (2016, सितंबर, 6). आखिरी मंजिल की चुनौती. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

21. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 25). ईएफजीएच...जीडीपी...घाघों रानी...कितना पानी... Retrieved from http://naisadak.org/e-f-g-h-gdp/

22. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, नवंबर, 23). गरीबों पर कहा सबने लेकिन गरीबों की सुनी किसने?. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/11/blog-post_23.html
23. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 1). वो रहा काला धन वो आ गया अरे वो तो. Retrieved from http://naisadak.org/2016/03/page/3/
24. तिवारी, अंशुमान. (2016, अगस्त, 29). सबसे बड़ी लड़ाई का निर्णायक मोड़. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/
25. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 6). पनामा पेपर्स को समझना हुआ आसान, पढ़िए तो मेहरबान. Retrieved from http://naisadak.org/panama-papers-for-you-readers/
26. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 6). पमामा पेपर्सः फर्जी कंपनियों में कालाधन खपाया गया? . Retrieved from http://naisadak.org/panama-papers/
27. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मई, 4). भ्रष्टाचार में डूबे देश में हेलीकॉप्टर की क्या औकात. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/05/blog-post.html
28. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, दिसंबर, 13). पहले सिस्टम करप्ट था अब करप्शन ही सिस्टम तो नहीं हो चला. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/12/blog-post_13.html
29. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 12). दादी नानी को चोर बना, ये फैसला ले गया उनकी आजादी भी. Retrieved from http://naisadak.org/women-have-lost-their-freedom-and-cash/
30. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 13). क्या व्यापारी-बिजनेश क्लास चोर है? काला धन के सरदार है?. Retrieved from http://naisadak.org/entire-business-class-is-tented-as-a-black-money-ka-sardar/

31. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 14). सवाल पूछना काला धन का समर्थन नहीं है सर. Retrieved from http://naisadak.org/asking-is-not-supporting-black-money/

32. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, दिसंबर, 23). मोदी जी नोटबंदी हो गई, लूटबंदी कब होगी. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/12/blog-post_23.html

33. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 16). हम साथ है लेकिन....यहां से सुनिए चांदनी चौक के व्यापारियों को....... Retrieved from http://naisadak.org/we-are-with-modi-ji-but-and-story-begings-after-this-but/

34. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 19). फैसले की नीयत तो सही लेकिन.... Retrieved from http://naisadak.org/good-decision-but/

35. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 22). कैशलेस हो जाने से टैक्स चोरी नहीं बंद होती है. Retrieved from http://naisadak.org/why-usa-has-so-much-tax-evasion/

36. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, नवंबर, 15). संसद से नहीं बैंक से निकलेगा लोकतंत्र का राग. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/11/blog-post_15.html

37. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 23). क्या खुशी ही सबसे बड़ी खबर है?. Retrieved from http://naisadak.org/kya-khushi-hi-sabse-barhee-khabar-hai/

38. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 30). किराएदारों, कामगारों को अनैतिक बनाकर कैशलकश नैतिकता कायम नहीं हो सकती. Retrieved from http://naisadak.org/so-called-cashless-morality-should-not-force-workers-to-compromise-with-their-morality/

39. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 7). आर्थिक खबरों की पाठशाला. Retrieved from http://naisadak.org/from-business-papers/

40. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, दिसंबर, 14). तो क्या 30 दिसंबर को देश असफल साबित होगा. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/12/blog-post_14.html

41. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 16). सरकार है या बिग बाजार. Retrieved from http://naisadak.org/govt-of-lucky-bumper-draw/

42. राघव, सुधीर. (2016, दिसंबर, 25). उल्लुओं का उल्लूपन. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/12/blog-post_25.html

43. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 30). बिजनेस अखबारों को बांचते हुए, स्वर्ण युग की तलाश. Retrieved from http://naisadak.org/golden-age-via-business-news-paper/

44. राघव, सुधीर. (2016, दिसंबर, 27). नोटबंदी के बाद की प्लानिंग. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/12/blog-post_27.html

45. कुमार, रवीश. (2016, जून, 22). क्या एफडीआई निवेश से गरीब लोग अमीर हो जाएंगे. Retrieved from http://naisadak.org/golden-age-via-business-news-paper/

46. तिवारी, अंशुमान. (2016, जुलाई, 11). तो फिर मत लाइये जीएसटी. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

47. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 4). क्या जीएसटी से टैक्स चोरी रुक जाएगी?. Retrieved from http://naisadak.org/kya-gst-se-tax-ki-chori-ruk-jayegi/

48. तिवारी, अंशुमान. (2016, अगस्त 22). जीएसटी हो सकता है कारगर बशर्ते.... Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

49. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 4). जीएसटी के नाम पर हिन्दी पाठकों की समाज सेवा. Retrieved from http://naisadak.org/gst-is-a-game-or-game-changer-ravish/

50. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 27). अर्थव्यवस्था की कौन सी तस्वीर सही है, बैंकों का पैसा क्यों डूब रहा है. Retrieved from http://naisadak.org/why-banks-npa-are-rising/

51. तिवारी, अंशुमान. (2016, जून, 7). अबकी बार बैंक बीमार. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

52. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 27). आयकर छूट के बराबर सभी नागरिकों को मिले पैसा. Retrieved from http://naisadak.org/everyone-should-get-the-same-amount/

53. तिवारी, अंशुमान. (2016, अगस्त, 3). आगे और महंगाई है. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

54. तिवारी, अंशुमान. (2016, जनवरी, 12). उदार बाजार की गुलामी. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

55. तिवारी, अंशुमान. (2016, जनवरी, 19). सुधारों के सूचकांक. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

56. राघव, सुधीर. (2016, फरवरी, 11). जेटली जी की अर्थ व्यथा. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/02/blog-post_11.html

57. तिवारी, अंशुमान. (2016, जुलाई, 27). अधूरे-सुधारों का अजयाबघर. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

58. तिवारी, अंशुमान. (2016, सितंबर, 12). ढांचागत सुधारों की नई पीढ़ी. Retrieved from https://artharthanshuman.blogspot.in/2016/

59. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 4). चीन चीन चिल्ला के कौआ उड़ाओं. Retrieved from http://naisadak.org/chin-chin-chilla-ke-kauwa-udao/

60. शेखर, शशि. (2016, जून, 11). स्विट्जरलैंड से आए सबक. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-lessons-from-switzerland-538783.html

आतंकवाद विषय से संबंधित ब्लॉग्स

1 जनवरी, 2016 से 31 दिसंबर, 2016 दुनिया भर में करीब 1801 आतंकी हमले हुए[27], जिनमें हजारों जानें गईं और लाखों लोग प्रभावित हुए। इतने आतंकवादी हमलों को मुख्य धारा मीडिया द्वारा रिपोर्टिंग करना असंभव है। इस समयावधि में भारतीय मीडिया द्वारा सबसे ज्यादा कवरेज हासिल करने वाली आतंकी घटना रहीं वे हैं, भारत, फ्रांस, अमेरिका व पाकिस्तान में हुए बड़े आतंकी हमले।

भारत में वर्ष 2016 के दौरान आतंकवादी कई बड़ी आतंकी घटनाओं को अंजाम देने में सफल रहे, जिसमें प्रमुखरूप शामिल हैं, 2 जनवरी, 2016 को पंजाब प्रांत के पठानकोट वायु सेना स्टेशन पर आतंकियों ने हमला। मुठभेड़ में सभी आतंकी मारे गए व दो जवानों का अपनी जान गवानी पड़ी। सुरक्षा कारणों से बेहद संवेदनशील जगह पर हमला होने के कारण मीडिया ने इस घटना को तमाम एंगलों से दो हफ्ते से भी ज्यादा दिखाया। अधिकांश टीवी चैनलों पर रक्षा विशेषज्ञों व राजनीतिक लोगों के साथ पैनल डिसक्शन हुए।

इसके बाद 25 जून, 2016 को पंपोर में आंतकी हमला हुआ व 18 सितंबर, 2016 को उड़ी में आतंकवादियों ने हमला किया। इन घटनाओं में 20 से अधिक लोग हताहत हुए। 29 नवंबर को नगरोटा में हुए आतंकी हमले में दर्जन भर से अधिक लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। इनके अलावा 16 मार्च, 2016 को आतंकियों ने पड़ोसी देश पाकिस्तान के पेशावर में सरकारी कर्मचारियों को ले जा रही एक बस को बम से हमला कर उड़ा दिया। इस हमले में 15 लोगों की मौत हुई और 25 से ज्यादा घायल। पड़ोसी देश होने के नाते भारतीय मीडिया ने घटना को प्रमुखता से दिखाया। मौजूदा दशक में भारत में

आतंकवाद एक ऐसा विषय बन चुका है, जिस पर अभिव्यक्ति की राह आसान नहीं है। यूं तो आतंक की हिंसा का समर्थन करने का साहस कोई भी नहीं करता पर सवाल इतना आसान नहीं है। पत्रकारिता की आत्मा विषय की गहराई में बसती है। आतंक की गहराई में जाने का अर्थ यह कि आतंकवाद से जुड़े धार्मिक-सांप्रदायिक मसलों को छूना-छेड़ना, जो इतना सहज नहीं।[1] इसी प्रकार से आतंकवाद के मसले पर लिखने का एक खतरा यह है कि राष्ट्रवाद और देशद्रोह की जलती बहस में पड़ना है, जहां आपका एक लेख आपको एक पाले से घसीटकर सीधे दूसरे पाले में ढकेल सकता है। इसके अतिरिक्त आतंकवाद का अर्थ अक्सर मानवाधिकार, सेक्युलरवाद और कभी कभी वैचारिक स्वतंत्रता तक से चाहे अनचाहे जोड़ दिया जाता है।[2]

एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि संचार की दुनिया में मौन का अपना खास महत्व है। उमा नरूला कहती हैं कि किसी महत्वपूर्ण विषय मिसाल के तौर पर यहां आतंकवाद पर आप अगर मौन रहते है तो बहुत कुछ संप्रेषित कर रहे होते है।[3] सो यह भी महत्वपूर्ण है कि आतंकवाद से जुड़े अहम मसले पर कौन पत्रकार कब और कितना मौन रह गया। इसी क्रम में देखा जाए तो 1 जनवरी, 2016 से 31 दिसंबर, 2016 के बीच रवीश कुमार ने आतंकवाद से संबंधित 6 पोस्ट्स, अंशुमान तिवारी ने 1, शशि शेखर ने 5 और पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 10 पोस्ट्स क्रमश अपने-अपने ब्लॉग्स पर डाली हैं।

ग्राफ के X अक्ष Y अक्ष निम्नानुसार हैं -

X अक्ष - पत्रकारों के नाम

Y अक्ष - उपरोक्त पत्रकारों द्वारा आतंकवाद विषय से संबंधित ब्लॉग्स पोस्ट्स की संख्या

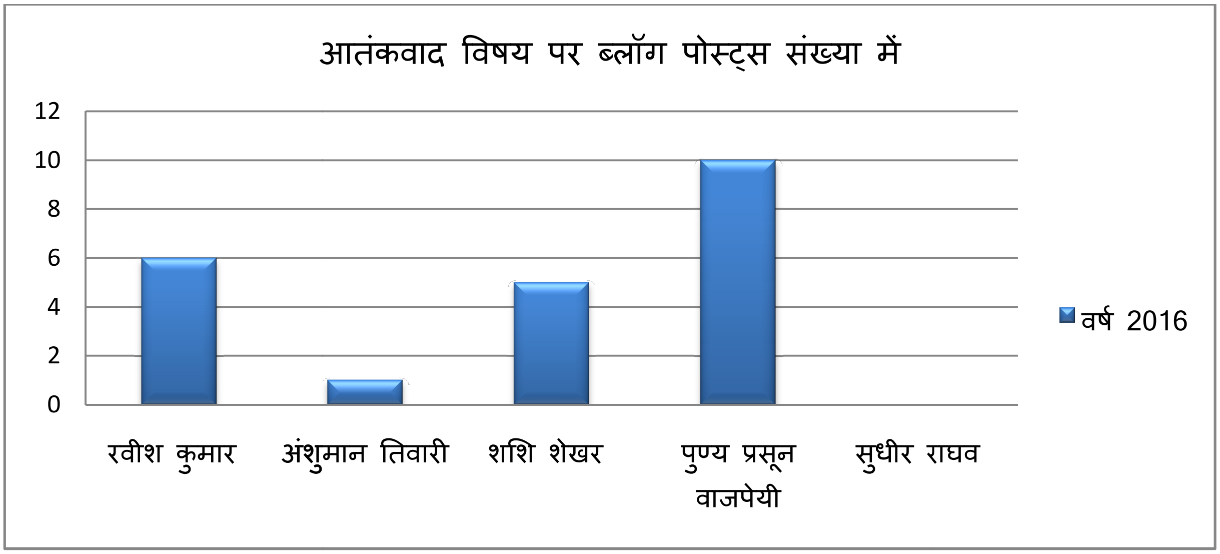

रवीश कुमार, अंशुमान तिवारी, शशि शेखर, पुण्य प्रसून वाजपेयी व सुधीर राघव द्वारा अपने **अपने ब्लॉग्स पर लिखे गए विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों में से**-आतंकवाद विषयों से संबंधित आतंकवाद लेखों का प्रतिशत चार्ट

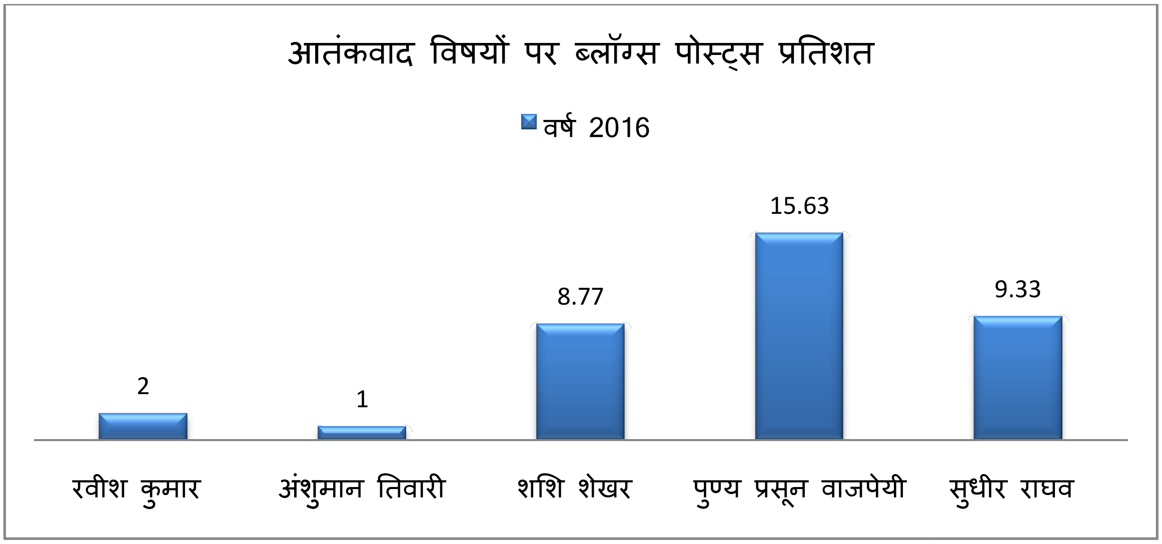

आतंकवाद एवं धार्मिक कट्टरता

धार्मिक कट्टरता का आतंक से रिश्ता बेहद संवेदनशील विषय है। पूरे विश्व के सामने यह रिश्ता चुनौती बना हुआ है। धार्मिक कट्टरतावाद किस प्रकार मन में और बाद में कार्यरूप में आतंकवाद को जन्म देती है इसे उजागर करना पत्रकारों से अपेक्षित किया जा सकता है। पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 13 मई, 2016 को 'दो धमाके, दो धर्म, दो जांच'[4] में लिखा 'तो जश्न मनाइये आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। लेकिन धर्म के आसरे राजनीति का आंतक जरुर होता है। क्योंकि 8 सितंबर, 2006 को मालेगांव के हमीदिया मस्जिद के पास हुये धमाके में जिन नौ लोग नूरुलहुदा समसूद दोहा, शब्बीर अहमद मशीउल्लाब, रईस अहमद रज्जब अली, सलमान फ़ारसी, फारोग़ इक़बाल मक़दूमी, शेख़ मोहम्मद अली आलम शेख़, आसिफ़ ख़ान बशीर ख़ान और मोहम्मद ज़ाहिद अब्दुल मजीद को पकडा गया संयोग से सभी मुस्लिम थे, और 29 सितंबर 2008 को मालेगाव के अंजुमन और भीकू चौक पर जो धमाके हुये, उसमें जिन 16 लोगों साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, शिव नारायण कलसंगरा, श्याम भंवरलाल साहू, प्रवीण तक्कल्की, लोकेश शर्मा, धन सिंह चैधरी, रमेश शिवाजी उपाध्याय, समीर शरद कुलकर्णी, अजय राहिरकर, जगदीश शिन्तामन म्हात्रे, कर्नल प्रसाद श्रीकांत पुरोहित, सुधाकर धर द्विवेदी, रामचंद्र कलसंग्रा और संदीप डांगे को पकड़ा गया संयोग से सभी हिन्दू थे'।

9 जुलाई 2016 को शशि शेखर अपनी पोस्ट 'नाइकः नायक या खलनायक'[5] में वह जाकिर नायक की वैचारिक ईमानदारी पर सवाल उठा रहे हैं। नाइक की तकरीरें सुनकर युवा दहशतगर्दी की ओर आकर्षित होते हैं। उनकी 'पीस टीवी' देश में वैन कर दिया गया फिर भी कुछ केवल ऑपरेटरों ने चोरी छिपे उनकी तकरीरों को दिखाया। बांग्लादेश की राजधानी ढाका के हत्यारों में से दो नाइक के प्रशंसक थे। यहां शशि शेखर अपनी पोस्ट

में हैदराबाद में पकड़े गए लोग जो उसके लिए अभियान चला चुकें हैं, उसका भी उल्लेख करते हैं। आगे वह बताते हैं कि आईएस में शामिल होने वाले कुछ भटके युवा भी नाइक के 'फॉलोअर' रहे हैं। ब्रिटेन और कनाडा में नाइक के घुसने तक पर भी रोक लगा दी गई। वहीं मलेशिया ने उनकी तकरीर पर पाबंदी है। आतंकवाद की व्याख्या करते हुए शशि शेखर जाकिर नाइक को आगाह करते हैं कि राजदंड भले ही उनका कुछ न बिगाड़ सके पर भारत का 'समाजधर्म' उन्हें खुद से जुदा कर देगा। मुस्लिम समाज के लोगों में नाइक के खिलाफ पनप रहा आक्रोश इस बात का प्रमाण है।

शशि शेखर यहां अपनी पोस्ट के जरिए बताते हैं कि जाकिर नायक की तकरीरों ने किस प्रकार देश के लोगों को गुमराह किया। उसकी मंडली में किस तरह से लोग जाते थे, इसका भी उल्लेख शशि शेखर ने किया है। देश में किस प्रकार पीस टीवी ने लोंगों के दिमाग में अशांति फैलाने का कार्य किया इस पर शशि शेखर ने विस्तार से प्रकाश डाला है। आतंकवाद की व्याख्या करते हुए वह बताते हैं कि टीवी पर उनकी तकरीरे सुनकर युवा गुमराह हुए और आतंकवाद की राह पकड़ी। कश्मीर मे प्रतिबंध के बावजूद पीस टीवी को केबल टीवी पर दिखाया जाता रहा। वे आरोप लगाते हैं कि इसके लिए सरकार कम दोषी नहीं है। जाकिर नाइक की बातों में फंसकर लोग भटकाव के रास्ते पर चले गए। विदेश में जब उसके घुसने पर पाबंदी थी तब देश में उस पर कोई पाबंदी नहीं थी।

दूसरी तरफ, जिस अवधि में देश में आतंकी हमलों का मामला चर्चा का विषय बना हुआ था उस मौके पर एनडीटीवी के रवीश कुमार आतंकवाद के धर्म से रिश्ते पर मौन साधे रहे।

आतंकवाद का सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष

आतंकवाद किस सामाजिक जमीन पर अपनी जड़े फैला रहा हैं, इसका विश्लेषण बेहद अहम है पर इस विषय पर भी इन पत्रकारों ने कम ही कलम चलायी है। पोस्ट संख्या के आधार पर इस विषय पर पांच वरिष्ठ पत्रकारों में सर्वाधिक सक्रिय पुण्य प्रसून वाजपेयी रहे। 1 जून, 2016 की पोस्ट में घाटी में आईएसआईएस के लहराते झंडों पर पुण्य प्रसून वाजपेयी कहते हैं-

'अंतर सिर्फ झंडों का ही नहीं आया है, बल्कि चेहरा ढक कर जो हाथ झंडे लहराते हैं और नारे लगाते हैं, वह युवा चेहरे गरीब या अनपढ़ नहीं हैं, बल्कि पढ़े लिखे हैं और अच्छे परिवारों से आते हैं। यानी कश्मीर में भी आतंकवाद का चेहरा बदल रहा है। अब कश्मीर का पढ़ा-लिखा युवा मौजूदा मुफ्ती सरकार या दिल्ली की मोदी सरकार के खिलाफ नारे लगाते हुये अपनी मौजूदगी आतंक के साथ जोडने से नहीं कतरा रहा है। कश्मीर में डाक्टरी की पढ़ाई करने वाले से लेकर इंजीनियर और पीएचडी करने वाले छात्र हाथों में बंधूक थाम कर जब खुद को आतंकवादी करार देने से नहीं कतराते और अपनी तस्वीर को सोशल मीडिया में शेयर करने से नहीं कतराते'।

28 जून, 2016 को लिखे लेख 'कश्मीर में गिलानी-यासिन की पीढ़ी के बाद का आतंक'[6] में पुण्य प्रसून वाजपेयी लिखते हैं कि 'जिस तरह कूपवाड़ा में मारा गया आतंकवादी समीर अहमद वानी के जनाजे में शामिल होने के लिये ट्रकों में सवार होकर युवाओं के जत्थे दर जत्थे सोपोर जा रहे हैं, उसने यह नया सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या आंतक की परिभाषा कश्मीर में बदल रही है या फिर आतंक का सामाजिकरण हो गया है। क्योंकि नई पीढी को इस बात का खौफ नहीं कि मारा गया समीर आंतकवादी था

और वह उसके जनाजे में शामिल होंगे तो उनपर भी आतंकी होने का ठप्पा लग सकता है, बल्कि ऐसे युवाओं को लगने लगा है कि उनके साथ न्याय नहीं हो रहा है और हक के लिये हिंसा को आंतक के दायरे में कैसे रखा है'।

पुण्य प्रसून वाजपेयी 11 जुलाई, 2016 के आर्टिकल 'जन्नत कैसी हो गई लाल'[7] में लिखते हैं - 'आज का सच यही है कि घाटी में एक आतंकवादी के पक्ष में हुजूम उमड़ रहा है और आज का सच यही है कि घाटी में आजादी के नारे भी लग रहे हैं और लोग सेना के सामने आकर भिड़ने से नहीं घबरा रहे हैं, लेकिन इन सबके बीच जेहन में एक ही सवाल है कि कश्मीर का होगा क्या'?

रवीश कुमार 15 जुलाई, 2016 को 'कश्मीर की अवाम की शिकायतें कितनी वाजिब'[8] शीर्षक से डाली पोस्ट में आतंकियों के पक्ष में जुटती भीड़ पर सत्ता पक्ष को ही निशाने पर लेते हुए लिखते हैं कि 'एक तरह से प्रधानमंत्री ने सेपरेट स्टेट की बात सिरे से खारिज कर दी है, लेकिन क्या सुपर स्टेट बनाने की दिशा में उनकी या महबूबा की सरकार अपने वादों पर खरा उतर रही है। रवीश कुमार सवाल करते हैं कि लोग क्यों उलझे हुए हैं कि इतनी बड़ी संख्या में बुरहान के जनाज़े में लोग कैसे आ गए?

अर्थ केन्द्रित इस व्यवस्था के दौर में भी आतंकवाद के अर्थतंत्र से रिश्ते पर भी वरिष्ठ पत्रकार संभल कर कलम चला रहे हैं। 20 जुलाई, 2016 की पोस्ट में पुण्य प्रसून वाजपेयी 'देश के भीतर का सच'[9] में लिखते हैं 'क्या सुरक्षाकर्मियों के आसरे ही सामाजिक-आर्थिक हालातों से राजनीति मुंह चुरा रही है या फिर राजनीतिक चुनावो के अंतर्विरोधों की वजह से सरकारें कोई ठोस नीति बना नहीं पा रही हैं। या फिर नीतियां बनाकर भी अमल में ला नहीं पा रही है और संसद में बार बार यही सवाल कश्मीर को

लेकर भी उठा कि समाधान का रास्ता तो राजनीतिक तौर पर ही निकालना होगा। अन्यथा घायलों की बढ़ती तादाद और मौत की बढती संख्या को ही हमेशा गिनना पड़ेगा’।

पुण्य प्रसून वाजपेयी लेख में आगे कश्मीर में आतंकवाद, पूर्वोत्तर में उग्रवाद और मध्य भारत में नक्सलवाद को आंकड़ो के साथ पिछ्ले 16 वर्ष की देश की व्यथा को साझा करते हैं। वे लिखते हैं कि इतने समय में 45 हजार 469 जानें जा चुकी हैं। 3335 सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए और 12466 आतंकवादी मारे गए, हालांकि लहूलुहान नार्थ ईस्ट में भी हुआ। इस दौरान सरकारें आती और जाती रहीं। आगे वह अपनी पोस्ट में सवाल उठाते हैं कि इससे निपटने की सरकार की कोई ठोस रणनीति नहीं है। महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कश्मीर, नार्थ ईस्ट और नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों के लिए सरकार के पास कोई ठोस योजना नहीं है। इस दौरान सरकारें आईं और गईं, लेकिन हालात जस के तय हैं। हालांकि पुण्य प्रसून वाजपेयी अपनी पोस्ट में पूछते हैं कि कब तक सरकारें सुरक्षा बलों के सहारे रहेंगी?

शशि शेखर 2 जुलाई, 2016 को लिखते हैं कि यह अफसोस की बात है कि इन आत्मघाती लोगों से जूझने के लिए सरकारों के बजट में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। आंतरिक और बाहरी सुरक्षा कल्याणकारी योजनाओं पर भारी पड़ रही है। शशि शेखर इससे एक नया खतरा पैदा होता हुआ देखते हैं। अगर आतंकवाद के कारण सामाजिक योजनाओं पर इसी तरह पाला पड़ता रहा, तो समाज के शोषितों और वंचितों को मुख्यधारा में लाना मुश्किल होता जाएगा। शोषित-वंचित लोग दहशतगर्द संगठनों की पहली पसंद होते हैं। उन्हें आसानी से बरगलाया जा सकता है। मुंबई का हत्यारा कसाब इसका उदाहरण है। यहां शशि शेखर भविष्य की योजनाओं की बात करते हैं। वह

आतंकवाद को अलग नजरिए से देखते हैं। अगर सरकार का इस और ध्यान नहीं गया तो जनता के पैसा अलग मद में ही खर्च हो जाएगा।

आतंकवाद का राजनीतिक पक्ष - भारतीय

कुछ पत्रकारों ने आतंकवाद के मुद्दों को सांप्रदायिक राजनीति से जोड़ा है और कुछ ने इसका रिश्ता राजनीति से जोड़ा है। पुण्य प्रसून वाजपेयी आतंक के मसले को परोक्ष रूप से जनइच्छा से जोड़ते हुए 11 जुलाई, 2016 के आर्टिकल 'जन्नत कैसी हो गई लाल'[10] में लिखते हैं - 'वैसे यही सवाल महात्मा गांधी से भी पूछा गया था कि आजादी के बाद कश्मीर का क्या होगा। तो गांधी ने जवाब दिया था 'कश्मीर का जो भी होगा-वो आपके मुताबिक होगा'। 27 अक्टूबर, 1947 को महात्मा गांधी ने एक सभा में कहा- 'मैं आदरपूर्वक कहना चाहता हूं कि कश्मीर के लोगों को ही राज्य में लोकप्रिय शासन लाना है। ऐसा ही हैदराबाद और जूनागढ़ के मामले में भी है। कश्मीर के वास्तविक शासक कश्मीर के लोग होने चाहिए। यानी गांधी ने कश्मीर के लोगों की इच्छा को सर्वोपरि माना लेकिन सरकारों ने लोगों को ही हाशिए पर डाल दिया। नतीजा इसी का है कि घाटी के भीतर एक झटपटाहट है, और बुरहान उस आक्रोश को निकालने की तात्कालिक वजह'।

इसी लेख में पुण्य प्रसून वाजपेयी कश्मीर की पुरानी बातों का जिक्र करते हैं कि एक वह दौर था जब 1975 की शेख अब्दुल्ला की जीत के बाद रैली में लाल चौक पर पूरा कश्मीर उमड़ पड़ा था। वर्ष 1989 में रूबिया सईद के बाद से आतंकवाद ने घाटी ने दस्तक दी। पुण्य प्रसून वाजपेयी लाल चौक की हर घटना के लिए वह दिल्ली सरकारों को जिम्मेदार ठहराते हैं। वे आरोप लगाते हैं कि जवाहर लाल नेहरू ने आजादी के बाद ही अपनी चाल चलनी शुरू कर दी थी। उन्हीं के इशारे पर 17 मार्च, 1948 को कश्मीर

के पीएम बने शेख अब्दुल्ला को अगस्त 1953 में सत्ता से बेदखल करने के साथ ही जेल में भी डाल दिया गया। आगे वे लिखते हैं कि 20 वर्ष बाद नेहरू की पुत्री इंदिरा गांधी ने वर्ष 1974 में शेख अब्दुल्ला के साथ नया प्रयोग किया तो, एकाएक जो शेख अब्दुल्ला 1953 में विलेन थे, वही शेख अब्दुल्ला 1975 में हीरो बन गए।

पुण्य प्रसून वाजपेयी जहां आतंक की वजह सांप्रदायिक राजनीति की बजाय जनता की इच्छा बताते हैं वहीं रवीश की निगाह में समस्या की जड़ सुरक्षाबल हैं। वे 15 जुलाई, 2016 'कश्मीर की अवाम की शिकायतें कितनी वाजिब' शीर्षक से डाली पोस्ट में बताते हैं कि 'दिल्ली की चर्चाओं में सवाल पहले से फिक्स्ड हैं। समझने की जगह अपनी-अपनी समझ थोपने का प्रयास हो रहा है। वहां के लोगों की शिकायत तमाम प्रकारों के सुरक्षाबलों से है। यहां के लोगों को सिर्फ सुरक्षाबलों की आवाज़ सुनाई देती है। ये एक अंतर है। ये एक दीवार है कि आप हमेशा उस तरफ देखकर बात करते हैं, इस तरफ नहीं'।

8 जनवरी, 2016 को ब्लॉग आर्टिकल 'भारत-पाकिस्तान के बीच एलओसी का सच'[11] में पुण्य प्रसून वाजपेयी मोदी सरकार को साहसपूर्ण कदम उठाने की मांग करते हुए कहते हैं 'अतीत के उन रास्तो को भी टटोलना होगा जो कभी इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान को तोड़कर बांग्लादेश बनाया, या फिर फिर वाजपेयी ने एलओसी पर एक लाख सैनिकों की तैनाती कर मुशर्रफ के गरुर को तोड़ा'। दूसरी तरफ रवीश 15 जुलाई 2016, की पोस्ट में सीधे कहते हैं ''सवाल हीरो बनाम आतंकवाद का नहीं है''[12]। सवाल है संवाद का। कश्मीर से आप कैसे बात करते हैं, क्या समझ कर बात करते हैं। कश्मीर के बहाने उत्तर भारत की राजनीति अगर सेट करेंगे तो इसका नतीजा शायद वो नहीं हो जो आप इन बहसो में जीतकर हासिल कर लेना चाहते हैं'।

इसी प्रकार, 15 जुलाई 2016 को “कश्मीर में कब सुधरेंगे हालात”[13] शीर्षक से अपनी पोस्ट में रवीश कुमार कश्मीर के हालात पर चर्चा करते हैं। वह वहां पर की जा रही रिर्पोर्टिंग पर अपनी नाखुशी जताते हैं। वह बुरहान बानी पर की जा रिपोर्टिंग को सही नहीं ठहराते हैं। वह अपने सहयोगी पत्रकार बरखा दत्त की कवरेज को सही ठहराते हैं। उनके अनुसार बरखा दत्त की कवरेज के सत्य दिखाया रही है। कश्मीरी युवा आतंक के रास्ते को अपना रहे हैं। जबकि सरकारी एजेसिंयों के अनुसार ऐसा नहीं हैं। रवीश कुमार अपनी पोस्ट में उन दूसरी मीडिया खबरों पर कोई चर्चा नहीं करते हैं, जो बताती हैं कि कश्मीर का अधिकांश युवा अमन, चैन और शांति चाहता हैं। राज्य का विकास चाहता है।

16 जुलाई, 2016 को रवीश कुमार आतंकवाद के मसले पर सरकार पर राजनीति करने का आरोप लगाते हैं। वे “कश्मीर के बहाने अफवाहों को मैटेरियल आ गया”[14] में लिखते हैं ‘कश्मीर के हालात को लेकर उत्तर और पश्चिम भारत की राजनीति गदगद है। उसे एक और मौका मिल गया है कश्मीर के बहाने कथित राष्ट्रवाद की आड़ में बहस को हिन्दू बनाम मुस्लिम की मंज़िल पर ले जाने का’।

आतंकवाद के मुद्दे की शशि शेखर अलग तरीके से समीक्षा करते हैं। वह 25 नबंवर 2016 को “कश्मीर को कारागार नहीं स्कूल चाहिए”[15] शीर्षक से अपनी पोस्ट का प्रारंभ विक्टर ह्यूगो के कथन ‘जो एक स्कूल के दरवाजे खोलता है, वह एक जेल का द्वार भी बंद करता है, से करते हैं। आगे वह अपनी पोस्ट में लिखते हैं कि कश्मीर में तो इसका उल्टा हो रहा है। वहां के स्कूलों की इमारतें आग के हवाले की जा रही हैं। सरकारी मुलाजिमों को काम से रोका जा रहा है।

शशि शेखर लेख में एक कश्मीरी का आखों देखा हाल वयां कर रहते हैं। वह बताते हैं कि अतंतनाग में एक ग्रामीण ने मुझसे कहा था कि हमारे यहां फौज की वर्दियां पहनकर और दाढियां बढ़ाकर दहशतगर्द घुस आते हैं। वे बताते हैं कि घाटी में कुछ ही महीने के भीतर करीब 30 हजार स्कूलों को आग के हवाले किया जा चुका है। यूनीसेफ की रिपोर्ट के माध्यम से बताते हैं कि यही हाल पाक की स्वात घाटी का रहा है। वहां भी तालिवान ने वर्ष 2007 से 2009 के बीच 200 से ज्यादा स्कूलों को आग लगा दी थी। शशि शेखर इन्हें कायराना हरकते बताते हैं और आतंकियों को कश्मीरियत व इंसानियत के दुश्मन बताते हैं। शशि जम्मू-कश्मीर के पाठ्यक्रम की चर्चा करते हैं। जम्मू-कश्मीर के पाठ्यक्रम को वहां नेताओं ने गढ़ा है। मगर पाकिस्तान के इशारे पर काम करने वाले आतंकवादियों को यह रास नहीं आ रहा। ये लोग कश्मीरियत और इंसानियत के हमदर्द नहीं, हत्यारे हैं।

आतंकवाद का राजनीतिक पक्ष - पाकिस्तान के साथ

आतंकवाद समस्या का सीधा वास्ता पाकिस्तान से है, इसमें शायद ही कोई संदेह हो। 5 जनवरी, 2016 के ब्लॉग लेख ''दिल्ली इस्लामाबाद के बीच पठानकोट''[16] में पुण्य प्रसून वाजपेयी लिखते हैं 'तो क्या इतिहास को पढने-समझने के बदले मोदी सरकार इतिहास रचने की बेताबी में जा फंसी है। इसीलिये कभी हां कभी ना की सोच इस तरह खुलकर कहती रही, जिससे कभी लगा कि मोदी सरकार वाकई पाकिस्तान को पाठ पढाना चाहती है तो कभी लगा मोदी सरकार पाकिस्तान को ना बदलने वाले पड़ोसी की तर्ज पर देख रही है, क्योंकि एक सिर के बदले दस सिर का जिक्र करने वाली सुषमा स्वराज भी मुंबई हमलो के दोषी लखवी के जेल से छूटने पर पाकिस्तान से कोई बातचीत ना करने को कहती हैं और इसके बाद इस्लामाबाद जाकर कैडल लाइट डिनर करने से नहीं चुकती'।

वहीं दूसरी तरफ, अंशुमान तिवारी पाकिस्तान प्रायोजित आंतकवाद से निपटाना पेचीदा नहीं मान रहे हैं। वह भारतीय सेना और देश की कूटनीति को इससे निपटने के लिए पर्याप्त बता रहे हैं। अंशुमान तिवारी अपनी बात को सही ठहराने के लिए बांग्लादेश और बलूचिस्तान का भी उदाहरण दिया हैं। उनके अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उलझन सामरिक से ज्यादा राजनीतिक और कूटनीतिक है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी पाकिस्तान में पनप रहे आतंकवादी संगठनों को नाम के साथ अपने ब्लॉग पर लिखते हैं कि लश्कर-ए-तोएबा, जैश-ए मोहमम्द, हिजबुल मुज्जाहिद्दीन, हरकत-उल- मुज्जाहिद्दीन, पाकिस्तान तालिबान और इस फेहरिस्त में 19 से ज्यादा और नाम। इन नामों से जुड़े दफ्तर की संख्या 127 के आसपास है। ये कार्यालय पीओके में नहीं बल्कि कराची, मुल्तान, बहावलपुर, लाहौर और रावलपिडी में भी हैं। पुण्य प्रसून वाजपेयी सीमा पार से पनप रहे आतंकवाद के लिए स्पष्ट रूप से पाकिस्तान को जिम्मेदार मानते हैं। पाकिस्तान में आतंकवाद की फौज तैयार हो रही है, जो अन्य देशों सहित पाकिस्तान के लिए भी खतरनाक है। रवीश कुमार ने अपने किसी भी पोस्ट में पाकिस्तान में पनम रहे आतंकवाद पर अपनी राय प्रकट नहीं की है।

8 फरवरी, 2016 को ‘‘क्या पाकिस्तान सिर्फ टैरर ही नहीं फेल स्टेट भी है’’[17] शीर्षक से डाली पोस्ट में पुण्य प्रसून वाजपेयी ने लिखा है - ‘तब भारत क्या करेगा। क्योंकि कश्मीर के जरिये आंतक को आजादी का संघर्ष एक वक्त मुर्शरफ ने भी कहा और याद कीजिये तो पिछले दिनों नवाज शरीफ ने संयुक्त राष्ट्र में भी कहा। यानी कश्मीर नीति पाकिस्तान की स्टेट पॉलसी है। और कश्मीर नीति का मतलब आंतकवादी संगठनो को पनाह देना है। यानी भारत पर होने वाले हर आतंकी हमलो से पाकिस्तानी सत्ता खुद को

अलग बतायेगी और आतंक का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय मंच पर उठाकर भारत को अपने साथ खड़े होने का दबाब बनाती है’।

पुण्य प्रसून वाजपेयी पाकिस्तानी सत्ता के आतंक के साथ रिश्तों का खुलासा करते हुए लिखते हैं कि हेडली को लश्कर के साथ जोड़ने से लेकर मुंबई हमले की बिसात बिछाने में पाकिस्तानी सेना के रिटायर मेजर अब्दुर रहमान पाशा, मेजर साबिर अली, मेजर इकबाल जैसे बड़े नाम शामिल थे। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय हेडली मामले में खुद को अलग नहीं कर सकता है। पुण्य प्रसून वाजपेयी पाकिस्तान की आतंक नीति का खुलासा करते हैं कि अमेरिका में पाकिस्तानी एंबेसडर की नियुक्ति सेना के रिटायर फौजियों की होती है। वर्ष 2004-06 में जनरल जहांगीर करामत तो, वर्ष 2006-08 में मेजर जनरल महमूद अली दुर्रानी अंबेसडर बनते हैं। इसी वक्त दाउद गिलानी से डेविड कोलमैन हेडली का जन्म होता है। इसी दौर में हेडली अमेरिका से भारत कई बार रेकी के लिए आता है।वे बताते हैं कि किस तरह फर्जी पासपोर्ट बनवाने से लेकर भारत भिजवाने के काम में पाकिस्तानी सत्ता का सिस्टम काम करता है।

28 सितंबर 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ‘‘इस युद्ध में कहीं आतंक जीत न जाए!’’[18] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में आतंकवाद के मामले में पाकिस्तानी रवैये को स्पष्ट करते हैं। सुषमा स्वराज ने संयुक्त राष्ट्र में पाक और आतंकवाद के संबंधों लेकर कुछ भी गलत नहीं कहा। पूरी दुनिया इस बात को स्वीकार करती है कि हर आतंकी घटना के तार पाक तक पहुंच ही जाते हैं। आगे वे कश्मीर में जारी आतंक का जिक्र करते हुए अपनी पोस्ट में लिखते हैं कि आईएसआई जिहाद काउंसिल के जरिए वहां अपनी ताकत हमेशा बनाकर रखना चाहता है। जिहाद काउंसिल में शामिल 13 प्रमुख आतंकी सगठनों में लश्कर, जैश और हिजबुल का कद बढ़ा है। वहीं दूसरी तरफ लश्कर के संबंध

अलकायदा से तो जैश का संबंध तालिबान से और हिलबुल का संबंध आईएस के साथ है। अफगान, सीरिया और इराक के कट्टरपंथियों के तार भी पाक से जुड़े हैं। पुण्य प्रसून वाजपेयी लिखते हैं कि पाकिस्तान के दो सवाल दुनिया को डराते हैं, पहला पाकिस्तान के परमाणु हथियार कहीं कट्टरपंथियों के हाथ न पहुंच जाएं। दूसरा पाकिस्तान का शक्ति संतुलन जरा भी डगमगाया तो दुनिया का कोई भी दवाब युद्ध नहीं रोक पाएगा। पाक में चुनी हुई सरकार पर सेना भारी पड़ती है। जब भी सत्ता पलट हुआ, सेना के साथ आईएसआई खड़ी हो गई।

आतंकवाद का राजनीतिक पक्ष - विश्व राजनीति

मौजूदा सदी के आरंभ से ही आतंकवाद विश्वव्यापी समस्या के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। इसी क्रम में 2 जुलाई 2016 को शशि शेखर ''ढाका अब एक सबक है''[19] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में लिखते हैं कि बांग्लादेश की राजधानी ढाका में हुआ आतंकी हमला चौकाता ही नहीं बल्कि सचेत भी करता है। वहां स्वतंत्र सोच रखने वाले लोगों की जान को खतरा बना रहता है। ब्लॉग लिखने वालों और अपनी स्वतंत्र सोच रखने वालों की सरे आम हत्या की जा रही है। इसी पोस्ट में शशि शेखर अपनी पोस्ट में हिन्दुओं पर किए जा रहे अत्याचार का भी उल्लेख करते हैं। कट्टरवादियों द्वारा हिन्दू पुजारियों और साधु-संतों पर हमले किए जा रहे हैं। शशि शेखर ने बांग्लादेश में घटती हिन्दू आबादी पर सवाल उठाए हैं। शशि शेखर आतंकवाद को लेकर राजनेताओं को कटघरे में खड़ा करते सवाल करते हैं कि किस प्रकार असदुद्दीन ओवैसी हैदराबाद में पकड़े गए आईएसआई के संदिग्ध आतंकवादियों को कानूनी मदद मुहैया कराने की पेशकश की है, जोकि गलत चलन है।

वहीं, रवीश कुमार ढाका पर हुए आतंकी हमले को अलग तरीके से परिभाषित करते हैं। रवीश कुमार ढाका की घटना को 3 जुलाई 2016 को अपने ब्लॉग 'कस्बा' पर ''बांग्लादेश की घटना पर''[20] शीर्षक के साथ लिखते हैं। वह अपनी पोस्ट में बांग्लादेश से लेकर फ्रांस, तुर्की और पूरी दुनिया का वर्णन करते हैं। लेकिन रवीश बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार का अपनी पोस्ट में कोई जिक्र नहीं करते हैं। जबकि शशि शेखर ने बांग्लादेश पर आतंकी घटना समीक्षा की है उसमें उन्होंने वहां पर हिंदू पुजारियों, साधु-संतों और लेखकों पर हुए हमलों को पूरी प्रमुखता के साथ अपने ब्लॉग पर लिखा है। इसी प्रकार कश्मीर में चले रहे पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर एक भी आर्टीकल नहीं लिखा हैं।

रवीश कुमार 8 जुलाई 2016 को ''2003 में इराक हमले का दोषी कौन''[21] शीर्षक से डाली है। इसमें वे प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर को दोषी करार दे रहे है। रवीश कुमार एक रिपोर्ट के माध्यम से बताते हैं कि मीडिया दर्शकों पर सनक थोप रहा है। मीडिया सैनिकों को शहीद बताकर राष्ट्रवाद को थोपता है। वे मीडिया से सतर्क रहने को कहते हैं। रवीश लिखते हैं- 'प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए ब्लेयर ने संसद, मंत्रिमंडल और ब्रिटेन की जनता से झूठ बोला। इराक़ में सद्दाम हुसैन के पास रासायनिक हथियार होने का कोई पुख्ता प्रमाण नहीं था। निराधार थी ये बात। यही वो तात्कालिक कारण था जिसके आधार पर इराक़ को तबाह किया था। वहाँ लाखों लोग मारे गए। कई ऐतिहासिक और ख़ूबसूरत शहर बर्बाद हो गए। आज भी उसके परिणाम में इराक़ में लोग मारे जा रहे हैं। तेल की इस राजनीति को हमें किसी नाईक के कुतर्कों से ज़्यादा समझना चाहिए। मगर ब्लेयर को आतंकी बताकर कहीं कोई हंगामा नहीं होगा जिसने लाखों बेकसूरों को मरवाने में ब्रिटेन की सेना को झोंक दिया'।

पुण्य प्रसून वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षणों का हवाला देते हुए यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि आतंक का अशिक्षा से रिश्ता पुराने दौर की बात है। 5 जुलाई, 2016 के आर्टिकल में वे लिखते हैं कि ''पढ़ा लिखा युवा गढ़ रहा है आतंक की नई परिभाषा''[22] में 'जॉर्डन, मोरक्को, पाकिस्तान और टर्की में 2004 में एक एक सर्वे में पढ़े लिखे नौजवानों ने अमेरिका और पश्चिमी देशों के खिलाफ आत्मघाती हमलों की ज्यादा वकालत की बनिस्पत उन लोगों ने,जिनकी शिक्षा कम थी। कम पढ़े लिखे लोगों ने नो ओपनियन यानी कोई राय नहीं वाला विकल्प चुना। तो पढ़े लिखे युवा रेडिकलाइज हो रहे हैं, इससे इंकार किया नहीं जा सकता, और कोई सरकारें इन युवाओं की बेचैनी को साध नहीं पा रही, ये दूसरा सच है'।

पुण्य प्रसून वाजपेयी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की रिपोर्ट का हवाला देकर अपनी बात साबित करते हैं कि आतंकवाद और अशिक्षा पुरानी बात है। पुण्य प्रसून वाजपेयी के मुताबिक बीते 15 वर्ष में दुनिया भर में हजारों से ज्यादा आतंकी हिंसा हुई। जिनमें 58 फीसदी आतंकी उच्च शिक्षा लिए हुए थे। ढाका में खूनी खेल खेलने वाले आतंकी जिन्होंने न केवल जवानी की दहलीज पर कदम रखा था, जबकि अच्छे विश्वविद्यालय के पढ़े लिखे थे। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि ज्यादा पढ़े लिखे लोग रेडिकलाइज हो रहे हैं। सरकारें इनकी पीढ़ा नहीं समझ पा रही हैं।

पुण्य प्रूसन वाजपेयी की तरह ही 16 जुलाई को ''आतंक की नई विश्व व्यवस्था''[23] शीर्षक से शशि शेखर से नीश पर हुए हमले का जिक्र हुए लिखते हैं कि अब आतंकवाद पर कार्यवाही का समय आ गया है। दहशतगर्दों को भटके युवा कहना और समझाकर मुख्यधारा में लाने की बात कहना ठीक नहीं है। यदि पिछले एक वर्ष में हुए हमलों पर नजर दौड़ाएं तो पाएंगे कि ज्यादातर आतंकी नई तहजीब में पैदा हुए और पनपे थे। ये

एक तरह की उपजी नई तरह की धार्मिक कट्टरता है। और इसी नई कट्टरता ने क्षेत्रीय लड़ाइयों ने छोटा कर दिया। आरलैंडो के मतीन, नीश के बूहलल और कश्मीर के बुरहान वानी में समानता के तमाम तंतु मौजूद हैं। शशि शेखर यहां आतंकवाद की व्याख्या करते हुए दुनिया को आगाह कर रहे हैं कि अब समय आ गया है, जब हम सच का सामना करें और कठोर वास्तविकताओं से जूझने के लिए खुद को तैयार करें।

पुण्य प्रसून वाजपेयी और शशि शेखर के विपरीत रवीश कुमार और अंशुमन तिवारी से आतंकवाद और शिक्षा के संबंध को अलग नजरिए के साथ देखते हैं। इन दोनों के अनुसार पढ़ा-लिखा युवा अपने विकास पर ध्यान देगा, जिससे आतंकवाद पर लगाम लगेगी।

रवीश आतंकवाद के चलते सीसीटीवी को हो रहे व्यावसायिक लाभ पर विचार प्रकट करते हैं। रवीश 25 मार्च, 2016 ''सीसीटीवी की नज़र आतंकवाद पर या अपने बाज़ार पर''[24] में लिखते हैं- 'टेलीविजन पर ब्रसेल्स आतंकवादी हमले की रिपोर्ट देख ज़रा देर के लिए ठहर गया। जैसे ही ब्रेक आया एक सीसीटीवी कंपनी का विज्ञापन आने लगा। मेरे पास अधिकृत सूचना नहीं है कि सीसीटीवी कैमरे का यह विज्ञापन पहले से ही आ रहा था या हमले के बाद आने लगा है। अगर यह संयोग है तब भी और अगर हमले के बाद विज्ञापन आने लगा है तब तो और भी हमें जानना चाहिए कि आतंकवाद को रोकने में सीसीटीवी की क्या भूमिका है। मैं न सीसीटीवी फुटेज का विशेषज्ञ हूं और न ही आतंकवादी हमलों का'।

शशि शेखर 29 जुलाई, 2016 को ''प्रथम वचनः आजादी का असल अर्थ''[25] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में लिखते हैं कि यूरोपियन दार्शनिक रूसो के कथन 'मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ

है, लेकिन वह हर तरफ से जंजीरों से बंधा हुआ है। आजादी के नाम पर लड़ी गई लड़ाइयां एक और गुलामी या आंशिक स्वतंत्रता पर जाकर खत्म हो गईं। इसी सिद्धांत पर हमारे देश में माओवादी तथाकथित आजादी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उनकी रक्त पिपासा शांत होने का नाम नहीं ले रही। कश्मीर के भटके युवा भी इसी राह पर हैं। शशि शेखर सवाल कर रहे हैं कि वहां के लोगों को वाकई आजादी चहिए? उनकी आजादी पर शक है। आज के दौर में आतंक और अलगाव अंतरराष्ट्रीय स्तर के व्यापार बन चुके हैं। अब आतंक को फैलाने के धर्म का सहारा लिया जा रहा है। आतंक के सहारे भुला दिए गए मुद्दों को हवा देने की कोशिश की जाती है।

जबकि, पुण्य प्रसून वाजपेयी 17 अक्टूबर, 2016 को "आतंकवाद पर सिर्फ सवाल ही क्यों है मौजूदा दौर मे"[26] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में विश्व समुदाय किस तरह अपना एजेंडा बदलता रहते हैं की समीझा की है। वे लिखते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद का मुद्दा ब्रिक देशा की समिट में उठाया। ब्रिक समिट में आतंकवाद-आतंकवाद शब्द का उच्चारण तो हुआ, लेकिन न तो उसमें हाफिज सईद का नाम आया और न ही अजहर मसूद का। पुण्य प्रसून वाजपेयी यहां ब्रिक देश चीन के दोहरे रवैये पर सवाल खड़ा कर रहे हैं। आगे वह सरकार से ही सवाल कर रहे है कि वाकई सर्जिकल अटैक ने भारत को दुनिया ताकतवर देशों की कतार में लाकर खड़ा कर दिया है। साथ ही वे भारतीय अर्थव्यवस्था की तस्वीर समाने रखते हैं। तर्क रखते हैं कि पहली दफा इकॉनमी और राष्ट्रवाद के बीच मोटी लकीर भी खिंच रही है। वे पीएम मोदी से सवालिया अंदाज में पूछते हैं कि आखिर वह किस राह को पकड़ेंगे, क्योंकि कोरे राष्ट्रवाद से पेट नहीं भरता।

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
आतंकवाद/ आतंकवादी / आतंकवादियों	80	0.4079	0.00	0.00	19	0.3637	65	0.5265	0.00	0.00
कश्मीर/ कश्मीरी/ कश्मीरियों	32	0.3631	0.00	0.00	12	0.2297	71	0.5778	0.00	0.00
पाकिस्तान	05	0.0567	0.00	0.00	03	0.0574	111	0.8991	0.00	0.00
अलगाववाद/ अलगाववादी	01	0.0113	0.00	0.00	04	0.0766	01	0.0081	0.00	0.00
कट्टरता	01	0.0113	0.00	0.00	03	0.0574	01	0.0081	0.00	0.00
बुरहान	07	0.0794	0.00	0.00	02	0.0383	03	0.0244	0.00	0.00

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
बातचीत / डायलॉग	04	0.0454	0.00	0.00	01	0.0191	16	0.1302	0.00	0.00
राष्ट्रवाद	04	0.0454	0.00	0.00	0.00	0.00	04	0.0326	0.00	0.00
पूर्वोत्तर	0.00	0.00	0.00	0.00	01	0.0191	0.00	0.00	0.00	0.00
मीडिया	43	0.4880	0.00	0.00	0.00	0.000	02	0.0163	0.00	0.00

संदर्भ सूची :

1. मेयर, ग्रेग. (2009). डिस्कोर्स ऑफ ब्लाग्स एंड विकि. ब्लूमबर्ग पब्लिकेशन
2. हेनसन, जेरिस व निरुला, उमा. (1990). न्यू कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी इन डेवलपिंग कंट्रीज. लॉरेंस एसोसिएट पब्लिसर्स.
3. लेसेस, मार्क एंड लेंसन, जेरी. (2015). द एलीमेंट ऑफ ब्लॉगिंग रू एक्पेंडिंग द कनवरसेशन ऑफ ब्लॉगिंग
4. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मई, 13). दो धमाके, दो धर्म, दो जांच. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/05/blog-post_13.html

5. शेखर, शशि. (2016, जुलाई, 9). नाइकः नायक या खलनायक. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-zakir-naik-hero-or-villain-543939.html
6. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जून, 28). कश्मीर में गिलानी-यासिन की पीढ़ी के बाद का आतंक. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/06/blog-post_28.html
7. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई, 11). जन्नत कैसी हो गई लाल. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/07/blog-post_11.html
8. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 15). कश्मीर की अवाम की शिकायतें कितनी वाजिब. Retrieved from http://naisadak.org/kashmir-ke-awaam-ki-shikayatein-kitni-waajib/
9. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई, 20). देश के भीतर का सच. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/07/blog-post_20.html
10. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई, 11). जन्नत कैसी हो गई लाल. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/07/blog-post_11.html
11. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जनवरी, 8). भारत-पाकिस्तान के बीच एलओसी का सच. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_8.html
12. कुमार, रवीश. (2016). सवाल हीरो बनाम आतंकवाद का नहीं है. Retrieved from http://naisadak.org/
13. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 15). कश्मीर में कब सुधरेंगे हालात. Retrieved from http://naisadak.org/kashmir-mein-kab-sudhrenge-haalaat/

14. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 16). कश्मीर के बहाने अफवाहों को मैटेरियल आ गया. Retrieved from http://naisadak.org/whats-up-is-doing-this-in-the-name-of-kashmir/

15. शेखर, शशि. (2016, नवंबर, 25). कश्मीर को कारागार नहीं स्कूल चाहिए. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-kashmir-need-school-not-jail-591658.html

16. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जनवरी, 5). दिल्ली इस्लामाबाद के बीच पठानकोट. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post.html

17. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, फरवरी, 8). क्या पाकिस्तान सिर्फ टैरर ही नहीं फेल स्टेट भी है. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/02/blog-post_8.html

18. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, सितंबर, 28). इस युद्ध में कहीं आतंक जीत न जाए!. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/09/blog-post_28.html

19. शेखर, शशि. (2016, जुलाई, 2). ढाका अब एक सबक है. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-dhaka-is-now-a-lesson-542647.html

20. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 3). बांग्लादेश की घटना पर. Retrieved from http://naisadak.org/speaking-is-not-enough-on-bangladesh/

21. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 8). 2003 में इराक हमले का दोषी कौन. Retrieved from http://naisadak.org/who-is-responsible-for-iraq-war/

22. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई, 5). पढ़ा लिखा युवा गढ़ रहा है आतंक की नई परिभाषा. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/07/blog-post.html

23. शेखर, शशि. (2016, जुलाई, 16). आतंक की नई विश्व व्यवस्था. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-new-world-arrangement-of-terror-545205.html

24. कुमार, रवीश. (2016, मार्च, 25). सीसीटीवी की नज़र आतंकवाद पर या अपने बाज़ार पर. Retrieved from http://naisadak.org/

25. शेखर, शशि. (2016, जुलाई, 29). प्रथम वचनः आजादी का असल अर्थ. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-pratham-vachan-shashi-shekhar-547896.html

26. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, अक्टूबर, 17). आतंकवाद पर सिर्फ सवाल ही क्यों है मौजूदा दौर मे . Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/10/blog-post_17.html

27. https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_terrorist_incidents_in_2016

न्यूज मीडिया, मनोरंजन मीडिया व साहित्य पर ब्लॉग्स

न्यूज मीडिया की लोकतांत्रिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, क्योंकि इसका दायित्व है कि वह लोगों की समस्याओं को सरकार के सामने रखता है और सरकार के कामकाज की समीक्षा करता है। लेकिन समय के साथ मीडिया की कार्यप्रणाली में भी बदलाव आए हैं। मुख्यधारा मीडिया, जिसमें प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को रखा जाता है, व्यावसायिक होता चले गए हैं। पहले मीडिया का कार्य जुनून व सेवाभाव से किया जाता था, लेकिन वह अब विशुद्ध व्यापार बन गया है। व्यावसायिक होते मीडिया से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी प्रभावित होती जा रही है।

ऐसे में न्यू मीडिया के स्वरूप न्यूज ब्लॉगिंग ने स्वयं को एक समानांतर विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है, जो सभी के लिए आसानी से उपलब्ध है। कोई भी व्यक्ति अपना न्यूज ब्लॉग बना सकता है। दुनिया के किसी भी हिस्से में बैठा व्यक्ति उन्हें पढ़ सकता है। मुख्यधारा मीडिया की किसी भी खबर पर अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए ब्लॉग जैसे सार्वजनिक मंच मौजूद है। ब्लॉगिंग ने मीडिया की समीक्षा के लिए मंच उपलब्ध कराया है। आज मुख्यधारा मीडिया में कोई खबर चलती है तो सोशल मीडिया और न्यू मीडिया के मंचों द्वारा उसकी समीक्षा भी प्रारंभ हो जाती है। पहले की तरह मुख्यधारा मीडिया के लिए किसी एजेंडे को लेकर एकतरफा खबर चलाना आसान नहीं रह गया है। यदि कोई मीडिया समूह गलत खबर चलाता है तो न्यू मीडिया पर उसकी आलोचना प्रारंभ हो जाती है।[1]

मुख्यधारा मीडिया की स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले अनेक कारण है। कानून व राजनीतिक कारण, जिनमें से प्रमुख हैं। स्वतंत्र पत्रकारों के संगठन 'रिपोर्टर्स विदाउट

बॉर्डर्स' की वर्ष 2016 की रिपोर्ट के मुताबिक भारत का प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में 136 वां स्थान है। मीडिया की स्वतंत्रता के लिहाज से इसे अच्छा नहीं कहा जा सकता है। मीडिया की स्वतंत्रता के मामले में नार्वे का पहला, स्वीडन का दूसरा और फिनलैंड का तीसरा स्थान है। रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स की रिपोर्ट के मुताबिक अफगानिस्तान, फिलिस्तीन, युगांडा, अल्जीरिया जैसे देशों का स्थान प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में भारत से ऊपर है। रिपोर्ट ने प्रेस की स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले कारणों में राजनीतिक कारणों को सबसे ऊपर माना है। जहां तक दुनिया में प्रेस की स्वतंत्रता का सवाल है दुनिया की एक तिहाई आबादी ऐसे देशों में रहती है, जहां मीडिया को पूर्ण अभिव्यक्ति की आजादी प्राप्त नहीं है।

प्रत्येक वर्ष 3 मई को विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। इस दिन दुनिया के मीडियाविद विश्वभर की प्रेस स्वतंत्रता की समीक्षा करते हैं, जिसमें आज ट्विटर, ब्लॉग और फेसबुक जैसे न्यू मीडिया के सभी मंच शामिल हैं। आंकड़े बताते हैं कि मुख्यधारा के मुकाबले न्यू मीडिया को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है। न्यू मीडिया के लिए देश की सीमाएं कोई बाधा नहीं बनती हैं। किसी देश के नागरिक द्वारा ब्लॉग पर लिखा गया आर्टिकल पूरी दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर पढ़ा जा सकता है।[2] पत्रकार भी जब ब्लॉग लिखता है तो प्रेस की स्वतंत्रता के नए आयामों को प्राप्त करती है। मीडिया समूह के उच्च ओहदों पर बैठे हुआ जब एक पत्रकार जब मीडिया की समीक्षा करता है तो मीडिया के विभिन्न पहलु लोगों के सामने आते है।[3] मीडिया की समीक्षा से सुधार के नए अवसरों की संभावना बनती है। रवीश कुमार, पुण्य प्रसून वाजपेयी, शशि शेखर उन्हीं पत्रकारों में शामिल हैं।

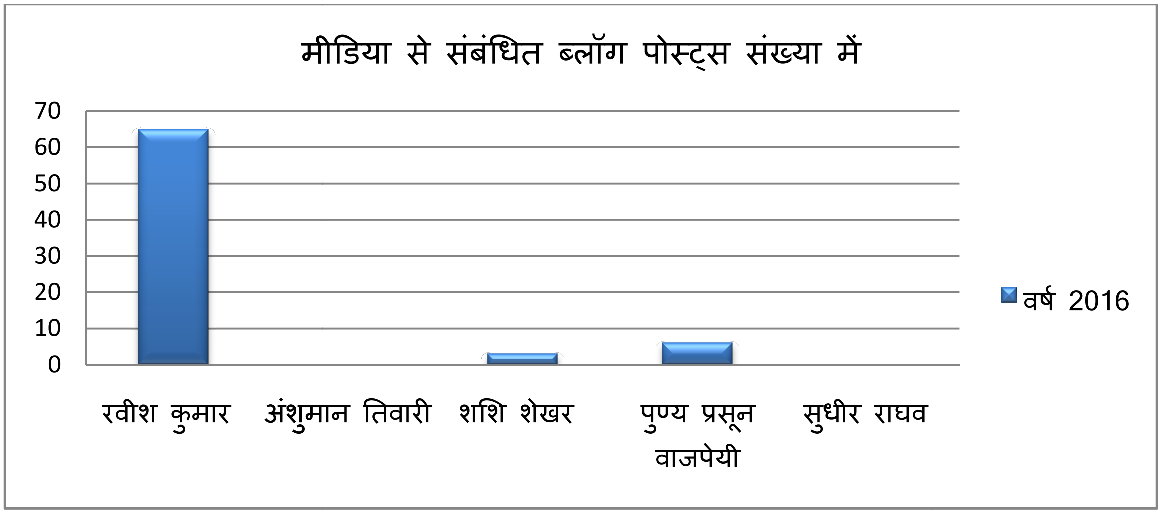

X अक्ष - पत्रकार ब्लॉगर्स के नाम

Y अक्ष - पत्रकारों के द्वारा वर्ष 2016 में लिखी गईं ब्लॉग पोस्ट्स

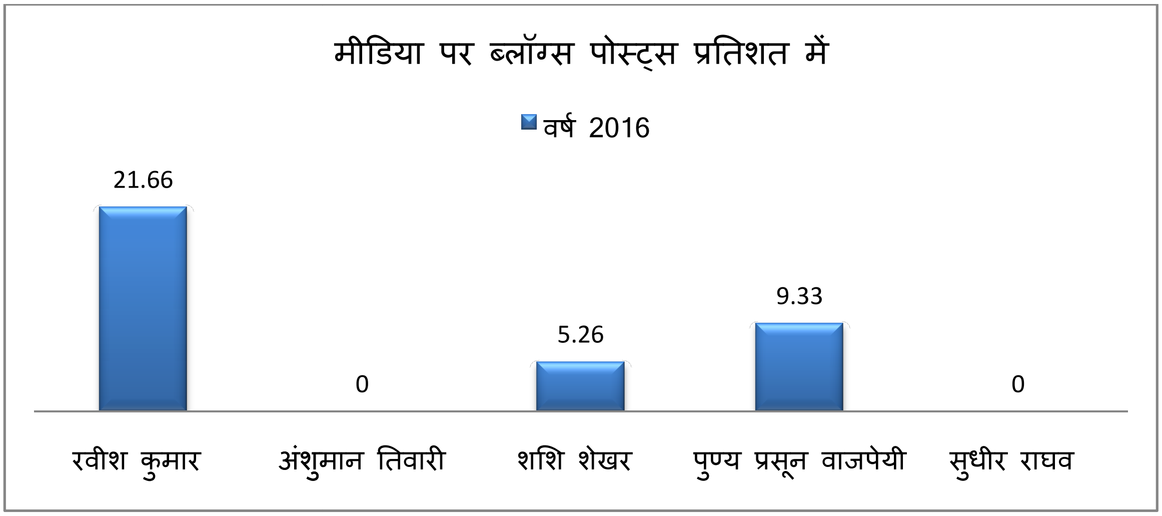

रवीश कुमार, शशि शेख व पुण्य प्रसून वाजपेयी द्वारा अपने-अपने ब्लॉग्स पर लिखे गए विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों में से मीडिया विषय से संबंधित लेखों का प्रतिशत चार्ट

सभी पत्रकारों के वर्ष 2016 के दौरान डाली पोस्ट का विश्लेषण करने पर विभिन्न तथ्य सामने आते हैं। रवीश कुमार की पोस्ट्स में सबसे अधिक विविधता है। उन्होंने वर्ष 2016 में न्यूज मीडिया, सोशल मीडिया, मनोरंजन मीडिया व साहित्य पर समीक्षात्मक

विस्तृत पोस्ट लिखी हैं। पुण्य प्रसून वाजपेयी ने न्यूज मीडिया के कठोर समीक्षात्मक लेख व मनोरंजन मीडिया का विश्लेषण किया है। पुण्य प्रसून वाजपेयी ने साहित्य समीक्षा से संबंधित कोई पोस्ट नहीं लिखी है। वहीं शशि शेखर ने केवल न्यूज मीडिया से संबंधित पोस्ट डाली हैं। उनके अधिकांश पोस्ट समाचार पत्रों के संपादकीय पेज पर प्रकाशित हो चुके हैं। रवीश कुमार ने वर्ष 2016 की कुल लिखी 300 पोस्ट्स में से 65 पोस्ट्स मीडिया से संबंधित हैं। वहीं इस दौरान पुण्य प्रसून वाजपेयी ने मीडिया से संबंधित केवल 6 पोस्ट और शशि शेखर ने 3 पोस्ट लिखी हैं। वर्ष 2016 में सुधीर राघव और अंशुमान तिवारी ने मीडिया समीक्षा से संबंधित कोई भी पोस्ट्स अपने ब्लॉग्स पर नहीं डाली हैं।

न्यूज मीडिया से संबंधित ब्लॉग पोस्ट्स

4 जनवरी, 2016 को रवीश कुमार ''क्या शहादत के सम्मान को यही तरीका है?''[4] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में सेना के अधिकारी और छह जवानों के शहीद होने पर टीवी चैनलों के खबर प्रस्तुतीकरण के तरीके की आलोचना करते हैं। उन्होंने देश की सुरक्षा के मसले पर आयोजित होने वाली टीवी बहसों में पाकिस्तानी वक्ताओं को बोलने की आजादी देने की आलोचना की है। हालांकि रवीश कुमार देश के उन बुद्धिजीवी वर्ग में गिने जाते हैं, जो पाकिस्तानी मामलों से जुड़ी समस्या का हल दोनों देशों के बीच बातचीत के जरिए होना चाहिए की राय रखते हैं।

वहीं, पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 20 जनवरी, 2016 को ''पत्रकारिता रहते हुए पत्रकार बने रहने की चुनौती''[5] शीर्षक से डाली पोस्ट में पत्रकारिता के बदलते स्वरूपों को विश्लेषण किया है। इस लेख में उन्होंने राजनीति, मीडिया और कॉरपोरेट की जुगलबंदी के आरोप

लगाए हैं। प्रसून का मानना है कि पत्रकारिता यदि मीडिया है और मीडिया यदि माध्यम है तो राजनीतिक दलों सत्ता को सुगम बनाने के लिए इस माध्यम का प्रयोग किया जा रहा है, या यह माध्यम अपनी सुविधाओं के लिए अपना प्रयोग करवा रहा है। पत्रकारिता में आई गिरावट के लिए पत्रकार, मालिक और राजनेता तीनों को दोषी ठहराया है। प्रसून लिखते हैं कि मीडिया में गरीबों, आदिवासियों, शहर-गांव की समस्याओं के प्रश्न गायब हैं।

दूसरी ओर रवीश कुमार पत्रकारिता कर्म में साहस के महत्व की बात करते हैं। 17 फरवरी, 2016 को "डरा हुआ पत्रकार मरा हुआ नागरिक बनाता है"[6] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में रवीश कुमार ने जेएनएयू के कन्हैया और उसके साथी के साथ कोर्ट कैंपस में वकीलों द्वारा कथित मारपीट की आलोचना की है। उन्होंने लेख में इसे न्यायपालिका और लोकतंत्र पर हमला बताया है। रवीश इस मसले पर मीडिया की भी आलोचना करते हैं। रवीश ने इस पूरे लेख में आरोपी कन्हैया और उसके साथी के खिलाफ कुछ नहीं लिखा है। लेख में कन्हैया और उसके साथी के नाम का जिक्र नहीं किया है, पूरी घटना को अप्रत्यक्ष रूप से ही कहा गया है। जेएनयू में लगे देश विरोधी नारों का लेख में कोई जिक्र नहीं किया गया है। रवीश कुमार ने 20 फरवरी, 2016 को "हमारा टीवी बीमार हो गया है"[7] शीर्षक से ब्लॉग पर पोस्ट डाली है। रवीश ने समाचार चैनलों पर आने वाली लाइव डिबेटों के दौरान होने वाली बेतुका बहसों का आलोचना करते हैं। उनका मानना है कि डिबेट का मुख्य उद्देश्य किसी मुद्दे पर समझ को साफ करना है, लेकिन आजकल ये टीवी शो प्रवक्ताओं, विशेषज्ञों और एंकरों के बीच 'स्क्रीन झकड़े' के कार्यक्रम हो गए हैं।

17 मई, 2016 को “नेताओं, अपराधियों के निशाने पर पत्रकार”[8] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में रवीश ने बिहार में हुई पत्रकार राजदेव रंजन की हत्या को लेकर राजनीतिक वर्ग और पुलिस पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने चिंता जाहिर की है कि दिल्ली से लेकर गुजरात तक पत्रकारों की हत्याएं हुई हैं, पत्रकार वर्ग वर्तमान राजनीतिक व सुरक्षा व्यवस्था में असुरक्षित है। उन्होंने लेख में अन्य पत्रकार विकास रंजन, अखिलेश सिंह, अधीर राय, नलिन मिश्रा की हत्याओं का भी जिक्र किया है। वे लिखते हैं कि इसमें अधिकांश हत्याएं झारखंड राज्य में हुई हैं। उन्होंने प्रमाण के लिए एक रिपोर्ट का भी वर्णन किया है। न्यूयार्क की संस्था ‘द कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट’ के अनुसार भारत पत्रकारों की हत्या के मामले में 10 वें नंबर है। रवीश ने लेख को तथ्यों के साथ दिया है। पत्रकारों की हत्या से जुड़े कई मामलों पर विस्तृत चर्चा की है। लेख में किसी खास राजनीतिक पार्टी पर आरोप नहीं लगाए गए हैं, सभी को सामूहिक रूप से जिम्मेदार ठहराया गया है। भारत में 1992 से लेकर अब तक 25 से अधिक पत्रकारों की हत्याएं हो चुकी हैं, इसमें से अधिकांश प्रिंट मीडिया के पत्रकार थे। रवीश पत्रकारों की हत्या के पीछे राजनीतिक व अपराधिक गुटों को जिम्मेदार ठहराया है।

7 मई, 2016 को ही लिखे गए एक ओर लेख में रवीश कुमार “क्या आप राजदेव रंजन के बारे में जानना चाहेंगे?”[9] शीर्षक के साथ लिखते हैं कि राजदेव रंजन जिस अखबार से जुड़े हुए थे, उसे राजदेव रंजन के डिस्पैच छापने चाहिए, ताकि जांच एजेंसियों पर दबाव बन सके। रवीश हिन्दी पत्रकारिता से गायब होती खोजी पत्रकारिता पर भी चिंता जाहिर करते हैं। यदि कोई पत्रकार अपने जोखिम पर खोजी पत्रकारिता करता है तो उसकी जान के लाले पड़ जाते हैं। साथ ही, रवीश लेख के जरिए मीडिया समूहों से अपील करते हैं कि उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए।

इसी प्रकार, पत्रकारों की हत्या की घटनाओं पर चिंता जाहिर करने वाली पोस्ट शशि शेखर ने अपने ब्लॉग पर 28 मई, 2016 को डाली है। ''न रुकी, न रुकेगी हिंदी पत्रकारिता''[10] शीर्षक से डाली पोस्ट में शशि शेखर ने हिंदी पत्रकारिता के संघर्ष और विजय के बारे में लिखा है। इस लेख में हिन्दी पत्रकारिता के वर्तमान सफलताओं तक पहुंचाने में अनेक हिन्दी पत्रकारों और विद्वानों के योगदान के बारे में लिखा है। यह लेख हिन्दी पत्रकारिता दिवस के उपलक्ष में एक दिन पूर्व लिखा गया है। साथ ही एक पत्रकार साथी राजदेव रंजन की मृत्यु पर शोक व पीड़ा जाहिर की है और इसे हिन्दी पत्रकारिता के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया है। उन्होंने लेख में हिन्दी विरोधी लोगों पर आरोप लगाएं हैं कि उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता को कई बार खत्म करने की कोशिश की है, लेकिन हिन्दी निरंतर आगे पढ़ती रही, अंधेरे में ईमानदारी के प्रकाश से उज्जवलित रही। हिन्दी पत्रकारिता आज देश में नंबर एक पर है।

इसी लेख में आगे उन्होंने पत्रकार राजदेव रंजन की हत्या के बारे में लिखा है। पत्रकार राजदेव रंजन की बिहार में हत्या कर दी गई थी। लेख में बिहार के उन संवेदनशील लोगों का भी धन्यवाद दिया है, जिन्होंने पत्रकार की हत्या के बाद हत्यारों की खोज व पत्रकारों की सुरक्षा की मांग के साथ जगह-जगह प्रदर्शन किए। लेख के चौथे पैराग्राफ में पत्रकार के हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग की गई है। साथ ही, लेख लिखे जाने तक हत्या के कारणों के खुलासे व मुख्य आरोपियों की गिरफ्तारी न होने पर सवाल खड़े किए हैं। शशि शेखर ने आशंका भी जाहिर की कहीं यह हत्याकांड अन्य हत्याकांडों की तरह चर्चा का विषय बनने के बाद भी असली मुजरिमों को न ढूंढ़ पाए।

आगे अपनी बात के समर्थन में वे लिखते हैं कि आरूषि हत्याकांड में आजतक पता नहीं चल पाया है कि आरूषि का असली हत्यारा कौन था। नेपाल राजघराने में हुआ सामूहिक

हत्याकांड भी इसी तरह अनसुलझा रहा है, आज तक पता नहीं चल पाया है कि राजपरिवार को खत्म की साजिश किसने और क्यों रची। अमेरिका के राष्ट्रपति केनेडी की हत्या के अनसुलझी पहेलियों के बारे में भी लिखा है। शशि शेखर जांच एजेंसियों पर आरोप लगाते हैं कि वे भटकने और भटकाने में पारंगत हैं। इस लेख में उन अंग्रेजीदां लोगों को भी कठघरे में खड़ा किया है जो छोटी-छोटी बातों में कैंडल मार्च के अभ्यस्त हैं, लेकिन देश के दूरदराज इलाके या ग्रामीण भारत में कोई घटना होती है तो उनके लिए कोई महत्व नहीं रखती है। उनके लिए असहिष्णुता बड़ा मुद्दा है, लेकिन हिन्दी पत्रकार की हत्या कोई मायने नहीं रखती है। साथ ही उन पर कटाक्ष करते हुए उनके लिए भगवान से सद्बुद्धि मांगते हैं। लेख में हिन्दी पत्रकारिता के विकास और पत्रकारों द्वारा किए गए संघर्ष का भी वर्णन किया है।

लेख में वे आगे लिखते हैं कि पहले पत्रकार जीवनयापन करने के लिए पत्रकारिता के अलावा अन्य कार्य भी किया करते थे। दूर-दराज के क्षेत्रों में खबरों को पहुंचने में तीन-चार दिन लग जाया करते थे। आज की तरह कम्प्युटर, मोबाइल, फैक्स नहीं थे। बाद में एसटीडी की सुविधा मिली, लेकिन किसी दूसरे शहर में डायल करने में घंटों लग जाते थे। उन्होंने लेख में जानकारी दी है कि दक्षिण भारत में कम्प्युटर क्रांति उत्तर भारत से पहले आ गई थी। शशि ने लेख तकनीकी क्षेत्र में हुए तेज बदलावों की ओर भी ध्यान खींचा है। शशि शेखर का यह लेख एक हिन्दी पत्रकार की हत्या से शुरू होकर असहिष्णुता को एजेंडा बनाने के मुद्दे से होकर हिन्दी पत्रकारिता के तकनीकी विकास की कहानी के साथ समाप्त होता है। इस लेख में शशि शेखर पाठकों के लिए लिखते हैं कि भारत में अंग्रेजी मानसिकता वर्ग का व्यक्ति भाषा और सुविधा के अनुसार हत्या में भी अंतर कर लेता है।

रवीश कुमार ने 28 मार्च, 2016 को ''जन्नत की खबरें और जनमत की हसरतें''[11] शीर्षक से मीडिया के पर लिखी कविता पोस्ट की है। 29 मार्च, 2016 को रवीश ने मीडिया पर लिखी एक और कविता ''ड्रेरित काव्य का वचन करें, बहादुर नहीं डरपोक बनें जन्नत टाइम-टू''[12] शीर्षक से कविता पोस्ट की है। रवीश कुमार ने 30 मार्च, 2016 को ''रेडियो रविश - ड्रेरित काव्य''[13] नाम से ब्लॉग पर ऑडियो क्लिप डाली है। रवीश कुमार का ड्रेरित काव्य से तात्पर्य डर से लिखा हुआ काव्य है। उनके अनुसार जिस प्रकार प्रेरित साहित्य होता है, जो किसी प्रेरणा से लिखा जाता है, उसी प्रकार यह ड्रेरित काव्य है जो डर की भावना से लिखा गया है। 30 मार्च की एक और अन्य पोस्ट में ''आ गया आ गया ड्रेरित काव्य आ गया''[14] शीर्षक से एक कविता डाली है। कविता में सत्ता, मीडिया और गंदे शब्दों में प्रतिक्रिया देने वाले लोगों पर कटाक्ष किया गया है।

रवीश कुमार 15 अप्रैल, 2016 को ''पता चला कैसे मनी अंबेडकर जयंती?''[15] शीर्षक से डाले गई पोस्ट में मीडिया की आलोचना करते हुए लिखते हैं कि मीडिया ने अंबेडकर जयंती वाले दिन प्रधानमंत्री को अधिक और मायावती को सबसे कम दिखाया। मीडिया ने दलित समाज में आ रहे बदलावों को भी नहीं दिखाया। लोग आज अंबेडकर जयंती को त्यौहार की तरह मनाने लगे हैं लेकिन मीडिया उन सभी छवियों को कैमरे में कैद नहीं कर पा रहा है वह केवल राजनीतिक छवियों और बहसों तक ही सीमित है।

रवीश कुमार 19 अप्रैल, 2016 को ''हाय हमारी आंखों का नूर... कोहिनूर....''[16] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में विभिन्न फिल्मों की व्यंग्यात्मक समीक्षा करते हुए लिखते हैं कि मीडिया में कोहिनूर की नए सिरे से चर्चा प्रारंभ हुई है। वे मीडिया पर आरोप लगाते हैं कि मीडिया ने प्रधानमंत्री मोदी की लंदन यात्रा के दौरान, बिना तथ्यों के, प्रश्नवाचक चिन्हों के साथ, मोदी जी इग्लैंड की महारानी से कोहिनूर हीरा मांगकर लाएंगे? का

प्रोपेगैंड चलाया। रवीश इस मसले पर पत्रकार के नजरिए से मीडिया की सच्चाई को सबके सामने रखने की कोशिश करते हैं।

रवीश कुमार ने 27 अप्रैल, 2016 को ''चवन्नी वाला गैंडा – उदित भाटिया''[17] शीर्षक से कविता पोस्ट की है। कविता में इतिहास, स्कूल-कॉलेजों में पढ़ाए जा रहे तथ्यों-कथानकों को चुटीले अंदाज में लिखा है। इस कविता को रवीश ने गेस्ट कविता के रूप में शामिल किया है, जिसे उदित भाटिया ने लिखा है। रवीश ने 16 जून, 2016 को ''एक्सप्रेस पढ़ने के बाद किशोर गान हो या मुकेश गान''[18] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में समाचार पत्र इंडियन एक्सप्रेस की एक खबर की फोटो डाली है, जिसमें इशरत जहां एनकाउंटर से जुड़े कुछ कागजों के खो जाने के बारे में लिखा हुआ है। इसके जरिए रवीश अप्रत्यक्ष रूप से यह बताने की कोशिश करते हैं कि सरकार कुछ कागजों को गायब कराकर केस से जुड़े हुए व्यक्तियों को बचाने की कोशिश कर रही है। अन्य अखबरों व मीडिया समूह द्वारा इस खबर को सही संदर्भों के साथ नहीं दिखाने के लिए मीडिया की आलोचना करते हैं। रवीश ने पोस्ट में इंडियन एक्सप्रेस को प्रमाण की तरह प्रस्तुत किया है।

18 जून, 2016 को डाली गई पोस्ट ''मैं क्यों मिडियोक्रिटी का समर्थक हूं''[18] में रवीश कुमार ने योग्य और मध्योग्य शब्दों की तुलना की है। मध्योग्य शब्द का तात्पर्य बताया है जो न बहुत योग्य और न ही अयोग्य है, यानी बीच का। उन्होंने व्यंग्यात्मक लहजे में बताया है कि मीडिया में भी मध्योग्य लोग ज्यादा तरक्की करते हैं, ये जुगाड़ू होते हैं और मालिक के काम निकलवाते हैं। 30 जून, 2016 को रवीश ने 'प्रेरितों के नाम पत्रकारिता के प्रेरक का पत्र''[19] पोस्ट में पत्रकारिता के संस्थानों पर निशाना साधा है। पत्रकारिता के संस्थानों को दुकान बताया है। रवीश ने पत्रकारिता के प्रोफेसरों की आलोचना करते हुए लिखा है कि अधिकांश में पत्रकारिता शिक्षण योग्यता की कमी है।

रवीश ये सभी बातें स्वयं के अनुभव पर आधारित बतायी हैं। हालांकि अपनी बात के समर्थन में उन्होंने कोई पत्रकारिता शिक्षा के आंकड़े या अनुभव घटना प्रस्तुत नहीं की है।

रवीश कुमार 5 जुलाई, 2016 को ''जानकारों से बचाओ, टीवी बंद करो''[20] शीर्षक से लिखते हैं कि मीडिया में लोग मंत्रीमंडल फेरबदल की खबरों को चुनाव से जोड़कर दिखा रहे हैं। वें मीडियाविद की समझ पर सवाल उठाते हैं कि यदि मंत्रीमंडल बदलाव से चुनाव जीते जाते तो कोई पार्टी सत्ता से बाहर ही नहीं होती। इस प्रकार के विश्लेषण प्रस्तुत करती खबरों को लेकर रवीश ने मीडिया के लोगों की समझ की आलोचना की है। जुलाई 10, 2016 को ''दर्शकों होशियार, खबरदार, चैनलों से सावधान''[21] पोस्ट में लिखते हैं कि मीडिया भी आज धुव्रीकरण करा रहा है। उनके अनुसार समाचार चैनलों पर दिखायी जाने वाली हर तीसरी खबर सांप्रदायिकता को बढ़ावा दे रही है। हालांकि रवीश ने इसके लिए केवल मीडिया व्यवहार के पिछले दो सालों का उदाहरण दिया है। रवीश उससे पहले के मीडिया व्यवहार पर कोई चर्चा नहीं करते हैं। ध्यान देने वाली बात है कि दो वर्ष पहले 2014 में केन्द्र में एनडीए की सरकार बनी थी। उन्होंने मीडिया पर आरोप लगाते हुए लिखा है कि समाचार चैनल गरीबी, अशिक्षा, स्वास्थ्य समस्याओं, बेरोजगारी पर कुछ नहीं दिखा रहे हैं केवल धर्म पर चर्चा कर रहे हैं। हालांकि रवीश अपनी बात के समर्थन में कोई आंकड़े प्रस्तुत नहीं करते हैं, केवल स्वयं की धारणाओं के आधार पर पूरा लेख लिखा गया है।

रवीश 16 जुलाई को ''कश्मीर के बहाने अफवाहों का मटीरियल आ गया है''[22] शीर्षक से लिखते हैं कि सोशल मीडिया में कश्मीर के मसले पर उनके फोटो और कैप्शन के साथ अफवाह फैलायी जा रही हैं। वे मुख्य धारा मीडिया पर आरोप लगाते हैं कि कश्मीर की किसी भी घटना को राष्ट्रवाद से जोड़ टीआरपी का जुगाड़ कर लिया जाता है। रवीश ने

इस लेख में अपने खिलाफ दुष्प्रचार करने को लेकर सोशल मीडिया की आलोचना की है। हालांकि रवीश कुमार सोशल मीडिया की पूर्ण स्वतंत्रता के समर्थक हैं।

18 जुलाई, 2016 को रवीश ''कश्मीर में अखबार क्यों बंद हैं''[23] शीर्षक से लिखते हैं कि इंडियन एक्सप्रेस की खबर के मुताबिक कश्मीर में अखबार बंद हुए दो दिन हो गए हैं। इस खबर के समर्थन वे दिल्ली से चलने वाले अन्य मीडिया हाउस की खबरों को भी पेश करते हैं। रवीश ने कुछ चैनलों को कश्मीर के मसले पर अफवाहा फैलाने वाला बताया है, इसके लिए उन्होंने कश्मीर में तैनात एक आईपीएस अधिकारी की बात को समर्थन में रखा है। विशेषज्ञ विशेष को आगे रखकर रवीश कहते हैं कि विशेषज्ञों का मानना है कि कश्मीर मसले का हल बातचीत के जरिए ही हो सकता है, लेकिन रवीश वह समाधान क्या होगा और वे विशेषज्ञ कौन हैं?, के बारे में नहीं लिखते हैं। रवीश लेख में जताने की कोशिश करते हैं कि कश्मीर का मीडिया कश्मीर की बात करता है, जबकि शेष भारत का मीडिया विशेषकर उत्तर भारत का मीडिया पुरानी धारणाओं को भड़काने का काम करता है। रवीश ने वह पुरानी धारणा क्या है स्पष्ट नहीं किया है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने कश्मीर की आजादी के समर्थन में कहा है। इसके लिए उन्होंने लिखा है की ट्रकों के पीछे लिखी लाइनें 'दूध मांगोगे तो खीर देंगे, कश्मीर मांगोगे तो चीर देंगे' की धारणा उत्तर भारत के लोगों की है, जो कश्मीर के लोगों की भावनाओं से मेल नहीं खाती है। रवीश कश्मीर में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता चाहते हैं, लेकिन वे देश की सुरक्षा और अस्मिता के खतरों पर कोई चिंता नहीं दिखाते हैं।

रवीश 20 जुलाई, 2016 को ''क्या मीडिया में ऐसा राष्ट्रवाद दिखना चाहिए''[24] शीर्षक के साथ लिखते हैं कि समाचार चैनल प्राइम टाइम के समय राष्ट्रवाद की घुट्टी पिलाने वाले

हो गए हैं। रवीश अपनी वामपंथी शैली में अपने अनेक लेखों में राष्ट्रवाद की खिलाफ लिख चुके हैं, उनमें से यह एक है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 31 जुलाई, 2016 और 4 सितंबर, 2016 को क्रमश: ''किन्हें नाज है मीडिया पर..''[25] ''और किन्हें नाज है मीडिया पार्ट टू''[26] शीर्षक के साथ मीडिया का विश्लेषण करने वाली दो पोस्ट डाली हैं। इसमें इन्होंने दो पत्रकार मित्रों के बीचे के संवाद और दो राजनीतिक व्यक्तियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के दस्तावेज होने की बात कही गई है। इस लेख में उन सबूती दस्तावेजों के प्रकार और उन दोनों राजनीतिक व्यक्तियों के नाम नहीं खोले हैं। साथ अपने पत्रकार मित्र का नाम भी नहीं बताया है। इसी संवाद घटनाक्रम में समाचार मीडिया के वर्तमान स्वरूप और परिस्थितियों का विश्लेषण किया है। मीडिया पर आरोप लगाए हैं कि वह सत्ता के खिलाफ खबर चलाने का साहस खो चुका है। वे पत्रकारिता के गुजर चके दौर को श्रेष्ठ बताते हैं और तर्क रूप में राजनीतिक व पत्रकारिता के उन घटनाचक्रों का वर्णन करते हैं। वे मीडिया पर आरोप लगाते हैं कि चापलूसी भरी खबरों को पॉजिटिव खबरों में दिखाया जाता है। उनके अनुसार संसद और मीडिया दोनों ही कॉरपोरेट के इशारों पर चलते हैं। इसके समर्थन में वे लिखते हैं कि सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों पर बहस के लिए संसद में कोरम पूरा करना भी कठिन हो जाता है, लेकिन आर्थिक विषयों से जुड़े हुए मामलों पर पूरी संसद भरी रहती है, व्हिप जारी किए जाते हैं। हालांकि वे गरीबी की बात करते हैं लेकिन संसद के आर्थिक विषयों का विरोध भी करते हैं, जो विरोधाभासी लगता है। लेख पार्ट टू के संवाद क्रम में एक बड़ा सरकारी अधिकारी भी जुड़ता है, जो अपने पास भी सरकार के खिलाफ बड़े सबूत होने की बात करता है। इसमें भी उन्होंने क्या सबूत मिले थे, वह सरकारी अधिकार कौन था और किस स्तर का था। सबूतों को खबर में तब्दील कर पाए या नहीं,

जिसका जिक्र उन्होंने पूरे लेख में किया है। इन लेखों में इस प्रकार के सभी प्रश्न अनसुलझे रहते हैं। ये लेख रहस्यवादी कहानी के स्वरूप में लिखे गए हैं। पूरा लेख अस्पष्टता से भरा हुआ है। लेख की भाषा लेखक असहाय रूप को प्रदर्शित करती है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने "'किन्हें नाज है मीडिया पर पार्ट - 3''[27] के रूप में 28 दिसंबर, 2016 को ''मीडिया के रेंगने के साल के तौर पर 2016 क्यों न याद किया जाना चाहिए''[28] शीर्षक से डाली पोस्ट में हवाला काडं और मीडिया की भूमिका का वर्णन किया है। इस पोस्ट में बताया गया है कि हवाला कांड से जुड़े दस्तावेजों में कुछ लोगों के नाम कोड रूप में लिखे हुए थे। ये कोड भारतीय राजनेताओं और उद्योगपतियों की ओर इशारा करते थे। कोड के आगे कुछ संख्या दी गई थीं और साथ में तारीख भी लिख हुई थी। प्रसून बताते हैं कि हवाला कांड के दस्तावेजों को मीडिया ने प्रमुखता के साथ छापा था। कुछ पत्रिकाओं ने दस्तावेजों को सबूत के तौर पर कवर पेज ही बना दिया था। इसके बाद वे लेख में 2016 में हुए घटनाक्रमों का जिक्र करते हैं, जिसमें राहुल गांधी ने जिन दस्तावेजों के सहारे भूचाल आने की बात कही गई। केजरीवाल जिन्हें दूर से ही मीडिया को दिखा रहें हैं। प्रशांत भूषण कोर्ट का दरवाजा खटखटा रहे हैं। वे मीडिया पर सवाल उठाते है कि मौजूदा कागजों में नाम और पद स्पष्ट लिखे हुए लेकिन रूचि नहीं दिखायी जा रही है। प्रसून यहां पनामा पेपर्स की ओर इशारा कर रहे हैं। वह सवाल उठाते हैं कि वह क्या कारण है कि मीडिया राहुल गांधी द्वारा प्रधानमंत्री मोदी पर लगाए जा रहे आरोपों को छापने या दिखाने की हिम्मत नहीं दिखा पा रहे हैं। हालांकि पुण्य प्रसून वाजपेयी भी उसी मीडिया का हिस्सा हैं। इस लेख में पनामा पेपर्स के बहाने भारतीय मीडिया पर निशाना साधा गया है। मीडिया पर आरोप लगाए गए हैं कि वह कॉरपोरेट और सत्ता के आगे समर्पित हो गया है।

रवीश 31 अगस्त को “भारत में इतिहास और अमेरिका में फुटनोट तक नहीं”[29] शीर्षक डाली गई पोस्ट में भारत और अमेरिका के बीच हुए रक्षा करार ‘लेमोआ’ की आलोचना की गई है। रवीश आलोचना के लिए अमेरिका के अखबारों को माध्यम बनाते हैं। उन्होंने पोस्ट में युएसए टूडे, द न्यूयार्क टाइम्स, वाशिंगटन पोस्ट, न्यूयार्क टाइम्स, इंटरनेशनल न्यूयार्क टाइम्स समाचार पत्रों के फ्रंट पेज के चित्र भी लगाए गए हैं। रवीश का कहना है कि इस रक्षा सौदे को किसी भी अमेरिकी अखबार में जगह नहीं मिली है। अखबारों में जगह न मिलने को उन्होंने देश के स्वाभिमान से जोड़ दिया है।

शशि शेखर ने 30 अगस्त, 2016 को “प्रथम वचन - छलावों से परे का सच”[30] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में हिन्दी भाषा को चिंता प्रकट की है। हिन्दी भाषा पर खतरे को समझाने के लिए उन्होंने कुछ उदाहरण लिखे हैं। सभी उदाहरण में उन्होंने स्वयं को अनुभव के रूप में प्रत्यक्ष शामिल रखा है। पहला उदाहरण देते हैं कि एक बार विदेशी मंत्री के रूप में भारत सरकार में कार्यरत सुषमा स्वराज ने हिंदी अखबारों में अंग्रेजी के शब्दों के बढ़ते इस्तेमाल से चिंतित होकर कुछ वरिष्ठ संपादकों व वरिष्ठ पत्रकारों को आमंत्रित किया। इसके बाद माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय ने वरिष्ठ पत्रकारों के सहयोग से एक शोध करवाया। शोध के निष्कर्ष आश्चर्यचकित करने वाले थे। जिसमें पता चला कि हिन्दी अखबारों में अंग्रेजी के ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है, जिनकी कोई आवश्यकता नहीं है। शशि शेखर हिन्दी पत्रकारिता के लिए इसे शर्मसार करने वाली घटना बताते हैं। दूसरे उदाहरण में बताते है कि आज के नब्बे प्रतिशत युवा हिन्दी की नौ-दस लाइनों को भी धारा प्रवाह नहीं पढ़ सकते हैं। हिन्दी के अंकों को तो वो पहचान ही नहीं पाते हैं। साथ ही वे लिखते हैं कि हिन्दी सम्मेलनों में कहा जाता है कि हिन्दी का विदेशों में विस्तार हो रहा है। इसे वे अर्धसत्य बताते हैं और सावधान

करते हैं कि वास्तविकता को समझना होगा व स्वस्थ्य आकलन करना होगा। वे बताते हैं कि हिन्दी का देश में स्वरूप बिगड़ रहा है और दायरा सीमित हो रहा है। हालांकि लेख में भाषा से संबंधित कोई आंकड़े या तथ्य नहीं दिए है। लेख में अनुभवों को प्राथमिकता दी है।

रवीश कुमार ने 2 सितंबर, 2016 को डाली गई ''रिलायंस के ब्रांड दूत प्रधानमंत्री मोदी''[31] पोस्ट में चित्र के साथ लिखा है कि टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र के जैकेट पेज पर जियो के विज्ञापन छपा है। जियो के विज्ञापन में नरेन्द्र के मोदी का बड़ा चित्र दिया हुआ है। रवीश कुमार ने इसे रिलायंस के ब्रांड एंबेसडर के तौर पर पेश किया है। हालांकि रिलायंस ने इसे डिजिटल इंडिया के तौर पेश किया है, जोकि प्रधानमंत्री की मुहिम है। रवीश ने आरोप लगाया है कि रिलायंस ने व्यावसायिक हितों के लिए प्रधानमंत्री की इमेज का इस्तेमाल किया है।

2 सितंबर को डाली गई एक अन्य पोस्ट ''अवस्थाओं में अवस्था बेहद आपत्तिजनक अवस्था''[32] में रवीश ने समाचार चैनलों और पत्रिकाओं द्वारा सेक्स स्कैंडलों पर टीआरपी देखने की नीयत पर सवाल खड़े किए हैं। साथ ही व्यंग्यात्मक अंदाज में कहा है कि सरकार को भारत में लोगों का नजरिया ठीक करने के लिए विधिवत सेक्स एजुकेशन देने चाहिए। 4 सितंबर को रवीश ने ''एक अखबार मुझकों भी देना मौला''[33] शीर्षक से कविता पोस्ट की है।

5 सितंबर, 2016 के लेख में रवीश कुमार लिखते हैं कि ''पत्रकारों को भी छूट मिले विज्ञापन में''[34], इसमें रवीश कुमार ने बीजेपी की महिला सांसद किरन खेर और हेमा मालिनी को लेकर निशाना साधा है। इससे पूर्व के एक लेख में रवीश ने जियो के

विज्ञापन में प्रधानमंत्री के चित्र के इस्तेमाल करने को भी सवाल उठाए थे। रवीश ने किसी और पार्टी में शामिल फिल्म कलाकार पर विज्ञापन को लेकर कोई टिप्पणी नहीं की है। रवीश कुमार ने 12 सितंबर, 2016 को ‘‘चिकनगुनिया पर एक्सप्रेस की सारा हफीज की शानदार रिपोर्टिंग’’[35] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में शीर्षक के अनुसार ही अंग्रेजी समाचार पत्र इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्टर सारा हाफीज की मलेरिया और चिकनगुनिया पर की गई रिपोर्टिंग की प्रशंसा की है।

रवीश ने 20 सितंबर, 2016 को ‘‘मेरे पास एक नौकर की कमीज है’’[36] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में मीडिया को नैतिकता की बात सीखाने वाले लोगों को ही नैतिकताहीन बता है। रवीश का मानना है कि नैतिकता का उत्पादन और वितरण समाज के जरिए होना चाहिए। मीडिया नैतिकता का उत्पादन और वितरण करने के लिए जिम्मेदार संस्था नहीं है। रवीश ने मीडिया को समझौतावादी संस्था बताया है। रवीश लेख के शीर्षक को लेकर एक लाइन डालते हैं कि उनके पास एक नौकर की कमीज है, जिसे वे एक कहानी के पात्र गौरांग बाबू के साथ मिलकर जला देंगे।

रवीश कुमार ने ‘‘रिक्शा पर एआईआर 102.60 की शानदार डाक्यूमेंट्री’’[37] हेडलाइन के साथ 24 सितंबर, 2016 को एक पोस्ट डालते हैं, जिसमें वे रेडियो जैसे जनमाध्यम की महत्ता के बारे में बात करते हैं, वे बताते है कि रेडियो पर आने वाले सायमा की पुरानी जीन्स जैसे कार्यक्रम भरोसा दिलाते हैं कि जनमाध्यम में क्वालिटी कार्यक्रम बन सकते हैं। साथ में रिक्शा के इतिहास और शब्द के बारे में चर्चा करते हैं, जो रेडियो कार्यक्रम में बताया जा रहा था। पद्धति और चुनाव प्रचार संस्कृति का भारत से क्षेत्र बताते हैं और भारत में लागू करना चाहते हैं। 30 सितंबर को रवीश कुमार ने ‘‘ये सिर्फ सर्जिकल

स्ट्राइक भर नहीं है''[38] में सर्जिकल स्ट्राइक के प्रति सकारात्मक टिप्पणी नहीं की है, उनके अनुसार देश में गरीबी के खिलाफ, जातिवाद के खिलाफ स्ट्राइक की जरूरत है।

रवीश कुमार ने 5 अक्टूबर, 2016 को ''प्रोचै - जल्द आना चाहिए एक नया चैनल''[39] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में मीडिया और दर्शक दोनों की आलोचना है कि उनका मानना है कि मीडिया में निष्पक्षता और साहस खत्म हो गया है। मीडिया सरकार एक दूसरे के अत्यधिक नजदीक आ गए हैं, जिसके कारण वे सरकार की आलोचना का साहस ही नहीं कर पाते हैं। रवीश ने पत्रकारिता की पूरी जमात को ही कठघरे में खड़ा कर दिया है। जनता की आलोचना करते हुए लिखते हैं कि देश की जनता भी निष्पक्ष पत्रकारिता नहीं चाहती है, वह भी सरकार समर्थित खबरों में सच्चाई तलाश लेती है। हालांकि रवीश दर्शक और मीडिया की आलोचना करते समय तथ्य या आंकड़े प्रस्तुत नहीं करते हैं। 7 अक्टूबर को रवीश ने प्रकार की एक अन्य पोस्ट ''भांड पत्रकारिता के दौर में देश का मनोबल बढ़ा हुआ है''[40] शीर्षक से डाली है, इसमें मीडिया को सरकार का आलोचना न करने को लेकर आरोप लगाया है।

16 अक्टूबर को रवीश ने ''अखबारों की गुलामी से बाहर आने का अभ्यास कीजिए''[41] शीर्षक से लेख पोस्ट किया है, जिसमें पुनीत बेदी और अमर उजाला के स्थानीय संपादक रहे शम्भूनाथ शुक्ला के फेसबुक पोस्टों के सहारे मीडिया पर हमला बोला है। शम्भूनाथ शुक्ल रवीश के मित्र हैं और बीजेपी सरकार के धुर विरोधी माने जाते हैं। पुनीत बेदी और शम्भूनाथ शुक्ला दोनों ही वामपंथी विचारधारा के समर्थक माने जाते हैं। रवीश की अनेक पोस्टों में इंडियन एक्सप्रेस अंग्रेजी समाचार पत्र का समर्थन किया है। पुनीत बेदी ने अपनी पोस्ट में लिखा है कि इंडियन एक्सप्रेस अखबार को छोड़कर में सभी अखबारों को लेना बंद कर दिया है। शम्भूनाथ शुक्ला और पुनीत बेदी के अनुसार समाचार पत्र बीजेपी

सरकार की नीतियों का विरोध नहीं कर पर रहे हैं, वे आरोप लगाते हैं कि वे सरकार समर्थक हो गए। रवीश दोनों की पोस्ट्स को अपने विचार के अनुसार पाते हैं।

एक अन्य पोस्ट, 3 नवंबर, 2016 को रवीश कुमार ने ''मेरे अजीज दर्शको-पाठको, कुछ तो समझो इस खेल को, ये आपके खिलाफ है''[42] पोस्ट में राजनीति में खत्म होते लोकतंत्र और मीडिया द्वारा उनका साथ देने की आलोचना की है। रवीश मध्यप्रदेश में आतंकवादी के हुए एनकाउंटर को अप्रत्यक्ष रूप से फर्जी बताते हुए सरकार को दोषी ठहराते हैं, घटना में वे लोकतंत्र को खतरा भी देखते हैं। रवीश ने एककाउंटर के बाद आए विभिन्न लोगों के बयान के बाद यह निष्कर्ष निकाला। रवीश ने इस मामले में व्यक्तिगत जमीनी पड़ताल नहीं की है। इसी प्रकार, रवीश 23 दिसंबर को ''जब भी किसी को अखबार पढ़ते हुए देखता हूं''[43] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में लिखते हैं कि जब भी में किसी को अखबार पढ़ते हुए देखता हूं तो ऐसा लगता है कि मानो उसे ठगा जा रहा है, उसके सामने झूठ परोसा जा रहा है। रवीश अखबारों पर आरोप लगाते हैं कि अखबारों में अधिकांश खबरें खासकर राजनीतिक खबरें झूठ से भरी हुई होती हैं, राजनीतिक पार्टियों का प्रोपेगैंडा बढ़ा रही होती हैं।

रवीश कुमार ने 25 नवंबर को नोटबंदी के बाद मीडिया के व्यवहार का विश्लेषण करते हुए ''तीसरे दर्जे की बिजनेस पत्रकारिता और नोटबंदी से जुड़े कुछ सवाल''[44] शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें उन्होंने मीडिया की आलोचना करते हुए लिखा है कि मीडिया सरकार के अनुसार ही नोटबंदी की खबरों को दिखा रहा है, आर्थिक पत्रकार और अर्थशास्त्री भी सरकार की हां में हां मिला रहे हैं। रवीश ने नोटबंदी के मामले में विशेषज्ञों को कठघरे में रखते समय कोई ठोस तथ्य नहीं दिए हैं। 13 दिसंबर को डाली गई पोस्ट ''आज के बिजनेस अखबारों का हाल''[45] में नोटबंदी का विरोध करने पर मीडिया समूहों

की आलोचना की है। जिन मीडिया समूह ने नोटबंटी के समर्थन में दिए तर्क दिए हैं उन्हें बेबुनियाद और सरकार समर्थित बताया है।

रवीश ने 12 दिसंबर, 2016 को ''सवाल न पूछें - पामेला फिलिपोज''[46] शीर्षक से लिखी गई पोस्ट में पामेला फिलिपोज के इंडियन एक्सप्रेस में छपे लेख को हूबहू छाप दिया है। 13 दिसंबर को रवीश ने ''पार्षदी के लिए नीरज ने पत्रकारिता छोड़ दी''[47] में अपने मीडिया साथी नीरज वत्स के फैसले पर लिखा है कि नीरज ने पत्रकारिता करते हुए समझ लिया था कि इसके जरिए कुछ नहीं बदला जा सकता है और वे पार्षदी का चुनाव लड़ने चले गए। रवीश में पत्रकारिता छोड़कर पार्टियों से जुड़ने वाले पत्रकारों पर टिप्पणियां की हैं, जो पत्रकार पत्रकारिता छोड़कर पार्टियों की आईटी सेल से जुड़ते हैं, वे नेता नहीं बनते केवल नेताओं के लिए उन्मादी समर्थक तैयार करते हैं। रवीश ने उन सभी पत्रकारों की आलोचना है कि जो पत्रकारिता छोड़कर राजनीति में गए और वहां भी सफल नहीं हुए।

रवीश कुमार ने 6 जनवरी 2016 को ''भारत में नाव पत्रकारिता की शुरूआत हो''[48] हेडलाइन के साथ डाली गई पोस्ट में नावों के महत्व और ऐतिहातिक पृष्ठभूमि के साथ व्याख्या की है। रवीश ने चुटीले अंदाज में नया विचार पेश किया है कि नाव का भारतीय अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान है। लाखों लोगों की जीविका नावों के सहारे चलती है। लोग इसके सहारे मछलियां पकड़ते हैं, नदियां पार करते हैं। रवीश ने इस पोस्ट में नाव व व्यक्तियों के छह सुंदर चित्र भी लगाए हैं। वे पोस्ट के जरिए बताने की कोशिश करना चाहते हैं कि मीडिया असली भारतीय समाज को नहीं दिखा पाता है। उनकी पीड़ाओं को नहीं दिखा पाता है। मछुआरा समाज भी उसी वर्ग से संबंध रखता है।

रवीश कुमार ने 3 मार्च, 2016 को ''जाने वाले सिपाही से पूछो''[49] शीर्षक से डाली पोस्ट में यू ट्यूब पर पड़े हैदराबाद के शायर मख्दूम मोइनुद्दीन की रचना के जरिए लिखते हैं कि हम देश के लिए शहीद-शहीद चिल्लाते रहते हैं, कभी शहीद हुए व्यक्ति के घर वालों और उसकी पत्नी से भी पूछना चाहिए कि उन पर क्या बीत रही है। वामपंथी विचारधारा से प्रेरित रवीश कुमार राष्ट्रवाद की भावना की आलोचना करते हैं और इसे अप्रासंगिक ठहराते हैं। रवीश कुमार 21 मार्च, 2016 को ''संपादक की भूमिका पर उपराष्ट्रपति का भाषण''[50] शीर्षक से डाले गए लेख में राज्यसभा टीवी द्वारा संपादकों के बुलाए गए एक सम्मेलन में उपराष्ट्रपति द्वारा दिए अंग्रेजी भाषण हूबहू पोस्ट कर दिया है। लेख में संपादकों की भूमिका के बारे में कहा गया है।

मनोरंजन मीडिया से संबंधित ब्लॉग पोस्ट्स

रवीश कुमार द्वारा 3 जनवरी, 2016 को ''मुगले आजम फिर नहीं बनेगी, मस्तानी अमर रहेगी''[51] शीर्षक से अपने ब्लॉग कस्बा पर डाली पोस्ट में निर्देशक के आसिफ द्वारा बनायी गई ऐतिहासिक फिल्म मुगले आजम और संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित बाजीराव मस्तानी की आपस में तुलना की है। पोस्ट में मुगले आजम को ज्यादा श्रेष्ठ बताया है। रवीश कुमार ने व्यंग्यात्मक लहजे में बाजीराव मस्तानी के दृश्यों को अमर चित्र से तुलना की है। बाजीराव मस्तानी फिल्म के नायक जरिए रवीश निष्कर्ष निकालते हैं कि मराठों और मुगलों के बीच युध्द धर्म का न होकर सल्तनत का था। उन्होंने कुछ दृश्यों को मुगले आजम से प्रेरित बताया है। समीक्षा के दौरान रवीश अपने युवा दौर की फिल्मों से खासे प्रभावित लगते हैं। उन्होंने मुगले आजम को तकनीकी, कलाकारी, फिल्म निर्देशन में अद्वितीय बताया है, जिसके सामने बाजीराव मस्तानी कहीं नहीं ठहरती है।

रवीश कुमार ने 10 जनवरी, 2016 को “अपने आप में नजीर है वजीर”[52] शीर्षक से लिखे गए अपने लेख में वजीर फिल्म की स्टोरी के सहारे कश्मीर के लोगों की समस्या कही है। राष्ट्रवाद की विचारधारा की आलोचना करते हुए उसे कश्मीर समस्या की एक वजह बताया है। उन्होंने पोस्ट में मीडिया पर आरोप लगाया है कि वह कश्मीर की असली समस्या को कभी नहीं दिखाता है। रवीश ने फिल्म समीक्षा के जरिए कश्मीर के मामले में वामपंथी विचारधारा के अनुकूल बात कही हैं। उन्होंने लेख में पाकिस्तानी आतंकवाद या अलगाववादियों के बारे में कुछ नहीं लिखा है।

रवीश कुमार ने 8 फरवरी, 2016 को ‘‘अवर ब्रॉड एज क्राइसिस”[53] शीर्षक से लेख डाला है, जिसमें अमेरिका की एक फिल्म ‘अवर ब्रॉड एज क्राइसिस’ की समीक्षा के बहाने चुनाव प्रबंधन और मीडिया की जुगलबंदियों को दिखाया गया है। फिल्म जेन बोडनी के ऊपर बनी है, जिसे अमेरिका में प्रचार रणनीतियों और चुनाव प्रबंधन के काम में माहिर माना जाता है। जेन बोडनी को बोलविया के एक नेता चुनाव प्रचार प्रबंधन का काम सौपा था, जो अपनी नाकारात्मक छवि से उबरने का प्रयास कर रहा था। रवीश बताते है कि फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे लोकतंत्र में शाब्दिक जालों के जरिए करिश्माई तरीके से चुनाव के परिणाम को अपने फेवर में कर लिया जाता है। बाद में, बोलिविया का वह शासक अमेरिका के हाथ की कठपुतली बन जाता है। वह तानाशाह बनकर लोगों को शोषण करने लगता है। लेख में रवीश फिल्म के जरिए भारतीय मीडिया की भी समीक्षा करते हैं और आरोप लगाते हैं कि मीडिया भारत में भी व्यक्ति केंद्रित हो गया है, और दिनरात व्यक्ति विशेष को नायक बनाने की कोशिश की जाती है।

रवीश कुमार ने 27 फरवरी, 2016 को “मनोज वाजपेयी वाया अलीगढ़”[54] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में जेएनयू की घटना की तुलना प्रोफेसर सिरस के साथ हुई घटना से की है।

सिरस को अदालत ने बरी कर दिया था। फिल्म के जरिए समाज द्वारा आरोपी बनाए जाने और बाद में निर्दोष साबित होने की पीड़ा का विश्लेषण करना का प्रयास किया है।

25 अप्रैल, 2016 को ''किस किस का है मैथ्स में डब्बा गोल''[55] शीर्षक से लिखे गए लेख मे रवीश कुमार ने निल्ल बट्टा सन्नाटा फिल्म में मास्टर की भूमिका निभाने व्यक्ति के सहारे बिहार की पृष्ठभूमि का रोचक चित्रांकन किया है। कलाकार 'धरीक्षण प्रसाद उच्चांगल विद्यालय' से पढ़े हुए थे, उनके शिक्षक लक्ष्मण प्रसाद थे। रवीश ने बताया है कि जब वे शरारती बच्चों में मार लगाया करते थे तो फिल्मी गाना गाया करते थे। उन्होंने फिल्म की निर्देशक के निजी जीवन से फिल्म की पटकथा को प्रभावित बताया है। फिल्म की निर्देशक भी मैथ्स में कमजोर और मैथ्स से उन्हें बहुत डर लगता था, उन्होंने उसी डर को दर्शकों के सामने मनोरंजक तरीके में पेश किया है।

रवीश ने 8 जून, 2016 को ''उड़ता पंजाब के बहाने वो देखो उड़ता पहलाज है''[56] में फिल्म के जरिए फिल्म सेंसर बोर्ड, भारत की शिक्षा व्यवस्था और फिल्मों में सरकारी दखल और पंजाब में नशे के कारोबार पर तंज कसा है। रवीश ने 'सोशल मीडिया में मनमोहन सिंह की वापसी' शीर्षक के साथ 11 जून, 2016 को पोस्ट डाली है। सोशल मीडिया की समीक्षा के माध्यम से लेख में मनमोहन सिंह और प्रधानमंत्री के विदेशी दौरों की तुलना की है, जिसमें सोशल में चले वीडियो ट्रेंड 'किस प्रधानमंत्री के दौरे में कितनी तालियां बजी' की आलोचना की गई है। तर्क दिया है कि इस प्रकार के उथले प्रचार से विदेश नीति के तत्व चर्चा के केंद्र से ओझल हो जाते है। रवीश ने सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सर्मथन में कहने-लिखने वालों को 'भक्त' कहा है। सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की आजादी का इस्तेमाल कर रहे आम लोगों के लिए रवीश

द्वारा भक्त शब्द के इस्तेमाल को पत्रकारिता के नजरिए से सही नहीं ठहराया जा सकता है। मीडिया में दोनों प्रधानमंत्री के भाषणों की भी समीक्षा की गई है।

24 जुलाई, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ''सिल्वर स्क्रीन का डॉन महानायक क्यों''[57] शीर्षक से लिखे लेख में 'कबाली' फिल्म के जरिए नायक और खलनायक की समाज में स्वीकृति-अस्वीकृति का विश्लेषण करते हैं। फिल्मों और फिल्म कलाकारों के जरिए उन कारणों की तलाश करते हैं, जिनके कारण समाज एक खलनायक में अपना नायक और मसीहा देखने लगता है। प्रसून फिल्मी दुनिया की हकीकत को असली दुनिया में सही ठहराने का प्रयास कर रहे हैं। फिल्मों में खलनायकों के चित्रण के बदलाल को भी विश्लेषित किया है। साथ ही उन्होंने उन बिंदुओं को पहचाने का दावा किया है, जिसके कारण रजनीकांत बॉलीवुड के कलाकारों से आगे निकल गए हैं। वे बताते हैं कि रजनीकांत ने अपने करियर की शुरुआत अमिताभ बच्चन अभिनित फिल्म 'बिल्ला' के रीमेक में नायक का रोल निभा की थी। इसी कारण उन्हें तमिल फिल्मों का अमिताभ बच्चन कहा गया। अपने लेख के क्रम को आगे बढ़ाते हुए वे गरीबी, शोषण, भ्रष्टाचार का मुद्दा तर्क के रूप उठाते है, और इस तर्क को स्थापित करते हैं कि इन्ही स्वरूपों का खलनायक-नायक के रूप में रोल के करने के कारण रंजनीकांत आज अमिताभ बच्चन से आगे निकल गए है। अपने तर्क को आगे बढ़ाते हुए लिखते है कि इन्हीं कारणों से फिल्मों के नायक एनटी रामाराव और एमजीआर राजनीति के नायक भी बन गए। हालांकि बात के समर्थन में उन्होंने किसी प्रकार के सामाजिक-राजनीतिक अध्ययन और रिपोर्ट का हवाला नहीं दिया है। उनका पूरा आर्टिकल अपने वैचारिक संज्ञान के आधार पर है और इसी आधार पर वे नायक व खलनायक की समाज में स्वीकृति और राजनीति में सफलता के कारणों के निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत कर दिया है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 12 सितंबर, 2016 को ''रेखा ... अनकही कहानी ..''[58] में यासिर उस्मान द्वारा लिखी गई बॉलीवुड की अदाकारा 'रेखा' की जीवनी की समीक्षा की है। वाजपेयी लिखते हैं कि विश्लेषण के दौरान लेखन शैली से लगता है कि विश्लेषक किताब में दिए गए घटनाक्रमों की सच्चाई को तोलने के अलावा गहराई से अनुभव कर रहा है। वे खुलासा करते हैं कि रेखा ने किताब के कुछ घटनाक्रमों को एक सिरे नकार दिया है, हालांकि इस विषय पर लेखक ने किताब में कोई जिक्र नहीं किया है। इस आधार पर वे उन घटनाक्रमों की सच्चाई पर प्रश्न भी खड़ा करते हैं। साथ ही उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो रेखा की जिंदगी से जुड़े या समकालीन थे। प्रसून उजागर करते हैं कि हालांकि लेखक ने उनसे भी बात नहीं की है। साथ ही, वे किताब को नए व रूचिकर जानकारियों से भरा पाते हैं। पुण्य प्रसून वाजपेयी ने किताब की प्रशंसा की है। पूरी किताब लेखक के अनुभव, जानकारियों व रेखा से बातचीत के आधार पर लिखी गई है। पोस्ट में किताब जिल्द पेज की चित्र भी दिया है, जिस पर रेखा का चित्र व लेखक का नाम लिखा हुआ है।

रवीश ने 14 अक्टूबर को ''बॉब डिलेन इन हिन्दी मीडियम''[59] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में बॉब डिलेन को मिले नोबेल पुस्कार के मौके पर उनके गाने का हिन्दी अनुवाद दिया है।

साहित्य से संबंधित ब्लॉग पोस्ट्स

रवीश ने 13 जनवरी, 2016 की पोस्ट में भीमायन पुस्तक की समीक्षा को ''भीमायन - एक अद्भूत किताब है''[60] शीर्षक से डाला है। रवीश बताते हैं कि पुस्तक में सामाजिक अस्पृश्यता को लेकर लोकशैली में कूची से ऊकरे गए चित्रों के माध्यम से प्रभावी व

सार्थक तरीके से दिया गया है। वे इस पुस्तक को बच्चे व बड़ों सभी से पढ़ने की अपील करते हैं।

रवीश कुमार ने 3 मार्च, 2016 को ''न वो बाबरी मस्जिद थी न बाबर ने मंदिर तोड़ा था''[61] शीर्षक डाली गई पोस्ट में लेखक किशोर की नवप्रकाशित पुस्तक 'अयोध्या रिविजिटिड' के माध्यम से लिखते हैं कि बाबर ने मंदिर नहीं तोड़ा था, और इस पुस्तक को रवीश मंदिर-मस्जिद राजनीति पर करारा तमाचा सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। लेखक को रवीश दक्षिणपंथी बता किताब को प्रामाणिक होने का तर्क देते हैं। पुस्तक के माध्यम से रवीश उन सभी आधुनिक और प्राचीन लेखकों को गलत और झूठा साबित करने की कोशिश करते हैं, जिन्होंने बाबरी मस्जिद की जगह मंदिर कहा है। वे उन तथ्यों को भी झूठा बताते हैं जो मंदिर होने के प्रमाण के रूप में दिए गए हैं। इस लेख में रवीश पूर्वाग्रहों से ग्रसित लगते हैं। रवीश कुमार ने 7 जून, 2016 को ''आवश्यकता है एक ऐसे सेंसर बोर्ड चीफ की''[62] शीर्षक से कविता पोस्ट की है, जिसमें सेंसर बोर्ड पर तंज कसा गया है, जिसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधक बताया है, हालांकि वे राष्ट्र सुरक्षा व अन्य कारणों को ध्यान में रखते हुए सेंसर बोर्ड का कोई विकल्प या स्वरूप भी प्रस्तुत नहीं करते हैं।

रवीश कुमार ने 30 अप्रैल, 2016 को ''जंगल और जमीन के बीच एक किताब रखी है''[63] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में 'फाइंडिग माईवे' पुस्तक की समीक्षा के साथ-साथ आधुनिक व तकनीक से संपन्न होते समाज को समझने की कोशिश करते हैं। लेख में रवीश किताब के माध्यम से एकलव्य की तुलना वर्तमान नक्सलियों से की है, जोकि पूरी तरह अप्रासंगिक लगता है। एकलव्य की कहानी को नक्सलवादियों की कहानी में पिरोया गया है।

14 सितंबर, 2016 को रवीश कुमार ने “धूप के सिक्के, एक काव्यात्मक यात्रा - प्रसून जोशी”[64] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इस पोस्ट में प्रसून जोशी की पुस्तक ‘धूप के सिक्के’ को पढ़ने के दौरान अपने अनुभवों के जिक्र के साथ पुस्तक की बारीकी से समीक्षा की है। 14 सितंबर, 2016 को रवीश ने “ये उस हमाम की बात है, जिसमें कोई नंगा है न दलाल है”[65] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें रवीश कुमार ने दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल द्वारा पत्रकार शेखर गुप्ता के लिए असामाजिक शब्दों का प्रयोग करने पर आपत्ति जताई है। साथ ही मीडिया को संवाद की मर्यादा न लांघने की सलाह दी है।

सोशल मीडिया से संबंधित पोस्ट्स

31 मई, 2016 को शशि शेखर “प्रथम वचन - सोशल मीडिया का मायाजाल”[66] शीर्षक के साथ सोशल मीडिया की समाज पर पड़े पभावों का वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि समाज की गति को सोशल मीडिया ने बहुत तेज कर दिया है। सोशल मीडिया पर पल भर में जानकारियों का अंबार इकट्ठा हो जाता है। सच या झूठ का जब तक पता चलता है सूचना एक बड़े समूह के बीच पहुंच चुकी होती है। साथ ही वे मनोविज्ञानियों के हवाले से लिखते हैं कि सोशल मीडिया समाज को अधीर बना रहा है। खासकर इससे युवा अधिक प्रभावित हो रहा है। ‘लाइक’ के लिए लोग एडिक्ट हो गए हैं। पोस्ट डालने के बाद बार-बार देखते हैं कि उनको कितने ‘लाइक्स’ मिले हैं। वे लिखते हैं कि सोशल मीडिया का सही से इस्तेमाल न किया जाए तो यह तनाव व मनोविकार पैदा कर सकता है। साथ ही, वे सोशल मीडिया पर आरोप लगाते हैं कि इसके माध्यम कोई भी फर्जी आईडी बनाकर किसी महामानव का चरित्र हनन कर सकता है या रातोंरात समाज के बीच एक फर्जी ‘हीरो’ खड़ा कर सकता है। दोनों ही प्रकार के लोगों का इंटरनेट पर अपनी मानसिकता का समूह आसानी से मिल जाता है। आज सोशल मीडिया पर क्षणिक समय

में ही फैसले सुना दिए जाते हैं। साथ ही वे सोशल मीडिया को आतंकवाद, हवाला, वेश्यावृत्ति, आतंकवाद, मानव तस्करी में इस्तेमाल किए जाने की ओर भी ध्यान आकर्षित करते हैं। उन्होंने सोशल मीडिया को दोस्त और दुश्मन एक साथ होने के रूप में परिभाषित किया है। शशि शेखर का पूरा लेख सोशल मीडिया पर लिखे गए निबंध की भांति है। लेख में सोशल मीडिया की मॉनिटरिंग किस प्रकार की जा सकती है या उसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की किस प्रकार जारी रखा जाए आदि के बारे में कुछ नहीं लिखा है। शशि शेखर लेख के अंत में बताते हैं कि सोशल मीडिया में सुधार भी उसी के अंदर निकलने इसके समर्थन के लिए व परंपरागत मीडिया का उदाहरण देते हैं कि उसके सुधार में करीब एक शताब्दी से ज्यादा का समय लग गया है। हालांकि वे इस बात का कोई जवाब नहीं दे पाते हैं कि परंपरागत मीडिया देश की सीमाओं के अंदर चलता है, जबकि इंटरनेट पर चलने वाले सोशल मीडिया में देश की सीमाओं की बंदीशे कारगर नहीं है। सोशल मीडिया पर यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य देश में बैठकर कोई आपत्तिजनक पोस्ट डालता है तो उस पर कार्रवाई करना लगभग असंभव है, इस प्रकार की समस्याओं का समाधान कैसे निकलेगा, के बारे में भी कुछ नहीं लिखा है। यह लेख सोशल मीडिया के सामान्य प्रयोगकर्ता व आम जन के लिए साधारण विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

वहीं, पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 20 जनवरी, 2016 को ''पत्रकारिता रहते हुए पत्रकार बने रहने की चुनौती''[67] साथ ही वे सूचना तकनीक के विकास को पत्रकारिता के सहायक तो बताते हैं लेकिन साफ इंनकार करते हैं कि सूचना तकनीक का प्रयोग पत्रकारिता नहीं है। सोशल मीडिया ने पत्रकारिता पर दबाव बनाया है। किसी भी खबर या तथ्य से छेड़छाड़ करने पर सोशल मीडिया में समीक्षा शुरू हो जाती है। दर्शकों-पाठकों के पास एक समानंतर माध्यम है। प्रसून मीडिया की आलोचना करते हुए लिखते है कि मीडिया चुनाव

को मुद्दों से भटकाकर सनसनी बनाने में लगा रहता है। उदाहरण के लिए 2014 के आम चुनाव के बाद के प्रत्येक चुनाव को मोदी के लिए अगले आम चुनाव के लिए लिटमस टेस्ट और सेमीफाइनल बताया जाता है। हालांकि प्रसून मीडिया में कार्य करते हुए जो उन्होंने व्यक्ति अनुभव किए हैं, के बारे में नहीं लिखते हैं। बतौर पत्रकार उन्होंने इन्हीं मानकों का अनुसरण किया या नहीं, इसके बारे में भी कुछ नहीं लिखते हैं। उनका लेख विश्लेषणात्मक शैली में लिखा गया है।

इसी प्रकार, रवीश ने 24 जनवरी, 2016 को ''जनमत एक प्रोडक्ट है और दर्शक उपभोक्ता''[68] शीर्षक से लेख पोस्ट किया है। इसमें वे लिखते हैं कि सोशल मीडिया पर रोजना इतिहास लिखा जा रहा है। लोग अपनी सचित्र आत्मकथाएं लिख रहे हैं। इस लेख में वे टेलीविजन न्यूज मीडिया की आलोचना करते हैं। टीवी की स्क्रीन पर बैठकर एंकर नेताओं को आपस में लड़ाते रहते हैं। रवीश निराशात्मक लहजे में मीडिया पर आरोप लगते हैं कि व्यावसायिक समाचार चैनलों ने लोकतंत्र की फंतासी दुनिया रच रखी है। रवीश ने इस लेख साहस दिखते हुए स्वयं के प्रोफेशन की आलोचना की है।

रवीश कुमार ने 30 अगस्त, 2016 के लेख ''फेसबुक जी, ये जो गलत हो रहा है, अच्छी बात नहीं है''[69] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में स्वतंत्र पत्रकार, मोहम्मद अनस के लेटर के माध्यम से फेसबुक पर निशाना साधते हैं। अनस ने फेसबुक पर आरोप लगाया है कि कतर के राजकुमार के संबंध में भारतीय मीडिया द्वारा दिखायी गई खबरों की पोल खोलने पर उनका अकाउंट एक महीने के लिए बंद कर दिया गया। रवीश ने अनस का अपने ब्लॉग पर समर्थन उसकी कहानी के आधार पर किया, रवीश ने इस मामले में कोई व्यक्तिगत जांच-पड़ताल नहीं किया है। अनस द्वारा फेसबुक को लिखे गए ओपन लेटर को भी रवीश ने सत्य मानते हुए अपने ब्लॉग पर हुबहू लगा दिया है।

रवीश ने 26 सितंबर, 2016 को ‘‘फेसबुक’’[70] नाम से कविता पोस्ट की है, इसमें फेसबुक पर व्यक्तिओं के व्यवहार के बारे में लिखा गया है। 29 सितंबर को रवीश ने ‘‘अमेरिका में जो डिबेट आप देखते हैं, वो पूरी और एकमात्र तस्वीर नहीं है’’[71] शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें भारत और अमेरिका के विभिन्न पार्टियों द्वारा अपनाए जाने वाले चुनाव के तरीकों और संस्कृति की तुलना है। दो ही देशों की चुनावी संस्कृति की आलोचनात्मक समीक्षा की है। साथ भारत के उन लोगों की आलोचना भी की है जो अमेरिकी चुनाव

30 अक्टूबर को रवीश ने दो पोस्ट ‘‘आत्मकथा - दरअसल इसका कोई एक लेखक होती ही नहीं’’[72] व ‘‘हे मैसेज-भेजकों, जवानों तक मैसेज कैसे भेज रहे हो’’[73] डाली हैं। एक पोस्ट में आत्मकथा के लिखने की प्रक्रिया के बारे दिया है और दूसरी पोस्ट में वाट्स पर संदेश भेजने के लोगों के व्यवहार का विश्लेषण किया है।

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
मीडिया	130	1.209	0.00	0.00	18	0.7488	113	1.0513	0.00	0.00
न्यूज चैनल	108	1.0044	0.00	0.00	0.00	0.00	12	0.0116	0.00	0.00
अखबार	15	0.1395	0.00	0.00	01	0.0416	15	0.1395	0.00	0.00
फिल्म	42	0.3906	0.00	0.00	0.00	0.00	25	0.2333	0.00	0.00
किताब	69	0.6417	0.00	0.00	01	0.0416	10	0.0930	0.00	0.00
सोशल मीडिया	20	0.1860	0.00	0.00	11	0.4576	08	0.1675	0.00	0.00

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
पत्रकार	163	1.5159	0.00	0.00	09	0.3744	22	0.2047	0.00	0.00
संपादक	35	0.3255	0.00	0.00	02	0.0832	08	0.0744	0.00	0.00
पाठक/दर्शक	59	0.5487	0.00	0.00	01	0.0416	02	0.0186	0.00	0.00
समाचार/ खबर/ न्यूज	23	0.2139	0.00	0.00	02	0.0832	13	0.1209	0.00	0.00

संदर्भ सूची :

1. अविनाश वाचस्पति व रविन्द्र. (2011). *हिन्दी ब्लॉगिंग: अभिव्यक्ति की नई क्रांति*. हिन्दी साहित्य निकेतन.
2. जिल बॉलकर रेटबर्ग. (2008). *ब्लॉगिंग: डिजिटल मीडिया एंड सोसाइटी*. पॉलिटी पब्लिकेशन.
3. सुनील सक्सेना. (2012). *वेब जर्नलिज्म 2.0*. टाटा मैक्ग्रा हिल.

4. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी 4). क्या शहादत के सम्मान को यही तरीका है?. Retrieved from http://naisadak.org/kya-sahadat-ke-samman-ka-yahi-tareeka-hai/

5. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जनवरी 20). पत्रकारिता रहते हुए पत्रकार बने रहने की चुनौती. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_20.html

6. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी 17). डरा हुआ पत्रकार मरा हुआ नागरिक बनाता है. http://naisadak.org/open-letter-to-chief-justice-of-india/.

7. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी 20). हमारा टीवी बीमार हो गया है. Retrieved from http://naisadak.org/tv-bimar-ho-gaya-hai/

8. कुमार, रवीश. (2016, मई 17). नेताओं, अपराधियों के निशाने पर पत्रकार . Retrieved from http://naisadak.org/

9. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल 17). 'क्या आप राजदेव रंजन के बारे में जानना चाहेंगे?. Retrieved from http://naisadak.org/

10. शेखर, शशि. (2016, मई 28). न रुकी, न रुकेगी हिंदी पत्रकारिता. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-hindi-journalism-would-not-stop-536271.html

11. कुमार, रवीश. (2016, मार्च 28). जन्नत की खबरें और जनमत की हसरतें. Retrieved from http://naisadak.org/

12. कुमार, रवीश. (2016, मार्च 29). ड्रेरित काव्य का वचन करें, बहादुर नहीं डरपोक बनें जन्नत टाइम-टू Retrieved from http://naisadak.org/

13. कुमार, रवीश. (2016, मार्च 30). रेडियो रविश - ड्रेरित काव्य. Retrieved from http://naisadak.org/

14. कुमार, रवीश. (2016, मार्च 30). आ गया आ गया ड्रेरित काव्य आ गया. Retrieved from http://naisadak.org/
15. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल 15). पता चला कैसे मनी अंबेडकर जयंती?. Retrieved from http://naisadak.org/
16. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल 19). हाय हमारी आंखों का नूर.. कोहिनूर... Retrieved from http://naisadak.org/
17. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल 27). चवन्नी वाला गैंडा – उदित भाटिया . Retrieved from http://naisadak.org/
18. कुमार, रवीश. (2016, जून 18). मैं क्यों मिडियोक्रिटी का समर्थक हूं. Retrieved from http://naisadak.org/
19. कुमार, रवीश. (2016, जून 30). प्रेरितों के नाम पत्रकारिता के प्रेरक का पत्र. Retrieved from http://naisadak.org/
20. कुमार, रवीश. (2016, जूलाई, 5). जानकारों से बचाओ, टीवी बंद करो . Retrieved from http://naisadak.org/
21. कुमार, रवीश. (2016, जूलाई, 10). दर्शकों होशियार, खबरदार, चैनलों से सावधान. Retrieved from http://naisadak.org/
22. कुमार, रवीश. (2016, जूलाई, 5). कश्मीर के बहाने अफवाहों का मैटेरियल आ गया है. Retrieved from http://naisadak.org/
23. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई 18). कश्मीर में अखबार क्यों बंद हैं . Retrieved from http://naisadak.org/
24. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई 20). क्या मीडिया में ऐसा राष्ट्रवाद दिखना चाहिए . Retrieved from http://naisadak.org/
25. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई, 31). और किन्हें नाज है मीडिया पर. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/07/2.html

26. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, सितंबर 4). और किन्हें नाज है मीडिया पार्ट टू. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/09/2.html
27. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, दिसंबर 28). किन्हें नाज है मीडिया पर पार्ट - 3. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/12/2016.html
28. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, दिसंबर 28). किन्हें नाज है मीडिया पर पार्ट - 3. मीडिया के रेंगेने के साल के तौर पर 2016 क्यूं न याद किया जाना चाहिए. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/12/2016.html
29. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 31). भारत में इतिहास और अमेरिका में फुटनोट तक नहीं. Retrieved from http://naisadak.org/
30. शेखर, शशि. (2016, अगस्त 30). प्रथम वचन - छलावों से परे का सच. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-hindi-is-getting-defamed-by-indian-not-english-shashi-shekhar-blog-555172.html
31. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 2). रिलायंस के ब्रांड दूत प्रधानमंत्री मोदी. Retrieved from http://naisadak.org/
32. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 2). अवस्थाओं में अवस्था बेहद आपत्तिजनक अवस्था. Retrieved from http://naisadak.org/
33. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 4). एक अखबार मुझको भी देना मौला . Retrieved from http://naisadak.org/
34. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 5). पत्रकारों को भी छूट मिले विज्ञापन में . Retrieved from http://naisadak.org/
35. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 12). चिकनगुनिया पर एक्सप्रेस की सारा हफीज की शानदार रिपोर्टिंग . Retrieved from http://naisadak.org/

36. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 20). मेरे पास एक नौकर की कमीज है. Retrieved from http://naisadak.org/

37. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 24). रिक्शा पर एआईआर 102.60 की शानदार डाक्यूमेंट्री . Retrieved from http://naisadak.org/

38. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 30). ये सिर्फ सर्जिकल स्ट्राइकभर नहीं है. Retrieved from http://naisadak.org/

39. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर 5). प्रोचै - जल्द आना चाहिए एक नया चैनल. Retrieved from http://naisadak.org

40. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर 7). भांड पत्रकारिता के दौर में देश का मनोबल बढ़ा हुआ है. Retrieved from http://naisadak.org/

41. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर 16). अखबारों की गुलामी से बाहर आने का अभ्यास कीजिए . Retrieved from http://naisadak.org/

42. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर 3). मेरे अजीज दर्शको-पाठको, कुछ तो समझो इस खेल को, ये आपके खिलाफ है . Retrieved from http://naisadak.org/

43. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर 23). जब भी किसी को अखबार पढ़ते हुए देखता हूं . Retrieved from http://naisadak.org/

44. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर 26). तीसरे दर्जे की बिजनेस पत्रकारिता और नोटबंदी से जुड़े कुछ सवाल. Retrieved from http://naisadak.org/

45. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर 13). आज के बिजनेस अखबारों का हाल. Retrieved from http://naisadak.org/

46. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर 12). सवाल न पूछें - पामेला फिलिपोज. Retrieved from http://naisadak.org/

47. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर 13). पार्षदी के लिए नीरज ने पत्रकारिता छोड़ दी. Retrieved from http://naisadak.org/

48. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी 6). भारत में नाव पत्रकारिता की शुरूआत हो. Retrieved from http://naisadak.org/bharat-mein-naanv-patrkarita-ki-shuruaat-ho/

49. कुमार, रवीश. (2016, मार्च 3). जाने वाले सिपाही से पूछो. Retrieved from http://naisadak.org/

50. कुमार, रवीश. (2016, मार्च 21). संपादक की भूमिका पर उपराष्ट्रपति का भाषण. Retrieved from http://naisadak.org/

51. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी 3). मुगले आजम फिर नहीं बनेगी, मस्तानी अमर रहेगी. Retrieved from http://naisadak.org/mugle-aazam-fir-nahi-bengim-mastani-amar-rahegi/

52. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी 10). अपने आप में नजीर है वजीर. Retrieved from http://naisadak.org/apne-aap-mein-ek-nazeer-hai-wazir/

53. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी 8). अवर ब्रॉड एज क्राइसिस. Retrieved from http://naisadak.org/our-brand-is-a-crisis/

54. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी 27). मनोज वाजपेयी वाया अलीगढ़. Retrieved from http://naisadak.org/manoj-aligarh-and-crowd/

55. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल 25). किस किस का है मैथ्स में डब्बा गोल. Retrieved from http://naisadak.org/

56. कुमार, रवीश. (2016, जून 8). उड़ता पंजाब के बहाने वो देखो उड़ता पहलाज है. Retrieved from http://naisadak.org/

57. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जुलाई 24). सिल्वर स्क्रीन का डॉन महानायक क्यों. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/07/blog-post_24.html

58. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, सितंबर 12). रेखा ... अनकही कहानी. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/09/blog-post_12.html

59. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर 14). बॉब डिलेन इन हिन्दी मीडियम. Retrieved from http://naisadak.org/

60. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी 13). भीमायन - एक अद्भूत किताब है. Retrieved from http://naisadak.org/bhimayan-ek-adhbhut-kitaab-hai/

61. कुमार, रवीश. (2016, मार्च 3). न वो बाबरी मस्जिद थी न बाबर ने मंदिर तोड़ा था Retrieved from http://naisadak.org/

62. कुमार, रवीश. (2016, जून 7). आवश्यकता है एक ऐसे सेंसर बोर्ड चीफ की. Retrieved from http://naisadak.org/

63. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल 30). जंगल और जमीन के बीच एक किताब रखी है. Retrieved from http://naisadak.org/

64. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 14). धूप के सिक्के, एक काव्यात्मक यात्रा - प्रसून जोशी. Retrieved from http://naisadak.org/

65. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 14). ये उस हमाम की बात है, जिसमें कोई नंगा है न दलाल है. Retrieved from http://naisadak.org/

66. शेखर, शशि. (2016, मई 31). प्रथम वचन - सोशल मीडिया का मायाजाल. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-shashi-shekhar-on-social-media-536805.html

67. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जनवरी 20). पत्रकारिता रहते हुए पत्रकार बने रहने की चुनौती. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_20.html

68. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी 24). जनमत एक प्रोडक्ट है और दर्शक उपभोक्ता. Retrieved from http://naisadak.org/janmat-ek-product-hai-aur-darshak-upbhokta/

69. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त 30). फेसबुक जी, ये जो गलत हो रहा है, अच्छी बात नहीं है. Retrieved from http://naisadak.org/

70. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 26). फेसबुक. Retrieved from http://naisadak.org/

71. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर 29). अमेरिका में जो डिबेट आप देखते हैं, वो पूरी और एकमात्र तस्वीर नहीं है. Retrieved from http://naisadak.org/

72. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर 30). आत्मकथा - दरअसल इसका कोई एक लेखक होती ही नहीं. Retrieved from http://naisadak.org/

73. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर 30). हे मैसेज-भेजकों, जवानों तक मैसेज कैसे भेज रहे हो. Retrieved from http://naisadak.org/

स्वयं के विषय में ब्लॉग पोस्ट्स

हिंदी खबरों के एक न्यूज पोर्टल 'गजबपोस्ट' में एक पत्रकार ने लिखा कि औरों के लिए लड़ता हूं, पर अपने लिए कहां बोल पाता हूं, हां मैं पत्रकार कहलाता हूं'। एक पत्रकार के लिए खबरों की खबर रखना और विभिन्न माध्यमों से उन खबरों को लोगों तक पहुंचा आसान होता है, लेकिन जब बात स्वयं के बारे में लिखने-बोलने की आती है तो यही कार्य बहुत कठिन हो जाता है।[1] एक पत्रकार के पास विशुध्द स्वयं के बारे में कुछ कहने के लिए मुख्य धारा मीडिया में कोई मंच नहीं है। ऐसे में न्यू मीडिया वह साधन बनता है जहां वह अपने मन की बात पूर्ण आजादी के साथ कह सकता है। ब्लॉग्स, ट्विटर, फेसबुक ऐसे माध्यम हैं जहां एक पत्रकार मीडिया जगत के दबावों से निकलकर अभिव्यक्ति की आजादी को वास्तविक आयामों में जी पाता है।[2]

किसी मीडिया संस्थान में काम करते हुए किसी भी पद पर बैठे पत्रकार पर बहुत सारे दबाव होते हैं, चाहे वह एक स्ट्रिंगर हो या एक संपादक सभी को मीडिया हाउस के नियमों के अंतर्गत कार्य करना होता है। हर मीडिया हाउस का किसी-किसी विचारधारा की ओर झुकाव होता है, अपना एजेंडा होता है। ऐसे में किसी भी पत्रकार के व्यक्तिगत विचार मीडिया हाउस की पॉलसियों के आगे कोई महत्व नहीं रखते हैं।[3]

इन परिस्थितियों में एक पत्रकार ब्लॉग के माध्यम अपने व्यक्तिगत विचारों को पाठकों तक पहुंचा सकता है। रवीश कुमार, पुण्य प्रसून वाजपेयी, शशि शेखर, अंशुमान तिवारी, सुधीर राघव आदि के ब्लॉग इसके अच्छे उदाहरण हैं। ये पत्रकार अपने-अपने ब्लॉग्स पर जिस भाषा शैली और उन्मुक्तता के साथ सरकारों और सामाजिक परंपराओं की आलोचना

करते हैं, उनके बारे में अपने विचार प्रकट करते हैं वह कभी मुख्य धारा मीडिया में संभव नहीं हो सकता है।

इसी क्रम में 1 जनवरी, 2016 से 31 दिसंबर, 2016 के बीच रवीश कुमार ने स्वयं से बारे में सबसे अधिक 25 पोस्ट्स डाली है। इन पोस्ट्स में पत्रकारिता के अपने अनुभव, विभिन्न लोगों को लिखे गए पत्र, अपनी देश-विदेश की यात्राएं, सामाजिक मुलाकातें, छात्र जीवन के अनुभव, पुराने-मित्रों के सथ अनुभव आदि शामिल हैं। हालांकि रवीश ने इस दौरान अपने व्यक्तिगत लेखों को केवल स्वयं तक ही सीमित रखा है, अपने परिवार के बारे में कुछ नहीं लिखा है। शशि शेखर और सुधीर ऱाघव ने रवीश कुमार के मुकाबले स्वयं के बारे में बहुत कम लिखा है।

शशि शेखर ने वर्ष 2016 में इस अवधि के बीच केवल 3 पोस्ट्स ही डाली है। हालांकि इन लेखों में उनकी पत्रकारिता शैली प्रभावी रही है। वहीं, सुधीर राघव ने 6 पोस्ट्स ऐसी डाली हैं, जो उनके निजी जीवन से जुड़ी हुई हैं। इन पोस्ट्स में वे पत्रकारिता के पुरस्कार करते हुए दिख रहे हैं और यात्राओं का वर्णन हैं। राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर खुलकर लिखने-बोलने वाले पुण्य प्रसून वाजपेयी ने व्यक्तिगत जीवन से संबंधित कोई भी पोस्ट्स अपने ब्लॉग पर नहीं डाली है। इसी प्रकार अंशुमान तिवारी ने भी स्वयं से संबंधित कोई भी पोस्ट्स ब्लॉग पर नहीं डाली है।

साथ ही, रवीश कुमार, अंशुमान तिवारी, शशि शेखर, पुण्य प्रसून वाजपेयी व सुधीर राघव द्वारा अपने-अपने ब्लॉग्स पर लिखे गए विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों में से स्वयं के विषयों से संबंधित सामाजिक लेखों का प्रतिशत चार्ट ग्राफ भी बनाया है।

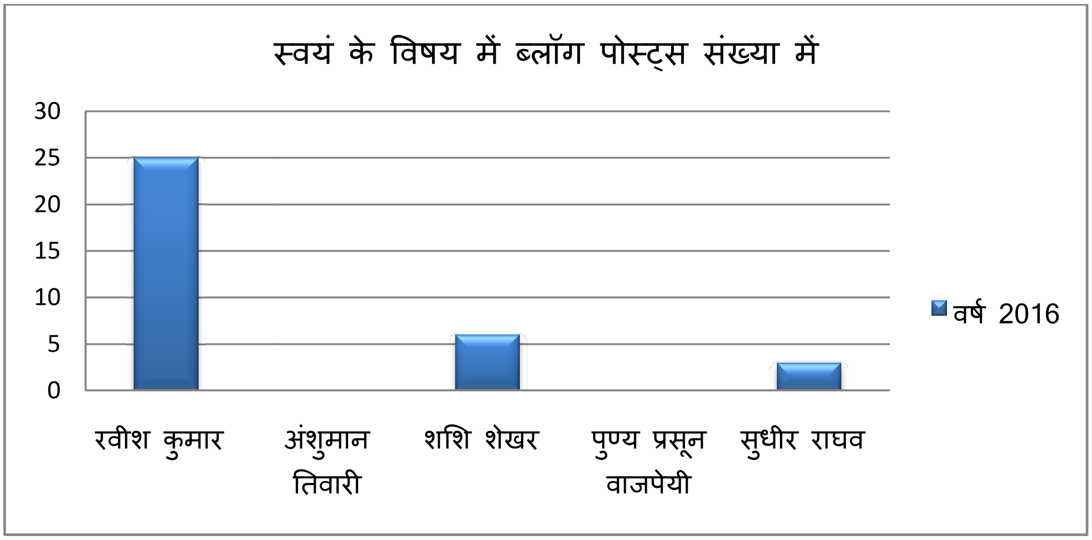

X अक्ष - पत्रकार ब्लॉगर्स के नाम

Y अक्ष - पत्रकारों द्वारा अपने ब्लॉग्स पर स्वयं से संबंधित डाली गई पोस्ट की संख्या

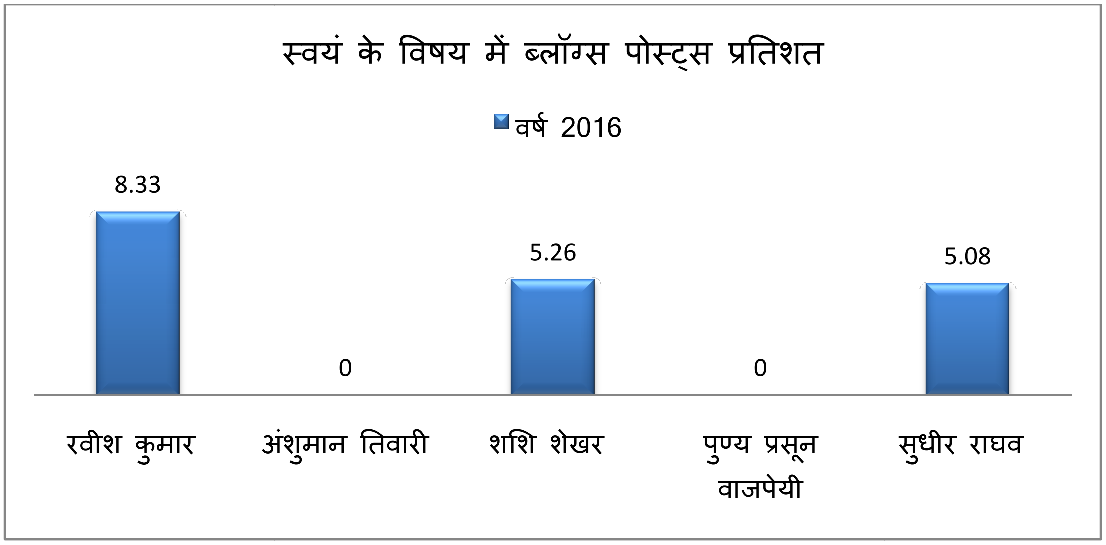

X अक्ष - पत्रकार ब्लॉगर्स के नाम

Y अक्ष - पत्रकारों द्वारा अपने ब्लॉग्स पर स्वयं से संबंधित डाली गई पोस्ट प्रतिशत में

रवीश कुमार

रवीश कुमार ने 4 जनवरी, 2016 को "क्या आप क्यूट लफंदर के बारे में जानते हैं"[4] शीर्षक से डाली पोस्ट में उनके खिलाफ अफवाह फैलाकर बदनाम करने वाले व्यक्तियों की आलोचना की है और उनके ट्विटर हैंडल का स्नैप खिंचकर अपने पोस्ट में लगा दिया है। पोस्ट में स्वयं व बरखा दत्ता का बचाव करते हुए कहते हैं कि पठानकोट हमले के समय वे अवकाश पर थे, अफवाह फैलाने वाले लोग गलत रिपोर्टिंग का आरोप लगा रहे हैं। 7 अप्रैल, 2016 को रवीश कुमार ने अपने ट्विटर हैंडल की स्नैप डाली है। इसमें भी उनको अपशब्द कहने वाले लोगों के पोस्ट को दिखाया है।

इसी प्रकार एक और अन्य पोस्ट रवीश कुमार ने 11 जनवरी, 2016 को डाली गई है। इसमें ट्विटर के जरिये उनको अपशब्द कहने वाले लोगों का कठघरे में खड़ा किया है। वे इसे समाज के नैतिक पतन के रूप में देखते हैं। 19 फरवरी, 2016 की पोस्ट रवीश ने उनके नाम से बना रखे एक ट्विटर हैंडल को फर्जी बताया है और उसका स्नैप भी दिया है।

रवीश कुमार 6 जनवरी, 2016 की पोस्ट में उन्होंने कलकत्ता की अपनी यात्रा के दौरान एल्गिन रोड पर स्थित नेताजी भवन का ब्यौरा दिया है। यह लेख उन्होंने "नेताजी को नेतीजी की जरूरत नहीं"[5] शीर्षके के साथ पोस्ट किया है। लेख में उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र के निवास भवन की बारीकियों को उनके व्यक्तित्व के साथ वर्णित किया है। इस लेख में नेताजी की स्मृतियों का कम जिक्र किया है, भवन

की ऐतिहासिकता अधिक केन्द्रिंत किया गया है। पोस्ट में नेतीजी भवन की कुछ तस्वीरें पोस्ट की हैं। सारी तस्वीरें बाहर की हैं। वे बताते हैं कि अंदर तस्वीर लेना मना था।

9 जनवरी, 2016 को रवीश कुमार ने एनडीटीवी चैनल के अंदर की अपनी भूमिका और अवकाश पद्धति के बारे में लिखा है। यह पोस्ट उनके द्वारा अपने दर्शकों और समर्थकों को संबोधित करके लिखी गई है, उनकी चिंताओं और सवालों के जवाब दिए गए हैं। लेख में वे टीआरपी के नजरिये से अपने प्राइम टाइम शो का भी आकलन करते हैं। एक पत्रकार के जीवन में आने वाली दिक्कतों को उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर बताया है। इस लेख के लिए उन्होंने ‘‘मेरी छुट्टी और आपका प्यार और हुक्का मार’’[6] शीर्षक दिया है।

रवीश कुमार ने 11 जनवरी, 2016 को व्यक्तिगत विषयों पर दो लेख डाले हैं। एक लेख ‘‘क्या रेल में कुछ बेहतर हो रहा है’’[7] शीर्षक से लिखा है, जिसमें भारतीय रेल में यात्रा करने के अपने अनुभव के बारे में लिखा है। वे कहते हैं कि मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि भारतीय रेल की दशा में सुधार हो रहा है। साफ-सफाई और कैटरिंग की व्यवस्था में सुधार हुआ है। दूसरे में उनकी आलोचना करने वालों पर सवाल किए हैं।

रवीश कुमार ने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान के पोस्ट फरवरी माह में अपने ब्लॉग पर डाले हैं। 10 फरवरी, 2016 को रवीश ने ‘‘पॉडकॉस्ट - लोकतंत्र के राजधानी के रूप में वाशिंगटन डीसी और दिल्ली का फर्क’’[8] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में ऑडियो क्लिप डाली है और अमेरिका और भारत की राजधानी में आपस में तुलना की गई है।

12 फरवरी को रवीश ने न्यूयार्क यात्रा के दौरान वहां की परिवहन के व्यवस्था और पार्किंग को लेकर अपने अनुभव साझा किए हैं। वे बताते हैं न्यूयार्क में परिवहन व्यवस्था और पार्किंग के नाम लूटतंत्र विकसित हो गया है। पूरा शहर, गलिया, कालोनियां पार्किंग के बोर्डों से भरी रहती हैं, कहां गाड़ी खड़ी करनी है, कितनी देर खड़ी करनी है, कहां नहीं खड़ी करनी, कितना फाइन लगेगा आदि। वहां पार्किंग के लिए भी एक विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है। अमेरिका की शहरों में पार्किंग बहुत महंगी। रवीश कुमार ने यह लेख ''पार्किंग के नाम पर लूट का तंत्र''[9] शीर्षक से पोस्ट किया है।

रवीश कुमार लिखते हैं कि भारत की तरह ही अमेरिका में सड़कों के किनारे दोनों तरफ पार्किंग की ठेकेदारी होती है। लोगों ने पार्किंग व्यवस्था में ही रोजगार ढूंढ लिए हैं, अपने घरों में पार्किंग बनवा ली हैं, जिसके जरिए वे मोटी कमाई करते हैं। रवीश ने पोस्ट से संबंधित कई तस्वीरों का भी इस्तेमाल किया है। रवीश न्यूयार्क की पार्किंग व्यवस्था से भारत के मेट्रो शहरों की पार्किंग व्यवस्था के बारे में लिखते हैं। भारत की राजधानी दिल्ली में भी कुछ खास इलाकों में कारों की भीड़ को कम करने लिए पार्किंग शुल्क बढ़ाने की बहसें पिछले एक दशक से चल रही हैं। वे आशंका जाहिर करते हैं कि कहीं दिल्ली में भी न्यूयार्क की तरह हालात न पैदा हो जाएं और पार्किंग के नाम पर एक लूट तंत्र विकसित हो जाए। रवीश कुमार लेख के अंत में निष्कर्ष के रूप लिखते हैं कि यह कोई जरूरी नहीं है कि अमेरिका और ब्रिटेन की हर व्यवस्था अच्छी हो और उसका अनुसरण किया जाए।

13 फरवरी, 2016 को रवीश कुमार ने ''एक मुलाकात डॉक्टर अंबेडकर के साथ''[10] शीर्षक के साथ लिखी गई पोस्ट में अपनी कोलंबिया विश्वविद्यालय की यात्रा के

अनुभवों को साझा किया है। डा. अंबेडकर 1912-1916 में कोलंबिया विश्वविद्यालय के छात्र रहे थे। रवीश ने डा. अंबेडकर को अपने को विचारों का आदर्श बताया है। कोलंबिया विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में अंबेडकर की प्रतिमा लगी हुई। वे लिखते हैं कि अपने प्रवास के दौरान उन्होंने प्रतिमा को माला पहनायी। कोलंबिया युनिवर्सिटी और वहां लगी अंबेडकर युनिवर्सिटी की कई चित्र भी पोस्ट किए हैं। साथ ही, वे भारत की राजनीतिक व्यवस्था और समाज की सोच की आलोचना करते हैं कि अंबेडकर के विचारों पर ध्यान ने देकर उनको प्रतिमाओं और जयंती-पुण्यतिथि में बदल दिया है।,

रवीश कुमार ने 14 फरवरी, 2016 को डाली पोस्ट में न्यूयार्क की परिवहन अनुशासन की प्रशंसा करते हैं। न्यूयार्क में पूरा शहर बत्तियों के सहारे चलता है। ट्रफिक नियमों का सभी लोग स्वअनुशासित होकर पालन करते हैं। पूरे शहर में पार्किंग की अच्छी व्यवस्था है। सभी लोग पार्किंग के नियमों को स्वयं पालन करते हैं।

रवीश ने न्यूयार्क और दिल्ली शहर की मेट्रो रेल परिवहन की तुलना की है। कुछ मामलों में दिल्ली की प्रशंसा की तो कुछ मामलों में न्यूयार्क मेट्रो से तुलना करते हुए दिल्ली की आलोचना की है। मेट्रो में कुछ खामियों को लेकर रवीश कुमार श्रीधरऩ की आलोचना भी करते हैं। उनके अनुसार दिल्ली मेट्रो के लिए अधिक जगह को खराब किया गया है। वे भारतीय शहरों में होने वाले अग्नि हादसों पर चर्चा करते हुए लिखते हैं कि न्यूयार्क शहर को किसी अग्नि हादसे की संभावना को बचाने के लिए पूरी तरह से तैयार किया गया है, जबकि भारतीय शहर हादसों का इंतजार करते रहते हैं। उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान खिंची गई न्यूयार्क की प्रासंगिक तस्वीरों को लेख

में पोस्ट किया है। रवीश कुमार ने यह पोस्ट ''न्यूयार्क है तो कमाल का शहर''[11] शीर्षक के साथ कस्बा पर लिखी है।

रवीश कुमार ने 19 फरवरी, 2016 की तारीख को एक अन्य पोस्ट ''रवीश जी आप बिजनेस क्लास में नहीं चलते''[12] शीर्षक से डाली है। इसमें रवीश ने न्यूयार्क यात्रा पर जाते समय हवाई सफर के अनुभवों को साझा किया है। वे लिखते हैं कि उनके पास इकोनमी क्लास का हवाई टिकट था, जब वे जहाज के अंदर गए तो लोगों ने उन्हें आश्चर्य की नजरों से देखा कि टीवी पर दिखाई देने वाला इतना बड़ा आदमी इकोनमी क्लास में क्यों चल रहा है बिजनेस क्लास में क्यों नहीं। उन्होंने हवाई जहाजों में क्लास का वर्णन बड़े ही रोचक अंदाज में किया है। उनके अनुभव के अनुसार हवाई सफर में इकॉनमी क्लास के लोगों को नीचे क्लास का माना जाता है।

रवीश कुमार लिखते हैं कि इकोनमी क्लास में उनका व्यक्तिगत अनुभव बहुत खराब रहा, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक कष्ट झेलना पड़ा है। वे लिखते हैं जहाज में उनके साथ बैठे लोगों ने उनका बहुत सम्मान किया और स्टॉफ ने भी बहुत महत्व दिया। स्टॉफ के लोग उनको बिजनेस क्लॉस में शिफ्ट कराने का प्रयास भी करते रहे। रवीश के लेख में आर्थिक तौर पर तय किए क्लास में पीड़ा साफ झलकती है। हालांकि वे उसकी समीक्षा तो करते हैं, लेकिन आलोचना नहीं करते हैं। पूरे लेख को कहानी की गति के साथ प्रस्तुत किया है।

21 फरवरी, 2016 को रवीश कुमार ने ''आपके भीतर जो डर बैठा है''[13] शीर्षक से डाली पोस्ट में जेएनयू में नारेबाजी की घटना के बाद बने मौहाल में स्वयं को डरा हुआ महसूस बताया। उन्होंने आरोप लगाया है कि मीडिया देश में खास विचारधारा से

प्रभावित होकर मौहाल बना रहा है। वे बताते हैं कि न्यूयार्क की यात्रा से लौटने के बाद उनकी कालोनी के बाहर खड़े होकर लोगों ने नारेबाजी की, सोशल मीडिया पर डराया धमकाया गया, अपशब्दों का इस्तेमाल किया गया। रवीश कुमार जेएनयू प्रकरण पर लिखे गए अन्य लेखों की तरह इसमें में जेएनयू की घटना के विरोध में कुछ भी नहीं लिखते हैं, बल्कि समर्थन में दिखाते हैं। लेख में मीडिया की आलोचना करते समय किसी घटना या खबर को तथ्य के रूप में नहीं दिया है।

रवीश कुमार ने 21 अप्रैल, 2016 को केरल के एक दर्शक से फोन पर हुई बाताचीत को लिखा है, जो भारत में परिवहन की गाड़ियों में सुरक्षा मानकों आवश्यक किये जाने से संबंधित खबरे चलाने के लिए कहता है। रवीश कुमार ने 21 अप्रैल को ही दूसरी पोस्ट डाली जिसमें एक एफएम रेडियो पर वार्ता के कार्यक्रम के अनुभव को लिखा है। वे बताते हैं बचपन से ही रेडियो में बोलने की इच्छा थी, लेकिन वह जब पूरी हई जब वे टेलीविजन की दुनिया में आ गए। यह लेख रवीश कुमार ने ''केरल से एक दर्शक का टेलिफोन''[14] शीर्षक के साथ लिखा है।

रवीश कुमार ने 8 मई, 2016 को पड़ोसियों के साथ संगीत भरी शाम का ब्यौरा लिखा[15], जिसमें वे भागीदार थे। ब्लॉग पर उन्होंने उसकी दो तस्वीरें भी साझा की हैं, जिसमें पड़ोसी साथी गिटार व अन्य वाद्य यंत्र बजा रहे हैं। निजी कार्यक्रम की उन्होंने किस्सागोई बहुत ही रोचक अंदाज में की है। रवीश ने 29 मई को लिखी पोस्ट में उन्होंने उनके नाम का इस्तेमाल कर समाज में अफवाह फैलाने वालों की आलोचना की है। व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा है कि ऐसा करने वाले लोग उनके समर्थक हैं या विरोधी।

रवीश कुमार ने 1 अगस्त, 2016 को डाली गई पोस्ट में सभा-सम्मलनों में बढ़ते सेल्फी लेने की आदतों का विश्लेषण किया है।[16] वे अपने अनुभवों से बताते हैं कि कई बार उन्हें बड़ी असहजता का सामना करना पड़ता है। कार्यक्रम के बीच ही लोग सेल्फी लेने लग जाते हैं। सेल्फी के प्रति समाज के आकर्षण को रवीश ने व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। रवीश कुमार ने 4 अगस्त को "मुझे थोड़ी शाम, थोड़ा नीला आकाश चाहिए"[17] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में शहरीकरण के कारण प्रकृति से दूर होने विभिन्न अनुभवों का साझा किया है। रवीश लिखते हैं, मन करता है कि शाम के सूरज को डूबटे हुए देखूं, लेकिन जीवन की भागदौड़ में शाम होनी बंद हो गई। दिन से सीधी रात हो जाती है। रवीश ने लेख में शाम को होने वाले अनुभवों को शब्दों में उतारने की कोशिश की है।

11 दिसंबर, 2016 को रवीश कुमार ने अपने एक परिचित की शादी के कार्ड के बारे में लिखा है। शादी के कार्ड की तीन तस्वीरें दी गई हैं। शादी का कार्ड कुछ परंपरा से हटकर चीजें लिखी गई हैं। उसमें बारात के प्रस्थान से एक दिन पूर्व आने का आहवान किया गया है ताकि आसपास के बौद्ध स्थलों का भ्रमण किया जा सके। दिल्ली से चलने वाली ट्रेनों व उनके रिजर्वेशन कब से प्रारंभ होंगे के बारे में लिखा गया है। रवीश ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा गया है कि इस प्रकार के कार्डों से बिहार सरकार के पर्यटन विभाग सीख लेनी चाहिए, ताकि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके। रवीश कुमार ने यह पोस्ट "अशोक दास की शादी का कार्ड"[18] शीर्षक से डाली है।

रवीश कुमार ने 27 दिसंबर, 2016 को "तो मै चेन्नई इसलिए गया था ..."[19] शीर्षक से डाली गई पोस्ट में बाला कैलासम स्मृति पुरस्कार के प्राप्त करने के लिए बुलाने पर हुए अपने अनुभवों के बारे में लिखा है।

शशि शेखर

शशि शेखर ने 3 जनवरी, 2016 को "वैशाली के इस संदेश को सुनिए"[20] शीर्षक से डाली पोस्ट में छूट्टियों के समय होने वाले व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में लिखा है, वे लिखते हैं कि होली-दिवाली और साल के अंत में उनका मन उचटने लगता है, और कहीं चलने को करता है। वे काम के बीच अवकाशों को उर्जा के पुन संग्रहण के अवसर के रूप में देखते हैं। 2016 में अवकाश के अवसर पर उन्होंने बौद्ध और जैन तीर्थ स्थलों को देखने की योजना बनाई। साथ ही लिखते हैं कि बौद्ध और महावीर ने जब देश में ज्ञान, शांति और अहिंसा का संदेश दिया उस समय ईसा को मसीह को जन्म लेने में सैकड़ों वर्ष बाकी थे। लेख की इन लाइनों के माध्यम से वे भारतीय भूमि की धार्मिक श्रेष्ठता को बताते हैं।

लेख के दूसरे पैराग्राफ में अहिंसा के संदेशों के बीच विश्व में बढ़ते आतंकवाद और यूरोप के देशों में गोलीबारी की घटनाओं पर चिंता व्यक्त की है। वे लिखते हैं कि आतंकवाद के कारण निरपराध लोग मारे जा रहे हैं। इसके लिए वे धर्म के उन सिद्धांतों को भी कठघरे में खड़ा करते हैं, जो आतंकवाद और हिंसा को सही ठहराते हैं। वे जिहाद के नाम पर आईएस में शामिल होने के लिए जा रहे कुछ भारतीय युवाओं पर कटाक्ष करते हैं, और बताते हैं कि उनको आतंकवादी बगदादी के यहां दोयम दर्ज को माना जाता है। वे आतंक के राह पर चलने वालों को बुद्ध और महावीर को पढ़ने की सलाह देते हैं। साथ ही दूसरे के सवालों के सहारे सवाल उठाते हैं कि ऐसा क्या कारण है कि एक खास वर्ग के लोग ही आतंक के सर्वाधिक संगठित गिरोह चलाते हैं।

वे वैशाली और कोल्हुआ के बौद्ध खंडहरों के माध्यम से संदेश देते हैं कि तथागत ने यहां आम्रपाली को दीक्षा देकर विलास और पाखंड पर चोट की थी। लेख के एक पैराग्राफ में महावीर स्वामी और गौतम बुध्द के संबंध में बहुत रोचक प्रश्न किया गया है। महावीर स्वामी और महात्मा गौतम बुध्द समान कालखंड में पैदा हुए और अपने संदेशों का प्रचार भी एक ही क्षेत्र में किया। एक बार वे पास -पास के गांव में ठहरे हुए थे तो लोगों ने उनसे आपस में मिलने के लिए कहा, लेकिन वे दोनों मौन बने रहे।

इस घटना के वर्णन के साथ शशि शेखर सवाल खड़ा करते हैं कि क्या महावीर और गौतम बुध्द के बीच आपस में प्रतिस्पर्धा थी। साथ ही वे आगे जवाब देते हैं कि यकीनन उनके बीच कोई ईर्ष्या नहीं थी। दोनों का एक ही उद्देश्य था लोगों को जगाना। हालांकि वे इस बात को स्पष्ट नहीं करते हैं कि उन दोनों की मुलाकात हुई या नहीं इसके क्या प्रमाण हैं और वे इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचे की उनके बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी। शशि शेखर ने पूरा लेख अपनी यात्रा के दौरान के अनुभवों को समसामयिक घटनाक्रमों के विश्लेषण के साथ एतिहासिक घटनाओं के शाब्दिक चित्रण के साथ लिखा है।

20 मार्च, 2016 को शशि शेखर ने ''हम बीएचयू के लोग''[21] शीर्षक से डाली पोस्ट में बनारस हिन्दू विश्विद्यालय की यात्रा के दौरान अपने बीएचयू में बिताए छात्र जीवन की स्मृतियों को ताजा करते हुए लिखा है। उन्होंने करीब 35 वर्ष पूर्व के बीएचयू और वर्तमान बीएचयू की तुलना की है। वे लिखते हैं कि उनके पिता यहां नौकरी किया करते थे। उनकी बहन की शादी इसी जगह हुई थी। उनकी पत्नी शादी के बाद पहली बार यहीं आई थी। उन्होंने बहुत ही निजी और भावनाओं से जुड़े हुए विषयों के बारे

में लिखा है। बीएचयू के इतिहास विभाग के बदले स्वरूप और विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर वर्तमान स्वरूप तक जिक्र करते हैं।

वे लिखते हैं कि मदनमोहन मालवीय ने राष्ट्रवादी विचारों का पोषण करने के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना करने की घोषणा की थी। उनके पास धन नहीं था। लोगों के दान के जरिए विश्वविद्यालय खड़ा किया। देशभर के विद्वानों का पढ़ाने के लिए देशभर से विद्वानों की व्यवस्था की। यहां महात्मा गांधी ने अपने भाषण में कहा था कि राजा-महाराजाओं को देश की आजादी के लिए अपनी विलासिता छोड़नी होगी, गले से महंगे-महंगे जेवरात उतारने होंगे, लोगों से जुड़ना होगा। महात्मा गांधी की इस बात से बीएचयू के कार्यक्रम में पधारे राजा-महाराजा नाराज हो गए और कार्यक्रम छोड़कर चले गए। वे लिखते हैं कि इससे घटना से स्पष्ट हो गया था कि बीएचयू आदर्शों के मामले में समझौता नहीं करेगा। शशि शेखर ने बीएचयू के बारे में यह जेएनयू में हो हुई देशविरोधी नारेबाजी से आहत होकर लिखा है।

शशि शेखर ने 10 दिसंबर, 2016 को ''हम गिरे, गिरकर उठे, उठकर चले''[22] शीर्षक से लिखी पोस्ट में 6 दिसंबर, 1992 के दिन अयोध्या में हुए बाबरी मस्जिद बिध्वंस को अपने अनुभव के साथ लिखते हैं। वे बताते हैं कि उस दिन बुखार के कारण उनका शरीर तप रहा था और टीवी पर अनहोनी की खबरें आ रही थीं। मंदिर-मस्जिद के मुद्दे ने हिन्दू-मुस्लिमों को बांट दिया था। देश भर में दंगे हुए और 2000 से अधिक व्यक्ति मारे गए। लोगों की यादों में एक गहरा घाव बन गया।

शशि शेखर भारतीय समाज की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि हमारे समाज की खासियत है, यह पुरानी बुरी यादों को भूलाकर एक साथ हो लेता है। एक अन्य घटना का जिक्र करते हुए लिखते हैं कि अयोध्या मसले पर हाईकोर्ट के फैसले से पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह चिंतित थे कि कोर्ट के फैसले के बाद देश में क्या प्रतिक्रिया होगी। हालांकि ऐसा कुछ नहीं हुआ, पूरे देश में शांति बनी रही। यही भारतीय समाज की सुंदरता है। साथ ही वे राजनीति के उस स्वरूप की भी आलोचना करते हैं जो हर चुनाव में मंदिर-मस्जिद के जिन्न को दोबारा जिंदा कर देता है। शशि के अधिकांश लेख वर्तमान और भविष्य के उतार-चढ़ाव लिखे जाते हैं। लेखों में एतिहासिक पृष्टभूमियों को अधिक महत्व दिया जाता है। इस लेख में इसी प्रकार की शैली देखने को मिली है।

सुधीर राघव

23 मार्च, 2016 को सुधीर राघव को ''अमर उजाला के संपादकीय पृष्ठ पर 23 मार्च को प्रकाशित''[23] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें अमर उजाला के संपादकीय पृष्ठ पर सूखी नहर में वोटों की खान शीर्षक से प्रकाशित खबर का स्नैप डाला है। खबर में सुधीर राघव को पासपोर्ट साइज चित्र भी लगा हुआ है।

सुधीर राघव ने 7 अप्रैल, 2016 को चंडीगढ प्रेस क्लब में शीर्षक से डाली पोस्ट में एक चित्र डाला है, जिसमें सुघीर राघव को पुष्प गुच्छ लेते हुए दिखाया है। यह प्रेस क्लब से सम्मानित होने की तस्वीर है। चित्र के साथ कैप्शन भी दिया हुआ है, जिसमें चंडीगढ प्रेसक्लब हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखा हुआ है। पोस्ट का शीर्षक ''चडीगढ़ प्रेस क्लब में''[24] दिया है। 15 अप्रैल, 2016 को सुधीर राघव ने

“सिया राममय”[25] शीर्षक से पोस्ट डाली है, जिसमें ब्लॉग पाठकों को रामनवमी की बधाइयां दी गई हैं। भगवान राम चित्र लगाया गया है, जिसमें रामनवमी की बहुत-बहुत बधाई लिखा हुआ है। ऊपर एक चौपाई दी हुई है- ‘सिया राममय सब जग जानी। करउं प्रणाम जोरि जुग पानी। रामनवमी की सभी मित्रों को शुभकामनाएं।

9 सितंबर, 2016 को सुधीर राघव ने “सैर सुखना की”[26] शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने सुखना लेक के ट्रेकिंग ट्रेल में नेचर वाक लिखकर दो अपने दो चित्र लगाए हैं। एक चित्र में वह अकेले दिखायी दे रहे हैं, वही दूसरे चित्र में एक व्यक्ति साथ में दिखायी दे रहा है।

15 नवंबर, 2016 को सुधीर राघव ने “ढाकीं में छुपा सुखना के कायाकल्प का मंत्र”[27] शीर्षक से अपने ब्लॉग पर डाली पोस्ट में सुखना लेक के पुनर्जीवित होने की कहानी के बारे में लिखा है। इस विषय पर उन्होंने अमर उजाला के लिए दो बाइलाइन खबर भी लिखी है। वे आगे लिखते हैं कि पीआइबी चंडीगढ़ की ओर से अहमदाबाद गए पत्रकारों के समूह में वह भी शामिल थे। जहां उनकी गुजरात की तत्तकालीन मुख्यमंत्री विजय रूपाणी से भेंट हुई। इस दौरान मुख्यमंत्री ने बताया कि सुखना लेक का बचाने के लिए चलाया गया ढाकीं प्रोजेक्ट दुनिया का सबसे बड़ा बाटर सप्लाई प्रोजेक्ट है। इस लेख में गुजरात सरकार की प्रशंसा करते हुए नजर आते हैं। वह लेख में गुजरात के पानी प्रबंधन की प्रशंसा करते हैं। हालांकि ब्लॉग पर सुधीर राघव के अधिकांश लेख मोदी सरकार की आलोचना में लिखे गए हैं।

3 दिसंबर, 2016 को सुधीर राघव लिखते हैं कि अहमदाबाद मोदी का शहर है। यहां मोदी से उनका तात्पर्य प्रधानमंत्री मोदी से है। आगे व्यंग्यात्मक व कटाक्ष भरे अंदाज

में लिखते हैं कि यह आसाराम का भी शहर है। वे लेख में अहमदाबाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में लिखते हैं कि महात्मा गांधी ने दांडी मार्च भी यहीं से प्रारंभ किया था। साथ भी वे अहमदाबाद यात्रा के बारे में बताते हैं कि पीआईबी चंडीगढ़ की ओर से पत्रकारों के एक दल को अहमदाबाद ले जाया गया था, जिसमें वे शामिल थे। वे बताते हैं कि शहर में कई खूबियां है, यात्रा में उनको नजदीक से देखने का अवसर मिला। ब्लॉग पर लिखा गया है कि यह सुधीर राघव के व्यक्तिगत यात्रा अनुभवों को बहुत ही संक्षिप्त में बताता है।

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
मुझे/स्वयं	70	0.3540	0.00	0.00	01	0.0284	0.00	0.00	0.00	0.00
स्व	37	0.018	0.	0.	0.	0.0	0.	0.	02	0.3

यंकानाम		71	00	00	00	0	00	00		831
लेख/शोकानाम	17	0.0860	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
पत्रकार	16	0.0809	0.00	0.00	01	0.0284	0.00	0.00	02	0.3831
पत्रकारिता	12	0.0607	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
पदबोधशब्द/संपादक	03	0.0152	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	01	0.1916

ब्लॉगर्स के नाम	रवीश कुमार		अंशुमान तिवारी		शशि शेखर		पुण्य प्रसून वाजपेयी		सुधीर राघव	
शब्द	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.	Freq.	Occur.
पुरस्कार/सम्मान	14	0.0708	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
अपनी यात्रा	05	0.0253	0.00	0.00	02	0.0586	0.00	0.00	01	0.1916
हिन्दी भाषा	16	0.08090	0.00	0.00	02	0.0586	0.00	0.00	0.00	0.00
अंग्रेजी भाषा	02	0.0100	0.00	0.00	01	0.0284	0.00	0.00	02	0.3831

संदर्भ सूची :

1. लेरिस, माइकल. (2002). राइटिंग द सेल्फ. कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस.

2. डीन, जोडी. (2010). ब्लॉग थ्योरी. कैम्ब्रिज पॉलिटी प्रेस.

3. लूसी, हेनरी विलियम. (2016). ए डायरी ऑफ जर्नलिस्ट्स. वेंटवर्थ प्रेस.

4. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 4). क्या आप क्यूट लफंदर के बारे में जानते हैं. Retrieved from http://naisadak.org/kya-aap-cute-lafandar-ko-jaante-hain/

5. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 6). नेताजी को नेताजी की जरूरत नहीं. Retrieved from http://naisadak.org/netaji-ko-netaji-ki-jarurat-nahi/

6. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 9). मेरी छुट्टी और आपका प्यार और हुक्का मार. Retrieved from http://naisadak.org/meri-chutti-aur-aapka-pyaar/

7. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 11). क्या रेल में कुछ बेहतर हो रहा है. Retrieved from http://naisadak.org/kya-rail-mein-behtar-ho-raha-hai/

8. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 10). पॉडकॉस्ट: लोकतंत्र के राजधानी के रूप में वाशिंगटन डीसी और दिल्ली का फर्क. Retrieved from http://naisadak.org/podcast-washington-dc-aur-delhi/

9. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी 12). पार्किंग के नाम पर लूट का तंत्र. Retrieved from http://naisadak.org/parking-ke-naam-par-loot-ka-tantra/

10. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 13). एक मुलाकात डॉक्टर अंबेडकर के साथ. Retrieved from http://naisadak.org/dr-ambedkar-in-columbia/

11. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 14). न्यूयार्क है तो कमाल का शहर. Retrieved from http://naisadak.org/new-york-hai-to-kamaal-ka-shehar/

12. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 19). रवीश जी आप बिजनेस क्लास में नहीं चलते. Retrieved from http://naisadak.org/ravish-in-business-class/

13. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 21). आपके भीतर जो डर बैठा है. Retrieved from http://naisadak.org/aapke-bheetar-jo-dar-baitha-hai/

14. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 21). केरल से एक दर्शक का टेलिफोन. Retrieved from http://naisadak.org/केरल-से-एक-दर्शक-टेलिफो/

15. कुमार, रवीश. (2016, मई, 8). An evening in Ghaziabad. Retrieved from http://naisadak.org/an-evening-in-ghaziabad/

16. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 1). सेमिनार, सेल्फी और बाउंसर जानलेवा हो गए हैं. Retrieved from http://naisadak.org/conclave-seminar-and-patrkaar/

17. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 4). मुझे थोड़ी शाम, थोड़ा नीला आकाश चाहिए. Retrieved from http://naisadak.org/late-night-job-has-robbed-my-evening/

18. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 11). अशोक दास की शादी का कार्ड. Retrieved from http://naisadak.org/ashok-ki-shadi-ka-card/

19. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 27). तो मै चेन्नई इसलिए गया था .... Retrieved from http://naisadak.org/i-went-to-chennai/

20. शेखर, शशि. (2016, जनवरी, 3). वैशाली के इस संदेश को सुनिए. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-listen-to-the-message-of-vaishali-510642.html

21. शेखर, शशि. (2016, मार्च, 20). हम बीएचयू के लोग. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-culture-of-banaras-hindu-university-518706.html

22. शेखर, शशि. (2016, दिसंबर, 10). हम गिरे, गिरकर उठे, उठकर चले. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-we-fell-down-and-get-up-walk-towards-future-626418.html

23. राघव, सुधीर. (2016, मार्च, 23). अमर उजाला के संपादकीय पृष्ठ पर 23 मार्च को प्रकाशित. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/03/blog-post_23.html
24. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 7). चंडीगढ प्रेस क्लब में. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_7.html
25. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 15). सिया राममय. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_15.html
26. राघव, सुधीर. (2016, सिंतबर, 9). सैर सुखना की. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/09/blog-post_9.html
27. राघव, सुधीर. (2016, नवंबर, 15). ढाकीं में छुपा सुखना के कायाकल्प का मंत्र. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/11/blog-post_15.html

अन्य विषयों पर ब्लॉग्स

निम्न पत्रकारों ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि विषयों के अलावा अन्य कुछ विषयों पर भी अपनी पोस्ट लिखी हैं। इन पोस्ट्स में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं जो कि निम्न प्रकार हैं।

रवीश कुमार ने 14 जनवरी, 2016 को 'जेल के नाम रवीश कुमार का प्रेम पत्र' शीर्षक से डाली पोस्ट में जेल को लेकर व्यंग्य लिखा है। रवीश कुमार लिखते हैं कि जेल में रहते हुए तमाम नेताओं ने किताबें लिखीं, अपनी पुत्रियों को पत्र लिखे हैं। वे व्यंग्यात्मक शैली में बताते हैं कि वे पहले व्यक्ति हैं जो जेल को प्रेम पत्र लिख रहा है। वे जेल की व्यवस्थाओं को लेकर तंज भी कसते हैं। इस लेख में उन्होंने राजनीतिक वर्ग व समाज के दृष्टिकोण को लेकर सवाल किए हैं।

8 फरवरी, 2016 को सुधीर राघव ने 'ईश्वर' शीर्षक से डाली पोस्ट में कविता लिखी है। कविता में इंसान और ईश्वर को रहस्यवादी तरीके परिभाषित किया है। इसके अलावा, सुधीर राघव ने 27 फरवरी को भी 'ये घर किसने जलाए हैं' शीर्षक से पोस्ट में गाय के लेकर देश में जारी उन्माद पर तंज कसा है।

वहीं, रवीश कुमार ने 9 फरवरी, 2016 को 'बकरी को कानून चर गया है' शीर्षक से डाली पोस्ट में छत्तीसगढ़ के एक जिले कोरिया में जज के आहते में बकरी द्वारा घास चरने पर उसके मालिक को जेल भेजने की घटना पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी की है। रवीश ने विश्व के अन्य देशों में हुई ऐसी अन्य घटनाओं को भी जिक्र किया है। इसमें नाइजीरिया और यूएसए की एक-एक घटना का भी जिक्र किया है, जिसमें बकरियों को चोरी और कानून का पालन न करने के लिए जेल भेज दिया गया। रवीश इस लेख के जरिये कानून की अव्यवहारिकताओं की ओर ध्यान खींचना चाहते हैं। रवीश कुमार लेख में दावा करते हैं कि यह व्यंग्य सत्य घटनाओं के आधार पर

लिखा गया है। लेख के शुरुआत से लेकर अंतिम लाइम तक रोचकता बनाए रखी है। उन्होंने लिखा है कि इस घटनाओं को मीडिया में भी कवरेज मिला था।

इसी प्रकार, रवीश ने 14 फरवरी, 2016 को 'रक्षा मंत्रालय जैसा है अमेरिका का कृषि विभाग' शीर्षक से डाली पोस्ट में अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान खिंची गई अमेरिका के कृषि मंत्रालय की दो तस्वीरें पोस्ट की हैं, वे लिखते हैं कि उन्होंने इमारत की विशालता को देखकर अमेरिका के रक्षा मंत्रालय का अनुमान लगाया था, लेकिन बाद में पता लगा कि वह अमेरिका का कृषि मंत्रालय है। रवीश बताते हैं कि अमेरिका के अखबारों में भी कृषि के बारे में बहुत ज्यादा नहीं छपता है। रवीश कुमार ने 27 फरवरी को लिखे 'तहस नहस से बहस, बहस से तहस-नहस लेख' में किसी मुद्दे को लेकर जब देश में राजनीतिक व मीडिया जैसे सार्वजनिक मंचों पर बहस होती है, तो लक्ष्य तक पहुंचने से पहले ही परिवर्तित हो जाती है। मुख्य मुद्दा कहीं गायब ही हो जाता है। रवीश ने सार्वजनिक संवाद की इस शैली को देश के लिए अहितकर बताया है। रवीश इसके लिए राजनीतिक, सामाजिक और मीडिया सभी को दोषी ठहराते हैं।

1 मार्च, 2016 को सुधीर राघव ने 'punchतंत्र की कहानी' शीर्षक से पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से प्रधानमंत्री मोदी पर व्यंग्य किया है। 'मन की बात' कार्यक्रम को अप्रासंगिक बताया है। इसके लिए उन्होंने दो पात्र गधा और कुत्ता लिए हैं। संवाद का प्रवाह कई जगह अमर्यादित लगता है। इसी प्रकार के दूसरा लेख सुधीर राघव ने 18 मार्च, 2016 को 'punchतंत्र (कहानी - 2) भारत माता की जय और चालाक नेता' शीर्षक से डाली पोस्ट में भी प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधा गया है। इसमें चाय और केतली के पात्रों की रचना की है। चाय को राजा और केतली को मंत्री बताया गया है। चाय और केतली पात्रों के जरिए विदेश यात्राओं, जापानियों के साथ बुलेट ट्रेन योजना, चीनियों से सरदार बल्लभ भाई पटेल की मूर्ति बनवाना आदि को लेकर तंज किया गया है। गाय को लेकर देश में जारी बहस को भी इस कहानी में चाय और केतली के पात्रों के जरिए व्यंग्य किया है। इसी व्यंग्य में भारत माता की जय नारे को देश की आम जनता

का असली मुद्दों से ध्यान भटकाने वाला बताया है। लेख मे लेखक ने तथ्यों का विश्लेषण नहीं है। तथ्यों के अभाव को हल्के व्यंग्यों के जरिए छुपाया है।

शशि शेखर ने 20 मार्च, 2016 को 'बेघरों की बेबसी से खेलते लोग' शीर्षक से डाली पोस्ट में बिल्डरों द्वारा मकान या फ्लैट खरीदने वालों के साथ धोखा होने की घटनाओं का जिक्र किया है। उन्होंने अपने मित्र के साथ हुई घटना के जरिए समझाया है कि किस प्रकार बैंक, सरकारी अधिकारी और रियल एस्टेट के कारोबारी सभी मिलकर मकान खरीददारों के साथ धोखा देते हैं। उन्होंने बैंकों और सरकारी अधिकारियों पर आरोप लगाए हैं कि वे इस भ्रष्टाचार में शामिल रहते हैं। अपने आरोपों के समर्थन में उन्होंने कई घटनाओं का जिक्र किया है। वह सरकार को रियल एस्टेट से संबंधित ढीले कानूनों के लिए दोषी ठहराते हैं।

22 मार्च, 2016 को सुधीर राघव को 'कन्हैया से शिकायत है' शीर्षक से डाली गई पोस्ट में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र नेता कन्हैया के जरिए भाजपा और उसके समर्थकों पर तंज कसा है। लेख में भाजपा और उसके समर्थकों को गोपियों के रूप में निरूपित किया है, वहीं कन्हैया को कन्हैया यानी कृष्ण के रूप में निरूपित किया है। लेख के बीच में शशि थरूर को शामिल किया और उन्हें दाऊ के रूप में निरुपित किया है। अनुपम खेर और गुलजार साहब नंदा को भी इसमें शामिल किया है। हालांकि पूरे लेख में विषय स्पष्ट नहीं किया है। पूरे लेख को अप्रत्यक्षता के सहारे गढ़ा गया है।

इसी प्रकार, 5 अप्रैल, 2016 को सुधीर राघव ने 'झांसे वाला बाबा' शीर्षक से डाली गई पोस्ट में बाबा रामदेव पर व्यंग्य किया गया है। बाबा रामदेव द्वारा रामलीला मैदान पर किए गए आंदोलन को लेकर उन्होंने तंज कसा है। सुधीर राघव ने 6 अप्रैल, 2016 को 'खलील जिब्रान - 2,' 13 अप्रैल, 2016 को 'प्रेम क्या है' शीर्षक से डाली पोस्ट में प्रेम को अपने अनुसार परिभाषित किया है। इसमें उन्होंने भारत माता और गाय के मुद्दे पर तंज कसा है। इसे आम लोगों का मुद्दा न बताकर राजनीतिक विशुध्द राजनीतिक मुद्दा बताया है।

दूसरी ओर रवीश कुमार ने 9 अप्रैल को 'न देखना कैसे देखें' शीर्षक से डाली पोस्ट में फांसी पर लटके हुए एक किसान के शव को दिखाया। कैप्शन के रूप में रवीश ने कुछ पंक्तियां काव्यात्मक अंदाज में लिखी हैं, जो राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था पर तंज कसती हैं। रवीश ने 13 अप्रैल, 2016 को 'ड्रेरित काव्य का गुड़गांव विशेषांक, आज ही सुनें में' आडियो क्लिप डाली है। रवीश के अनुसार ड्रेरित काव्य का मतलब ऐसा काव्य जो भय से प्रेरित होकर लिखा गया है, या भय की अवस्था में उपजा हो। इसी प्रकार का एक अन्य लेख रवीश कुमार ने 22 अप्रैल, 2016 को 'पंजाब में 12 हजार करोड़ के अनाज का पता नहीं' में राजनीतिक तंत्र पर सवाल उठाएं है कि ऐसा कैसे संभव हो सकता है कि 12 हजार करोड़ का अनाज गायब हो जाए और किसी को पता भी न चले। रवीश ने इसके लिए सरकारी तंत्र और बैंकिंग व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार को जिम्मेदार ठहराया है।

सुधीर राघव ने 22 अप्रैल, 2016 को 'सेक्युलर पानी और देशभक्त कमल (कहानी - punchतंत्र - 4)' शीर्षक से डाली गई एक अन्य पोस्ट में कमल, पानी और कीचड़ के जरिए राजनीतिक पार्टी विशेष पर तंज कसा है। साथ ही सांप्रदायिक राजनीति करने का आरोप लगाया है। हालांकि उन मुद्दों की चर्चा नहीं की है, जिसके कारण उन्हें सांप्रदायिक ठहराया जा रहा है।

28 अप्रैल, 2018 को सुधीर राघव ने 'सभी समस्याओं का निदान संस्कृत' शीर्षक से डाली पोस्ट में संस्कृत भाषा पर तंज कसा है। उनके अनुसार संस्कृत पढ़ने से क्या कॉलेज, मोबाइल, टीवी, परिवहन, प्रयोगशाला आदि की आवश्यकता क्या समाप्त हो जाएगी। क्या गरीबी खत्म हो जाएगी। हालांकि वे भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व के बारे में कुछ नहीं लिखते हैं। उनका पूरा लेख तंज कसकर ही समाप्त हो जाता है। कारण और समाधान के बारे में नहीं लिखा गया है। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट नहीं किया है कि संस्कृत के बारे जो कहा है क्या वह अन्य भाषाओं के बारे में भी लागू होता है या नहीं। लेख में स्पष्टता की कमी है। लेख किसी खास धारणा या विचार से प्रेरित होकर लिखा गया है। लेख को निष्पक्ष नहीं कहा जा सकता है।

रवीश कुमार 3 मई, 2016 को अपने व्लॉग पर बैंगलोर की परिवहन व्यवस्था के बारे में लिखते हैं। जाम के कारण बैंगलोर की शहरी सुंदरता धूमिल हो गई है। पार्किंग व्यवस्थाओं और सरकारी महकमों की जवाबदेही पर भी सवाल किए गए हैं। रवीश ने अपनी बैंगलोर यात्रा के दौरान खींचे फोटूओं को प्रमाण स्वरूप दिया है। लेख में बैंगलोर की यातायात व्यवस्था के आंकड़े भी दिए हैं, परिवहन की समस्याओं को अपने अनुभव के जरिए लिखा है। रवीश कुमार ने 10 मई, 2016 को कस्बा में आदित्य हत्याकांड कांड व आरोपी के बारे में लिखा है। आरोपी पक्ष द्वारा मीडिया में दी जा रही भावनात्मक बचाव दलीलों की आलोचना की और उन्हें झूठा करार दे दिया है। हालांकि रवीश इस ओर भी इशारा करते हैं कि अभी मामला अदालत मे चल रहा है और अंतिम फैसला आना बाकी है। वे पीड़ित पक्ष के दुखों को भी सामने रखते हैं। इस मामले में रवीश ने आरोपी पर लिखित गुस्सा दिखाया है।

वहीं, सुधीर राघव ने 5 मई, 2016 को 'श्री श्री और सत्य' शीर्षक से डाली पोस्ट में सुधीर राघव ने पंचतत्व अग्नि, पृथ्वी, आकाश, जल, वायु से बने किसी साधु से सावधान रहने को कहा है। इसके पीछे तर्क देते हैं कि जब अग्नि, पृथ्वी, आकाश, जल, वायु में किसी को सत्य दिखाने की सक्षमता नहीं तो इन तत्वों से बना कोई व्यक्ति कैस सत्य का मार्ग दिखा सकता है। लेखक ने आलंकारिक व साहित्यिक वर्णन किया है। वैज्ञानिकता की कसौटी के लिए किसी प्रकार के तथ्यों को लेख में शामिल नहीं किया है। अंधविश्वास की काट के लिए अंधविश्वास जैस तथ्यों का ही सहारा लिया गया है। पूरे संत समाज को अविश्वास के एक ही समूह में रख दिया है।

इसी प्रकार, 3 मई, 2016 को सुधीर राघव ने 'हिंदी मुहावरे, नए और संशोधित' शीर्षक के साथ पोस्ट डाली है। 6 मई, 2016 को 'हाकिम मेरे मुल्क का' शीर्षक के साथ काव्य रूप में लेख लिखा है। इसमें नेताओं पर तंज कसा है और किसान की हालत व घोटलों को लेकर चिंता व्यक्त की है।

10 मई, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 'फर्जी पढ़ाई को रोकें तो बात हो' शीर्षक से डाली पोस्ट में देश में चल रहे फर्जी डिग्री के गोरखधंधे को लेकर सवाल खड़े किए हैं। विभिन्न संस्थाओं के माध्यम की रिपोर्ट्स के जरिए उन्होंने बताया है कि भारत में शिक्षा कारोबार में बदल गई है। सरकार शिक्षा के ऊपर प्रतिवर्ष करीब 70 हजार करोड़ रुपये खर्च करती है। वहीं निजी क्षेत्र में शिक्षा का करोबार लगभग डेढ़ लाख करोड़ रुपये का है। नैसकाम और एसोचैम की रिपोर्ट के माध्यम से लिखते हैं कि भारत में मैनेजमेंट और इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाले 80 प्रतिशत छात्र नौकरी के अयोग्य होते हैं। वहीं वर्ष 2012 की एक सरकारी रिपोर्ट के माध्यम से लिखा है कि देश में करीब 21 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जो फर्जी डिग्री बांटते हैं। एम्प्लाएमेंट बैकग्राउंट चैक सर्विस देने वाली फर्म राइट के माध्यम से लिखा है कि भारत में 25 प्रतिशत लोगों के डिग्री से संबंधित कोई न कोई कागजात फर्जी या गैरप्रमाणिक होते हैं।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने लेख में प्रत्येक तथ्य के साथ उसके संदर्भ का भी वर्णन किया है। साथ ही वे सवाल उठाते हैं कि भारत में फर्जी डिग्री एक उद्योग क्यों बन गया है। साथ ही वे सवाल खड़े करते हैं कि सरकार फर्जी डिग्री के मामलों पर रोक क्यों नहीं लगा पाती है। लेख में मीडिया में उठ रहे प्रधानमंत्री मोदी की डिग्री की प्रमाणिकता के सवालों का भी जिक्र किया है। हालांकि लेख में किसी भी प्रकार राजनीतिक पूर्वाग्रह दिखायी नहीं देता है। लेख में फर्जी डिग्री के माध्यम से सरकारी नौकरी प्राप्त करने के मामलों पर चिंता दर्शायी है। लेख में केवल समस्या को उजागर किया गया है, जिसके लिए विभिन्न सरकारी और गैरसरकारी रिपोर्ट्स का सहारा लिया गया है। लेकिन किसी प्रकार के उपायों की चर्चा नहीं की गई है, जिसके के माध्यम से शिक्षा में सुधार किया जा सके और फर्जी डिग्री की समस्याओं का हल निकाला जा सके।

इसी प्रकार रवीश कुमार ने चिकित्सा क्षेत्र में जारी भ्रष्टाचार के बारे में लिखा हैं उन्होंने 4 जून को कस्बा में चिकित्सा के नाम पर जारी लूट को उजागर किया है। उनके अनुसार दिल्ली के अधिकांश बड़े प्राइवेट हॉस्पिटल मरीज से अधिक-अधिक लूटने का प्रयास करते हैं। यदि बीमारी

न हो तो मेडिकल की भाषा में पैदा करने की कोशिश की जाती है। रवीश ऐसे मामलों का भी जिक्र करते हैं, जिसमें मरीज के मरने के बाद भी उसे कई दिन तक वेंटीलेटर पर रखा गया ताकि उससे पैसा वसूला जा सके। इसमें वे चिकित्सा की संवेदना पर सवाल उठाते हैं। रवीश अपने मित्रों व परिचितों के इसी प्रकार के मामलों का भी जिक्र किया है। वे सरकारी व्यवस्था की आलोचना करते हैं कि क्यों इन का नियमन किया जाए।

रवीश कुमार ने 5 जून, 2016 को 'भारतीय पुलिस सेवा के नाम पत्र' शीर्षक से डाली गई पोस्ट में मथुरा के जवाहर बाग घटना के दौरान हुई आईपीएस अधिकारी मुकुल द्विदी की मौत के कारणों पर चर्चा करते हुए रवीश ने एक खुला पत्र लिखा है, इसमें उन्होंने देश में हुई अन्य पुलिस अधिकारियों की मौतों की भी चर्चा की है। वे इसके लिए विभाग को ही अधिक दोषी मानते हैं, साथ ही राजनीतिक व्यवस्थाओं को भी कठघरे नें खड़ा करते हैं, जो प्रशासनिक कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप करते रहते हैं। रवीश कुमार 6 जून को अपने ब्लॉग पर दो और पोस्ट डाली है, इसमें रवीश की 5 तारीख की पोस्ट का एक आईपीएस अधिकारी ने पत्र के रूप में जवाब दिया है। 28 जून को रवीश ने 'श्रम कार्यालयों की कारगुजारियों के बीच एक अफसर' पोस्ट में वर्तमान सरकारी व्यवस्थाओं में एक ईमानदार सरकारी कर्मचारी किस-किस प्रकार की दिक्कतों का सामना करता है का जिक्र किया है। उन्होंने एक घटना का भी जिक्र किया है, जिसमें एक सरकारी अधिकारी बैंग भरकर प्रमाण के रूप सरकारी दस्तावेज लाता है, और अपने विभाग में जारी भ्रष्टाचार की पोल खोलकर रख देता है। रवीश कहते हैं देश के प्रत्येक महकमे का यही हाल है।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 8 जून, 2016 को 'अमेरिकी मित्रदेश बनने की दिशा में भारत' शीर्षक से लिखी पोस्ट में भारत और अमेरिका के बीच बढ़ती नजदीकियों का विश्लेषण किया है। लेख का प्रारंभ अमेरिकी कांग्रेस द्वारा प्रधानमंत्री मोदी को बोलने के आमंत्रण के विश्लेषण के साथ किया है। पुण्य प्रसून वाजपेयी ने अमेरिका द्वारा मोदी को दिए आमंत्रण का आलोचनात्मक विश्लेषण

किया है। उन्होंने लिखा है कि यह अमेरिकी कांग्रेस में किसी विदेशी राष्ट्र्ध्यक्ष का पहला संबोधन नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी से पहले विभिन्न देशों के 117 राष्ट्राध्यक्ष अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित कर चुके हैं। मोदी 118 वे राष्ट्राध्यक्ष होंगे। इससे पहले राजीव गांधी को अमेरिकी कांग्रेस में बोलने का आमंत्रण मिला था।

हालांकि रवीश कुमार ने इस बात का भी जिक्र किया है कि जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गांधी को कभी इस प्रकार आमंत्रण नहीं मिला। भारत और अमेरिका के बीच हुए 'लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट' को भारत को बड़े रणनीतिक बदलाव के रूप में देखते हैं। वे इसे भारत के गुटनिरपेक्ष सिद्धांत से विचलन के रूप में देखते हैं। इससे अमेरिका के लडाकू जहाज भारत में उतकर आवश्यक रसद सामग्री प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही वे लिखते हैं कि अमेरिका भारत का इस्तेमाल कर रहा है। तर्क के समर्थन में लिखा है कि वह इससे पहले पाकिस्तान का इस्तेमाल कर चुका है। लेख के अंत में एच1बी बीजा पर अमेरिकी नीति को लेकर को भी लिखा है। यह लेख पुण्य प्रसून वाजपेयी ने स्वयं के नजरिये से लिखा गया है, इसमें किसी रणनीतिक विशेषज्ञ या रक्षा विशेषज्ञ की राय को शामिल नहीं किया गया है।

27 जून, 2016 को पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 'क्यों चे ग्वेरा नहीं हैं मेसी' शीर्षक से पोस्ट डाली है, इसमें वामपंथी नेता चे ग्वेरा और फुटबालर मेसी के बीच आश्चर्यजनक तुलना की है। तुलना के लिए उन्होंने जन्म स्थान, रोग, संघर्ष, आर्थिक स्थिति आदि तथ्यों का सहारा लिया है। चे ग्वेरा और मेसी दोनों का ही जन्म अर्जेंटीना के रोसारियो शहर में हुआ। बचपन से ही दोनों को खेलना बहुत पसंद था चे ग्वेरा रग्बी पसंद करते थे और मेसी फुटबाल के दीवाने थे। दोनों की आर्थिक स्थितियां बहुत खराब रहीं। चे ग्वेरा बचपन में अस्थमा से पीड़ित थे और मेसी हारमोनल दिक्कतों के विकास न होने की समस्या से पीड़ित थे। चे ग्वेरा 20 वर्ष की आयु में मेडिकल छात्र के रूप में देश भ्रमण किया और गरीब और शोषण को देखकर वामपंथी बन गए, न्याय के लिए बंदूक उठाने से भी गुरेज नहीं किया और क्यूबा में संघर्ष करते हुए मारे गए। पुण्य प्रसून

वाजपेयी लेख में चे ग्वेरा के व्यक्तित्व के महिमामंडन के समय वामपंथ के लिए हिंसा को बड़े ही सहज तरीके से सही ठहरा जाते हैं। हालांकि स्वतंत्र रूप मेसी और चे ग्वेरा के व्यक्तित्व में जमीन-आसमान का अंतर है, लेकिन लेखक जन्म स्थान, बीमारी और उम्र के सहारे ही समानताएं निकालता है, वह विचारधारा को तुलना में शामिल नहीं करता है, जोकि मानव के व्यक्तित्व का आधार है।

28 जून, 2016 को शशि शेखर ने 'प्रथम वचन - आने वाले वक्त में अमरत्व' शीर्षक के साथ डाली पोस्ट में जेनेटिक्स यानी आनुवांशिकी के क्षेत्र में हो रही प्रगति से उन्होंने भावी मानवी सभ्यता की कल्पना की है। वे मानव के अमर होने की कहानी को जेनेटिक्स विकास में सच्चाई के रूप में देखते हैं। साथ ही उन्होंने मानव के अमर होने व महान होने की परिभाषाओं को बुध्द के ऐतिहासिक कथानकों के जरिए समझाने की कोशिश की है। बुध्द अपने महान कार्यों के जरिए अमर हैं। राजकुमार होने के बावजूद उन्होंने संघर्ष, सेवा और साधना का मार्ग चुना। वे लिखते हैं कि भारतीय परंपरा में लोग अमरत्व को उसके कर्मों की महानता में देखते हैं।

रवीश कुमार 4 जुलाई को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्र अखिलेश यादव और स्वयं के मित्र नीरज के बारे में लिखा है। वे मित्रवत अंदाज में लिखते हैं कि नीरज को पता नहीं होगा कि उसके साथ हॉस्टल में रहकर पढ़ने वाला अखिलेश यादव एक दिन उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बन जाएगा। लेख में अपने मित्र नीरज और उसके मित्र अखिलेश यादव की सरलता के बारे मे लिखा है। लेख की भाषाशैली निजता का बोध कराती है। तथ्यों को भी निजता की मर्यादा के अंदर रखा गया है। 11 जुलाई, 2016 को भारत में जारी बेरोजगारी के संकट को लेकर सरकार और मीडिया दोनों की आलोचना की है। सरकार की आलोचना नौकरियों का सृजन न कर पाने की अक्षमता के संदर्भ में की गई है। मीडिया की आलोचना बेरोजगारी पर कोई गंभीर खबरें न दिखाने के लिए किया है।

14 जुलाई को रवीश कुमार ने दर्शकों ओर पाठकों द्वारा समाचार चैनलों के एंकरों को लिखे जाने वाले पत्रों से है, अधिकाश पत्रों में स्थानीय समस्याओं के बारे में लिखा होता है। वे कहते हैं कि मीडिया समूह और पत्रकारों की बहुत सी मजबूरियां होती हैं, जिसके कारण वे प्रत्येक पत्र पर खबर नहीं बना जा सकते हैं। रवीश इसमें पाठकों, दर्शकों की मीडिया से उम्मीदों के बारे में भी लिखा है, वे लिखते हैं कि उनके पत्रों से आसानी से पता लगाया जा सकता है कि उनकी मीडिया से क्या आकांक्षा है।

31 जुलाई, 2016 को शशि शेखर ने 'नफरतों के दौर में उम्मीद' शीर्षक से डाली पोस्ट में दुनिया में उन्माद और घृणा की भावनाओं के विस्तार पर लिखा है। वे लिखते हैं कि उधम सिंह और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों ने हिंसा का सहारा न्याय और स्वतंत्रता के लिए था। साथ ही उस हिंसा में किसी निर्दोष का निशाना नहीं बनाया था। उनकी हिंसा बहरे कानों को सुनाने के लिए थी। भगत सिंह ने असेंबली में बम फोडा और खुद को गिरफ्तार करवाया। उधम सिंह ने जलियावाला कांड में हजारों निर्दोष लोगों को मारने की योजना बनाने वाले जनरल ओडवायर को गोली मारी।

साथ ही शशि शेखर लिखते हैं कि आज लोगों में हिंसा सनक का कारण बन गई है। विश्व में हिंसा पसंद मनोरोगियों की संख्या बढ़ रही है। निर्दोष लोगों को गोलियों से भून दिया जाता है। बम से उड़ा दिया जाता है। वे कुछ घटनाओं का जिक्र करते हैं। जापान में एक हिंसक मनोरोगी ने दर्जनों विकलांगों को चाकू से गोद दिया है। ऐसी वीभत्स घटना को समाज में कैसे स्वीकार किया जा जाता है। म्यूनिख शहर में एक आतंकी त्योहार बनाने को इकट्ठा हुई भीड़ को ट्रक से कुचल डाला। अमेरिका में एक अट्ठारह साल के युवक ने बच्चों को गोलियों से भून दिया। इस लेख के जरिए वे बताना चाहते हैं कि समाज में हिंसा एक नए स्वरूप में सामने आ रही है। हालांकि लेख में उन्होंने नतीजे पर पहुंचने के लिए किसी मनोवैज्ञानिक के कथनों या आंकड़ो का

सहारा नहीं लिया है। उन्हें कुछ घटनाओं के जरिए ही पूरी मानवजाति के व्यवहार का खाका खींच दिया है। यह लेख एक आम पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है।

रवीश कुमार ने 2 अगस्त, 2016 को 'सबक एक कविता' शीर्षक से काव्य पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने सरकार और उनके लोगों पर व्यक्तिगत आरोप लगाए हैं। साथ ही उनके समर्थकों को गुंडा कहा है। जानकारी हो कि रवीश कुमार वामपंथी विचारधारा के पत्रकार हैं, जबकि वर्तमान सरकार दक्षिणपंथी सरकार मानी जाती है। 9 अगस्त, 2016 को रवीश ने 'कविता के मूड में, डेस्प्रेड कवि' शीर्षक से कविता लिखी है। इस कविता में वे काव्य की तलाश करते हैं।

12 अगस्त को रवीश कुमार ने देशभक्ति और तिरंगे का आकार के संबंध में लिखा है। उनके अनुसार देशभक्ति को तिरंगे के आकार से नहीं नापा जा सकता है। देश में जगह-जगह विशालकाय तिरंगे लहराए जा रहे हैं। विश्वविद्यालयों में तिरंगा फहराना आवश्यक कर दिया गया है। धार्मिक यात्राओं जैसे कांवड आदि में तिरंगे का प्रयोग किया जाने लगा है। हालांकि रवीश अपनी वामपंथी विचारधारा के अनुसार इसके पीछे राष्ट्रवाद की आलोचना करते हैं। वे कहते हैं कि उन बच्चों का क्या जो सड़को पर भीख मांगना छोड़कर कुछ गणतंत्र दिवस- स्वतंत्रता दिवस पर कुछ दिन के लिए तिरंगा बेचते हैं और बाद में फिर भीख मांगने लग जाते हैं। रवीश ने पोस्ट में तिरंगा बेचते बच्चों, कांवड़ यात्रा में तिरंगे आदि की छह तस्वीरें भी पोस्ट की हैं।

रवीश कुमार 14 अगस्त को अपने ब्लॉग कस्बा पर 'मैं ग्रेटर कैलाश-2 के आंदोलन को कवर नहीं करूंगा' शीर्षक से डाली गई पोस्ट में दिल्ली के तारा, ग्रेटर कैलाश 2, यमुना इलाके के लोगों द्वारा प्रस्तावित अलकनंदा माल के विरोध में कालोनियों के चारो ओर लगाए गए बड़े-बड़े होर्डिंग्स को दिखाया है। रवीश लेख के जरिए इस प्रकार के विरोधों का समर्थन करते हैं और वे इसे समाज की जागरूकता से जोड़कर देखते हैं। वे मॉल संस्कृति को फेल होते आधुनिक मॉडल के रूम में देखते हैं और बताते हैं कि कालोनी के लोगों ने इस फेल मॉडल को पहचान लिया है। साथ ही रवीश अन्य मीडिया समूह द्वारा इस खबर को कवर न करने के लिए आलोचना करते

हैं। रवीश कुमार ने 17 अगस्त को कविता पोस्ट की है, जिसमें संस्कृति और राष्ट्र की बात करने वाले कुलपतियों की आलोचना की है। रवीश द्वारा यह कविता जेएनयू के संदर्भ में की है। वे काव्य के शब्दों में जेएनयू के छात्रों पर लगे राष्ट्रदोह के आरोपों की कड़ी आलोचना करते हैं। रवीश की नजर में राष्ट्र व देश अलग-अलग धारणाएं हैं।

रवीश कुमार 6 सितंबर के लेख में 'मिलावट तो मंदा से आता है' शीर्षक से डाली पोस्ट में दालों के भाव को लेकर लेख लिखा है। इसमें वे दाल बेचने वाले विक्रेता के हवाले से लिखते हैं कि मंदा जब आता है जब मिलावट होती है। हालांकि यह अर्थशास्त्र का नियम नहीं है। गुणवत्ता की समझ और मांग के दौर में मिलावट के जरिये मंदी पैदा करना लगभग असंभव हो गया है। रवीश विक्रेता के तर्कों के आधार पर पूरा लेख लिखते हैं, उन्होंने पत्रकार होने के नाते किसी स्थान पर उसके तर्कों का खंडन नहीं किया है। 7 सितंबर को रवीश कुमार ने 20 मार्च नाम की पानी की बोतल के ब्रांड आश्चर्यचकित होकर लेख लिखा है। वे नाम के पीछे के कारणों की जांच करते हैं। कंपनी के मालिकों में से एक के जरिये पता चलता है कि 20 मार्च, 2017 को बाबा साहेब अंबेडकर ने महाड चवदार तालाब सत्याग्रह का नेतृत्व किया था, और पानी पीकर जातिगत ऊंचनीच को समाप्त करने के लिए सामाजिक समानता के लिए आंदोलन शुरू किया था। इसी विचार के साथ 58 लोगों ने मिलकर 20 मार्च नाम की पानी कंपनी का निर्माण किया। रवीश कुमार कंपनी खोलने वाले लोगों की प्रशंसा करते हैं। साथ ही, अपील करते हैं इस प्रकार के लोग समाज से निकलकर आएं और सामाजिक समानता के लिए कार्य करें।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 19 सितंबर, 2016 को 'ना युद्ध.. ना शांति' शीर्षक से डाली पोस्ट में भारत और पाकिस्तान के बीच आतंकवाद को लेकर जारी तनातनी का विश्लेषण किया है। विश्लेषण में पाकिस्तान के साथ युध्द के प्रकार और प्रकृति के बारे में लिखा है। यह लेख संयुक्त राष्ट्र की आम सभा से पूर्व और उरी हमले के बाद लिखा गया है। इसमें सर्जीकल स्ट्राइक, सीधे युद्ध और परमाणु युद्ध की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। लेख में

सीएजी रिपोर्ट में युध्द सामग्री भंडार की कमी पर चिंता व्यक्त की है, इसके लिए उन्होंने यूपीए सरकार को अधिक जिम्मेदार ठहराया है। लेख के अंत में आतंकवाद की घटनाओं पर राजनीतिक वर्ग द्वारा मीडिया की जाने वाली गैर जिम्मेदाराना टिप्पणियों की भी आलोचना की है। वे देश की सुरक्षा के मसले पर राजनीति करना ठीक नहीं मानते हैं। उन्होंने कश्मीर विषय के समाधान के लिए स्थानीय स्तर पर ठोस सामाजिक पहल करने की भी सलाह दी है ताकि युवा आतंकवादी न बनें।

रवीश कुमार 18 अक्टूबर, 2016 को 'बॉब डिलेन क्या तुम दिल्ली में हो? प्लीज फोन उठाओ' शीर्षक से लिखी पोस्ट में बॉब डिलने को नोबेल पुरस्कार के बहाने व्यंग्यात्मक शैली में दिल्ली में कॉल ड्रॉप की समस्या और रविन्द्रनाथ टैगोर के नोबेल पुरस्कार की चोरी के मुद्दों को उठाया है। वे लेख में मीडिया पर भी आरोप लगाते हैं कि मीडिया देश में डर का माहौल पैदा कर रहा है।

10 नवंबर को रवीश कुमार ने 'हमारा कश्मीर बहुत अच्छा है - मुनीर' शीर्षक से डाली गई पोस्ट में उनसे दिल्ली उनकी ऑफिस में मिलने आए जम्मू-कश्मीर के नौजवान मुनीर के बहाने कश्मीर के हालातों पर लिखा है। मुनीर उनको बताते हैं कि कश्मीर के हालात ऐसे नहीं जैसे टीवी पर दिखाया जाता है। बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग वहां काम करते हैं और मिलजुलकर रहते हैं। कश्मीरी पंडितों के पूछे सवालों पर वे बताते हैं कि आज भी कश्मीरी पंडित वहां आते हैं और रहते हैं। रवीश ने लेख में कश्मीर की हालातों के दिखाये जाने के तरीके को लेकर मुख्यधारा मीडिया की आलोचना करते हैं। रवीश पूरे लेख में राज्य का नाम जम्मू-कश्मीर नहीं लेते हैं, केवल कश्मीर शब्द का इस्तेमाल करते हैं। वे मुनीर से कश्मीर में जारी आतंकवाद और शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद होनी वाली घटनाओं के लिए जिम्मेदार कट्टरवाद पर भी कोई सवाल नहीं पूछते हैं। मीडिया में दिखाए जा रही घटनाओं के बारे में तथ्यों के साथ बात नहीं करते हैं वे कश्मीर के मामले में भावनाओं के आधार पर बेहतर होने की व्याख्या करते हैं।

पुण्य प्रसून वाजपेयी ने 2 दिसंबर, 2016 को 'हर आंख में एक सपना है' शीर्षक से डाली पोस्ट में देश शिक्षा, बिजली, पानी, आवास, रोजगार, आतंकवाद की समस्याएं और नोटबंदी का विश्लेषण किया है। इसमें लिखते हैं कि देश आज भी सत्तर साल पहले के हालातों में जी रहा है, जब देश आजाद हुआ था। हालांकि अपने इस तर्क समर्थन में उन्होंने किसी प्रकार के आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए हैं। वर्तमान हालातों के लिए उन्होंने देश के राजनीतिक वर्ग को जिम्मेदार ठहराया है।

20 दिसंबर को रवीश कुमार ने 'मैं अनुपम दादा का मिस कर रहा हूं' शीर्षक से लिखी पोस्ट में गांधीवादी पर्यावरणविद अनुपम मिश्र के बारे में लिखा है। वे गांधी शांति प्रतिष्ठान की पत्रिका गांधी मार्ग के संपादक थे। अनुपम मिश्र की मृत्यु से दुखी रवीश कुमार ने उनको याद करते हुए यह लेख लिखा है। पर्यावरण को लेकर अनुपम मिश्र ने कई पुस्तकें लिखीं और कार्य किए, जिनकी चर्चा रवीश ने अपने लेख में की है।

2 मई को 2016 को सुधीर राघव ने ''मजदूर नंबर वन' शीर्षक से डाली अपनी पोस्ट में मजदूरों की दशा पर शब्द चित्र खींचा है। उन्होंने अपनी पोस्ट के माध्यम से बताया है कि किस प्रकार से एक मजदूर तपती दोपहरी में पैतालीस डिग्री के तापमान पर दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए कार्य करता है। मजदूर दिन भर काम करने के बाद शाम को जब अपनी पगार मांगता है, तो उसे मिलती है गालियां। आगे वे लिखते हैं कि किस प्रकार से माल्या जैसा केश विन्यास बनाकर एक 'मजदूर' भाषण करता है, 14 लाख का सूट पहनाता है और हवाई जहाज में पूरी दुनिया में घूमता है। साथ ही, वह अपने को मजदूर नम्बर वन बताता है। सुधीर राघव इस लेख में अप्रत्यक्ष रूप से निशाना पीएम मोदी की ओर लगाते हैं।

सुधीर राघव 12 मई 2016 को अपने ब्लाग पर डाली पोस्ट 'लठठ में एंटायर पालिटिक्स' में प्रधान मंत्री पर कटाक्ष करते हुए लिखते हैं कि इसकी भाषा या तो वह ही समझते हैं या फिर हरियाणा के जाट। वे व्यंग्यात्मक लहजे में लिखते हैं कि सारी राजनीति इसी में बसती है और ये

किसी विश्वविद्यालय मे नहीं प्रदान की जाती है। अपनी पोस्ट के माध्यम से वह शिक्षा के लिए रोके गए वजट की बात को उठाते हैं। सुधीर राघव अपनी पोस्ट में यहां छात्रों के हित की बात करते हैं। 1

19 मई 2016 को सुधीर राघव ने 'देव संस्कृति और प्रेत संस्कृति' शीर्षक से डाली अपनी पोस्ट में सड़कों के नाम को लेकर लेख लिखा है। वह लिखते हैं कि मार्ग की पहचान उसकी मंजिल से होती हैं। बडे शहरों में मार्ग सही पता नहीं देते। जैसे कि गोविंद बल्लभ पंत रोड पंत जी के गृह जनपद की ओर नहीं जाता। ठीक उसी प्रकार गांधी मार्ग गुजरात की ओर नहीं जाता। जहांगीर रोड हो या अकबर रोड सबका सही हाल है। आगे वे अपने लेख में यह कहना चाहते है कि जो मार्ग जहां जा रहा है उसी के नाम पर नामकरण किया जाए जिससे कि पथिक रास्ता न भटके।

27 मई 2016 को 'खतरनाक कौन' शीर्षक से डाली पोस्ट में सुधीर राधव बच्चों के हाथ में बंदूक होने पर चिंता जाहिर करते हैं। सुधीर उन लोगों को गलत ठहरा रहे हैं जो बच्चों के हाथ में बंदूक थमा रहे हैं। जिन लोगों ने मुसलमानों के बच्चों को बंदूक थमाई और अल्लाह के नाम पर फिदायीन बनाया। अब वे लोग हिन्दुओं के बच्चों को भगवान के नाम पर बरगला रहे हैं। सुधीर इस पोस्ट में जेहादी मानसिकता को गलत ठहराते हैं, जो समाज में नफरत फैलाने कार्य करती है। इस लेख में सुधीर अहिंता और सहिष्णुता का संदेश देने का प्रयास करते हैं।

12 जुलाई 2016 को सुधीर राघव ने एक अन्य पोस्ट 'श्री श्री ने योग के लिए क्या कियाः राम देव' में वह बाबा राम देव के मीडिया कथनों के बारे में लिखा है। वे लिखते हैं कि बाबा जी ने श्री श्री से पूछा कि आपने योग के लिए क्या किया। आपने योग को नया नाम दे दिया। आगे वह लिखते हैं कि योग में भी प्रतिस्पर्धा कम नहीं है। अन्य की तरह भी यहां भी बाजार के नियम लागू होते हैं। सब कुछ आपको बाजार की तरह से ही करना पड़ता है। आगे वह बाबा राम देव जी पर कटाक्ष करते हुए लिखते हैं के बाबा योगी के साथ-साथ पूरे राजनीतिज्ञ भी हैं। साथ ही, बाबा को राजनीतिक बातें गढ़नी खूब आती हैं।

22 अगस्त, 2016 को 'बेरोजगारी में कच्चा काम गोरक्षा' शीर्षक से लिखी पोस्ट में वह बेरोजगारी की बात उठाते हैं। वह लिखते हैं कि वर्ष 2012 में ओलंपिक में भारत ने छह मेडल जीते और ओलंपिक 2016 में केवल दो ही पदक भारत में आए। यहां तीन सौ फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। बेरोजगारी पर बात करते हुए वह लिखते हैं कि वर्ष 2014 में चार लाख 93 हजार युवाओं को रोजगार मिला था। मगर 2015 में एक लाख 35 हजार को ही सरकार रोजगार दे पायी। सरकार ने टैक्स के नाम पर राजस्व इकठ्ठा किया और नाम विज्ञापनबाजी में ही खर्च कर दिया। वह आगे बताते है कि सरकार ने युवाओं के विकास और शोध कार्यों के बजट में कटौती कर दी।

29 अगस्त 2016 को सुधीर राधव 'संघ चरित' शीर्षक से लिखी पोस्ट में वह कविता के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दोहरे चरित्र की बात करते हैं। वह लिखते हैं कि- रघुकुल रीति सदा चलि आई ढ़ांचा गिरे तो मुकर जाई। जब आपकी सरकार न हो तो खूब चिल्लाओं और जब आपकी सरकार आ जाए तो चुप लगा जाओ।

7 सितंबर 2016 को 'डिजिटल इंडिया में लठ्ठ गाढ़ता हरियाणा' शीर्षक से लिखी पोस्ट में सुधीर राघव सरकारी सिस्टम की बात करते हैं। वह लिखते हैं कि एक सड़क हादसा हो गया। घायल सड़क पर तड़प रहा था। उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाने की जरूरत थी। उधर से जज साहब गुजर रहे थे तो उन्होंने एंबुलेंस को काल किया मगर एंबुलेंस नहीं आई। जज साहब ने दोबारा काल की तो उधर से जवाब आया कि एंबुलेंस उड़कर नहीं आएगी। जज साहब ने अन्य वाहन से घायल को अस्पताल पहुंचाया। सुधीर सवाल यह उठाते हैं कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री उड़कर जा सकते है तो एंबुलेंस उड़कर नहीं जा सकती। क्या सड़क पर तड़पते व्यक्ति की जान की कीमत कुछ भी नहीं।

16 के सितंबर 2016 को 'मोदी, मच्छर और महंगाई' शीर्षक से लिखी पोस्ट में सुधीर राघव लिखते हैं कि इन तीनों ने ही प्रसिद्ध पाई है, लेकिन आम जनता तीनों से ही परेशान है। और

ये तीनों ही खून पी रहे हैं। तीनों की एक ही राशि है। लोग महंगाई से परेशान हैं। साथ ही, मच्छर भी उनका खून पी रहे हैं। वह लिखते हैं कि ये तीनों अंबानी से ही डरते हैं। सुधीर राघव के यह लेख भाषा संयम के मामले में पत्रकारिता की मर्यादाओं का उल्लंघन करता हुआ लगता है। इसी प्रकार, 15 सितंबर 2016 को 'गले की हड्डी' शीर्षक से सुधीर राधव अच्छे दिनों की तुलना गले की हड्डी से कर रहे हैं। वह कहना चाह रहे हैं कि लोग अच्छे दिनों का नाम सुन-सुन कर लोग पक गए। कविता के माध्यम से वह लोगों की व्यथा सामने रखने का दावा करते हैं।

18 सितंबर, 2016 को सुधीर राघव 'उडने वाला हाथी' शीर्षक से नेताओं और उनके समर्थकों पर तंज कसते हैं। वह लिखते हैं कि यह लोकतंत्र की बिडंबना है कि नेताओं के समर्थक अपने ही नेता की हां में हां मिलाते हैं। वे अपने ही नेता को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं और हाथी की तरह मानते हैं। यानी कि दमदार। नेताओं के समर्थक अपने नेता को कभी दोष नहीं देते है, यहीं लोकतंत्र धाराशायी हो जात है। वह आगे लिखते हैं कि उसके समर्थक कभी उसे दोष नहीं देते, चाहे वह गलत ही कर रहा हो। इस लेख के माध्यम से सुधीर राघव पार्टी के अंदर भी लोकतंत्र का समर्थन करते हैं।

संदर्भ सूची :

1. कुमार, रवीश. (2016, जनवरी, 14). जेल के नाम रवीश कुमार का प्रेम पत्र. Retrieved from https://naisadak.org/jail-ke-naam-ravish-kumar-ka-ek-prem-patra/
2. राघव, सुधीर. (2016, फरवरी, 8). ईश्वर. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/02/.html
3. राघव, सुधीर. (2016, फरवरी, 27). ये घर किसने जलाए हैं. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/02/blog-post_14.html

4. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 9). बकरी को कानून चर गया है. Retrieved from http://naisadak.org/बकरी-को-कानून-चर-गया/

5. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 14). रक्षा मंत्रालय जैसा है अमेरिका का कृषि विभाग. Retrieved from https://naisadak.org/us-dept-of-agriculture/

6. कुमार, रवीश. (2016, फरवरी, 27). तहस नहस से बहस, बहस से तहस-नहस लेख. Retrieved from https://naisadak.org/tahas-nahas-se-bahas/

7. राघव, सुधीर. (2016, मार्च, 1). punchतंत्र की कहानी. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/03/blog-post_14.html

8. राघव, सुधीर. (2016, मार्च, 18). punchतंत्र कहानी - 2. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post2 _14.html

9. शेखर, शशि. (2016, मार्च, 20). बेघरों की बेबसी से खेलते लोग. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-play-by-powerlessness-of-homeless-people-520532.html

10. राघव, सुधीर. (2016, मार्च, 22). कन्हैया से शिकायत है. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

11. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 5). झांसे वाला बाबा. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

12. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 6). खलील जिब्रान - 2. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

13. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 13). प्रेम क्या है. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

14. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 9). न देखना कैसे देखें. Retrieved from http://naisadak.org/न-देखना-कैसे-देखें/

15. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 13). ड्रेरित काव्य का गुड़गांव विशेषांक, आज ही सुनें. Retrieved from https://naisadak.org/drerit-kavya-gurgaon/

16. कुमार, रवीश. (2016, अप्रैल, 22). पंजाब में 12 हजार करोड़ के अनाज का पता नहीं. Retrieved from https://naisadak.org/12000-crore-ke-anaj-ka-pata-nahi/

17. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 22). सेक्युलर पानी और देशभक्त कमल, कहानी - punchतंत्र - 4. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

18. राघव, सुधीर. (2016, अप्रैल, 28). सभी समस्याओं का निदान संस्कृत. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

19. कुमार, रवीश. (2016, मई, 3). जाम में तमान हो चुका है बैंगलोर. Retrieved from https://naisadak.org/jaam-mein-tamaam-ho-chuka-bangalore/

20. कुमार, रवीश. (2016, मई, 10). रॉकी इस पत्र को पढ़ लेना. Retrieved from https://naisadak.org/letter-to-rocky/

21. राघव, सुधीर. (2016, मई, 5). श्री श्री और सत्य. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/04/blog-post_14.html

22. राघव, सुधीर. (2016, मई, 3). हिंदी मुहावरे, नए और संशोधित. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/05/blog-post_14.html

23. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, मई, 16). फर्जी पढ़ाई को रोकें तो बात हो. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/01/blog-post_23.html

24. कुमार, रवीश. (2016, जून, 4). गेस्ट ब्लॉग - हाल कैसा जनाब का. Retrieved from https://naisadak.org/haal-kaisa-janab-ka/

25. कुमार, रवीश. (2016, जून, 5). भारतीय पुलिस सेवा के नाम पत्र. Retrieved from https://naisadak.org/letter-to-ips-of-up-cadre/
26. कुमार, रवीश. (2016, जून, 6). भारतीय पुलिस सेवा उत्तर प्रदेश के अधिकारी द्वारा मेरे पत्र का समुचित जवाब. Retrieved from https://naisadak.org/reply-to-open-letter-to-india-police-services/
27. कुमार, रवीश. (2016, जून, 28). श्रम कार्यालयों की कारगुजारियों के बीच एक अफसर. Retrieved from https://naisadak.org/why-indian-society-does-not-support-honest-officer/
28. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जून, 8). अमेरिकी मित्रदेश बनने की दिशा में भारत. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/06/blog-post_23.html
29. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, जून, 27). क्यों चे ग्वेरा नहीं हैं मेसी. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/06/blog-post_23.html
30. शेखर, शशि. (2016, जून, 28). प्रथम वचन - आने वाले वक्त में अमरत्व. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-immortality-in-coming-time-541842.html
31. कुमार, रवीश. (2016, जूलाई, 4). उसे क्या पता था क्लासमेट सीएम बन जाएगा. Retrieved from https://naisadak.org/he-didnt-have-any-clue-about-up-cm/
32. कुमार, रवीश. (2016, जुलाई, 14). आपके पत्र मेरे लिए जख्म से हैं. Retrieved from https://naisadak.org/aapke-patr-mere-liye-jakhm-se-hain/
33. शेखर, शशि. (2016, जुलाई, 31). नफरतों के दौर में उम्मीद. Retrieved from https://www.livehindustan.com/news/shashi-shekhar-blog/article1-hope-in-hated-environment-548199.html

34. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 2). सबक एक कविता. Retrieved from https://naisadak.org/sabak-ek-kavita/

35. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 9). कविता के मूड में, डेस्प्रेड कवि. Retrieved from https://naisadak.org/poetry-in-time-of-desperation-ravish-kumar/

36. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 12). देशभक्ति का संबंध तिरंगे का आकार से नहीं, जज्बे से होता है. Retrieved from https://naisadak.org/flag-should-fly-in-hour-heart-ravish/

37. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 14). मैं ग्रेटर कैलाश-2 के आंदोलन को कवर नहीं करूंगा. Retrieved from https://naisadak.org/why-i-will-not-cover-gk-2-unique-protest/

38. कुमार, रवीश. (2016, अगस्त, 17). ड्रेरित काव्य: सेडिशन पर रिएक्शन. Retrieved from https://naisadak.org/sedition-is-the-new-edition/

39. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 6). मंदा तो मिलावट से आता है. Retrieved from http://naisadak.org/मंदा-तो-मिलावट-से-आता-है/

40. कुमार, रवीश. (2016, सितंबर, 7). 20 मार्च - प्यास भी बुझाए, इतिहास भी बताए. Retrieved from https://naisadak.org/20th-march-water-with-history/

41. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, सितंबर, 19). ना युद्ध.. ना शांति. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/09/blog-post_23.html

42. कुमार, रवीश. (2016, अक्टूबर, 18). बॉब डिलेन क्या तुम दिल्ली में हो? प्लीज फोन उठाओ. Retrieved from https://naisadak.org/hope-you-r-not-in-delhi-bob/

43. कुमार, रवीश. (2016, नवंबर, 10). ‘हमारा कश्मीर बहुत अच्छा है - मुनीर. Retrieved from https://naisadak.org/my-kashmir-is-too-good-sir/

44. वाजपेयी, पुण्य प्रसून. (2016, दिसंबर, 2). हर आंख में एक सपना है. Retrieved from http://prasunbajpai.itzmyblog.com/2016/12/blog-post_23.html

45. कुमार, रवीश. (2016, दिसंबर, 20). मैं अनुपम दादा का मिस कर रहा हूं. Retrieved from https://naisadak.org/main-anupam-mishra-ko-miss-kar-raha-hun/
46. राघव, सुधीर. (2016, मई, 2). मजदूर नंबर वन. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/05/blog-post_14.html
47. राघव, सुधीर. (2016, मई, 12). लठठ में एंटायर पालिटिक्स. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/05/blog-post_14.html
48. राघव, सुधीर. (2016, मई, 19). देव संस्कृति और प्रेत संस्कृति. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/08/blog-post_14.html
49. राघव, सुधीर. (2016, मई, 27). खतरनाक कौन. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/08/blog-post_14.html
50. राघव, सुधीर. (2016, जुलाई, 12). श्री श्री ने योग के लिए क्या कियाः राम देव. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/08/blog-post_14.html
51. राघव, सुधीर. (2016, अगस्त, 22). बेरोजगारी में कच्चा काम गोरक्षा. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/08/blog-post_14.html
52. राघव, सुधीर. (2016, अगस्त, 29). संघ चरित. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/09/blog-post_14.html
53. राघव, सुधीर. (2016, सितंबर, 7). डिजिटल इंडिया में लठ्ठ गाढ़ता हरियाणा. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/09/blog-post_14.html
54. राघव, सुधीर. (2016, सितंबर, 16). मोदी, मच्छर और महंगाई. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/09/blog-post_14.html
55. राघव, सुधीर. (2016, सितंबर, 15). गले की हड्डी. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/09/blog-post_14.html
56. राघव, सुधीर. (2016, सितंबर, 18). उडने वाला हाथी. Retrieved from http://sudhirraghav.blogspot.in/2016/09/blog-post_14.html

निष्कर्ष

पत्रकार की विचारधारा उसके लेखन में परिलक्षित होती है। इस शोध में हिन्दी पत्रकारिता के प्रमुख व्यक्तियों के ब्लाॅग का टेक्स्चुअल एनालिसिस करने पर स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि पत्रकार अपनी रूचि के अनुसार विषय को महत्व देता हैए उसमें अपने दृष्टिकोण को अधिकांश लोगों का दृष्टिोण होने के रूप में प्रस्तुत करता है।

इस शोध में रवीश कुमारए सुधीर राघवए पुण्य प्रसून वाजपेयीए शशि शेखरए अंशुमान तिवारी के ब्लाॅग का टेक्स्चुअल एनालिसिस किया गयाए जिसमें निष्कर्ष निकलता है कि उपरोक्त पत्रकारों ने अपनी रूचियों के अनुसार मुद्दों पर लिखा है और अपना विचारात्मक दृष्किोण अपनाया है।

पत्रकार ब्लाॅग्स लेखन में मीडिया के प्रति अलोचनात्मक या समीक्षात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। वे अपने लेखों में लिखते हैं कि भारत का मुख्यधारा मीडिया समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व नहीं करता है या तर्क दिया जाता कि मीडिया अभी शैशव अवस्था में और इस स्थिति में वह भारतीय समाज को सही मार्गदर्शन देने में सक्षम है। साथ हीए सभी के द्वारा मीडिया से अपेक्षा की जाती हैं कि मीडिया को राजनीतिक व धार्मिक पक्षों से ज्यादा सामाजिक विषयों पर दिखाना-लिखना चाहिए। हालांकि वर्ष 2016 में 1 जनवरी से 31 दिसंबर के मध्य लिखे गए पत्रकारों के ब्लाॅग्स पर लिखे गए लेखों में सामाजिक लेखों से ज्यादा राजनीतिक विषयों पर लिखा गया है।

यह इसलिक भी अधिक ध्यान आकर्षित करने वाला हो जाता है जो समाजवादी पत्रकार माने जाते हैं उन्होंने राजनीतिक विषयों में लिखे गए अधिकांश अपने लेखों में दक्षिणपंथी

राजनीति और राजनीतिक पार्टियों की आलोचना की है। समाज में वर्ग विभेद के दक्षिणपंथी राजनीति को जिम्मेदार ठहराया है। उनके लेखो किसी भी समस्या के लिए राजनीतिक अलोचना के मुकाबले समाधान की चर्चा बहुत कम मिलती है। वामपंथी विचार धारा की राजनीति के मामले में विवाद होने पर या तो वे उसका समर्थन करते हैं या मौन साध लिया है। समाजवादी पत्रकारों के ब्लाॅग्स लेखों के जरिए वामपंथी पत्रकारिता की कार्यशैली को तथ्यों के साथ समझा जा सकता है। जो समाजवादी प़त्रकार माने जाते हैंए उनके लेखों के केंद्र में सामाजिक विषय भी राजनीतिक विषयों के मुकाबले स्थान नहींे बना पाते हैं। समाजवादी पत्रकारों के राजनीतिक लेख वामपंथी सामाजिक मुद्दों को लेकर ही रहे हैं। हालांकि सामाजवादी पत्रकारों का हिंसात्मक घटनाओं को लेकर मत भिन्नता देखने को मिलती है कुछने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समसामायिक आतंकवादी घटनाओं पर लिखा है उन्होंने आतंकवादी घटनाओं को मानवता के लिए दुश्मन माना है। वहीं कुछ समाजवादी पत्रकार अपने ब्लाॅग्स पर अधिकांश आतंकवादी घटनाओं पर मौन ही रहे हैए उन्होंने अधिकांश घटनाओं पर कोई लेख ही नहीं लिखा।

वैश्विक स्तर पर माना जा रहा है कि आतंकवाद जैसे विषय पर विश्व के सभी देशों की एक राय होनी चाहिए लेकिन तथ्य यह है कि निष्पक्ष रूप से विषय रखने का दावा करने वाले भारत के जाने-माने प़त्रकार एक ही कालवधि में समान आतंकी घटनाओं पर एक-दूसरे से अलग राय रखते हैं। विचारधारा में असहमति या असहज स्थिति पैदा होने पर अपने निष्कर्ष या विचार देने की अपेक्षा मौन का सहारा लेते हैं। संचार सिदातों में कहा गया है कि मौन भी संचार का ही एक हिस्सा है। वैचारिक और राजनीतिक प्रतिबदता आतंकवाद के खतरे ज्यादा महत्वपूर्ण दिखायी देती है। हालांकि अधिकांश पत्रकारों ने आतंकवाद से संबंधित मामलों में जनता को सजग करने का कार्य किया है।

इसी प्रकार राजनीतिक मामलों में भी संपादकीय स्तर पर कार्यरत इन पत्रकारों ने वैचारिक और राजनीतिक प्रतिबद्धता के आधार ही राजनीतिक लेखों को महत्व व दृष्टिकोण दिया है। राजनीति पर लेख लिखना बहुत आसान नहीं है। मौजूदा दौर में पत्रकारिता और राजनीति को एक ही सिक्के के दो पहलू ही समझा जाने लगा है। पत्रकारिता में राष्ट्रवादए नक्सलवादए आतंकवादए अलगवाद के बारे में अपने हिसाब से राजनीतिक पहलू देखें हैं। जहां इसे किसी ने राजनीतिक मजबूरी करार दे दिया है किसी ने इसे वर्ग संघर्ष का हिस्सा बता दिया है। किसी भी राजनीतिक समस्या के समाधान के लिए कोई भी पत्रकार लेखक एकमत दिखायी नहीं देता है। यह राजनीतिक विचारधारा की मतभिन्नता अधिकांश मामलों में वामपंथी व दक्षिणपंथी विचारधारा के आधार पर है। पत्रकारों द्वारा अपनी रूचि व संभावना के आधार पर नेताओं की छवि गढ़ने का प्रयास जाता है। पक्ष विपक्ष के आधार पर राजनेताओं की अपने स्तर तथ्यों व विश्लेषण के आधार पर सकारात्मक या नकारात्मक छवि बनाने का प्रयास दिखायी देता है।

पत्रकारों के ब्लाॅग्स राजनीतिक संवाद को अपने अंदाज में प्रस्तुत करते हैं। समय के साथ राजनीति और पत्रकारिता का घालमेल हो गया है। इस बात कि चिंता भी पत्रकारों ने अपने दृष्टिकोणों के साथ प्रस्तुत की है। राजनीति और मीडिया के घालमेल की आलोचना के पक्ष को भी अपने विचाराधारा और सहूलियत के अनुरूप ही रखा है। दक्षिणपंथी विचारधारा का पत्रकार पत्रकारिता और राजनीतिक समीकरण की आलोचना में उन्हीं उदाहरणों को प्रस्तुत करता हैए जिसमें वामपंथ के राजनेताओं और पत्रकारों का गठबंधन दिखायी देता है। इसी प्रकार वामपंथी पत्रकार का रूख रहता है। हालांकि वामपंथी पत्रकार की आलोचना में राजनीतिक आलोचना के साथ संस्कृति और राष्ट्र सिद्धांत की आलोचना भी साथ की गयी है।

पत्रकारों अपने ब्लॉग्स में आलोचना करते समय जिन संपादकीय मर्यादाओं का पालन मुख्यधारा मीडिया में करते हैं उनकों ब्लॉग्स में आसानी से लांघा जाता है। ब्लॉग्स की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता का प्रयोग पत्रकारों ने राजनीतिक आलोचना के लिए अधिक किया है। हालांकि सीमा रहित राजनीतिक आलोचना करते हुए पत्रकार भी स्वयं दबाव समूह के रूप में कार्य करने लगते हैं।

जिस सोशल मीडिया मंच ब्लॉग्स का प्रयोग पत्रकार राजनीतिक समीक्षा और सुझाव के लिए कर रहे हैं उसी मामले में वे अपनी राय रखते हैं कि वर्तमान राजनीति सोशल मीडिया के जरिए अपनी छवि गढ़ रही है। पत्रकार सोशल मीडिया पर कड़ी प्रतिक्रिया देने वाले पाठकों को ट्रोल्स का नाम देते हैं। साथ हीए वे स्वयं के विरूद्ध प्रतिक्रियाओं को राजनीतिक आइटी सेल के लोगों की करतूत करार देकर सरलता से पल्ला झाड़ लेते हैं। लेकिन पत्रकारों की इन प्रतिक्रिया से संचार सिद्धांतों में फीडबैक के महत्व को कमजोर नहीं किया जा सकता हैं। लेख लिखकर पत्रकार जहां अभिव्यक्ति के अधिकार को व्यक्त करते हैं। लेकिन कठोर प्रतिक्रिया देने वाले पाठकों पर सवाल उठाकर ये पाठकों के अधिकार फीडबैक व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी कुठारघात करते हैं। एकतरफा संवाद को जनसंचार सिद्धांतों में अधूरा संवाद माना गया है। सोशल मीडिया ही एक ऐसा मंच है जो तेज व सर्वसुलभ बहुमार्गी और बहुआयामी संवाद स्थापित कराने की विशेषता रखता है।

राजनीति के अंतरर्राष्ट्रीय विषयों में रूसए अमेरिकाए यूरोप और चीन जैसे देशों की राजनीतिक घटनाएं ही महत्व पाती हैं। मुख्यधारा मीडिया की तरह ही तृतीय विश्व के देशों की राजनीतिक समस्याएं पत्रकारों के ब्लॉग्स लेखन में भी स्थान नहीं बना पाती हैं। वामपंथी पत्रकार जो समाजवाद की बात करते हैंए उनके ब्लॉग्स पर भी अफ्रीका के

गरीब देशों की राजनीतिक घटनाएं विशेष महत्व नहीं पाती हैंए उनकी सामाजिक क्रांति सर्वहारा की बात तो करती है लेकिन अधिकांश मामलों में रूस और चीन तक ही सीमित रह जाती है।

पत्रकारों के राजनीति से संबंधित ब्लाॅग्स लेख विशेष स्थान रखते हैं। इनके लेखों की विश्वसनीयता आम ब्लाॅग्स लेखकों के मुकाबले अधिक होती है। इनमें लेखन की कुशलता व तथ्यों का समावेशन भी शामिल रहता है। हालांकि पत्रकारों के कुछ राजनीतिक पोस्ट गंभीरता रहित रहते हैंए जिसका कारण ब्लाॅग्स पर संपादकीय गेटकीपिंग का अभाव व अनंत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए प्रेस को नियंत्रण रहित होने की बात कहने वाले स्वयं व आत्मिक नियंत्रण की बात करते हैं। ब्लाॅग्स लेखन के मामले में पत्रकारों के ब्लाॅग्स का शाब्दिक विश्लेषण करने पर पता चलता है कि प्रेस के मामले में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर जिम्मेदारी के अंकुश के लिए आत्म नियंत्रण की बात छलावा ही दिखायी देती है।

भारतीय राजनीति धर्म और संप्रदाय से अछूती नहीं है। मीडिया भी राजनीति की तरह धर्म से प्रभावित रहता है। जहां किसी संप्रदाय की कट्टरता को छिपने के प्रयास किया जाता हैए तो किसी संप्रदाय की अशिक्षा पर मौन धारण कर लिया जाता है। यह मौन मुख्यधारा मीडिया से लेकर ब्लाॅग्स तक दिखायी देता है। कुछ वामपंथी पत्रकारों ने कई बार देश में हुई बड़ी आतंकवादी घटनाओं पर अपने ब्लाॅग्स पर मौन बनाए रखा। मानवता के लिए संकट पैदा करने वाली घटनाओं पर राजनीतिक व विचारधारा के हिसाब से मौन रह जाना पत्रकारिता की जिम्मेदारी के प्रति मौन हो जाना है।

वर्ष 2016 में पूरी दुनिया में 1800 से ज्यादा आतंकवादी हमले हुए। इस दौरान भारत समेत विश्व के अन्य देशों पर भी हमले हुए। पत्रकारों ने अपने दृष्टिकोण के साथ अपने ब्लाॅग्स पर भी इन विषयों पर लिखा है। पत्रकारों के ब्लाॅग्स में आतंकवाद के सामाजिक व धार्मिक पक्ष पर कम ही लिखा गया है। अधिकांश मामलों में आतंकवाद के पीछे की धार्मिक व वैचारिक वजहों को तलाशने की कोशिश नहीं की जाती है। जहां पत्रकारों का एक वर्ग अशिक्षा को आतंकवाद का कारण बताता है। वहीं दूसरा वर्ग बड़े-बड़े आतंकवादियों को उच्च शिक्षित और संपन्न बताते हुए आतंकवाद के पीछे कट्टर सोच और धार्मिक कारणों की पड़ताल करने को कहता है।

भारत में वामपंथी विचारधारा के पत्रकार वैश्विक आतंकवाद के मामले में सांप्रदायिक-धार्मिक पक्ष को या तो आतंकवाद का कारण नहीं मानते हैं या मौन ही रहते हैं। धार्मिक कट्टरता और आतंकवाद का रिश्ता बेहत संवेदनशीत विषय है। पूरे विश्व के लिए यह रिश्ता चुनौती बना हुआ है। धार्मिक कट्टरवाद किस प्रकार मन में और बाद में कार्यरूप में आतंकवाद को जन्म देता हैध आतंकवाद किस सामाजिक और धार्मिक जमीन पर अपनी जड़ें फैला रहा हैध इसका विश्लेषण बेहद अहम हैए इस विषय पर भी कम ब्लाॅग्स लिखे गए हैं। लेखों में घटनाओं को जिक्र अधिक मिलता हैए कारणों की तह तक जाने की कोशिश कम ही मामलों में देखने को मिलती है।

अर्थ केंद्रित इस विश्व व्यवस्था में आतंकवाद के अर्थतंत्र से रिश्ते छुपे नहीं रहे हैं। आतंकवाद और अर्थ के नेटवर्क को मीडिया के माध्यम से उजागर करने की भी आवश्यकता है। आतंकवाद की परिभाषा के बारे में दुनिया को एक मत होना होगा। दुनिया के कई देश आतंकवाद को संरक्षण देते हैं और परिभाषा के मामले में भी बचने की गुंजाइश देते हैं। आतंकवाद के जरिए कुछ देश अपने राजीतिक और आर्थिक हित

साधना चाहते हैं। कुछ देशों की सरकारें भी मानवाधिकार और अन्य शाब्दिक चतुराइयों के जरिए आतंकवाद को संरक्षण देने का काम करती हैं। साथ हीए मीडिया का एक वर्ग ऐसा भी है जो आतंकवाद को अपने हिसाब से पसंद और नापसंद करता हैए इस प्रकार के मीडिया को त्यागना होगा। विश्व शांति के लिए आतंकवाद के सभी प्रारूपों का खत्म होना आवश्यक है।

वर्तमान समय में देश का सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचा तेजी से परिवर्तित हो रहा है। परिवर्तित होते सामाजिक-सांस्कृतिक बाने की तस्वीर से पत्रकार भी प्रभावित होते हैं। उनके लेख भी बदलते समाज के साथ अपने शब्द पाते हंै। पत्रकारिता और पत्रकार यही कर्तव्यधर्म है कि समाज की सही तस्वीर को सही शब्दों के सार के साथ गढ़ सकंेए ताकि समाज लेख में स्वयं को देख सके और दिशा पा सके। समाज जहां व्यक्तियों का समूह हैए वहीं वह उर्जा समूह भी है।

पत्रकारों ने समाज व संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को अपने ब्लाॅग्स के जरिए दिखाया है। समाज की संतुलित तस्वीर लेख के जरिए प्रस्तुत करना सदैव चुनौतीपूर्ण कार्य है। किसी भी लेख में स्वयं के अनुभव व धारणाओं को दूर रखना असंभव होता हैं। लेख में समाज के मुद्दे पत्रकार के व्यक्तिगत अनुभवों से भी प्रभावित होते हैं। विश्व में जारी समाजवाद व पूंजीवाद की विचारधाराएं भी लेखक के विचार व उसके लेख को अपने स्तर पर प्रभावित करती हैं। पाठक भी उन लेखों से प्रभावित होता हैए जिसके सामाजिक व्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव पड़ते हैं। विचारधाराओं के आधार पर आंदोलन व राजनीति की दिशाधारा तय होती है।

पत्रकारिता क्षेत्र मंे निर्णायक पद पर काम कर रहे पत्रकार के लिए पत्रकारिता की समीक्षा करना भी एक चुनौती से कम नहीं है। मीडिया में निर्याणक पद पर बैठा व्यक्ति जब मीडिया के चरित्र और कार्यशैली पर सवाल उठाता है तो इसका यह भी अर्थ होता कि वह स्वयं के निर्णयों पर प्रश्न कर रहा है। मीडिया के व्यक्ति द्वारा मीडिया की आचोलना आत्मालोचना के समान होती है।

लेकिन मीडिया के प्रमुख व्यक्ति द्वारा मीडिया की समीक्षा मीडिया में सुधार की प्रक्रियाओं को आगे बढ़ाती है। मीडिया में इससे आत्मनियंत्रण की धारणा मजबूत होती है। पाठक और दर्शक भी मीडिया की समीक्षाओं द्वारा उसके सही स्वरूव से परिचित होते हैं। इससे उनकी विश्लेषण क्षमताओं का विकास संभव हो पाता है। हालांकि मीडिया की समीक्षा पत्रकारिता में निर्णायक पद बैठा व्यक्ति अपनी विचारधारा और आर्थिक हितों के अनुसार ही करता है। समीक्षा में तथ्यों का प्रकटीकरण या छुपाव हितों के अनुसार ही किया जाता है।

इसी प्रकार किसी पत्रकार के लिए स्वयं के बारे अपने पाठकों को बताना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। अधिकांश पत्रकार अपने ब्लाॅग्स लेखों में अपना औपचारिक परिचय देते हैं साथ ही अपने से जुड़े मुद्दों पर लिखने से बचने का प्रयास करते हैं। कोई पत्रकार किसी विचारधारा के साथ जुड़ा हुआ है इस विषय में लिखने से भी बचता है। वामपंथ या दक्षिण पंथ और पूंजीवाद या समाजवाद का समर्थन करने के पीछे उनके क्या व्यक्तिगत अनुभव हैं इसबारे में मौन को सर्वाधिक वरीयता दी जाती है। आर्थिक मामलों में केवल विशेषज्ञ पत्रकार ही ब्लाॅग्स लिखते हैंए हालांकि इन लेखों में भी पूंजीवाद या समाजवाद विचार के विरोध या समर्थन के आधार पर लेखों को शब्द दिए जाते हैं।